अपोक्रिफा

विषयसूची

1st Esdras

पहला एस्ड्रास

अध्याय 1

1 और योशिय्याह ने यरूशलेम में अपने प्रभु के लिथे फसह का पर्ब्ब माना, और पहिले महीने के चौदहवें दिन को फसह का पर्ब्ब चढ़ाया;
2 और याजकों को उनके प्रतिदिन के काम के अनुसार लम्बे वस्त्र पहिनाकर यहोवा के मन्दिर में बिठाया।
3 और उस ने लेवियोंअर्थात् इस्राएल के पवित्र मन्त्रियोंसे कहा, कि अपके अपके को यहोवा के लिथे पवित्र करो, और उस भवन में जो दाऊद के पुत्र राजा सुलैमान ने बनाया या, उस में यहोवा का पवित्र सन्दूक स्थापित करो।
4 और कहा, तुम फिर सन्दूक अपने कन्धे पर न उठाना; इसलिये अब अपके परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, और उसकी प्रजा इस्राएल की सेवा करो, और अपने कुलोंऔर कुलोंके अनुसार अपने को तैयार करो।
5 इस्राएल के राजा दाऊद की आज्ञा के अनुसार, और उसके पुत्र सुलैमान के प्रताप के अनुसार, और तुम लेवियोंके कुलोंकी गिनती के अनुसार जो अपके भाई इस्राएलियोंके साम्हने सेवा टहल करते हो, मन्दिर में खड़े रहना। ,
6 और फसह को ठीक से चढ़ाना, और अपने भाइयोंके लिथे मेलबलि तैयार करना, और यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा को दी गई या, उसको मानना।
7 और जो लोग वहां मिले उनको योशिय्याह ने तीस हजार भेड़ के बच्चे, और तीन हजार बछड़े दिए; ये वस्तुएं राजा के वचन के अनुसार उन लोगों, याजकों, और लेवियोंको राजा की ओर से दी गईं।
8 और हेलकिय्याह, जकरयाह, और सायलुस नाम मन्दिर के हाकिमोंने याजकोंको दो हजार छः सौ भेड़-बकरियां, और तीन सौ बछड़े फसह के लिथे दिए।
9 और यकोन्याह, समायाह, और उसका भाई नतनएल, और अस्सबियाह, और ओकीएल, और योराम, जो हजारों के प्रधान थे, उन्होंने लेवियोंको फसह के लिथे पांच हजार भेड़-बकरियां, और सात सौ बछड़े दिए।
10 और जब ये काम हो गए, तो याजक और लेवीय अखमीरी रोटियां लिये हुए अपने भाई-बन्धुओं के अनुसार बड़ी शोभायमान रीति से खड़े हुए।
11 और पितरोंके बड़े बड़े कामोंके अनुसार प्रजा के साम्हने यहोवा के लिथे चढ़ाना, जैसा मूसा की पुस्तक में लिखा है: और भोर को उन्होंने वैसा ही किया।
12 और उन्हों ने फसह को उचित रीति से आग में पकाया; और मेलबलियोंको उन्होंने अच्छे सुगन्ध के लिथे पीतल के हण्डोंऔर कड़ाहोंमें पकाया,
13 और उनको सब लोगोंके साम्हने खड़ा किया; और इसके बाद उन्होंने अपके लिथे, और अपके भाई हारून की सन्तान याजकोंके लिथे तैयार किया।
14 क्योंकि याजकोंने चर्बी को रात तक चढ़ाया; और लेवियोंने अपके अपके लिथे, और याजकोंने अपके भाइयोंके लिथे जो हारून की सन्तान के लिथे तैयार किया।
15 दाऊद की आज्ञा के अनुसार आसाप के पुत्र पवित्र गायक भी अपने अपने क्रम में थे, अर्थात आसाप, जकरयाह, और यदूतून जो राजा के अनुचर में से या।
16 और द्वारपाल तो हर एक फाटक पर थे; किसी को भी अपनी साधारण सेवा से हटना उचित न था; क्योंकि उनके भाई लेवीय उनके लिये तैयारी करते थे।
17 उस दिन यहोवा के बलिदानोंके काम इस प्रकार पूरे हुए, कि वे फसह मना सकें।
18 और राजा योशिय्याह की आज्ञा के अनुसार यहोवा की वेदी पर बलिदान चढ़ाना।
19 सो जो इस्राएली वहां उपस्थित थे, उन्होंने उसी समय फसह का पर्ब्ब माना, और सात दिन तक मीठी रोटी का पर्ब्ब माना।
20 और शमूएल भविष्यद्वक्ता के समय से इस्राएल में ऐसा फसह न माना गया।
21 हां, इस्राएल के सब राजाओं ने ऐसा फसह नहीं मनाया, जैसा योशिय्याह, और याजकों, और लेवियों, और यहूदियों ने, यरूशलेम में रहनेवाले सब इस्राएलियोंके संग मनाया।
22 योशिय्याह के राज्य के अठारहवें वर्ष में यह फसह मनाया गया।
23 और योशिय्याह के काम उसके प्रभु के साम्हने सच्चे थे, और उसका मन भक्ति से भरा हुआ था।
24 जो बातें उसके समय में घटित हुईं, वे पहिले समय से उन लोगों के विषय में लिखी गईं, जिन्होंने सब लोगों और राज्य-राज्यों से बढ़कर यहोवा के विरुद्ध पाप किया, और किस प्रकार उसे अत्यंत दुःखी किया, यहां तक कि परमेश्वर के वचन यहोवा इस्राएल के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ।
25 योशिय्याह के इन सब कामोंके बाद ऐसा हुआ, कि मिस्र का राजा फिरौन परात के पार करचमीस में युद्ध करने को आया, और योशिय्याह उसके साम्हने निकला।
26 परन्तु मिस्र के राजा ने उसके पास कहला भेजा, कि हे यहूदिया के राजा, मुझे तुझ से क्या काम?
27 मैं यहोवा परमेश्वर की ओर से तेरे विरूद्ध नहीं भेजा गया हूं; क्योंकि मेरा युद्ध परात पर है; और अब यहोवा मेरे संग है, हां, यहोवा मुझे आगे बढ़ाने के लिये मेरे संग है; मेरे पास से चले जाओ, और यहोवा के विरूद्ध मत हो जाओ।
28 तौभी योशिय्याह ने अपना रथ उसके साम्हने से न लौटाया, वरन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के यहोवा के मुख से कहे हुए वचनों के अनुसार न मानकर उस से लड़ने का निश्चय किया।
29 परन्तु मगिद्दो के अराबा में उस से युद्ध करने लगे, और हाकिम राजा योशिय्याह के विरूद्ध चढ़ आए।
30 तब राजा ने अपके कर्मचारियोंसे कहा, मुझे युद्ध से बाहर ले चलो; क्योंकि मैं बहुत कमज़ोर हूँ। और तुरन्त उसके सेवक उसे युद्ध से निकाल ले गए।
31 तब वह अपके दूसरे रथ पर चढ़ा; और यरूशलेम में वापस लाकर मर गया, और उसे उसके पिता की कब्र में दफनाया गया।
32 और सारे यहूदी समाज में योशिय्याह के लिये विलाप किया गया; हां, यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने योशिय्याह के लिये विलाप किया, और मुख्य पुरुषों ने स्त्रियों समेत उसके लिये आज के दिन तक विलाप किया; और यह नियम बनाकर सारी जाति में सदा माना जाता रहा। इजराइल का.
33 ये बातें यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में, और योशिय्याह के सब काम, और उसकी महिमा, और यहोवा की व्यवस्था में उसकी समझ, और जो काम उस ने पहिले किए थे, उन सब का वर्णन है। और जो कुछ अब पढ़ा जाता है, वह इस्राएल और यहूदिया के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है।
34 और जब योशिय्याह का पुत्र योआखाज तेईस वर्ष का या, तब लोगों ने उसे पकड़कर उसके पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा बनाया।
35 और वह यहूदिया और यरूशलेम में तीन महीने तक राज्य करता रहा: और तब मिस्र के राजा ने उसे यरूशलेम में राज्य करने से उतार दिया।
36 और उस ने उस देश पर सौ किक्कार चान्दी और एक किक्कार सोना कर लगाया।
37 मिस्र के राजा ने अपके भाई योआसिम को यहूदिया और यरूशलेम का राजा भी ठहराया।
38 और उस ने योआकिम और रईसोंको बन्धवाया, परन्तु उसके भाई ज़ारकेस को पकड़कर मिस्र से निकाल लाया।
39 जब योआकिम यहूदिया और यरूशलेम देश में राजा हुआ, तब वह पच्चीस वर्ष का या; और उस ने यहोवा की साम्हने बुराई की।

40 इस कारण बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उस पर चढ़ाई की, और उसे पीतल की जंजीर से बान्धकर बाबुल में ले गया।
41 और नबूकदनेस्सर ने यहोवा के पवित्र पात्रों में से कुछ ले जाकर बाबुल में अपने मन्दिर में रख दिया।
42 परन्तु जो बातें उसके और उसकी अशुद्धता और अपवित्रता के विषय में लिखी हैं, वे राजाओं के इतिहास में लिखी हैं।
43 और उसका पुत्र योआकिम उसके स्यान पर राज्य करने लगा; वह अठारह वर्ष का होकर राजा हुआ;
44 और यरूशलेम में तीन महीने और दस दिन तक ही राज्य करता रहा; और यहोवा के साम्हने बुराई की।
45 इसलिये एक वर्ष के बाद नबूकदनेस्सर ने दूत भेजकर उसे यहोवा के पवित्र पात्रोंके साय बाबेल में पहुंचा दिया;
46 और सिदकिय्याह जब बीस वर्ष का या, तब उसे यहूदिया और यरूशलेम का राजा बनाया; और उसने ग्यारह वर्ष तक राज्य किया:
47 और उस ने यहोवा की दृष्टि में बुरा भी किया, और जो बातें यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने यहोवा के मुख से उस से कही थीं उन की कुछ परवाह न की।
48 और जब राजा नबूकदोनोसर ने उसे यहोवा के नाम की शपथ खिलाई, तब उसने अपने आप को त्याग दिया, और विद्रोह किया; और उस ने अपनी गर्दन और मन को कठोर करके इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की विधियोंका उल्लंघन किया।
49 और प्रजा के हाकिमोंऔर याजकोंने भी व्यवस्था के विरुद्ध बहुत काम किए, और सब जातियोंकी अशुद्धता को मान लिया, और यहोवा के भवन को जो यरूशलेम में पवित्र किया या अशुद्ध किया।
50 तौभी उनके पितरोंके परमेश्वर ने उनको वापस बुलाने के लिथे अपके दूत को भेजा, क्योंकि उस ने उन को और अपके तम्बू को भी बचा रखा।
51 परन्तु उन्होंने उसके दूतोंको ठट्ठोंमें उड़ाया; और देखो, जब यहोवा ने उन से बातें की, तब उन्होंने उसके भविष्यद्वक्ताओं का ठट्ठा किया;
52 यहां तक कि उस ने अपक्की प्रजा की बड़ी अभक्ति के कारण उन पर क्रोधित होकर कसदियोंके राजाओं को उन पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी;
53 जिस ने उनके जवानोंको तलवार से मार डाला, वरन उनके पवित्र मन्दिर की परिधि के भीतर भी, और उन में से किसी को न जवान, न दासी, न बूढ़े, न बच्चे को छोड़ा; क्योंकि उस ने सब कुछ उनके हाथ में कर दिया।
54 और उन्होंने यहोवा के सब पवित्र पात्रों, क्या बड़े, क्या छोटे, और परमेश्वर के सन्दूक के पात्र, और राजा के भण्डार सब ले लिए, और बाबुल को ले गए।
55 और यहोवा का भवन उन्होंने फूंक दिया, और यरूशलेम की शहरपनाह तोड़ डाली, और उसके गुम्मटों में आग लगा दी;
56 और उसकी महिमा के काम तब तक न रुके, जब तक उन सभों को नाश करके सत्यानाश न कर डाला; और जो लोग तलवार से नहीं मारे गए थे, उन्हें वह बाबुल में ले गया।
57 और जब तक फारसियों ने राज्य न किया, तब तक उसके और उसके वंश के दास बने रहे, कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह ने कहा या, उसे पूरा करें।
58 जब तक पृथ्वी अपने विश्रामकाल को पूरा न कर ले, तब तक वह अपने उजाड़ होने के पूरे समय अर्थात सत्तर वर्ष के पूरे दिन तक विश्राम करती रहेगी।

अध्याय दो

1 फारस के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में, कि यहोवा का जो वचन उस ने यिर्मयाह के मुंह से कहा या, वह पूरा हो;
2 यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू की आत्मा को जागृत किया, और उस ने उसके सारे राज्य में यह प्रचार करवाया, और यह भी लिखा,
3 कि फारसियोंका राजा कुस्रू योंकहता है; इस्राएल के प्रभु, परमप्रधान यहोवा ने मुझे सारे जगत का राजा बनाया है,
4 और मुझे आज्ञा दी, कि यरूशलेम में यहूदिया में उसका एक भवन बनाऊं।
5 इसलिये यदि तुम में से कोई उसकी प्रजा में से हो, तो यहोवा अर्थात उसका प्रभु उसके संग रहे, और वह यहूदिया के यरूशलेम को जाकर इस्राएल के यहोवा का भवन बनाए; वह यहोवा है जो यरूशलेम में रहता है।
6 सो जो कोई आस-पास के स्थानोंमें बसा हो, वे जो सोने चान्दी लेकर उसके पड़ोसी हों, वे उसकी सहाथता करें।
7 और यरूशलेम में यहोवा के भवन के लिये घोड़े, गाय-बैल, और अन्य वस्तुएं जो मन्नत मानकर मानी गई हों।
8 तब यहूदिया और बिन्यामीन के गोत्र के घरानोंके प्रधान खड़े हुए; याजकों और लेवियों को, और वे सब जिनके मन में यहोवा ने जाकर यरूशलेम में यहोवा के लिये भवन बनाने की इच्छा उत्पन्न की थी,
9 और जो उनके आस पास रहते थे, और सब प्रकार की वस्तुओं में उनकी सहायता करते थे, अर्थात चान्दी, सोना, घोड़े, और गाय-बैल, और बहुत से लोगोंके मन में बहुत से मुफ्त दान देते थे।
10 राजा कुस्रू ने उन पवित्र पात्रों को भी बाहर निकाला, जिन्हें नबूकदनेस्सर यरूशलेम से ले गया था, और अपने मूरतों के मन्दिर में स्थापित किया था।
11 और जब फारसियोंके राजा कुस्रू ने उन्हें निकाला, तब उस ने उनको अपके खजांची मिथ्रिदातेस को सौंप दिया;
12 और वे उसके द्वारा यहूदिया के हाकिम सनबासर को सौंप दिए गए।
13 और उनकी गिनती यह थी; एक हजार सोने के प्याले, और एक हजार चाँदी के, उनतीस चाँदी के धूपदान, सोने की तीस शीशियाँ, और चाँदी के दो हजार चार सौ दस, और एक हजार अन्य पात्र।
14 इस प्रकार सोने और चान्दी के जो पात्र ले जाए गए वे पांच हजार चार सौ नौ नौ थे।
15 इन्हें सनबासर, बंधुओं समेत बाबुल से यरूशलेम को लौटा ले आया।
16 परन्तु फारसियोंके राजा अर्तक्षत्र के समय में बेलेमुस, और मिथ्रिदातेस, और ताबेलियुस, और रथुमस, और बीलतेथमस, और सेमेलियुस सचिव, और सामरिया और अन्य स्थानों में रहनेवाले औरों ने उसके विरुद्ध पत्र लिखा। यहूदिया और यरूशलेम में रहनेवालोंके लिये ये पत्र इस प्रकार थे;
17 हे हमारे प्रभु राजा अर्तक्षत्र, तेरे दासों, अर्थुमस कथाकार, और सेमेलियुस जो मन्त्री है, और उनकी महासभा के सब लोग, और सेलोसीरिया और फीनीके के न्यायियों को।
18 प्रभु राजा को यह मालूम हो, कि जो यहूदी तेरे पास से हमारे पास आए हैं, वे उस बलवा और दुष्ट नगर यरूशलेम में आकर चौकोंको बनाते, और उसकी शहरपनाह की मरम्मत करते, और उसकी नेव डालते हैं। मंदिर।
19 अब यदि यह नगर और उसकी शहरपनाह फिर बसाई जाएं, तो वे न केवल कर देने से इन्कार करेंगे, वरन राजाओं से बलवा भी करेंगे।
20 और चूँकि मन्दिर के विषय में बातें अब हाथ में आ गई हैं, इसलिये हम समझते हैं कि ऐसे मामले की उपेक्षा न करना उचित है।
21 परन्तु हमारे प्रभु राजा से इस आशय से बातें करना, कि यदि तू चाहे, तो यह बात तेरे पुरखाओं के इतिहास में लिखी हुई हो।
22 और तू इतिहास में इन बातोंके विषय में जो कुछ लिखा है वह पाएगा, और तू जान लेगा कि वह नगर बलवा करने वाला और राजाओं और नगरों दोनोंको घबरा देनेवाला था।
23 और यह कि यहूदी बलवा करते थे, और सदा लड़ाइयां करते रहते थे; इसी कारण यह नगर भी उजाड़ हो गया।
24 इसलिये अब हे राजा, हम तुझ से कहते हैं, कि यदि यह नगर फिर बनाया जाए, और इसकी शहरपनाह नई बनाई जाए, तो अब से तुझे कलोसिरिया और फीनीके में जाने की आज्ञा न मिलेगी।

25 तब राजा ने रथुमुस कथाकार को, और बीलतेथमुस को, और सेमेलियुस को जो लेखक था, और और जो काम करनेवाले थे, और शोमरोन और सूरिया और फीनीके के रहनेवालोंको फिर इस रीति से पत्र लिखा;
26 जो पत्र तुम ने मेरे पास भेजा था, वह मैं ने पढ़ लिया है; इसलिथे मैं ने भलीभांति ढूंढ़ने की आज्ञा दी, और यह मालूम हुआ है, कि वह नगर आरम्भ से ही राजाओं के विरूद्ध अभ्यास करता या;
27 और उस में के पुरूष बलवा करने और लड़ने को दिए गए, और यरूशलेम में शूरवीर और क्रूर राजा थे, जो सेलोसरिया और फीनीके में राज्य करते और कर वसूल करते थे।
28 इसलिये अब मैं ने आज्ञा दी है, कि उन मनुष्योंको नगर बनाने से रोकें, और सावधान रहें, कि उस में फिर कुछ न हो;
29 और वे दुष्ट काम करनेवाले राजाओं को रिस दिलाने के लिथे आगे न बढ़ें,
30 तब राजा अर्तक्षत्र ने अपके पत्र पढ़े, और रथुमुस और सेमेलियुस जो मन्त्री थे, और और जो उनके साय नियुक्त थे, वे घुड़सवारोंकी एक टोली और बहुत सी सेनाएं ले कर यरूशलेम की ओर फुर्ती से निकले, और राज करनेवालोंको रोकने लगे। ; और यरूशलेम में मन्दिर का निर्माण फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक रुका रहा।

अध्याय 3

1 और जब दारा ने राज्य किया, तब उस ने अपक्की सारी प्रजा, और अपके सारे घराने, और मादै और फारस के सब हाकिमोंको बड़ी जेवनार दी।
2 और भारत से लेकर कूश तक के एक सौ सत्ताईस प्रान्तों के सब हाकिमों, हाकिमों और लेफ्टिनेंटों को, जो उसके अधीन थे।
3 और जब वे खा-पी चुके, और तृप्त होकर अपने घर चले गए, तब दारा राजा अपके शयनकक्ष में जाकर सो गया, और तुरन्त जाग गया।
4 तब तीन जवान जो राजा की लोय की रखवाली करनेवाले पहरुओंमें से थे, आपस में कहने लगे;
5 हम में से हर एक एक वाक्य कहे, अर्थात जो जय पाए, और जिसका वचन औरों से अधिक बुद्धिमान जान पड़े, उसे राजा दारा जय के चिन्ह में बड़े बड़े दान और बड़ी वस्तुएं देगा।
6 जैसे बैंजनी वस्त्र पहिनना, सोने का पीना, सोने का पहिनाना, सोने की लगाम वाला रथ, सूक्ष्म सनी के कपड़े की टोपी, गले में जंजीर।
7 और वह बुद्धि के कारण दारा के निकट बैठा करेगा, और उसका चचेरा भाई दारा कहलाएगा।
8 और तब हर एक ने अपना अपना वाक्य लिखकर उस पर मुहर लगाई, और राजा दारा के तकिए के नीचे रख दिया;
9 और कहा, जब राजा उठेगा, तो कुछ लेख उसे देंगे; और जिसके पक्ष का राजा और फारस के तीनों हाकिम यह निर्णय करेंगे कि उसका निर्णय सबसे बुद्धिमान है, उसी को विजय दी जाएगी, जैसा कि नियुक्त किया गया था।
10 पहले ने लिखा, शराब सबसे ताकतवर है।
11 दूसरे ने लिखा, राजा सबसे बलवान है।
12 तीसरे ने लिखा, स्त्रियां सब से अधिक बलवान हैं, परन्तु सब वस्तुओं में सत्य ही जयवन्त होता है।
13 जब राजा उठ खड़ा हुआ, तब उन्हों ने अपके लेख ले कर उसे सौंपे, और उस ने उनको पढ़कर सुनाया।
14 और उस ने भेज कर फारस और मादियोंके सब हाकिमोंऔर हाकिमोंऔर सरदारोंऔर सरदारोंऔर सरदारोंको बुलवाया;
15 और उसे न्याय के राज सिंहासन पर बैठाया; और उनके सामने रचनाएँ पढ़ी गईं।
16 और उस ने कहा, जवानोंको बुलाओ, और वे अपना अपना दोष बता देंगे। इसलिए उन्हें बुलाया गया, और वे अंदर आये।
17 और उस ने उन से कहा, उस लेख के विषय में अपना अपना मन हमें बता दो। फिर सबसे पहले शुरू हुआ, जिसने शराब की ताकत के बारे में बात की थी;
18 और उस ने योंकहा, हे मनुष्यों, दाखमधु कितना तीव्र है! यह उन सभी लोगों को ग़लती का कारण बनता है जो इसे पीते हैं:
19 इस से राजा और अनाथ दोनों का मन एक जैसा हो जाता है; दास और स्वतंत्र मनुष्य का, कंगाल और धनवान का;
20 वह हर एक विचार को आनन्द और आनन्द में बदल देता है, यहां तक कि मनुष्य को न तो दु:ख और न कर्ज़ की सुधि रहती है।
21 और वह हर एक मन को धनी कर देता है, यहां तक कि मनुष्य न तो राजा को स्मरण रखता है और न हाकिम को; और यह सब बातें प्रतिभा के अनुसार बोलने को तैयार करता है:
22 और जब वे अपने प्यालों में डूब जाते हैं, तो मित्रों और भाइयों से अपना प्रेम भूल जाते हैं, और कुछ देर बाद तलवारें निकाल लेते हैं।
23 परन्तु जब वे दाखमधु के नशे में होते हैं, तो उनको स्मरण नहीं रहता, कि हम ने क्या किया है।
24 हे मनुष्यों, क्या दाखमधु सबसे प्रबल नहीं है, जो ऐसा करने को विवश करता है? और जब उसने इतना कहा, तो वह चुप रहा।

अध्याय 4

1 तब दूसरा, जिस ने राजा के बल की चर्चा की या, वह कहने लगा,
2 हे मनुष्यों, क्या जो मनुष्य समुद्र, और भूमि, और जो कुछ उन में हैं उन पर प्रभुता करते हैं, वे बल में बढ़ नहीं जाते?
3 तौभी राजा अधिक पराक्रमी है; क्योंकि वह इन सब वस्तुओं का स्वामी है, और उन पर प्रभुता रखता है; और जो कुछ वह उन्हें आज्ञा देता है वही वे करते हैं।
4 यदि वह उन्हें एक दूसरे से युद्ध करने को कहे, तो वे ऐसा ही करते हैं; यदि वह उन्हें शत्रुओं के विरूद्ध भेजे, तो वे जाकर पहाड़ों की शहरपनाह और गुम्मटों को ढा देते हैं।
5 वे घात करते और मारे जाते हैं, और राजा की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते; यदि वे जय पाते हैं, तो लूट का माल और सब वस्तुएं राजा के पास ले आते हैं।
6 इसी प्रकार जो लोग न तो योद्धा हैं, और न लड़ाई से कुछ काम रखते हैं, परन्तु खेती करते हैं, और जो कुछ उन्होंने बोया है उसे काट लेते हैं, और उसे राजा के पास ले आते हैं, और राजा को कर देने के लिये एक दूसरे पर दबाव डालते हैं।
7 तौभी वह एक ही मनुष्य है; यदि वह घात करने की आज्ञा दे, तो घात करते हैं; यदि वह छोड़ देने की आज्ञा दे, तो वे छोड़ देते हैं;
8 यदि वह मारने की आज्ञा दे, तो वे मारते हैं; यदि वह उजाड़ने की आज्ञा देता है, तो वे उजाड़ देते हैं; यदि वह बनाने की आज्ञा दे, तो वे बनाते हैं;
9 यदि वह काटने की आज्ञा दे, तो वे काट डालते हैं; यदि वह पौधे लगाने का आदेश देता है, तो वे पौधे लगाते हैं।
10 इसलिथे उसकी सारी प्रजा और सेना उसकी आज्ञा मानती है; और वह लेटता, और खाता-पीता, और विश्राम करता है।
11 और वे उसके चारों ओर जागते रहते हैं, और कोई निकलकर अपना काम नहीं करने देता, और न किसी बात में उसकी आज्ञा टालते हैं।
12 हे मनुष्यों, जब राजा की आज्ञा मानी जाती है, तो वह क्योंकर पराक्रमी न होगा? और उसने अपनी जीभ पकड़ ली.
13 तब तीसरा जो स्त्रियों और सत्य के विषय में बोलता या, वह जोरोबाबेल था, बोलने लगा।
14 हे मनुष्यों, वह महान राजा नहीं है, न मनुष्यों की भीड़ है, न वह दाखमधु है जो उत्तम है; तो वह कौन है जो उन पर प्रभुता करता है, वा उन पर प्रभुता रखता है? क्या वे महिलाएं नहीं हैं?
15 स्त्रियां राजा को और समुद्र और भूमि पर प्रभुता करने वाली सारी प्रजा को संभालती हैं।

16 उन में से वे आए, और दाख की बारियां लगानेवालोंको पाला, और
जहां से दाखमधु निकलता है।
17 ये मनुष्योंके लिथे वस्त्र भी बनाते हैं; ये मनुष्यों के लिए महिमा लाते
हैं; और स्त्रियों के बिना पुरुष नहीं हो सकते।
18 हां, और यदि पुरूषों ने सोना, चान्दी, वा कोई अन्य अच्छी वस्तु
इकट्ठा की हो, तो क्या वे उस स्त्री से प्रेम नहीं करते जो सुन्दर और सुन्दर
हो?
19 और वे सब बातें छोड़ भी देते हैं, और मुंह खोलकर उस पर दृष्टि नहीं
करते; और क्या सब मनुष्य चाँदी, सोना, वा किसी भी अच्छी वस्तु से
बढ़कर उसकी ओर लालायित नहीं होते?
20 मनुष्य अपके पिता और अपके देश को छोड़कर अपक्की पत्नी से
मिला रहता है।
21 वह इस बात पर अड़ा है, कि अपनी पत्नी के साथ अपना जीवन
व्यतीत न करे। और न पिता, न माता, न देश को स्मरण रखता है।
22 इसी से तुम जान लो, कि स्त्रियां तुम पर प्रभुता करती हैं: क्या तुम
परिश्रम और परिश्रम नहीं करते, और सब कुछ स्त्री को देकर नहीं लाते?
23 हां, एक मनुष्य अपनी तलवार लेकर लूटने, और चोरी करने, और
समुद्र और नदियोंके पार जाने को जाता है;
24 और वह सिंह पर दृष्टि करके अन्धियारे में चला जाता है; और जब
वह चोरी, लूट, और लूट करता है, तो उसे अपने प्रेम के पास ले आता
है।
25 इसलिये पुरूष अपक्की पत्नी से पिता वा माता से भी अधिक प्रेम
रखता है।
26 हां, बहुत से लोग ऐसे हैं जो स्त्रियों के पीछे अपनी बुद्धि खो चुके हैं,
और उनके लिये दास बन गए हैं।
27 और स्त्रियों के कारण बहुत से लोग नाश हुए, उन्होंने पाप किया,
और पाप किया।
28 और क्या अब भी तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते? क्या राजा अपनी
शक्ति में महान नहीं है? क्या सभी क्षेत्र उसे छूने से नहीं डरते?
29 फिर भी मैं ने उसे और राजा की उपपत्नी अपामे को, जो अति सुन्दर
बार्टाकस की बेटी है, राजा की दाहिनी ओर बैठे हुए देखा,
30 और राजमुकुट को राजा के सिर पर से उतारकर अपने सिर पर
रखा; उसने अपने बाएँ हाथ से भी राजा पर प्रहार किया।
31 और इतने पर भी राजा ने मुंह खोलकर उसे देखा; यदि वह उस पर
हंसती, तो वह भी हंसता; परन्तु यदि वह उस पर कुछ अप्रसन्न होती, तो
राजा की ओर से उसकी चापलूसी की जाती थी, कि वह उसके साथ मेल
कर ले। दोबारा।
32 हे पुरूषों, यह कैसे हो सकता है, कि स्त्रियां ऐसा करते देखकर दृढ़
रहें?
33 तब राजा और हाकिमोंने एक दूसरे की ओर दृष्टि की; तब वह सत्य
बातें कहने लगा।
34 हे पुरूषों, क्या स्त्रियां बलवन्त नहीं? पृथ्वी महान है, स्वर्ग ऊंचा है,
सूर्य अपने मार्ग में तीव्र है, क्योंकि वह आकाश को चारों ओर से घेरता
है, और एक ही दिन में अपने मार्ग को अपने स्थान पर वापस ले आता
है।
35 क्या वह महान नहीं जो ये बातें बनाता है? इसलिए सत्य महान है,
और सभी चीज़ों से अधिक शक्तिशाली है।
36 सारी पृथ्वी सत्य के कारण जयजयकार करती है, और आकाश उसे
धन्य कहता है; उसके कारण सारे काम कांप उठते हैं, और कोई कुटिल
वस्तु उस से नहीं मिलती।
37 दाखमधु बुरा है, राजा दुष्ट है, स्त्रियां दुष्ट हैं, सब मनुष्य दुष्ट हैं, और
उनके सब दुष्ट काम ऐसे ही हैं; और उनमें कोई सच्चाई नहीं है; वे अपनी
अधर्मता से भी नाश होंगे।
38 जहां तक सत्य का प्रश्न है, वह कायम है, और सर्वदा बलवन्त है; यह
सर्वदा जीवित और विजयी रहता है।
39 उसके साथ कोई व्यक्ति या पुरस्कार स्वीकार नहीं किया जाता;
परन्तु वह धर्म के काम करती है, और सब अधर्म और दुष्ट कामों से दूर
रहती है; और सब मनुष्य उसके कामोंको अच्छा मानते हैं।
40 उसके न्याय में कुटिलता नहीं; और वह सभी युगों की ताकत,
साम्राज्य, शक्ति और महिमा है। सत्य का परमेश्वर धन्य है।
41 और इसके साथ ही वह शांत हो गया । और सब लोग चिल्ला
चिल्लाकर कहने लगे, सत्य महान है, और सब वस्तुओं में प्रबल है।
42 तब राजा ने उस से कहा, जो कुछ तू लिखे में लिखा है उस से अधिक
जो तू चाहता है वह मांग, और हम तुझे दे देंगे, क्योंकि तू सब से अधिक
बुद्धिमान निकला है; और तू मेरे पास बैठेगा, और मेरा चचेरा भाई
कहलाएगा।
43 तब उस ने राजा से कहा, अपनी उस मन्नत को स्मरण कर, जो तू ने
अपने राज्य में आने के समय यरूशलेम के बसाने की मानी थी।
44 और जितने पात्रों को कुसू ने बाबुल के नाश करने की शपथ खाकर
यरूशलेम से निकाल लिया या अलग कर दिया था, उन सभों को वापस
वहीं भेज देना।
45 तू ने उस मन्दिर को बनाने की भी शपथ खाई है, जिसे एदोमियों ने
कसदियों द्वारा यहूदिया को उजाड़ दिए जाने के समय जला दिया था।
46 और अब, हे प्रभु राजा, यह वह है जो मैं चाहता हूं, और जो मैं तुझ से
चाहता हूं, और यह तेरी ओर से आने वाली राजसी उदारता है: मैं चाहता
हूं कि तू उस मन्नत को पूरा करे, जिसे तू अपने मुंह से पूरा करे। तू ने
स्वर्ग के राजा की मन्नत मानी है।
47 तब दारा राजा ने उठकर उसे चूमा, और सब खजांचियों, लेफ्टिनेंटों,
सरदारों और हाकिमों को उसके लिये चिट्ठियां लिखीं, कि उसे और उन
सब को जो यरूशलेम के बनाने को उसके संग यरूशलेम के बनाने को
गए थे, स्थान से मार्ग में पहुंचा दें। .
48 और उस ने सेलोसरिया और फीनीके के लेफ्टिनेंटों को, और
लिबानुस में रहनेवालों को भी चिट्ठियां लिखीं, कि वे लिबानुस से
यरूशलेम को देवदार की लकड़ी ले आएं, और उसके द्वारा नगर
बनाएं।
49 फिर उस ने उन सब यहूदियोंके लिये जो उसके राज्य से निकलकर
यहूदी हो गए थे, उनकी स्वतंत्रता के विषय में लिखा, कि कोई हाकिम,
कोई हाकिम, कोई लेफ्टिनेंट, या खजांची बलपूर्वक उनके द्वार में प्रवेश
न करे;
50 और उनका सारा देश बिना कर के स्वतन्त्र हो जाए; और एदोमियों
को यहूदियों के उन गांवों को दे देना चाहिए जो उस समय उनके पास
थे।
51 हां, जब तक मन्दिर का निर्माण न हो, तब तक उसके निर्माण के
लिये प्रति वर्ष बीस प्रतिभाएं दी जाएं;
52 और प्रति वर्ष वेदी पर होमबलि चढ़ाने के लिये प्रति वर्ष दस किक्कार
और दिया जाए, जैसा कि उन्हें सत्रह चढ़ाने की आज्ञा मिली थी।
53 और जितने लोग बाबुल से नगर बनाने को आए थे, उन सभों को,
और उनके वंश को, और सब याजकों को, जो यहां से चले गए थे,
स्वतन्त्रता दी जाए।
54 उन्होंने विषय में भी लिखा। आरोप, और पुजारियों के वस्त्र जिनमें वे
सेवा करते हैं;
55 और इसी प्रकार लेवियोंको जो कुछ दिया जाए वह भी उस दिन तक
दिया जाए, जब तक कि भवन पूरा न हो जाए, और यरूशलेम न बस
जाए।
56 और उस ने नगर के सब रखवालोंको पेंसन और मजदूरी देने की
आज्ञा दी।
57 और जितने पात्र कुसू ने अलग करके रख दिए थे, उन सभोंको उस
ने बाबेल से विदा कर दिया; और जो कुछ कुसू ने आज्ञा दी थी, वही पूरा
करने की आज्ञा दी, और यरूशलेम को भेज दिया।
58 और जब वह जवान निकला, तो यरूशलेम की ओर स्वर्ग की ओर
मुंह करके स्वर्ग के राजा की स्तुति करने लगा।

59 और कहा, तुझ से जय, तुझ से बुद्धि, और महिमा तेरी ही से निकलती है, और मैं तेरा दास हूं।
60 तू धन्य है, जिसने मुझे बुद्धि दी; क्योंकि हे हमारे पितरोंके परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं।
61 तब वह चिट्ठियां लेकर बाहर चला गया, और बाबुल में आकर अपने सब भाइयोंसे इसका समाचार सुनाया।
62 और उन्होंने अपने पितरोंके परमेश्वर की स्तुति की, क्योंकि उस ने उन्हें स्वतंत्रता और स्वतंत्रता दी थी
63 कि चढ़ाई करके यरूशलेम को और उस भवन को जो उसके नाम से कहलाता है, बनाएं; और वे सात दिन तक बाजे और आनन्द के बाजे बजाते हुए जेवनार करते रहे।

अध्याय 5

1 इसके बाद पितरोंके घरानोंके मुख्य पुरूष अपके गोत्रोंके अनुसार चुने गए, कि अपक्की स्त्रियोंऔर बेटे-बेटियोंऔर दास-दासियोंऔर पशुओंसमेत जाएं।
2 और दारा ने उनके साथ एक हजार सवार भेजे, और वे उन्हें यरूशलेम को यरूशलेम में यरूशलेम को लौटा ले आए, और उनके पास बाजे और बांसुलियां थीं।
3 और उनके सब भाई खेलने लगे, और उस ने उनको भी उनके साय ऊपर चढ़ाया।
4 और जो पुरूष अपके कुलोंके अनुसार अपके गोत्रोंके अनुसार चढ़ गए उनके नाम ये हैं।
5 याजक, हारून के पुत्र पीनीस के पुत्र: यीशु जोसेदेक का पुत्र, और सारैह का पुत्र, और यहोआसिम जो सोरोबेल का पुत्र, और सलातीएल का पुत्र, दाऊद के घराने में से फरेस के कुल में से था। यहूदा का गोत्र;
6 जिस ने फारस के राजा दारा के साम्हने उसके राज्य के दूसरे वर्ष के निसान अर्थात पहिले महीने में बुद्धिमान बातें कहीं।
7 और ये ही वे यहूदी हैं जो बंधुआई से छूटकर परदेशी होकर रहने लगे, और जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर बन्धुआई से बाबेल को ले गया था।
8 और वे यरूशलेम को और यहूदी के दूसरे भागोंको लौट गए, और जो जोरोबाबेल के साय यीशु, नहेम्याह, जकरयाह, और रीसायाह, एनेनियुस, और मरदोखियस के साय आए थे, वे सब अपने अपने नगर को लौट गए। बील्सरस, एस्फ़ारसस, रीलियस, रोइमस और बाना, उनके मार्गदर्शक।
9 और फ़ोरोस की सन्तान, इस जाति के लोगोंऔर उनके अधिपतियोंकी गिनती दो हजार एक सौ बहत्तर; सपात की सन्तान चार सौ बहत्तर,
10 एरेस की सन्तान सात सौ छप्पन:
11 फातमोआब की सन्तान दो हजार आठ सौ बारह;
12 एलाम की सन्तान एक हजार दो सौ चौवन: जतूल की सन्तान नौ सौ पैंतालीस: कोरबे की सन्तान सात सौ पांच: बानी की सन्तान छः सौ अड़तालीस।
13 बेबई की सन्तान छः सौ तेईस, सदास की सन्तान तीन हजार दो सौ बाईस।
14 अदोनीकाम की सन्तान छः सौ सड़सठ: बगोई की सन्तान दो हजार बासठ: अदीन की सन्तान चार सौ चौवन।
15 अतेरेज़ियास की सन्तान नब्बे, सीलन और अजेतास की सन्तान सत्तर सात; अज़ूरान की सन्तान चार सौ बत्तीस।
16 हनन्याह की सन्तान एक सौ एक, अरोम की सन्तान बत्तीस, और बस्सा की सन्तान तीन सौ तेईस: अजेफूरीत की सन्तान एक सौ दो।
17 मेटरस की सन्तान तीन हजार पांच, बैत्लोमोन की सन्तान एक सौ तेईस।
18 नतोफा के पचपन, अनातोत के एक सौ अट्ठाईस, बेतसामोस के बयालीस।
19 किर्यत्यारियुस के वंश पच्चीस, कफीरा और बेरोत के वंश सात सौ तैंतालीस: पीरा के वंश सात सौ।
20 चादिय्याह और अम्मीदोई के वंश में से चार सौ बाईस, और सिरामा और गबदेस में से जो छः सौ बाईस एक हुए।
21 मकालोन की सन्तान एक सौ बाईस, बेतोलियुस की सन्तान बावन: नफीस की सन्तान एक सौ छप्पन।
22 कलमोलुस और ओनुस की सन्तान सात सौ पच्चीस, यरेखुस की सन्तान दो सौ पैंतालीस।
23 हन्ना की सन्तान तीन हजार तीन सौ तीस।
24 याजकोंमें से यीशु के पुत्र यद्दू की सन्तान, सनासिब की सन्तान में से नौ सौ बहत्तर, और मेरुत की सन्तान एक हजार बावन।
25 फस्सारोन की सन्तान एक हजार सैंतालीस, और कर्म्मे की सन्तान एक हजार सत्रह।
26 और लेवीय येशु, और कैडमीएल, बानूअस, और सुदियाह के पुत्र चौहत्तर।
27 पवित्र गवैये, आसाप की सन्तान एक सौ अट्ठाईस।
28 द्वारपालोंने अर्यात् सलूम की सन्तान, जातल की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, दकोबी की सन्तान, तेता की सन्तान, सामी की सन्तान, सब मिलाकर एक सौ उनतीस।
29 मन्दिर के सेवक: एसाव की सन्तान, असिफा की सन्तान, ताबाओत की सन्तान, सेरास की सन्तान, सूद की सन्तान, फिलास की सन्तान, लाबाना की सन्तान, ग्रेबा की सन्तान,
30 अकुआ के पुत्र, उता के पुत्र, केताब के पुत्र, अगाबा के पुत्र, सुबै के पुत्र, अनान के पुत्र, कथुआ के पुत्र, गद्दूर के पुत्र,
31 ऐरूस की सन्तान, दैसान की सन्तान, नोएबा की सन्तान, चासेबा की सन्तान, गाजेरा की सन्तान, अजिया की सन्तान, पीनीस की सन्तान, अजारे की सन्तान, बस्तै की सन्तान, आसना की सन्तान मीनी की सन्तान, नफीसी की सन्तान, अकूब की सन्तान, अकीफा की सन्तान, अश्शूर की सन्तान, फरासीम की सन्तान, बासलोत की सन्तान,
32 मीदा के पुत्र, कूथा के पुत्र, चरेआ के पुत्र, चरकस के पुत्र, एसेरेर के पुत्र, थोमोई के पुत्र, नासिथ के पुत्र, अतीफा के पुत्र।
33 सुलैमान के दासोंकी सन्तान, अजापयोन की सन्तान, फरीरा की सन्तान, यैली की सन्तान, लोसोन की सन्तान, इस्राएल की सन्तान, सपेत की सन्तान,
34 हागिया के पुत्र, फेराकारेत के पुत्र, साबी के पुत्र, सरोथी के पुत्र, मासियाह के पुत्र, गार के पुत्र, अद्दुस के पुत्र, सूबा के पुत्र, अपेर्रा के पुत्र, बारोदीस के पुत्र सबात की सन्तान, अल्लोम की सन्तान।
35 मन्दिर के सब हाकिम और सुलैमान के सेवकों के बेटे तीन सौ बहत्तर थे।
36 ये थर्मेलेत और थेलेरस से आए, चराथलार ने उनका नेतृत्व किया, और अलार ने;
37 और न तो वे अपके कुलोंऔर अपके वंश को प्रगट कर सके, कि वे इस्राएल में से कैसे हैं; अर्थात लादान की सन्तान, और बान की सन्तान, और नकोदान की सन्तान छ: सौ बावन।
38 और याजकों में से जिन ने याजक पद पर अधिकार कर लिया, और उनका पता न चला, अर्यात् ओबदिया की सन्तान, अक्कोस की सन्तान, और अद्दुस की सन्तान, जिस ने बरजेलुस की एक बेटी औगिया से ब्याह किया, और उसका नाम उसके नाम पर रखा गया।
39 और जब उन पुरूषोंके कुल का विवरण रजिस्टर में ढूंढ़ा गया, और न मिला, तब उनको याजकपद के काम से हटा दिया गया।
40 क्योंकि नहेम्याह और अतर्याह ने उन से कहा, कि जब तक उपदेश और सच्चाई पहिने हुए कोई महायाजक न उठे, तब तक पवित्र वस्तुओं में भागी न होना।
41 इस्राएल में से बारह वर्ष वा उससे अधिक अवस्या के सब पुरूष चालीस हजार थे, और दास-दासियां दो हजार तीन सौ साठ थीं।
42 उनके दास और दासियां सात हजार तीन सौ सैंतालीस थे; गानेवाले और गानेवालियां दो सौ पैंतालीस।

43 चार सौ पैंतीस ऊँट, सात हजार छत्तीस घोड़े, दो सौ पैंतालीस खच्चर, पाँच हजार पाँच सौ पच्चीस जुआरी।
44 और उनके पितरोंके मुख्य पुरूषोंमें से एक एक ने यरूशलेम के परमेश्वर के भवन में आकर मन्नत मानी, कि इस भवन को अपके स्यान में फिर अपनी अपनी शक्ति के अनुसार बसाएंगे।
45 और पवित्र काम के भण्डार में एक हजार तोड़े सोना, पांच हजार चान्दी, और एक सौ याजकों के वस्त्र देना।
46 और यरूशलेम और देहात में याजक और लेवीय और साधारण लोग, और गवैये और द्वारपाल इसी प्रकार निवास करते थे; और सारे इस्राएल अपने अपने गांवों में।
47 परन्तु जब सातवां महीना आया, और इस्राएली अपने अपने स्यान पर थे, तब सब एक मन होकर पहिले फाटक के खुले स्यान में जो पूर्व की ओर है, इकट्ठे हुए।
48 तब योसेदेक का पुत्र यीशु, और उसके भाई याजक, और सलातीएल का पुत्र सोरोबाबेल, और उसके भाई खड़े हुए, और इस्राएल के परमेश्वर की वेदी तैयार की।
49 और उस पर होमबलि चढ़ाना, जैसा कि परमेश्वर के भक्त मूसा की पुस्तक में स्पष्ट रूप से आज्ञा दी गई है।
50 और उस देश की अन्यजातियों में से लोग उनके पास इकट्ठे हुए, और उन्होंने उसके स्यान पर वेदी बनाई, क्योंकि उस देश की सब जातियां उन से बैर रखती थीं, और उन पर अन्धेर करती थीं; और उन्होंने समय के अनुसार बलिदान चढ़ाए, और सबेरे और सांझ दोनों समय यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाए।
51 और उन्होंने व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार मण्डपोंका पर्ब्ब माना, और नियम के अनुसार प्रति दिन बलि चढ़ाया करते थे।
52 और उसके बाद नित्य अन्नबलि, और विश्रामदिनों, और नये चांद के दिनों, और सब पवित्र पर्वोंके मेलबलि।
53 और जितनों ने परमेश्वर के लिये मन्नत मानी थी वे सब सातवें महीने के पहिले दिन से परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाने लगे, तौभी यहोवा का मन्दिर अब तक नहीं बना था।
54 और उन्होंने राजमिस्त्रियों और बढ़इयों को आनन्द के साथ रूपया, भोजन और पेय दिया।
55 और सीदोन और सोर के लोगोंको उन्होंने कैर दिया, कि वे फारस के राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार लिबानुस से देवदार के वृक्ष झुलाकर याफा के जंगल में ले जाएं।
56 और उसके यरूशलेम में परमेश्वर के भवन में आने के दूसरे वर्ष और दूसरे महीने में सलातीएल का पुत्र जोरोबाबेल, और योसेदेक का पुत्र यीशु, और उनके भाई, और याजक, और लेवीय, और जितने लोग थे, वे सब वहां आने लगे। बन्धुवाई से छूटकर यरूशलेम को आओ;
57 और उन्होंने यहूदिया और यरूशलेम में पहुंचने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहिले दिन में परमेश्वर के भवन की नेव डाली।
58 और उन्होंने बीस वर्ष की आयु के लेवियोंको यहोवा के कामोंके ऊपर नियुक्त किया। तब यीशु और उसके बेटे और भाई, और उसके भाई कैडमीएल, और मदियाबुन के बेटे, और एल्यादून के बेटे यहोदा के बेटे, और उनके बेटे और भाई, सब लेवीय, एक मन होकर काम करनेवाले खड़े हुए। परमेश्वर के घर में कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए परिश्रम करना। इसलिये कारीगरों ने यहोवा का मन्दिर बनाया।
59 और याजक अपने वस्त्र पहिने हुए बाजे और तुरहियां लिये हुए खड़े थे; और आसाप के पुत्र लेवियोंके पास झांझ थे,
60 इस्राएल के राजा दाऊद की आज्ञा के अनुसार धन्यवाद के गीत गाओ, और यहोवा की स्तुति करो।
61 और उन्होंने ऊंचे शब्द से यहोवा की स्तुति में गीत गाया, क्योंकि उसकी करूणा और महिमा सारे इस्राएल पर सर्वदा बनी रहेगी।
62 और सब लोगोंने तुरहियां बजाईं, और ऊंचे शब्द से जयजयकार किया, और यहोवा के भवन की उन्नति के लिये यहोवा के धन्यवाद के गीत गाए।
63 और याजकोंऔर लेवियोंऔर उनके पितरोंके मुख्य पुरूषोंमें से जो पुरनिये पहिले भवन को देखते थे, वे भी रोते और चिल्लाते हुए इस भवन के पास आए।
64 परन्तु बहुतेरे तुरहियां और आनन्द लेकर ऊंचे शब्द से चिल्लाए,
65 यहां तक कि लोगों के रोने के लिथे तुरहियां सुनाई न देतीं, तौभी भीड़ के लिथे ऐसा अद्भुत बजता या, यहां तक कि दूर दूर तक सुनाई देता।
66 इसलिये जब यहूदा और बिन्यामीन के गोत्र के शत्रुओं ने यह सुना, तो वे समझ गए कि तुरहियों के उस शब्द का क्या अर्थ है।
67 और उन्होंने जान लिया कि बन्धुवाई में से उन्होंने ही इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये मन्दिर बनाया है।
68 तब वे जोरोबाबेल और यीशु और घरानोंके मुख्य पुरूषोंके पास गए, और उन से कहा, हम तुम्हारे साय मिलकर निर्माण करेंगे।
69 क्योंकि हम भी तुम्हारी नाईं अपने प्रभु की आज्ञा मानते हैं, और अश्शूरियों के राजा अजबज़ारेत के दिनों से जो हमें यहां ले आया है, उसके लिये बलिदान करते आए हैं।
70 तब जोरोबाबेल और यीशु और इस्राएल के घरानोंके मुख्य पुरूषोंने उन से कहा, हमारे परमेश्वर यहोवा के लिये एक भवन बनाना हमारा और तुम्हारा काम नहीं है।
71 फारस के राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार हम आप ही इस्राएल के यहोवा के लिथे निर्माण करेंगे।
72 परन्तु उस देश के अन्यजातियोंने यहूदिया के निवासियोंपर भारी पड़कर उनको रोक रखा, और उनके निर्माण में बाधा डाली;
73 और जब तक राजा कुस्रू जीवित रहा, तब तक उन्होंने अपनी गुप्त युक्तियों, और बड़े अनुनयों, और उपद्रवों के द्वारा भवन के तैयार होने में रुकावट डाली; इस प्रकार दारा के राज्यकाल तक दो वर्ष तक वे निर्माण करने से रुके रहे।

अध्याय 6

1 दारा अग्गुस और अद्दो के पुत्र जकरयाह के राज्य के दूसरे वर्ष में भविष्यद्वक्ताओं ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से, जो उन पर था, यहूदी भाषा में और यरूशलेम में यहूदियों से भविष्यद्वाणी की।
2 तब सलातीएल का पुत्र जोरोबाबेल और योसेदेक का पुत्र यीशु उठ खड़े हुए, और यरूशलेम में यहोवा का भवन बनाने लगे, और यहोवा के भविष्यद्वक्ता उनके संग होकर उनकी सहायता करते थे।
3 उसी समय अराम और फीनीके का हाकिम सिसिन्नस, सत्रबुज़ानेस और उसके साथियोंसमेत उनके पास आकर कहने लगा,
4 तुम किस की आज्ञा से यह घर और यह छत बनाते, और अन्य सब काम करते हो? और वे कारीगर कौन हैं जो ये काम करते हैं?
5 तौभी यहूदियोंके पुरनियोंपर अनुग्रह हुआ, क्योंकि यहोवा ने बन्धुओंपर सुधि ली थी;
6 और जब तक दारा को उनके विषय में संकेत न दिया गया, और उत्तर न मिला, तब तक उन्हें बनाने से न रोका गया।
7 उन चिट्ठियों की नकल जो अराम और फीनीके के हाकिम सिसिन्नेस और सथराबुजानेस ने और उनके साथियों ने जो अराम और फीनीके के हाकिम थे, लिखकर दारा के पास भेजीं; राजा दारा को नमस्कार:
8 हमारे प्रभु राजा को सब बातें मालूम हो, कि जब हम यहूदिया देश में आएं, और यरूशलेम नगर में प्रवेश करें, तो हम को यरूशलेम नगर में बन्धुवाई में से पुरनिये यहूदी मिले।
9 यहोवा के लिये एक बड़ा और नया भवन बनाना, और गढ़े हुए और बहुमूल्य पत्थरों का, और दीवारों पर पहले से बिछाई हुई लकड़ी का।
10 और वे काम बड़ी फुर्ती से किए जाते हैं, और वह काम उनके हाथ में बड़ी तेजी से चलता है, और वह पूरी महिमा और परिश्रम से बनाया जाता है।
11 तब हम ने उन पुरनियोंसे पूछा, तुम यह भवन किस की आज्ञा से बनाते हो, और इन कामोंकी नेव डालते हो?

12 इसलिये हम ने इस आशय से कि हम तुझे लिखकर ज्ञान दें, हम ने उन से जो मुख्य कर्ताधर्ता थे, बिनती की, और उन से उनके मुख्य पुरूषों के नाम लिखित में मांगे।
13 तब उन्होंने हम को यह उत्तर दिया, कि हम यहोवा के दास हैं, जिस ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया।
14 और यह भवन बहुत वर्ष पहिले इस्राएल के एक बड़े और सामर्थी राजा ने बनवाया, और तैयार हो गया।
15 परन्तु जब हमारे पुरखाओं ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया, और इस्राएल के यहोवा जो स्वर्ग में है, उसके विरूद्ध पाप किया, तब उस ने उनको कसदियोंके बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के वश में कर दिया;
16 और उस ने घर को ढा दिया, और जला दिया, और लोगोंको बन्धुवाई करके बाबेल को ले गया।
17 परन्तु बाबेल देश पर राजा कुस्रू के राज्य करने के पहिले वर्ष में कुस्रू राजा ने इस भवन को बनाने की आज्ञा दी।
18 और सोने और चान्दी के जो पवित्र पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के भवन में से निकालकर अपने मन्दिर में रखे थे, उन्हीं को कुस्रू राजा ने बाबुल के मन्दिर में से निकालकर फिर सौंप दिया। ज़ोरोबाबेल और शासक सनाबासारस को,
19 और आज्ञा दी, कि वह उन पात्रोंको उठाकर यरूशलेम के मन्दिर में रखे; और उसके स्थान पर यहोवा का मन्दिर बनाया जाए।
20 तब उसी सनबास्सर ने इधर आकर यरूशलेम में यहोवा के भवन की नेव डाली; और उस समय से लेकर आज तक यह एक इमारत बनी हुई है, यह अभी तक पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।
21 इसलिये अब यदि राजा को यह अच्छा लगे, तो राजा कुस्रू के अभिलेखों में से खोजा जाए।
22 और यदि यह जान लिया जाए, कि यरूशलेम में यहोवा का भवन राजा कुस्रू की सम्मति से बनाया गया है, और यदि हमारा स्वामी राजा ऐसी ही सोच रखता हो, तो वह हमें इसका संकेत दे।
23 तब राजा दारा को बाबेल के अभिलेखों में से ढूंढ़ने की आज्ञा दी गई, और एकबताने राजमहल में जो मादी देश में है, वहां एक पुस्तक मिली, जिस में ये बातें लिखी हुई थीं।
24 कुस्रू के राज्य के पहिले वर्ष में कुस्रू राजा ने आज्ञा दी, कि यरूशलेम में यहोवा का भवन फिर बनाया जाए, जिस में नित्य आग में यज्ञ किया जाता है।
25 उसकी ऊंचाई साठ हाथ और चौड़ाई साठ हाथ की हो, और तीन कतारें खुदे हुए पत्थरों की हों, और एक कतार उस देश की नई लकड़ी की हो; और उसका व्यय राजा कुस्रू के भवन से दिया जाए:
26 और यहोवा के भवन के जो पवित्र पात्र सोने और चान्दी के हैं, जिन्हें नबूकदनेस्सर यरूशलेम के भवन में से निकालकर बाबुल में ले आया था, वे यरूशलेम के भवन में फिर स्थापित किए जाएं, और उसी स्थान पर रखे जाएं। वे पहले थे.
27 और उस ने यह भी आज्ञा दी, कि अराम और फीनीके के हाकिम सिसिन्नेस, और सथ्राबुजनेस, और उनके साथी, और जो अराम और फीनीके में हाकिम ठहराए गए थे, वे चौकस रहें, कि स्थान में दखल न दें, पर उसके सेवक जोरोबाबेल को ऐसा करने दें। प्रभु, और यहूदिया के हाकिम, और यहूदियों के पुरनियों, कि उस स्थान में यहोवा का भवन बनाएं।
28 मैं ने उसे फिर पूरा बनाने की भी आज्ञा दी है; और जब तक यहोवा का भवन पूरा न हो जाए, तब तक वे यहूदियों की बन्धुवाई में से लोगों की सहायता करने में तत्पर रहते हैं:
29 और कलोशूर और फीनीके के कर में से यहोवा के बलिदानोंके लिथे इन पुरूषोंको अर्यात् बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चोंके लिथे जोरोबाबेल हाकिम को दिया जाए;
30 और अन्न, नमक, दाखमधु, और तेल भी, और वह भी यरूशलेम के याजकों के अनुसार प्रति वर्ष बिना किसी प्रश्न के निरन्तर व्यय किया जाता रहे।
31 कि राजा और उसके पुत्रोंके लिथे परमप्रधान परमेश्वर को भेंट चढ़ाएं, और वे अपके प्राण के लिथे प्रार्थना करें।
32 और उस ने आज्ञा दी, कि जो कोई अपराध करे, वा ऊपर कही गई या लिखी हुई किसी बात को तुच्छ ठहराए, उसके घर में से एक वृक्ष उखाड़ लिया जाए, और उस पर फाँसी दी जाए, और उसकी सारी सम्पत्ति राजा के लिये जब्त कर ली जाए।
33 इसलिये यहोवा, जिस का नाम वहां पुकारा जाता है, हर उस राजा और जाति को सत्यानाश कर दे, जो यरूशलेम में यहोवा के भवन को रोकने या उसे हानि पहुंचाने के लिये हाथ बढ़ाता है।
34 मुझ दारा राजा ने यह ठहराया है, कि इन कामों के अनुसार परिश्रम से किया जाए।

अध्याय 7

1 तब सिलोसिरिया और फीनीके का हाकिम सिसिन्नेस, और सथ्राबुज़ानेस और उसके साथी राजा दारा की आज्ञा मानकर चले।
2 और पवित्र कामों का बहुत ध्यान से निरीक्षण किया, और यहूदियोंके पुरनियोंऔर मन्दिर के हाकिमोंकी सहायता की।
3 और इस प्रकार पवित्र काम सफल हुए, जब अग्गियुस और जकरयाह भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करने लगे।
4 और उन्होंने ये काम इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा से, और फारस के राजा कुस्रू, दारा, और अर्तक्षत्र की सम्मति से पूरा किया।
5 और फारस के राजा दारा के राज्य के छठे वर्ष के अदार महीने के तीसरे बीसवें दिन में पवित्र भवन का काम पूरा हुआ।
6 और इस्राएलियोंने अर्यात् याजकोंऔर लेवियोंऔर और जो बन्धुवाई में से उन में मिल गए थे, उन्होंने मूसा की पुस्तक में लिखी हुई बातोंके अनुसार किया।
7 और यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा के लिथे उन्होंने एक सौ बैल, दो सौ मेढ़े, और चार सौ भेड़ के बच्चे चढ़ाए;
8 और इस्राएल के गोत्रोंके मुख्य पुरुषोंकी गिनती के अनुसार सब इस्राएल के पाप के लिथे बारह बकरे।
9 पुजारी भी और लेवियों ने अपने भोज के अनुसार, इज़राइल के भगवान देवता की सेवा में, मूसा की पुस्तक के अनुसार, और हर गेट पर पोर्टर्स के अनुसार, उनके निद्रों में खड़े हो गए।
10 और याजकों और लेवियोंके पवित्रा ठहराए जाने के बाद पहिले महीने के चौदहवें दिन को बंधुआई में आए इस्राएलियोंने फसह माना।
11 जो बन्धुवाई में से थे वे सब एक साथ पवित्र न किए गए, परन्तु सब लेवीय एक साथ पवित्र किए गए।
12 और इस प्रकार उन्होंने उन सब बन्धुओंके लिथे, और अपके भाई याजकोंऔर अपके अपके लिथे फसह का पर्ब्ब चढ़ाया।
13 और जो इस्राएली बन्धुवाई से छूटकर आए थे, अर्यात् उन सभोंने भी, जो उस देश के निवासियोंके घृणित कामोंसे अलग होकर यहोवा की खोज में थे, भोजन किया।
14 और वे सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मानते रहे, और यहोवा के साम्हने आनन्द करते रहे।
15 क्योंकि उस ने अश्शूर के राजा की युक्ति को उनकी ओर फेर दिया था, कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के कामों में उन्हें दृढ़ करे।

अध्याय 8

1 और इन बातों के बाद, जब फारस का राजा अर्तक्षत्र राज्य करने लगा, तो एस्द्रस जो सरायाह का पुत्र, यह एजेरीयाह का पुत्र, यह हेलकियाह का पुत्र, यह सलूम का पुत्र, आया।
2 सद्दूक का पुत्र, अकीतोब का पुत्र, अमर्याह का पुत्र, एजियास का पुत्र, मेरेमोत का पुत्र, जरयाह का पुत्र, साविया का पुत्र, बोक्कस का पुत्र, अबीसुम का पुत्र, पीनीस का पुत्र एलीआजर का पुत्र, हारून महायाजक का पुत्र।

3 वह एस्द्रस जो मूसा की व्यवस्था इस्राएल के परमेश्वर की ओर से दी गई थी, उस में बहुत निपुण होकर शास्त्री होकर बाबुल से आया।
4 और राजा ने उसका आदर किया; क्योंकि उसके सब निवेदनोंपर उस पर अनुग्रह की दृष्टि हुई।
5 और इस्राएलियोंमें से कुछ लेवीय याजक, और पवित्र गायक, द्वारपाल, और मन्दिर के सेवक भी उसके संग यरूशलेम को गए।
6 अर्तक्षत्र के राज्य के सातवें वर्ष के पांचवें महीने में, यह राजा का सातवां वर्ष था; क्योंकि पहिले महीने के पहिले दिन को वे बाबुल से निकलकर उस सुखमय यात्रा के अनुसार जो यहोवा ने उनको दी या, यरूशलेम को आए।
7 क्योंकि एस्द्रस बहुत ही निपुण था, यहां तक कि उस ने यहोवा की व्यवस्था और आज्ञाओं में से कुछ भी न छोड़ा, वरन सारे इस्राएल को विधियां और नियम सिखाता था।
8 अब उस आज्ञा की प्रतिलिपि, जो राजा अर्तक्षत्र की ओर से लिखी गई, और यहोवा की व्यवस्था के याजक और वाचक एस्द्रास के पास पहुंची, यह है;
9 अर्तक्षत्र राजा ने एस्द्रस याजक और यहोवा की व्यवस्था के पढ़नेवाले को नमस्कार भेजा।
10 मैं ने कृपा करने का निश्चय करके आज्ञा दी है, कि यहूदियोंकी जाति में से और याजकोंऔर लेवियोंमें से जो हमारे देश में हों, जो इच्छुक और इच्छुक हों वे तुम्हारे संग यरूशलेम को चलें।
11 इसलिये जितनों का उस पर मन हो, वे तेरे संग चले जाएं, जैसा कि मुझे और मेरे सातों मित्रो, अर्थात सलाहकारोंको भाया है;
12 ताकि वे यहूदिया और यरूशलेम के मामलों पर प्रभु की व्यवस्था के अनुसार ध्यान दें;
13 और जो भेंटें इस्राएल के यहोवा के लिथे मैं ने और मेरे मित्रोंने मन्नत मानी है उनको यरूशलेम में ले जाना, और जितना सोना चान्दी बाबुल के देश में मिले सब को यरूशलेम में यहोवा के पास ले जाना।
14 और जो प्रजा में से उनके परमेश्वर यहोवा के यरूशलेम के मन्दिर के लिये दिया जाए, वह भी दिया जाए, और बैलों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों, और उनके साम्हने के लिये चान्दी और सोना इकट्ठा किया जाए;
15 इसलिथे कि वे अपके परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जो यरूशलेम में है यहोवा के लिथे बलिदान चढ़ाएं।
16 और जो कुछ तू और तेरे भाई सोने चान्दी से करना चाहें वह अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना।
17 और यहोवा के जो पवित्र पात्र तुझे यरूशलेम में तेरे परमेश्वर के मन्दिर के काम आने के लिथे दिए गए हैं उन को यरूशलेम में अपने परमेश्वर के साम्हने रखना।
18 और जो कुछ तू अपने परमेश्वर के भवन के काम के लिथे स्मरण रखे, उसे राजा के भण्डार में से देना।
19 और मुझ अर्तक्षत्र राजा ने अराम और फीनीके के भण्डारोंके रखवालोंको यह आज्ञा दी है, कि एस्द्रस याजक और परमप्रधान परमेश्वर की व्यवस्था का पढ़नेवाला जो कुछ भेजे, वह तुरन्त उसे दे दें।
20 अर्थात सौ मन चान्दी, और सौ कोर गेहूं, और सौ मन दाखमधु, और अन्य वस्तुएं बहुतायत से।
21 परमप्रधान परमेश्वर के लिये सब काम परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार यत्नपूर्वक किया जाए, ऐसा न हो कि राजा और उसके पुत्रों के राज्य पर क्रोध भड़के।
22 मैं तुझे यह भी आज्ञा देता हूं, कि याजकों, या लेवियों, या पवित्र गवैयों, या द्वारपालों, या मन्दिर के सेवकों, या इस मन्दिर में काम करनेवालों में से किसी से न कर लेना, और न कोई अन्य भार लेना, और किसी भी व्यक्ति को उन पर कुछ भी थोपने का अधिकार नहीं है।
23 और हे एस्द्रा, तू परमेश्वर की बुद्धि के अनुसार न्यायियों और न्यायियों को नियुक्त कर, कि वे सारे सीरिया और फेनीके में उन सभों का न्याय करें जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्था जानते हैं; और जो इसे जानते हों उन्हें तू न सिखाना।
24 और जो कोई तेरे परमेश्वर और राजा की व्यवस्था का उल्लंघन करेगा, वह दण्ड से दण्ड पाएगा, चाहे वह प्राणदण्ड से हो, या अन्य दण्ड से, चाहे धन के दण्ड से, चाहे कारावास से।
25 तब एस्द्रस मंत्री ने कहा, मेरे पितरोंका परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिस ने राजा के मन में ये बातें डालीं, कि यरूशलेम में उसके भवन की महिमा हो।
26 और उस ने राजा, और उसके मन्त्रियों, और उसके सब मित्रोंऔर सरदारोंके साम्हने मेरा आदर किया है।
27 इसलिथे मैं अपके परमेश्वर यहोवा की सहायता से हियाव बान्धा, और इस्राएल के पुरूषोंको अपके संग चलने के लिथे इकट्ठा कर लिया।
28 और अर्तक्षत्र राजा के राज्य में जो लोग बाबुल से मेरे संग चले थे, वे अपके अपके कुलोंके अनुसार और मुख्य पुरूषोंमें से ये ही हैं:
29 पीनीस की सन्तान में से गेर्सोन, ईतामार की सन्तान में से गमाएल, दाऊद की सन्तान में से लत्तुस, सेकन्याह का पुत्र।
30 फिरेस के वंश में से जकरयाह; और उसके साथ एक सौ पचास पुरूष गिने गए:
31 पहतमोआब के वंश में से ज़ारयाह का पुत्र एलियान्याह, और उसके संग दो सौ पुरूष थे।
32 ज़ातो के वंश में से यज़ेलुस का पुत्र सेकेन्याह, और उसके संग तीन सौ पुरूष; अदीन के वंश में से योनातान का पुत्र ओबेत, और उसके साय ढाई सौ पुरूष।
33 एलाम के वंश में से गोतोलियाह का पुत्र योशिय्याह और उसके संग सत्तर पुरूष;
34 सफतियाह के वंश में से मीकाएल का पुत्र जारयाह, और उसके संग सत्तर पुरूष।
35 योआब के वंश में से येजेलुस का पुत्र अबद्याह, और उसके साय दो सौ बारह पुरूष;
36 बनीद की सन्तान में से योसाफ्याह का पुत्र अस्सालिमोत, और उसके संग एक सौ साठ पुरूष;
37 बाबी के वंश में से बेबै का पुत्र जकरयाह और उसके संग अट्ठाईस पुरूष;
38 अस्तत के वंश में से अकातान का पुत्र योहानेस, और उसके संग एक सौ दस पुरूष;
39 अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे निकला, उसके ये नाम हैं, अर्यात् एलीपहलेत, और यहूदी, और सामायाह, और उनके साय सत्तर पुरूष हुए।
40 बागो के वंश में से इस्तलकुरूस का पुत्र ऊथी, और उसके संग सत्तर पुरूष।
41 और इन्हें मैं ने थेरस नाम नदी के पास इकट्ठा किया, जहां हम ने तीन दिन तक अपने तम्बू खड़े किए; और फिर मैं ने उनका निरीक्षण किया।
42 परन्तु जब मैं ने वहां याजकोंऔर लेवियोंमें से किसी को न पाया,
43 तब मैं ने एलीआजर, और इदूएल, और मसमान के पास भेजा;
44 और अलनातान, और ममयाह, और योरीबास, और नातान, यूनातान, जकरयाह, और मोसुल्लामोन, बड़े पुरूष और विद्वान।
45 और मैं ने उनको आज्ञा दी, कि सद्देऊस सरदार के पास जो भणडार का अधिकारी या, जाओ।
46 और उनको आज्ञा दी, कि दद्देयुस और उसके भाइयोंऔर उस स्यान के खजांचियोंसे कहो, कि हमारे पास ऐसे पुरूष भेजें जो यहोवा के भवन में याजक का काम कर सकें।
47 और हमारे प्रभु के बलवन्त हाथ से वे मोली की सन्तान में से जो लेवी का पोता, और इस्राएल का पोता, असेबेबिया और उसके पुत्रोंऔर भाइयोंमें से जो अठारह वर्ष के थे, कुशल पुरूषोंको हमारे पास ले आए।
48 और असेबिया, अन्नुस, और उसका भाई ओसायाह, और चन्नून की सन्तान में से बीस पुरूष हुए।
49 और मन्दिर के जो सेवक दाऊद ने ठहराए थे, और लेवियोंकी सेवा के मुख्य पुरूष, अर्यात् मन्दिर के दो सौ बीस सेवक, उनके नाम की सूची दिखाई गई।

50 और वहां मैं ने अपने प्रभु के साम्हने जवानोंके साम्हने उपवास की
मन्नत मानी, कि वह हमारे और हमारे साथियोंके लिथे, और हमारे
बालकोंऔर पशुओंके लिथे सुखमय यात्रा हो।
51 क्योंकि मुझे राजा से प्यादों, और सवारों, और अपने द्रोहियों से रक्षा
का उपाय पूछने में लज्जा आती थी।
52 क्योंकि हम ने राजा से कहा या, कि हमारे परमेश्वर यहोवा की शक्ति
उसके खोजनेवालोंके साय रहे, कि वह उनको सब प्रकार से सहाथता
दे।
53 और इन बातों के विषय में हम ने फिर अपके प्रभु से बिनती की, और
उसे हमारे लिथे अनुकूल पाया।
54 तब मैं ने याजकोंके मुख्य पुरूषोंमें से बारह को, अर्यात् एसेब्रियाह,
और अस्सनियाह, और उनके भाइयोंमें से दस पुरूषोंको अलग कर
दिया;
55 और जो सोना, चान्दी, और हमारे यहोवा के भवन के पवित्र पात्र राजा
और उसकी महासभा और हाकिमोंऔर सारे इस्राएल ने दिए थे, उनको
मैं ने तौल दिया।
56 और मैं ने उसे तौलकर उनको छ: सौ पचास किक्कार चान्दी, और
सौ किक्कार चान्दी के पात्र, और सौ किक्कार सोना दे दिया।
57 और सोने के बीस पात्र, और पीतल के बारह पात्र, जो सोने के समान
चमकते हुए, उत्तम पीतल के थे।
58 और मैं ने उन से कहा, तुम दोनों यहोवा के लिथे पवित्र हो, और पात्र
पवित्र हैं, और सोना और चान्दी हमारे पितरोंके प्रभु यहोवा की मन्नत है।
59 तुम जागते रहो, और उन्हें तब तक बचाए रखो जब तक तुम उन्हें
यरूशलेम में याजकों और लेवियोंके मुख्य पुरूषोंऔर इस्राएल के
घरानोंके मुख्य पुरूषोंके हाथ न पहुंचा दो, कि वे हमारे परमेश्वर के
भवन की कोठरियोंमें पहुंचा दें।
60 इसलिये याजक और लेवीय, जिनको सोना चान्दी और पात्र मिले थे,
उनको यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर में ले आए।
61 और पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने थेरस नदी से प्रस्थान
किया, और अपने प्रभु के उस बलवन्त हाथ के द्वारा, जो हमारे संग या,
यरूशलेम को आए; और हमारी यात्रा के आरम्भ से ही प्रभु ने हम को
सब शत्रुओं से बचाया, और इस प्रकार हम यरूशलेम आये।
62 और जब हम वहां तीन दिन तक रहे, तो चौथे दिन जो सोना और
चान्दी तौला गया था, वह हमारे प्रभु के भवन में ईरी के पुत्र मर्मोत याजक
को सौंप दिया गया।
63 और उसके संग पीनीस का पुत्र एलीआजर, और उनके साय येसू
का पुत्र योसाबाद, और सब्बन का पुत्र मोएत, लेवीय थे; सब गिनती और
तौल के अनुसार उनको सौंप दिए गए।
64 और उनका सारा तौल उसी घड़ी लिख लिया गया।
65 फिर जो लोग बंधुआई से छूटकर आए, उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के लिये सब इस्राएल के पीछे बारह बैल, और सोलह मेढ़े बलि
करके चढ़ाए।
66 और मेलबलि के लिये साठ बारह भेड़ के बच्चे, और बारह बकरे; वे
सब यहोवा के लिये बलिदान हैं।
67 और उन्होंने राजा की आज्ञाएं राजा के हाकिमों और सेलोसरिया और
फीनीके के हाकिमों को पहुंचाईं; और उन्होंने प्रजा और परमेश्वर के
मन्दिर का आदर किया।
68 जब ये बातें हो गईं, तो हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे,
69 इस्राएल की जाति ने अर्यात् हाकिमोंऔर याजकोंऔर लेवियोंने इस
देश के परदेशी लोगोंको, और कनानियों, हित्तियों, फेरेसियों,
यबूसियोंऔर मोआबियोंको अन्यजातियोंकी अशुद्धता से दूर न किया।
मिस्रवासी, और एदोमी।
70 क्योंकि उन्होंने और उनके बेटों ने अपनी बेटियोंसे ब्याह किया है,
और पवित्र वंश देश के परदेशी लोगोंमें मिल गया है; और इस मामले
की शुरुआत से ही शासक और महान लोग इस अधर्म के भागी रहे हैं।
71 और ये बातें सुनते ही मैं ने अपने वस्त्र और पवित्र वस्त्र फाड़ डाले,
और अपने सिर और दाढ़ी के बाल उखाड़ लिए, और उदास और बहुत
भारी होकर बैठ गया।
72 तब वे सब जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का वचन सुनकर प्रसन्न
हुए, मेरे पास इकट्ठे हुए, और मैं अधर्म के लिथे विलाप करता रहा; परन्तु
सांझ के बलिदान तक मैं उदास होकर बैठा रहा।
73 तब वस्त्र और पवित्र वस्त्र फाड़कर उपवास से उठना, और घुटने
टेककर, और हाथ यहोवा की ओर फैलाकर,
74 मैं ने कहा, हे प्रभु, मैं तेरे साम्हने लज्जित और लज्जित हूं;
75 क्योंकि हमारे पाप हमारे सिरों पर बढ़ गए हैं, और हमारी अज्ञानता
स्वर्ग तक पहुंच गई है।
76 क्योंकि हम अपके बापदादों के समय से लेकर आज तक बड़े पाप
में पड़े हैं।
77 और हम अपने और अपने पुरखाओं के पापों के कारण अपने भाइयों,
और राजाओं, और याजकोंसमेत पृथ्वी के राजाओं के वश में कर दिए
गए, कि वे तलवार से, और बन्धुवाई में, और लज्जित होकर लूटे जाएं,
और आज तक जीवित हैं।
78 और अब हे प्रभु, तेरी ओर से कुछ हद तक हम पर दया हुई है, कि
तेरे पवित्रस्थान में हमारे लिये एक जड़ और एक नाम रह गया है;
79 और हमारे परमेश्वर यहोवा के भवन में हमारे लिये उजियाला ढूंढ़े,
और हमारी दासता के समय में हमें भोजन दे।
80 हां, जब हम गुलामी में थे, तब हमें अपने प्रभु से नहीं छोड़ा गया था;
परन्तु उस ने फारस के राजाओं के साम्हने हम पर अनुग्रह किया, और
उन्होंने हमें भोजन दिया;
81 हां, और हमारे प्रभु के मन्दिर की प्रतिष्ठा की, और उजड़े हुए सिय्योन
को फिर से खड़ा किया, कि उन्होंने हमें यहूदी और यरूशलेम में दृढ़
निवास दिया है।
82 और अब, हे प्रभु, ये बातें होते हुए हम क्या कहें? क्योंकि हमने तेरी
आज्ञाओं का उल्लंघन किया है, जो तू ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के
द्वारा यह कहकर दी थी,
83 कि जिस देश को तुम निज भाग करके अपने अधिकार में करने को
जाते हो वह देश परदेशियों की अशुद्धता से अशुद्ध हो गया है, और
उन्होंने उसे अपनी अशुद्धता से भर दिया है।
84 इसलिये अब तुम अपनी बेटियोंको उनके बेटोंके साय न मिलाना,
और न उनकी बेटियोंको अपने बेटोंको ब्याह देना।
85 और उन से मेल मिलाप करने का प्रयत्न कभी न करना, जिस से तुम
बलवन्त हो जाओ, और उस देश की अच्छी अच्छी वस्तुएं खाओ, और
उस देश का निज भाग सदा के लिथे अपके वंश के लिथे छोड़ जाओ।
86 और जो कुछ हमारे साथ हुआ है वह हमारे बुरे कामों और महान
पापों के कारण हुआ है; क्योंकि हे प्रभु, तू ने हमारे पाप हलके कर दिए,
87 और हमें ऐसी जड़ दी, परन्तु हम फिर तेरी व्यवस्था का उल्लंघन
करने, और इस देश की अन्यजातियों की अशुद्धता में लग गए हैं।
88 क्या तू हम पर क्रोध करके हमें नाश न कर सका, जब तक तू ने
हमारे लिथे न जड़, न बीज, न नाम छोड़ा?
89 हे इस्राएल के यहोवा, तू सच्चा है; क्योंकि आज हम जड़ ही बचे हैं।
90 देख, अब हम अपके अधर्म के कामोंमें तेरे साम्हने खड़े हैं, क्योंकि
इन बातोंके कारण हम तेरे साम्हने फिर टिक नहीं सकते।
91 और जब एस्ड्रास ने प्रार्थना में अपना अंगीकार किया, और रोते हुए,
और मन्दिर के साम्हने भूमि पर मुंह के बल लेट गया, तो यरूशलेम से
पुरुषों, स्त्रियों, और बच्चों की एक बहुत बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी
हो गई: क्योंकि भीड़ बहुत रो रही थी।
92 तब यिलुस के पुत्र यकोन्याह ने जो इस्राएलियोंमें से एक या,
पुकारकर कहा, हे एस्द्रस, हम ने यहोवा परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया
है, हम ने उस देश की अन्यजातियोंमें परायी स्त्रियोंको ब्याह लिया है,
और अब सारा इस्राएल अपके हाथ में है। .

93 आओ, हम यहोवा से यह शपथ खाएं, कि हम अपनी सब स्त्रियोंको, जिन्हें हम ने अन्यजातियोंमें से ब्याह लिया है, और उनके लड़केबालोंसे भी त्याग देंगे।
94 जैसा तू ने ठहराया है, और जितने यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं।
95 उठो और मार डालो; क्योंकि यह बात तुम्हें ही करनी है, और हम तुम्हारे संग रहेंगे; तुम वीरता से काम करो।
96 तब एस्द्रस ने उठकर सारे इस्राएल के याजकोंऔर लेवियोंमें से मुख्य पुरूषोंको शपथ खिलाई, कि ऐसा ही किया करो; और इसलिए वे कसम खाते हैं।

अध्याय 9

1 तब एस्द्रस मन्दिर के आंगन से उठकर एल्यासिब के पुत्र योनान की कोठरी में गया,
2 और वहां रहे, और लोगों के बड़े अधर्म के कामोंके कारण विलाप करते हुए न मांस खाया और न पानी पिया।
3 और सारे यहूदी और यरूशलेम में सब बंधुआई के लोगोंके लिये यह प्रचार हुआ, कि यरूशलेम में इकट्ठे हो जाओ।
4 और जो कोई दो या तीन दिन के भीतर उन पुरनियों के अनुसार जो नियम के अनुसार वहां न मिले, उसके पशु जब्त कर लिये जाएं, कि वह मन्दिर में काम आए, और वह बन्धुओं में से निकाल दिया जाए।
5 और तीन दिन में नौवें महीने के बीसवें दिन को यहूदा और बिन्यामीन के गोत्र के सब लोग यरूशलेम में इकट्ठे हुए।
6 और सारी मण्डली मन्दिर के चौड़े आँगन में वर्तमान खराब मौसम के कारण कांपती हुई बैठी रही।
7 तब एस्द्रस ने उठकर उन से कहा, तुम ने परायी स्त्रियों से ब्याह करके व्यवस्था का उल्लंघन किया है, जिस से इस्राएल के पाप बढ़ गए हैं।
8 और अब अंगीकार करके हमारे पितरोंके परमेश्वर यहोवा की महिमा करो,
9 और उसकी इच्छा पूरी करो, और अपने आप को इस देश के अन्यजातियों और परदेशी स्त्रियों से अलग करो।
10 तब सारी मण्डली ने चिल्लाकर ऊंचे शब्द से कहा, जैसा तू ने कहा है, वैसा ही हम करेंगे।
11 परन्तु क्योंकि लोग बहुत हैं, और मौसम ऐसा बुरा है, कि हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और यह एक या दो दिन का काम नहीं है, इसलिये कि इन बातों में हमारा पाप दूर तक फैल गया है।
12 इसलिये भीड़ के हाकिम ठहरे रहें, और हमारे सब डेरों में से जिनके यहां परायी पत्नियां हों वे नियत समय पर आएं।
13 और उनके साथ सब स्थानोंके हाकिमोंऔर न्यायियोंको भी, जब तक हम इस विषय के कारण यहोवा का क्रोध अपने ऊपर से दूर न कर लें।
14 तब अजाएल के पुत्र योनातान और थियोकेनस के पुत्र यहेजकियाह ने इस बात को अपने ऊपर ले लिया, और मोसुल्लाम और लेवीस और सब्तथेयुस ने उनकी सहाथता की।
15 और बन्धुवाई में से जो लोग थे उन्होंने वैसा ही किया।
16 और एस्द्रा याजक ने अपके घरानोंमें से मुख्य पुरूषोंको नाम ले लेकर चुन लिया; और दसवें महीने के पहिले दिन को वे इस विषय की जांच करने को इकट्ठे बैठे।
17 इस प्रकार पहिले महीने के पहिले दिन ही उनका परायी स्त्रियां रखने का मुकद्दमा पूरा हो गया।
18 और जो याजक इकट्ठे हुए, और परायी पत्नियाँ रखते थे, उन में से यह पाए गए:
19 यीशु के वंश में से यहोसेदेक का पुत्र, और उसके भाई; मैथेलस और एलीआजर, और जोरीबस और जोदानुस।
20 और उन्होंने अपनी पत्नियों को दूर करने और अपनी त्रुटियों के लिए सामंजस्य बनाने के लिए राम की पेशकश करने के लिए अपना हाथ दिया।
21 और इम्मेर के वंश में से; हनन्याह, और जब्देयुस, और ईनेस, और समीयुस, और हियरेल, और अजर्याह।
22 और फिसूर की सन्तान में से; एलियोनास, मासियास इज़राइल, और नाथनेल, और ओसिडेलस और तल्सास।
23 और लेवियोंमें से; जोजाबाद, और सेमिस, और कोलियस, जो कैलीटास कहलाता था, और पाथियस, और यहूदा, और जोनास।
24 पवित्र गायकों में से; एलेजुरस, बैक्चुरस।
25 कुलियों में से; सैलुमस, और टॉल्बेन्स।
26 इस्राएलियोंमें से फ़ोरोस की सन्तान में से; हिरमास, और एद्दियास, और मल्चियास, और मैलुस, और एलीआजर, और असिबियास, और बानियास।
27 एला के वंश में से; मथानियास, जकारियास, और हिरीएलस, और हिरेमोत, और एदियास।
28 और जामोत के वंश में से; एलियाडास, एलिसिमस, ओथोनियास, जरीमोथ, और सबाटस, और सरडेस।
29 बाबै के पुत्रों में से; जोहान्स, और अनानियास और जोसाबाद, और अमाथीस।
30 मणि के पुत्रों में से; ओलमस, मामुचुस, जेडियस, जसुबस, जसेल और हिरेमोथ।
31 और अद्दी के वंश में से; नाथस, और मूसियस, लैकुनस, और नायडूस, और मथानियास, और सेस्तेल, बालनुस, और मनस्सियस।
32 और हन्ना के वंश में से; एलियोनास और आसियास, और मल्चियास, और सब्बेयुस, और शमौन चोसामियस।
33 और असोम के वंश में से; अल्तानेउस, और मत्तियाह, और बानाइया, और एलीफलेत, और मनश्शे, और सेमी।
34 और मानी के वंश में से; यिर्मयाह, मोमदीस, ओमेरुस, जुएल, मबदाई, और पेलियास, और एनोस, काराबासिओन, और एनासिबस, और मम्नितानैमुस, एलियासिस, बन्नूस, एलियाली, सामिस, सेलेमियास, नथानियास: और ओज़ोरा के पुत्रों में से; सेसिस, एस्रिल, एज़ेलस, सैमैटस, जाम्बिस, जोसेफस।
35 और एत्मा के वंश में से; मजीतियास, ज़बादियास, एडेस, जुएल, बानियास।
36 इन सब ने पराई स्त्रियां ब्याह लीं, और उनको उनके बच्चोंसमेत त्याग दिया।
37 और सातवें महीने के पहिले दिन को याजक और लेवीय और इस्राएली यरूशलेम और उस देश में रहने लगे; इस प्रकार इस्राएली अपने अपने डेरोंमें रहते थे।
38 और सारी मण्डली एक मन होकर पवित्र ओसारे के चौड़े स्यान में, जो पूर्व की ओर है, इकट्ठे हुए।
39 और उन्होंने एस्द्रस याजक और वाचक से कहा, कि मूसा की जो व्यवस्था इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर से दी गई है उसे ले आओ।
40 तब एस्द्रस प्रधान याजक सारी मण्डली के पास, पुरूष से लेकर स्त्री तक, और सब याजकोंके पास व्यवस्या ले आया, कि सातवें महीने के पहिले दिन को व्यवस्या सुने।
41 और वह भोर से दोपहर तक पवित्र ओसारे के साम्हने चौड़े आंगन में क्या स्त्री, क्या पुरूष, सब के साम्हने पढ़ता रहा; और भीड़ ने व्यवस्था पर ध्यान दिया।
42 और एस्द्रस याजक और व्यवस्था का वाचक, लकड़ी के एक मिम्बर पर खड़ा हुआ, जो इसी काम के लिये बनाया गया था।
43 और मत्तत्याह, सम्मुस, हनन्याह, अजर्याह, ऊरिय्याह, एजकिय्याह, बालासामुस उसके पास दाहिनी ओर खड़े हुए।
44 और उसके बायीं ओर फलदैयुस, मीसाएल, मेल्कीयाह, लोतासुबुस, और नबरियाह खड़े थे।
45 तब एस्द्रस ने व्यवस्था की पुस्तक लोगों के साम्हने ले ली; क्योंकि वह सब के साम्हने आदर के साय बैठा।

46 और जब उस ने व्यवस्था खोली, तो वे सब सीधे खड़े हो गए। इस
प्रकार एस्ड्रास ने परमप्रधान परमेश्वर, सेनाओं के परमेश्वर,
सर्वशक्तिमान को आशीर्वाद दिया।
47 और सब लोगोंने उत्तर दिया, आमीन; और वे हाथ उठाकर भूमि पर
गिरे, और यहोवा को दण्डवत् किया।
48 और यीशु, अनस, साराबियास, अदीनुस, याकूबस, सबातियास,
औटियास, माइआनियास, और कलितास, अस्रीयास, और योआजब्दुस,
और अनन्या, बिआतास, लेवीय, यहोवा की व्यवस्था सिखाते थे, और
उन्हें इसे समझने के लिए तैयार करते थे।
49 तब अत्तारातस ने एस्द्रास महायाजक से कहा। और पढ़नेवाले, और
लेवियोंसे जो भीड़ को सिखाते थे, अर्थात् सब से कहते थे,
50 आज का दिन यहोवा के लिये पवित्र है; (क्योंकि वे सब व्यवस्था
सुनकर रो पड़े।)
51 तो जाकर चरबी खाओ, और मीठा पीओ, और जिनके पास कुछ
नहीं उनके पास भाग भेजो;
52 क्योंकि आज का दिन यहोवा के लिथे पवित्र है, और उदास न हो;
क्योंकि यहोवा तुम्हें प्रतिष्ठित करेगा।
53 तब लेवियोंने सब बातें लोगोंको बता दीं, कि आज का दिन यहोवा के
लिथे पवित्र है; दुखी मत हो.
54 तब वे सब खाने-पीने, और आनन्द करने, और जिनके पास कुछ न
था उनको भी भाग देने, और बड़ा आनन्द करने को चले गए;
55 क्योंकि जो बातें उन्हें सिखाई गई थीं, और जिस के लिये वे इकट्ठे हुए
थे, वे समझ गए।

2nd Esdras

दूसरा एस्ड्रास

अध्याय 1

1 भविष्यवक्ता एस्द्रास की दूसरी पुस्तक, सरैयास का पुत्र, अजर्याह का पुत्र, हेलकियास का पुत्र, सदामिया का पुत्र, सदोक का पुत्र, अचितोब का पुत्र,
2 अखियाह का पुत्र, पीनीस का पुत्र, हेली का पुत्र, अमर्याह का पुत्र, अजीयी का पुत्र, मरीमोत का पुत्र, अरना का पुत्र, ओजियास का पुत्र, बोरीत का पुत्र, अबीसेई का पुत्र फीनीस का पुत्र, एलीआजर का पुत्र,
3 लेवी के गोत्र में से हारून का पुत्र; जो फारस के राजा अर्टेक्सरेक्स के शासनकाल में मादियों की भूमि में बंदी बना लिया गया था।
4 और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा,
5 तू जा, और मेरी प्रजा को उनके पाप के काम, और उनके लड़केबालों को वह दुष्ट काम दिखा, जो उन्होंने मेरे विरूद्ध किया है; ताकि वे अपने बच्चों के बच्चों को बता सकें:
6 क्योंकि उनके पुरखाओं के पाप उन में बढ़ गए हैं, और वे मुझे भूल गए हैं, और पराये देवताओं की पूजा करने लगे हैं।
7 क्या मैं वही नहीं जो उन्हें मिस्र देश से, अर्थात् दासत्व के घर से निकाल लाया? परन्तु उन्होंने मुझे क्रोध भड़काया है, और मेरी युक्तियों को तुच्छ जाना है।
8 फिर अपने सिर के बाल उखाड़कर उन पर सब विपत्ति डाल दो, क्योंकि उन्होंने मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया, परन्तु वे बलवा करनेवाले लोग हैं।
9 जिन का मैं ने इतना भला किया है, मैं उन्हें कब तक रोके रखूंगा?
10 मैं ने उनके कारण बहुत से राजाओंको नाश किया है; मैंने फ़िरौन को उसके सेवकों और उसकी सारी शक्ति समेत नष्ट कर दिया है।
11 और सब जातियोंको मैं ने उनके साम्हने से नाश किया, और पूर्व में सोर और सीदोन के दो प्रान्तोंके लोगोंको तितर-बितर किया, और उनके सब शत्रुओंको घात किया है।
12 इसलिये तू उन से कह, यहोवा यों कहता है,
13 मैं ने तुझे समुद्र में से पार किया, और पहिले तो तुझे बड़ा और सुरक्षित मार्ग दिया; मैंने तुम्हें मूसा को प्रधान होने के लिये, और हारून को याजक के लिये दिया है।
14 मैं ने आग के खम्भे में होकर तुम्हें उजियाला दिया, और तुम्हारे बीच बड़े बड़े आश्चर्यकर्म किए हैं; तौभी तुम मुझे भूल गए हो, यहोवा की यही वाणी है।
15 सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, बटेर तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरे; मैं ने तुम्हारी रक्षा के लिथे तुम्हें तम्बू दिए, तौभी तुम वहां कुड़कुड़ाते रहे,
16 और अपने शत्रुओं के नाश के लिये मेरे नाम से जयवन्त नहीं हुए, वरन आज के दिन तक सदैव कुड़कुड़ाते रहते हो।
17 जो उपकार मैं ने तुम्हारे लिये किए वे कहां रहे? जब तुम जंगल में भूखे और प्यासे थे, तब क्या तुम ने मेरी दोहाई न दी?
18 और कहा, तू हम को इस जंगल में घात करने को क्यों ले आया है? हमारे लिये इस जंगल में मरने से मिस्रियों की सेवा करना भला होता।
19 तब मैं ने तुम्हारे विलाप पर तरस खाकर तुम्हें मन्ना खाने को दिया; इसलिये तुम ने स्वर्गदूतों की रोटी खाई।
20 जब तुम प्यासे थे, तब क्या मैं ने चट्टान न फाड़ी, और जल से तुम भर न गए? गर्मी के कारण मैंने तुम्हें पेड़ों की पत्तियों से ढक दिया।
21 मैं ने तुम्हारे बीच उपजाऊ भूमि बांट दी, मैं ने तुम्हारे साम्हने से कनानियों, फेरेजियों और पलिश्तियों को निकाल दिया; मैं फिर तुम्हारे लिये और क्या करूं? प्रभु कहते हैं.
22 सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, जब तुम जंगल में एमोरियोंकी नदी के किनारे प्यासे होकर मेरे नाम की निन्दा करते थे,
23 मैं ने तुम्हारी निन्दा के कारण तुम्हें आग नहीं दी, वरन जल में वृक्ष डाल कर नदी को मीठा कर दिया।
24 हे याकूब, मैं तुझ से क्या करूं? हे यहूदा, तू ने मेरी बात नहीं मानी; मैं अन्यजातियों की ओर फिरूंगा, और उन को अपना नाम दूंगा, कि वे मेरी विधियोंको मानें।
25 यह देखकर कि तुम ने मुझे त्याग दिया है, मैं भी तुम को त्याग दूंगा; जब तुम चाहोगे कि मैं तुम पर अनुग्रह करूँ, तो मैं तुम पर दया न करूँगा।
26 जब कभी तुम मुझे पुकारोगे, तब मैं तुम्हारी न सुनूंगा; क्योंकि तुम ने अपने हाथ खून से अशुद्ध कर लिए हैं, और तुम्हारे पैर खून करने को वेग से दौड़ते हैं।
27 तुम ने मुझे नहीं, परन्तु अपने आप को ही त्याग दिया है, यहोवा का यही वचन है।
28 सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, क्या मैं ने पिता की नाईं बेटे, और माता की नाईं अपनी बेटियां, और दूध पिलाती हुई बालकोंकी नाईं तुझ से प्रार्थना न की?
29 कि तुम मेरी प्रजा ठहरो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं; कि तुम मेरी सन्तान ठहरो, और मैं तुम्हारा पिता ठहरूं?
30 जैसे मुर्गी अपने चूजों को पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं ने तुम को इकट्ठा किया; परन्तु अब मैं तुम्हारे साथ क्या करूं? मैं तुम्हें अपने सामने से निकाल दूंगा।
31 जब तुम मुझे भेंट चढ़ाओगे, तब मैं तुम से मुंह फेर लूंगा; क्योंकि मैं ने तुम्हारे पवित्र पर्ब्बों, नये चान्द और खतने के दिनोंको त्याग दिया है।
32 मैं ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को तुम्हारे पास भेजा, जिन्हें तुम ने पकड़ लिया, और घात किया, और उनकी लोय के टुकड़े टुकड़े कर दिए, उनके खून का बदला मैं तुम्हारे हाथ से लूंगा, यहोवा की यही वाणी है।
33 सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, तेरा घर उजाड़ हो गया है, मैं तुझे ऐसे निकाल दूंगा जैसे वायु से भूसी गिरती है।
34 और तेरे लड़केबाले फलवन्त न होंगे; क्योंकि उन्होंने मेरी आज्ञा तुच्छ जानी, और वह काम किया है जो मेरी दृष्टि में बुराई है।
35 तेरे घर मैं आनेवाले लोगों को दूंगा; जो अब तक मेरे विषय में न सुनकर मेरी प्रतीति करेंगे; उनको मैं ने कोई चिन्ह नहीं दिखाया, तौभी जो आज्ञा मैं ने उनको दी है वही वे करेंगे।
36 उन्होंने कोई भविष्यद्वक्ता नहीं देखा, तौभी वे अपने पापों को स्मरण करके उन्हें मान लेंगे।
37 मैं आनेवाले लोगोंके अनुग्रह का गवाह हूं, जिनके बालक आनन्द से मगन हैं; और यद्यपि उन्होंने शारीरिक आंखों से मुझे नहीं देखा, तौभी आत्मा से वे जो मैं कहता हूं उस पर विश्वास करते हैं।
38 और अब, भाई, देखो कैसी महिमा; और उन लोगों को देखो जो पूर्व से आते हैं:
39 जिन को मैं प्रधान कर दूंगा, अर्यात् इब्राहीम, इसहाक, याकूब, ओसेस, आमोस, मीका, योएल, अब्दियास, और यूनुस,
40 नहूम, और अबाकुक, सोफोनियस, अग्गुस, जकरिया, और मलाकी, जो प्रभु का दूत भी कहलाता है।

अध्याय दो

1 यहोवा यों कहता है, मैं ने इस प्रजा को दासत्व से छुड़ाया, और अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उनको अपनी आज्ञाएं दीं; उन्होंने उनकी न सुनी, परन्तु मेरी युक्तियों को तुच्छ जाना।
2 और उनकी माता ने उन से कहा, हे बालकों, अपने मार्ग जाओ; क्योंकि मैं विधवा और त्यागी हुई हूं।
3 मैं ने तुझे आनन्द से पाला; परन्तु दुख और भारीपन के कारण मैं ने तुम्हें खो दिया है; क्योंकि तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने पाप किया है, और वह काम किया है जो उसकी दृष्टि में बुरा है।

4 परन्तु अब मैं तुम्हारे साथ क्या करूं? मैं एक विधवा और परित्यक्ता हूं: हे मेरे बच्चों, अपने मार्ग पर जाओ, और प्रभु से दया मांगो।
5 जहां तक मेरी बात है, हे पिता, मैं इन बालकों की माता के विषय में जो मेरी वाचा का पालन नहीं करती, तुझ से साक्षी मांगता हूं।
6 कि तू उनको घबराए, और उनकी माता को लूट ले, यहां तक कि उनका कोई वंश न रहे।
7 वे अन्यजातियोंके बीच तितर-बितर हो जाएं, उनका नाम पृथ्वी पर से मिट जाए; क्योंकि उन्होंने मेरी वाचा को तुच्छ जाना है।
8 हे असुर, तुझ पर हाय, तू जो अधर्म को अपने में छिपा रखता है! हे दुष्ट लोगों, स्मरण करो कि मैं ने सदोम और अमोरा के साथ क्या किया;
9 उनकी भूमि ढेलों और राख के ढेरों से भरी पड़ी है; सर्वशक्तिमान यहोवा का यही वचन है, कि जो मेरी नहीं सुनते, मैं उन से वैसा ही करूंगा।
10 यहोवा एस्द्रास से यों कहता है, मेरी प्रजा से कह, कि मैं यरूशलेम का राज्य जो मैं इस्राएल को देना चाहता था, उन्हें दे दूंगा।
11 और मैं उनका वैभव भी अपने पास ले लूंगा, और वे सदाबहार मण्डप जो मैं ने उनके लिये तैयार कराए थे, उन्हें दे दूंगा।
12 उनके पास सुखदायक सुगन्ध देनेवाला जीवन का वृक्ष होगा; वे न तो परिश्रम करेंगे, और न थकेंगे।
13 जाओ, और तुम पाओगे; थोड़े दिन के लिथे तुम से प्रार्थना किया करो, कि वे घटें; राज्य तुम्हारे लिये पहिले से तैयार है; जागते रहो।
14 आकाश और पृथ्वी को साक्षी ठहराओ; क्योंकि मैं ने बुराई को टुकड़े टुकड़े किया, और भलाई को उत्पन्न किया है; क्योंकि मैं जीवित हूं, यहोवा की यही वाणी है।
15 हे माता, अपके बालकोंको गले लगा, और आनन्द से उनका पालन-पोषण कर, उनके पांव खम्भे के समान दृढ़ कर; क्योंकि मैं ने तुझे चुन लिया है, यहोवा का यही वचन है।
16 और जो मरे हुए हैं उनको मैं उनके स्यान में से जिला उठाऊंगा, और कब्रों में से निकालूंगा; क्योंकि मैं ने इस्राएल में अपना नाम जान लिया है।
17 हे बालकोंकी माता, मत डर; क्योंकि मैं ने तुझे चुन लिया है, यहोवा का यही वचन है।
18 मैं तेरी सहायता के लिथे अपने दास एसे और यरेमी को भेजूंगा, जिनकी सम्मति के अनुसार मैं ने तेरे लिथे भांति भांति के फलों से लदे हुए बारह वृक्ष तैयार किए हैं।
19 और दूध और मधु से बहनेवाले बहुत से सोते, और सात बड़े बड़े पहाड़, जिन पर गुलाब और सोसन के फूल उगते हैं, उन से मैं तेरे लड़केबालोंको आनन्द से भर दूंगा।
20 विधवा का न्याय करो, अनाथों का न्याय करो, कंगालों को दान दो, अनाथों की रक्षा करो, नंगे को वस्त्र पहिनाओ,
21 टूटे और निर्बल को चंगा करो, लंगड़े की हंसी न उड़ाओ, टुण्डों की रक्षा करो, और अन्धे को मेरी दृष्टि में आने दो।
22 बूढ़ों और जवानों को अपनी चारदीवारी के भीतर रखो।
23 जहां कहीं तुझे मरे हुए मिलें, उन्हें ले जाकर गाड़ देना, और मैं अपने जी उठने में मुख्य स्थान तुझे ही दूंगा।
24 हे मेरी प्रजा, स्थिर रहो, और विश्राम करो, क्योंकि तुम्हारा चैन अब भी आनेवाला है।
25 हे अच्छी धाय, अपने बालकोंका पालन पोषण कर; उनके पैर स्थिर करो.
26 जो दास मैं ने तुझे दिए हैं, उन में से एक भी नाश न होगा; क्योंकि मैं उनको तेरे गिनती में से ले लूंगा।
27 मत थको, क्योंकि जब संकट और भारीपन का दिन आएगा, तो दूसरे तो रोएंगे और उदास होंगे, परन्तु तू आनन्द करेगा, और बहुतायत से होगा।
28 अन्यजाति तुझ से डाह करेंगे, परन्तु तेरे विरूद्ध कुछ न कर सकेंगे, यहोवा का यही वचन है।
29 मैं अपने हाथ से तुझे ढांपूंगा, और तेरे लड़केबालोंको अधोलोक न देखना पड़ेगा।
30 हे माता, अपने बालकोंके संग आनन्दित हो; क्योंकि मैं तुझे बचाऊंगा, यहोवा का यही वचन है।
31 अपने सोते हुए बालकोंको स्मरण करो, क्योंकि मैं उन्हें पृथ्वी की छोर से निकाल ले आऊंगा, और उन पर दया करूंगा; क्योंकि मैं दयालु हूं, सर्वशक्तिमान यहोवा का यही वचन है।
32 जब तक मैं आकर उन पर दया न करूं, तब तक अपके बालकोंको गले लगाए रखना; क्योंकि मेरे सोते बह जाते हैं, और मेरा अनुग्रह अटल होता है।
33 मुझ एस्द्रस को ओरेब पहाड़ पर यहोवा की ओर से आज्ञा मिली, कि मैं इस्राएल के पास जाऊं; परन्तु जब मैं उनके पास आया, तब उन्होंने मुझे तुच्छ जाना, और यहोवा की आज्ञा का तिरस्कार किया।
34 और इसलिये मैं तुम से कहता हूं, हे अन्यजातियों, सुनो और समझो, अपने चरवाहे की बाट जोहते रहो, वह तुम्हें सदैव विश्राम देगा; क्योंकि वह निकट है, जो जगत के अन्त में आएगा।
35 राज्य के प्रतिफल के लिये तैयार रहो, क्योंकि अनन्त ज्योति तुम पर सर्वदा चमकती रहेगी।
36 इस संसार की छाया से दूर भाग, अपनी महिमा का आनन्द प्राप्त कर; मैं अपने उद्धारकर्ता की गवाही खुलकर देता हूं।
37 जो उपहार तुम्हें दिया गया है उसे ग्रहण करो, और जो तुम्हें स्वर्ग के राज्य में ले गया है उसका धन्यवाद करते हुए आनन्दित होओ।
38 उठ कर खड़े हो, और यहोवा के पर्ब्ब में जिन पर मुहर दी गई है, उन की गिनती देखो;
39 जो जगत की छाया से दूर हो गए, और प्रभु के महिमामय वस्त्र पाए हैं।
40 हे सिय्योन, अपना गिन ले, और अपके जो श्वेत वस्त्र पहिने हुए हैं, और यहोवा की व्यवस्या पूरी करते हैं, उनको बन्द कर दे।
41 तेरे लड़केबालोंकी गिनती, जिनकी तू लालसा करता या, पूरी हो गई है; यहोवा की शक्ति से प्रार्थना करो, कि तेरी प्रजा जो आरम्भ से बुलायी गई है, पवित्र हो जाए।
42 मैं एस्द्रस ने सिय्योन पहाड़ पर बड़ी प्रजा देखी, जिन्हें मैं गिन नहीं सकता था, और वे सब गीत गाकर यहोवा की स्तुति करते थे।
43 और उनके बीच में एक जवान पुरूष था जो ऊंचे कद का या, और सब से ऊंचा था, और उस ने उन सब के सिरोंपर मुकुट रखा या, और वह अधिक ऊंचे पद पर था; जिस पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।
44 इसलिये मैं ने स्वर्गदूत से पूछा, हे प्रभु, ये क्या हैं?
45 उस ने उत्तर देकर मुझ से कहा, ये वे ही हैं जिन्होंने नाशवान वस्त्र उतारकर अमर को पहिन लिया है, और परमेश्वर का नाम मान लिया है; अब वे मुकुट धारण किए हुए हैं, और हथेलियां लेते हैं।
46 तब मैं ने स्वर्गदूत से कहा, वह कौन जवान है जो उनको मुकुट पहनाता, और उनके हाथों में खजूर के पत्ते देता है?
47 उस ने उत्तर देकर मुझ से कहा, यह परमेश्वर का पुत्र है, जिस को उन्होंने जगत में मान लिया है। तब मैंने उन लोगों की बहुत सराहना करना शुरू किया जो प्रभु के नाम के लिए इतनी दृढ़ता से खड़े थे।
48 तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, जा, और मेरी प्रजा से कह, कि तू ने अपने परमेश्वर यहोवा के कैसे-कैसे काम और कैसे-कैसे बड़े आश्चर्यकर्म देखे हैं।

अध्याय 3

1 नगर के उजड़ने के तीसवें वर्ष में मैं बाबेल में था, और अपने बिछौने पर पड़ा हुआ घबराया हुआ या, और मेरे हृदय में विचार उठते रहे।
2 क्योंकि मैं ने सिय्योन का उजड़ना, और बाबुल के रहनेवालोंकी सम्पत्ति देखी।
3 और मेरा मन बहुत उदास हुआ, यहां तक कि मैं परमप्रधान से भय भरी बातें कहने लगा,
4 हे प्रभु, प्रभु, तू ने पहिले ही से कहा था, जब तू ने पृथ्वी पर और आप ही अकेला बीज बोया, और प्रजा को आज्ञा दी,
5 और आदम को तेरे हाथ की बनाई हुई बिन प्राण देह दी, और उस में जीवन का श्वास फूंका, और वह तेरे साम्हने जिलाया गया।
6 और तू उसे स्वर्ग में ले जाता है, जिसे तू ने पृथ्वी के उत्पन्न होने से पहिले ही अपने दाहिने हाथ से लगाया था।
7 और तू ने उसे आज्ञा दी, कि अपने मार्ग से प्रीति रख; परन्तु उस ने उल्लंघन किया, और तुरन्त तू ने उसको और उसकी पीढ़ी को, जिस में से बहुत सी जातियां, और कुल, और लोग, और कुल उत्पन्न हुए, मृत्यु ठहरा दी।
8 और सब लोग अपक्की अपक्की इच्छा के अनुसार चले, और तेरे साम्हने अद्‌भुत काम किए, और तेरी आज्ञाओंको तुच्छ जाना।
9 और फिर समय के साथ तू ने जगत के रहनेवालोंपर जलप्रलय करके उनको नाश किया।
10 और उन में से हर एक के लिये ऐसा हुआ, कि जैसे आदम के लिये मृत्यु हुई, वैसे ही इन के लिये जलप्रलय हुआ।
11 तौभी तू ने उन में से एक को अर्थात नूह को उसके घराने समेत छोड़ दिया, उसी में से सब धर्मी पुरूष निकले।
12 और ऐसा हुआ, कि जब वे पृथ्वी पर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बहुत से सन्तान उत्पन्न हुए, और बड़ी जाति बन गए, तो वे पहिले से भी अधिक दुष्ट हो गए।
13 अब जब वे तेरे साम्हने ऐसी दुष्टता करते थे, तो तू ने उन में से इब्राहीम नाम एक पुरूष को चुन लिया।
14 तू ने उसी से प्रेम रखा, और उसी को अपनी इच्छा प्रगट की;
15 और उस से यह प्रतिज्ञा करके सदा की वाचा बान्धी, कि तू अपने वंश को कभी न त्यागेगा।
16 और उस को तू ने इसहाक दिया, और इसहाक को याकूब और एसाव भी दिया। याकूब को तू ने अपने लिये चुन लिया, और एसाव के पास रख लिया; और इस प्रकार याकूब बड़ी भीड़ बन गया।
17 और ऐसा हुआ, कि तू उसके वंश को मिस्र से निकालकर सीनै पहाड़ तक ले आया।
18 और तू ने आकाश को दण्डवत करके पृथ्वी को ढांप दिया, और सारे जगत को हिला दिया, और गहिरे स्थानों को कंपा दिया, और उस युग के मनुष्योंको व्याकुल कर दिया।
19 और तेरी महिमा आग, भूकम्प, आँधी, और शीत के चार फाटकों से होकर निकली; इसलिये कि तू याकूब के वंश को व्यवस्था दे, और इस्राएल के वंश को परिश्रम दे।
20 तौभी तू ने उन से दुष्ट मन दूर न किया, कि तेरी व्यवस्था से उन में फल उत्पन्न हो।
21 क्योंकि पहिले आदम ने दुष्ट मन से अपराध किया, और हार गया; और जो उस से उत्पन्न हुए हैं उन सब का भी ऐसा ही होना।
22 इस प्रकार दुर्बलता स्थायी हो गई; और कानून (भी) लोगों के हृदय में दुर्भावना जड़ से जमा देता है; ताकि भलाई दूर हो जाए, और बुराई बनी रहे।
23 इस प्रकार समय बीतता गया, और वर्ष पूरे होते गए; तब तू ने दाऊद नाम एक दास को खड़ा किया;
24 तू ने उसी को आज्ञा दी, कि वह तेरे नाम का एक नगर बनाए, और उस में तुझे धूप और अन्नबलि चढ़ाए।
25 जब बहुत वर्ष हो गए, तब नगर के रहनेवालोंने तुझ को त्याग दिया,
26 और सब कामों में वैसा ही किया जैसा आदम और उसकी पीढ़ी के सब लोग करते आए थे; क्योंकि उनका मन भी दुष्ट था।
27 और तू ने अपके नगर को अपके शत्रुओंके वश में कर दिया।
28 क्या बाबुल के रहनेवालोंके काम कुछ अच्छे हैं, कि वे सिय्योन पर प्रभुता करें?
29 क्योंकि जब मैं वहां पहुंचा, और अनगिनित अधर्म के काम देखे, तो इस तीस के दशक में मेरे प्राण ने बहुत से कुकर्मी देखे। कान, यहां तक कि मेरा हृदय विफल हो गया।
30 क्योंकि मैं ने देखा है, कि तू ने उनको पाप करने दिया, और दुष्टोंको बचा रखा;
31 मुझे स्मरण नहीं, कि इस रीति से क्या छोड़ा जाए; सो क्या बाबुल के लोग सिय्योन से अच्छे हैं?
32 या क्या इस्राएल को छोड़ और कोई तुझे जानता है? या याकूब के समान किस पीढ़ी ने तेरी वाचा पर विश्वास किया है?
33 तौभी उनका प्रतिफल प्रगट नहीं होता, और उनके परिश्रम का फल नहीं होता; क्योंकि मैं इधर उधर अन्यजातियों के बीच फिरता हूं, और देखता हूं, कि वे धन बढ़ाते हैं, और तेरी आज्ञाओं पर विचार नहीं करते।
34 इसलिये अब तू हमारी और जगत के रहनेवालोंकी भी दुष्टता तराजू में तौल; और इस प्रकार तेरा नाम इस्राएल के सिवा कहीं न मिलेगा।
35 या पृथ्वी के रहनेवालोंने तेरे साम्हने पाप कब न किया? वा किन लोगों ने तेरी आज्ञाओं का पालन किया है?
36 और तू देखेगा, कि इस्राएल ने तेरे उपदेशों को मान लिया है; लेकिन बुतपरस्त नहीं.

अध्याय 4

1 और जो दूत मेरे पास भेजा गया, उसका नाम उरीएल था, उस ने मुझे उत्तर दिया,
2 और कहा, तेरा मन इस जगत में बहुत आगे तक पहुंच गया है, और क्या तू परमप्रधान का मार्ग समझने का विचार करता है?
3 तब मैं ने कहा, हां, हे मेरे प्रभु! और उस ने मुझे उत्तर दिया, कि मैं तुझे तीन मार्ग बताने, और तेरे साम्हने तीन उपमाएं दिखाने के लिये भेजा गया हूं:
4 और यदि तू मुझे बता सके, तो मैं तुझे वह मार्ग बताऊंगा जो तू देखना चाहता है, और मैं तुझे बताऊंगा कि दुष्ट मन कहां से आता है।
5 और मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु, आगे बता। तब उस ने मुझ से कहा, जा, आग का तौल तौल, वा पवन का झोंका नाप, वा जो दिन बीता, वह मुझे फिर बुला।
6 तब मैं ने उत्तर दिया, कौन मनुष्य ऐसा कर सकता है, कि तू मुझ से ऐसी बातें पूछे?
7 और उस ने मुझ से कहा, यदि मैं तुझ से पूछूं, कि समुद्र के बीच में कितने बड़े बड़े घर हैं, या गहरे जल के आरम्भ में कितने सोते हैं, या आकाश के ऊपर कितने सोते हैं, या समुद्र से बाहर कितने सोते हैं? स्वर्ग:
8 कदाचित तू मुझ से कहे, मैं कभी गहिरे स्थान में, और न अधोलोक में, और न कभी स्वर्ग पर चढ़ा।
9 तौभी अब मैं ने तुझ से केवल आग, और वायु, और उस दिन के विषय में, जिस से तू गुजरा, और उन वस्तुओं के विषय में, जिन से तू अलग नहीं हो सकता, पूछा है, तौभी तू मुझे उनका उत्तर नहीं दे सकता।

10 फिर उस ने मुझ से कहा, क्या तू अपनी सम्पत्ति को वरन जो तेरे साय बड़े हुए हैं उनको भी नहीं जान सकता;
11 तो फिर तेरा जहाज परमप्रधान के मार्ग को कैसे समझने में समर्थ हो सकता है, और संसार जो अब बाह्य रूप से भ्रष्ट हो गया है, उस भ्रष्टाचार को जो मेरी दृष्टि में स्पष्ट है, समझने में कैसे समर्थ हो सकता है?
12 तब मैं ने उस से कहा, यह तो भला होता, कि हम वहां ही न होते, इस से तो अच्छा होता, कि हम अब तक दुष्टता में पड़े रहते, और दुख उठाते, और न जानते कि क्यों हुआ।
13 उस ने मुझे उत्तर दिया, मैं जंगल में मैदान में गया, और वृझोंने सम्मति ली,
14 और कहा, आओ, हम चलकर समुद्र से लड़ें, कि वह हमारे साम्हने से निकल जाए, और हम अपने लिये और जंगल बना लें।
15 इसी रीति से समुद्र की बाढ़ भी सम्मति करके कहने लगी, आओ, हम चढ़कर मैदान के जंगल को अपने वश में कर लें, कि वहां भी हम अपने लिये एक और देश बना लें।
16 लकड़ी का विचार व्यर्थ गया, आग ने आकर उसे भस्म कर दिया।
17 इसी प्रकार समुद्र की बाढ़ का विचार भी व्यर्थ हो गया, क्योंकि रेत ने उठकर उन्हें रोक दिया।
18 यदि तू अब इन दोनोंके बीच न्याय करे, तो किसे धर्मी ठहराना आरम्भ करेगा? अथवा तू किसकी निंदा करेगा?
19 मैं ने उत्तर दिया, सचमुच उन दोनों ने जो कल्पना की है वह मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि भूमि तो लकड़ी के वश में हो गई है, और समुद्र को भी अपनी बाढ़ सहने का स्थान मिल गया है।
20 तब उस ने मुझे उत्तर दिया, तू ने तो ठीक न्याय किया है, परन्तु आप आप ही का न्याय क्यों नहीं करता?
21 क्योंकि जैसे भूमि जंगल को, और समुद्र को बाढ़ के लिथे दी गई है, वैसे ही पृथ्वी पर रहनेवाले पृथ्वी पर जो कुछ है, उसे छोड़ और कुछ नहीं समझते; और जो आकाश के ऊपर रहता है, वह केवल बातें ही समझता है। जो स्वर्ग की ऊंचाई से भी ऊपर हैं।
22 तब मैं ने उत्तर दिया, हे प्रभु मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मुझे समझ दे;
23 क्योंकि मेरा मन ऊंचे ऊंचे कामोंके विषय में कुढ़ना नहीं चाहता था, परन्तु उन लोगोंके विषय में जो प्रति दिन हमारे पास से होकर जाया करते थे, अर्थात इस्राएल अन्यजातियोंके कारण निन्दा करके किस कारण से पकड़वाया गया, और जिन लोगों से तू ने प्रेम रखा, वे किस कारण से दिए गए हैं अधर्मी राष्ट्रों के ऊपर, और हमारे पूर्वजों का कानून क्यों रद्द कर दिया गया है, और लिखित अनुबंध निष्प्रभावी हो गए हैं,
24 और हम टिड्डियों की नाईं जगत से मिट जाते हैं, और हमारा जीवन विस्मय और भय का होता है, और दया के योग्य नहीं रहते।
25 तो वह अपने नाम के लिथे क्या करेगा, जिस से हम बुलाए गए हैं? मैंने इनमें से कुछ बातें पूछी हैं।
26 तब उस ने मुझे उत्तर देकर कहा, जितना तू खोजेगा, उतना ही अधिक चकित होगा; क्योंकि संसार तेजी से मिटने को तत्पर है,
27 और जो बातें धर्मियों से प्रतिज्ञा की गई हैं वे भविष्य में समझ नहीं सकते, क्योंकि यह जगत अधर्म और निर्बलताओं से भरा हुआ है।
28 परन्तु जहां तक इस बात का प्रश्न है जो कुछ तू मुझ से पूछे, मैं तुझे बताऊंगा; क्योंकि विपत्ति बोई गई है, परन्तु उसका विनाश अभी तक नहीं हुआ।
29 इसलिये यदि जो बोया गया है वह उलटा न किया जाए, और जिस स्थान पर बुराई बोई गई है वह न मिटे, तो जो भलाई बोई गई है वह वापस नहीं आ सकती।
30 क्योंकि आदम के मन में आदि से बुरे बीज का बीज बोया गया है, और उस से अब तक कितनी दुष्टता उत्पन्न हुई है? और दावने का समय आने तक वह कितना फल उपजाएगी?
31 अब आप ही सोचो, कि बुरे बीज का अन्न दुष्टता का कैसा बड़ा फल लाता है।
32 और जब अनगिनित कान काट डाले जाएंगे, तो उन से कितना बड़ा फर्श भर जाएगा?
33 तब मैं ने उत्तर दिया, ये बातें कैसे और कब घटेंगी? हमारे वर्ष छोटे और बुरे क्यों हैं?
34 और उस ने मुझे उत्तर दिया, कि परमप्रधान से अधिक उतावली न करना; क्योंकि उसके ऊपर पहुंचने के लिये तेरी उतावली व्यर्थ है, क्योंकि तू बहुत बढ़ गया है।
35 क्या धर्मियोंमें से लोग अपक्की कोठरीमें इन बातोंके विषय में न पूछते थे, कि मैं कब तक इसी आशा में रहूंगा? हमारे प्रतिफल का फल कब आएगा?
36 और प्रधान स्वर्गदूत उरीएल ने उनको इन बातोंका उत्तर दिया, और कहा, जब तुम में बीज गिनती में भर गए हों तब भी; क्योंकि उस ने जगत को तराजू में तोला है।
37 उस ने समयोंको नाप से नापा; और उस ने काल को गिनती से गिन लिया; और जब तक उक्त उपाय पूरा न हो जाए, तब तक वह उन्हें हिलाता या हिलाता नहीं।
38 तब मैं ने उत्तर दिया, हे प्रभु, प्रभु, हम सब अपवित्रता से भरे हुए हैं।
39 और हमारे कारण कदाचित् पृथ्वी के रहनेवालोंके पापोंके कारण धर्मियोंकी मंजिलें न भरीं।
40 तब उस ने मुझे उत्तर दिया, कि किसी गर्भवती स्त्री के पास जा, और जब वह नौ महीने की हो जाए तब उस से पूछ, कि क्या उसके गर्भ में बच्चे का जन्म अधिक दिन तक बना रहेगा।
41 तब मैं ने कहा, नहीं हे प्रभु, वह ऐसा नहीं कर सकती। और उस ने मुझ से कहा, कब्र में प्राणों की कोठरियां स्त्री के गर्भ के समान हैं।
42 क्योंकि जैसे जच्चा स्त्री प्रसव पीड़ा से बचने के लिये उतावली करती है, वैसे ही ये स्थान भी उन कामों को पहुंचाने में उतावली करते हैं जो उन्हें सौंपा गया है।
43 आरम्भ से देख, जो कुछ तू देखना चाहता है वही तुझे दिखाया जाएगा।
44 तब मैं ने उत्तर दिया, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, और हो सके, और इस कारण मैं योग्य होऊं,
45 तो मुझे दिखा, कि जो बीत गया, उस से अधिक आनेवाला है, या जो बीत गया, उस से अधिक जो बीत चुका है।
46 जो बीत गया उसे मैं जानता हूं, परन्तु जो आनेवाला है उसे मैं नहीं जानता।
47 और उस ने मुझ से कहा, दाहिनी ओर खड़ा हो, और मैं उसका स्वरूप तुझे समझाऊंगा।
48 तब मैं खड़ा हुआ, और क्या देखा, कि एक जलता हुआ तन्दूर मेरे साम्हने से होकर गुजर रहा है; और जब आग बुझ गई, तब मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि धुआं अब भी बना हुआ है।
49 इसके बाद एक जलमय बादल मेरे साम्हने से होकर निकला, और आँधी के साथ बहुत वर्षा बरसाई; और जब तूफानी वर्षा बीत गई, तब बूंदें स्थिर रहीं।
50 तब उस ने मुझ से कहा, आप ही विचार कर; जैसे वर्षा बूंदों से अधिक है, और आग धुएँ से अधिक है; परन्तु बूँदें और धुआँ पीछे रह गए: इस प्रकार जो मात्रा बीत गई वह और भी अधिक हो गई।
51 तब मैं ने प्रार्थना करके कहा, क्या मैं उस समय तक जीवित रह सकता हूं? या उन दिनों में क्या होगा?

52 उस ने मुझे उत्तर दिया, जो चिन्ह तू मुझ से पूछता है, मैं उनको कुछ तो बता सकता हूं, परन्तु तेरे प्राण के विषय में मैं तुझे बताने के लिये नहीं भेजा गया हूं; क्योंकि मैं यह नहीं जानता।

अध्याय 5

1 फिर भी जैसे चिन्ह आते हैं, देखो, ऐसे दिन आएंगे, कि पृथ्वी के रहनेवाले बड़ी संख्या में ले लिए जाएंगे, और सत्य का मार्ग छिप जाएगा, और देश विश्वास से बंजर हो जाएगा।
2 परन्तु अधर्म उस से भी बढ़ जाएगा जो तू ने अब देखा, वा बहुत पहिले से सुना है।
3 और जिस भूमि को तू अब जड़ पकड़ता देखता है वह अचानक उजड़ती हुई देखेगा।
4 परन्तु यदि परमप्रधान तुझे जीवित रहने दे, तो तीसरी तुरही के बाद तू देखेगा कि रात को सूर्य और दिन को तीन बार चन्द्रमा चमकेगा।
5 और लकड़ी में से लोहू टपकेगा, और पत्थर से उसका शब्द निकलेगा, और लोग व्याकुल होंगे;
6 और वह प्रभुता करेगा, जिसकी बाट जोहते हुए पृथ्वी पर रहते हैं, और पक्षी एक संग उड़ जाएंगे;
7 और सदोमिश समुद्र से मछलियाँ निकलेंगी, और रात को ऐसा शब्द होगा, जिसे बहुत लोग न जानते होंगे; परन्तु सब उसका शब्द सुनेंगे।
8 और जगह-जगह हल्ला मचेगा, और आग बार-बार भड़क उठेगी, और जंगली जानवर अपना स्यान बदल लेंगे, और रजस्वला स्त्रियां राक्षसों को जन्म देंगी।
9 और मीठे में खारा जल मिलेगा, और सब मित्र एक दूसरे को नाश करेंगे; तब बुद्धि छिप जाएगी, और बुद्धि अपने गुप्त कक्ष में चली जाएगी,
10 और बहुतों से ढूंढ़ने पर भी न मिलता; तब अधर्म और असंयम पृथ्वी पर बहुत बढ़ जाएंगे।
11 एक देश दूसरे देश से पूछेगा, और कहेगा, क्या वह धर्म जो मनुष्य को धर्मी बनाता है, लुप्त हो गया? तुम्हारे माध्यम से? और यह कहेगा, नहीं.
12 उसी समय मनुष्य आशा तो रखेंगे, परन्तु कुछ न पाएंगे; वे परिश्रम तो करेंगे, परन्तु उनकी चाल सफल न होगी।
13 मुझे ऐसी ही निशानियां तुझे दिखाने की आज्ञा है; और यदि तू फिर प्रार्थना करेगा, और अब की भाँति रोएगा, और कई दिन तक उपवास करेगा, तो तू और भी बड़ी बातें सुनेगा।
14 तब मैं जाग उठा, और मेरे सारे शरीर में अत्यन्त भय व्याप्त हो गया, और मेरा मन व्याकुल हो गया, यहां तक कि मैं मूर्छित हो गया।
15 तब जो दूत मुझ से बातें करने को आया या, उस ने मुझे पकड़कर शान्ति दी, और पांवोंके बल खड़ा किया।
16 और दूसरी रात को ऐसा हुआ, कि प्रजा का प्रधान सलातीएल मेरे पास आकर कहने लगा, तू कहां था? और तेरा मुख इतना भारी क्यों है?
17 क्या तू नहीं जानता, कि इस्राएल बन्धुवाई के देश में तेरे वश में हो गया है?
18 सो तुम रोटी खाओ, और उस चरवाहे के समान हमें न त्यागो जो अपनी भेड़-बकरियों को क्रूर भेड़ियोंके वश में छोड़ देता है।
19 तब मैं ने उस से कहा, मेरे पास से हट जा, और मेरे निकट न आ। और जो कुछ मैं ने कहा वह उस ने सुन लिया, और मेरे पास से चला गया।
20 और इस प्रकार मैं ने उरीएल दूत की आज्ञा के अनुसार विलाप करते और रोते हुए सात दिन तक उपवास किया।
21 और सात दिन के बाद ऐसा हुआ, कि मेरे मन का विचार फिर मुझे बहुत दु:ख देने लगा।
22 और मेरे मन में समझ की आत्मा फिर आ गई, और मैं फिर परमप्रधान से बातें करने लगा।
23 और कहा, हे प्रभु, पृथ्वी के सब वृक्षोंऔर सब वृक्षोंमें से तू ने एक ही दाखलता को चुन लिया है;
24 और सारे जगत के सब देशोंमें से तू ने एक गड़हा, और उसके सब फूलोंमें से एक सोसन का फूल चुन लिया।
25 और समुद्र के सब गहिरे स्थानोंमें से एक नदी को तू ने भर लिया है; और सब बसाए हुए नगरोंमें से तू ने सिय्योन को अपने लिये पवित्र कर लिया है;
26 और जितने पक्षी उत्पन्न हुए उन में से तू ने एक कबूतर रखा, और जितने पशु उत्पन्न हुए उन में से एक भेड़ तू ने रख ली।
27 और तू ने सारी भीड़ के बीच में एक जाति बना ली; और इन लोगोंको, जिन से तू ने प्रेम रखा, तू ने ऐसी व्यवस्था दी जो सब को भाती है।
28 और अब, हे प्रभु, तू ने इस एक को बहुतों के हाथ में क्यों कर दिया? और एक ही मूल पर तू ने औरोंको तैयार किया, और अपने एक ही वंश को बहुतोंमें क्यों तितर-बितर किया है?
29 और जो तेरी प्रतिज्ञाओं से मुकर गए, और तेरी वाचाओं की प्रतीति नहीं करते थे, उन्होंने उनको रौंद डाला है।
30 यदि तू ने अपक्की प्रजा से इतना बैर रखा, तो क्या तुझे अपके ही हाथ से उनको दण्ड देना चाहिए?
31 जब मैं ये बातें कह चुका, तो जो दूत पिछली रात को मेरे पास आया, वह मेरे पास भेजा गया।
32 और मुझ से कहा, मेरी सुन, और मैं तुझे सिखाऊंगा; जो कुछ मैं कहता हूं उसे सुनो, और मैं तुम्हें और भी बताऊंगा।
33 और मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु, बोल। तब उस ने मुझ से कहा, तू इस्राएल के कारण मन में बड़ा व्याकुल होता है; क्या तू उन लोगोंसे उनके रचनेवाले से अधिक प्रेम रखता है?
34 और मैं ने कहा, नहीं हे प्रभु; परन्तु मैं ने बड़े दु:ख के विषय में कहा है; क्योंकि जब मैं परमप्रधान के मार्ग को समझने, और उसके न्याय का भाग ढूंढ़ने का प्रयत्न करता हूं, तब मेरी लगाम प्रति घड़ी मुझे दु:ख देती है।
35 और उस ने मुझ से कहा, तू नहीं कर सकता। और मैंने कहा, क्यों, प्रभु? फिर मेरा जन्म कहां हुआ? या मेरी माँ के गर्भ में ही मेरी कब्र क्यों न हुई, कि मैं याकूब का कष्ट, और इस्राएल के पशुओं का कठिन परिश्रम न देख पाता?
36 और उस ने मुझ से कहा, जो बातें अब तक घटी नहीं, उन्हें गिन ले, और जो कूड़ा इधर उधर बिखरा हुआ है, उसे समेट ले, और जो फूल मुरझा गए हैं उन्हें फिर से हरा कर दे।
37 जो स्थान बन्द हैं उन्हें मेरे लिये खोल दे, और जो हवाएं उन में बन्द हैं उन्हें मेरे लिये बाहर ले आ, मुझे वाणी का स्वरूप दिखा; और तब मैं जो कुछ तू जानना चाहता है वह तुझ को बताऊंगा।
38 और मैं ने कहा, हे प्रभु, प्रभु, प्रभु, इन बातों को कौन जान सकता है, परन्तु वह जो मनुष्यों के बीच में न रहता हो?
39 और मैं तो निर्बुद्धि हूं; सो जो तू मुझ से पूछता है, उसके विषय में मैं क्योंकर कहूं?
40 तब उस ने मुझ से कहा, जैसे तू इन बातोंमें से कुछ भी नहीं कर सकता, जो मैं ने कहा है, वैसे ही तू मेरा न्याय, या अन्त में उस प्रेम का पता नहीं लगा सकता, जिसका वचन मैं ने अपनी प्रजा से दिया है।
41 और मैं ने कहा, हे प्रभु, देख, क्या तू अब भी उन लोगों के निकट है जो अन्त तक बचे रहेंगे; और जो मुझ से पहिले थे, या हम जो अब हैं, या जो हमारे बाद आएंगे वे क्या करेंगे?

42 और उस ने मुझ से कहा, मैं अपना न्याय कड़े के समान करूंगा; जैसे पहिले में ढिलाई नहीं, वैसे ही पहिले में फुर्ती नहीं।
43 इसलिये मैं ने उत्तर दिया, क्या तू उन्हें जो बन चुका है और अभी बना हुआ है, और जो आनेवाला है, तुरन्त नहीं बना सकता; ताकि आप अपना निर्णय शीघ्र बता सकें?
44 तब उस ने मुझे उत्तर दिया, कि प्राणी बनानेवाले से अधिक उतावली न करे; न ही दुनिया उन्हें तुरंत पकड़ सकती है जो उसमें बनाई जाएगी।
45 और मैं ने कहा, जैसा तू ने अपके दास से कहा या; कि तू जो सब को जिलाता है, उस ने जो सृष्टी तू ने बनाई, उस को तुरन्त जिला दिया, और उस सृष्टी ने उसे जन्म दिया, वैसे ही अब भी वह उन को जिलाएगा। अब तुरन्त उपस्थित होइये।
46 और उस ने मुझ से कहा, स्त्री के गर्भ से पूछ, और उस से कह, यदि तू सन्तान उत्पन्न करती है, तो एक साथ क्यों नहीं, परन्तु एक के पीछे एक करके उत्पन्न करती है? इसलिये उससे प्रार्थना करो कि वह दस सन्तान उत्पन्न करे n एक ही बार में.
47 और मैं ने कहा, वह नहीं कर सकती: वरन समय की दूरी के कारण अवश्य है।
48 तब उस ने मुझ से कहा, वैसे ही मैं ने पृथ्वी की कोख उन को दी है जो उस में अपने अपने समय पर बोए जाते हैं।
49 क्योंकि जिस प्रकार छोटा बालक बूढ़ों की वस्तुएं उत्पन्न नहीं कर सकता, उसी प्रकार मैं ने अपने रचे हुए जगत को नष्ट कर दिया है।
50 और मैं ने पूछा, कि अब तू ने मुझे मार्ग दे दिया है, इसलिये मैं तुझ से आगे बोलूंगा; क्योंकि हमारी माता, जिसके विषय में तू ने मुझ से कहा था, कि वह जवान है, अब बूढ़ी होने पर है।
51 उस ने मुझे उत्तर दिया, कि किसी गर्भवती स्त्री से पूछ, और वह तुझ से कहेगी।
52 उस से कह, कि जिन्हें तू ने अब निकाला है वे पहिले के समान क्यों हो गए, परन्तु कद में छोटे हैं?
53 और वह तुझे उत्तर देगी, कि जो जवानी के समय में जन्म लेते हैं, वे एक रीति के होते हैं, और जो बुढ़ापे के समय, जब गर्भ टूट जाता है, वे उत्पन्न होते हैं, वे दूसरी रीति के होते हैं।
54 इसलिये इस पर भी विचार करो, कि तुम जो तुम से पहिले थे, उन से कम कद के हो।
55 और जो तुम्हारे बाद तुम्हारे बाद आते हैं, वे तुम से भी छोटे हैं, जैसे वे प्राणी जो अब बूढ़े होने लगे हैं, और जवानी की ताकत भी पार कर चुके हैं।
56 तब मैं ने कहा, हे प्रभु, मैं तुझ से बिनती करता हूं, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो अपके उस दास को बता, जिसके द्वारा तू अपनी सृष्टी की सुधि लेता है।

अध्याय 6

1 और उस ने मुझ से कहा, आरम्भ में, जब पृथ्वी बनी, और जगत की सीमाएं थमने से पहिले, वा पवनें चलती थीं,
2 इससे पहिले कि बादल गरजे और बिजली चमके, वा स्वर्ग की नेव डाली गई,
3 इससे पहले कि सुन्दर फूल दिखाई पड़ते थे, वा चलती-फिरती शक्तियाँ प्रगट होती थीं, और स्वर्गदूतों की अनगिनत भीड़ इकट्ठी होती थी,
4 वा आकाश की मापोंके नाम पहिले से पहिले से आकाश की ऊंचाइयां ऊपर उठती थीं, वा सिय्योन की चिमनियां कभी जलती थीं,
5 और जब से वर्तमान वर्षों की खोज की गई, और वा उन के आविष्कार हुए, कि अब पाप को मोड़ दिया गया, पहिले उन पर मुहर की गई, कि उन्होंने भण्डार के लिथे विश्वास इकट्ठा किया है:
6 तब मैं ने इन बातों पर विचार किया, और वे सब मेरे ही द्वारा, किसी और के द्वारा उत्पन्न नहीं हुए: वे भी मेरे ही द्वारा समाप्त होंगे, और किसी और के द्वारा नहीं।
7 तब मैं ने उत्तर दिया, समयोंके अलग होने का क्या लाभ होगा? या पहिले का अन्त और उसके बाद का आरम्भ कब होगा?
8 और उस ने मुझ से कहा, इब्राहीम से इसहाक तक, जब याकूब और उस से एसाव उत्पन्न हुए, तब याकूब ने पहले हाथ से एसाव की एड़ी को पकड़ा।
9 क्योंकि एसाव जगत का अन्त है, और याकूब उसके पीछे का आदि है।
10 मनुष्य का हाथ एड़ी और हाथ के बीच में है; हे एस्द्रा, तू दूसरा प्रश्न न पूछ।
11 तब मैं ने उत्तर दिया, हे प्रभु, प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो,
12 मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू अपने दास को अपनी उन निशानियों का अन्त दिखा दे, जिनका भाग तू ने मुझे पिछली रात को दिखाया था।
13 तब उस ने मुझ से कहा, अपके पांवोंके बल खड़ा हो, और ऊंचे शब्द का शब्द सुन।
14 और यह मानो एक बड़ा आंदोलन होगा; परन्तु जिस स्थान पर तू खड़ा हो, उस स्थान से न हटना।
15 इसलिये जब वह बोले, तो मत डरना; क्योंकि वचन अन्त का है, और पृथ्वी की नेव का ज्ञान हो गया है।
16 और क्यों? क्योंकि इन वस्तुओं की वाणी थरथराती और द्रवित होती है; क्योंकि वह जानता है, कि इन वस्तुओं का अन्त अवश्य बदल जाएगा।
17 और ऐसा हुआ, कि जब मैं ने यह सुना, तो अपके पांवोंके बल खड़ा हुआ, और कान लगाया, और क्या देखा, कि कोई शब्द बोल रहा था, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था।
18 और उस ने कहा, देख, ऐसे दिन आते हैं, कि मैं निकट जाकर पृथ्वी के रहनेवालोंकी सुधि लूंगा।
19 और उन से पूछना आरम्भ करेंगे, कि वे कौन हैं जिन्होंने अपने अधर्म से अन्याय किया है, और सिय्योन का दु:ख कब पूरा होगा;
20 और जब जगत, जो लुप्त होने को है, समाप्त हो जाएगा, तब मैं ये चिन्ह दिखाऊंगा: आकाश के साम्हने पुस्तकें खोली जाएंगी, और वे सब एक साथ देखेंगे;
21 और एक-एक वर्ष के बालक ऊंचे शब्द से बोलेंगे, और गर्भवती स्त्रियां तीन या चार महीने के बेवक़्त बच्चे जनेंगी, और वे जीवित रहकर बड़े किए जाएंगे।
22 और जो खेत बोए गए थे वे अचानक बिन बोए हुए दिखाई देंगे, और भरे हुए भण्डार अचानक सूने पाए जाएंगे;
23 और नरसिंगे का शब्द होगा, जिसे सुनकर सब एकाएक डर जाएंगे।
24 उस समय मित्र शत्रु की नाईं एक दूसरे से लड़ेंगे, और पृथ्वी अपने रहनेवालोंसमेत स्तब्ध हो जाएगी, और सोतों के सोते बन्द हो जाएंगे, और तीन घड़ी तक न चलेंगे।
25 जो कोई इन सब बातोंमें से जो मैं ने तुम से कहा है बच जाए, वह बच निकलेगा, और मेरा उद्धार और तेरे जगत का अन्त देखेगा।
26 और जो मनुष्य ग्रहण किए जाएंगे, जिन्होंने जन्म से मृत्यु का स्वाद नहीं चखा, वे इसे देखेंगे; और निवासियों का मन बदल जाएगा, और दूसरे अर्थ में बदल जाएगा।
27 क्योंकि बुराई दूर की जाएगी, और छल का अन्त किया जाएगा।
28 जहां तक विश्वास की बात है, वह फलेगा-फूलेगा, भ्रष्टाचार दूर होगा, और सत्य, जो बहुत दिनों से निष्फल रहा है, घोषित किया जाएगा।

29 और जब उस ने मुझ से बातें कीं , देखो, मैं जिसके साम्हने खड़ा था, उस पर थोड़ी-थोड़ी दृष्टि करता रहा।
30 और उस ने मुझ से ये बातें कहीं; मैं तुम्हें आने वाली रात का समय बताने आया हूँ।
31 यदि तू फिर भी प्रार्थना करे, और सात दिन का उपवास करे, तो मैं जो मैं ने सुना है, उस से भी बड़ी बातें तुझे प्रति दिन बताऊंगा।
32 क्योंकि तेरी वाणी परमप्रधान के साम्हने सुनी जाती है; क्योंकि पराक्रमी ने तेरे धर्ममय काम को देखा है, और तेरी पवित्रता को भी देखा है, जो तू लड़कपन से लेकर आज तक है।
33 इसलिये उस ने मुझे ये सब बातें तुझे दिखाने और यह कहने को भेजा है, कि ढाढ़स रखो, और मत डरो।
34 और बीते दिनों के अनुसार व्यर्थ बातें सोचने में उतावली न करो, ऐसा न हो कि तुम बाद के दिनों में उतावली करो।
35 और इसके बाद ऐसा हुआ, कि मैं फिर रोया, और उसी रीति से सात दिन तक उपवास किया, कि जो तीन सप्ताह उस ने मुझ से कहे थे उनको पूरा करूं।
36 और आठवीं रात को मेरा मन फिर व्याकुल हुआ, और मैं परमप्रधान के साम्हने बोलने लगा।
37 क्योंकि मेरा मन बहुत जल गया, और मैं संकट में पड़ गया।
38 और मैं ने कहा, हे प्रभु, तू ने तो सृष्टि के आरम्भ से, वरन पहिले दिन से ही कहा, और यों कहा; स्वर्ग और पृथ्वी बनायें; और तेरा वचन उत्तम काम निकला।
39 और तब आत्मा प्रगट हुई, और चारों ओर अन्धियारा और सन्नाटा छा गया; मनुष्य की आवाज़ की ध्वनि अभी तक नहीं बनी थी।
40 तब तू ने अपने भण्डारों में से उजियाले को निकलने की आज्ञा दी, कि तेरा काम प्रगट हो।
41 दूसरे दिन तू ने आकाशमण्डल की आत्मा बनाकर उसे दो भागों में बाँटने, और जल के बीच दो भाग करने की आज्ञा दी, कि एक तो ऊपर उठे, और दूसरा नीचे रहे।
42 तीसरे दिन तू ने आज्ञा दी, कि जल पृथ्वी की सातवीं पृथ्वी पर इकट्ठा किया जाए; और छ: पृथ्वी सुखाकर रख छोड़ा, कि उन में से कुछ परमेश्वर की ओर से बोया और जोता जाए, और तेरे काम आए।
43 क्योंकि तेरा वचन फैलते ही काम पूरा हो गया।
44 क्योंकि तुरन्त बहुत से बड़े और अनगिनित फल, और बहुत से और भांति भांति के स्वाद के सुख, और न बदलने वाले रंग के फूल, और अदभुत सुगन्ध के फूल उग आए: और तीसरे दिन ऐसा ही हुआ।
45 चौथे दिन तू ने आज्ञा दी, कि सूर्य चमके, और चान्द का प्रकाश हो, और तारे क्रम में हों;
46 और उन्हें मनुष्य की सेवा करने का आदेश दिया, जो किया जाना था।
47 पांचवें दिन तू ने सातवें भाग से, जहां जल इकट्ठा होता था, कहा, कि उस से जीवित प्राणी, पक्षी, और मछलियां उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया।
48 क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा से गूंगा जल और निर्जीव प्राणी जीवित प्राणी उत्पन्न हुए, कि सब लोग तेरे आश्चर्यकर्मों की स्तुति करें।
49 फिर तू ने दो जीवित प्राणी ठहराए, एक का नाम तू ने हनोक रखा, और दूसरे का लेविथान;
50 और एक को दूसरे से अलग किया, इसलिये कि सातवां भाग अर्थात जहां जल इकट्ठा होता था, उन दोनों को न रोक सके।
51 तू ने हनोक को एक भाग दिया, जो तीसरे दिन सूख गया, कि वह उसी भाग में निवास करे, जिस में हजारों पहाड़ियां हैं।
52 परन्तु तू ने लिब्यातान को सातवां भाग अर्थात् गीला भाग दिया; और उसे रख छोड़ा है, कि तू जिस से चाहे, और जब चाहे, तब उसे फाड़ डाले।
53 छठवें दिन तू ने पृथ्वी को आज्ञा दी, कि वह तेरे साम्हने पशुओं, और घरेलू पशुओं, और रेंगनेवाले जन्तुओं को उत्पन्न करेगी।
54 और इनके बाद आदम भी हुआ, जिसे तू ने अपक्की सारी सृष्टी का स्वामी ठहराया; उसी से हम सब निकले, वरन वह प्रजा भी, जिसे तू ने चुन लिया।
55 हे यहोवा, मैं ने यह सब तेरे साम्हने इसलिये कहा है, कि तू ने हमारे लिये जगत बनाया है
56 और और लोगोंके विषय में जो आदम की सन्तान से आए, तू ने कहा, कि वे कुछ नहीं, वरन थूकने के समान हैं; और उनकी बहुतायत को बर्तन में से गिरी हुई बूंद के समान ठहराया है।
57 और अब, हे प्रभु, देखो, ये अन्यजातियां, जो कभी तुच्छ समझी जाती थीं, हम पर प्रभुता करने लगी हैं, और हमें निगलने लगी हैं ।
58 परन्तु हम तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू अपना पहिलौठा, और अपना एकलौता, और अपना प्रेमी कहता है, उनके वश में कर दिए जाते हैं।
59 यदि जगत अब हमारे लिये रचा गया है, तो जगत में हमारा भाग क्यों न हो? यह कब तक सहना पड़ेगा?

अध्याय 7

1 और जब मैं ये बातें कह चुका, तो जो स्वर्गदूत पिछली रात को मेरे पास भेजा गया या, वह मेरे पास भेजा गया।
2 और उस ने मुझ से कहा, हे एस्द्रास, उठ, और जो बातें मैं तुझ से कहने को आया हूं सुन।
3 और मैं ने कहा, हे मेरे परमेश्वर, बोल। तब उस ने मुझ से कहा, समुद्र चौड़े स्यान में बना है, इसलिये वह गहिरा और बड़ा हो गया है।
4 परन्तु प्रवेश द्वार संकरा और नदी के समान था;
5 फिर कौन समुद्र में जाकर उस पर दृष्टि कर सके, और उस पर प्रभुता कर सके? यदि वह संकीर्ण में नहीं गया, तो विस्तृत में कैसे आ सकता है?
6 और भी एक बात है; एक नगर बसाया गया, और चौड़े मैदान में बसाया गया, और सब अच्छी वस्तुओं से परिपूर्ण है;
7 उसका प्रवेश द्वार सकरा है, और गिरने के भय से ऐसा बना है, मानो दाहिनी ओर आग हो, और बाईं ओर गहिरा जल हो:
8 और उन दोनों के बीच एक ही मार्ग, यहां तक कि आग और पानी के बीच, इतना छोटा कि केवल एक रास्ता हो सकता था नहीं यार तुरंत वहां जाओ.
9 यदि यह नगर अब किसी मनुष्य को निज भाग करने के लिथे दिया गया है, और वह इसके साम्हने आए खतरे से कभी न भागा, तो उसे यह निज भाग क्योंकर मिलेगा?
10 और मैं ने कहा, हे प्रभु ऐसा ही है। तब उस ने मुझ से कहा, इस्राएल का भाग भी ऐसा ही है।
11 क्योंकि मैं ने उन्हीं के लिये जगत को बनाया; और जब आदम ने मेरी विधियोंका उल्लंघन किया, तब जो आज्ञा दी गई, वह अब पूरी हो गई।
12 तब इस जगत के द्वार संकरे, और दु:ख और कष्ट से भरे हुए कर दिए गए; वे थोड़े ही हैं, और बुरे हैं, और संकटों से भरे हुए हैं, और बहुत दु:खदायी हैं।
13 क्योंकि प्राचीन जगत के प्रवेश द्वार चौड़े और दृढ़ थे, और अमर फल लाते थे।
14 सो यदि जीवित लोग इन निकम्मी और व्यर्थ वस्तुओं में प्रवेश करने के लिये परिश्रम न करें, तो जो कुछ उनके लिये रखा गया है उसे कदापि न पा सकेंगे।
15 इसलिये अब तू क्यों व्याकुल होता है, क्योंकि तू तो नाशवान मनुष्य है? और तू क्यों नष्ट हो गया, जबकि तू तो नश्वर है?

16 तू ने अपने मन में इस समय की बात को छोड़, जो आनेवाली है, क्यों नहीं सोची?
17 तब मैं ने उत्तर दिया, हे प्रभु, हे प्रभु, तू ने अपनी व्यवस्था में यह ठहराया है, कि धर्मी इन वस्तुओंके अधिक्कारनेी हों, परन्तु भक्तिहीन नाश हों।
18 तौभी धर्मी संकट में तो दुःख उठाएंगे, और दूर की आशा रखेंगे; क्योंकि जिन्होंने दुष्टता की है, वे दुःख ही तो उठाएंगे, तौभी दूर का मुंह न देख सकेंगे।
19 और उस ने मुझ से कहा; परमेश्वर से बड़ा कोई न्यायाधीश नहीं है, और सर्वोच्च से बढ़कर कोई भी समझ रखने वाला नहीं है।
20 क्योंकि बहुत से लोग इसी जीवन में नाश हो जाते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की उस व्यवस्था का तिरस्कार करते हैं जो उन्हें दी गई है।
21 क्योंकि परमेश्वर ने आनेवालोंको सख्त आज्ञा दी है, कि जैसा वे आए हैं वैसा ही जीवित रहने के लिये क्या करें, और दण्ड से बचने के लिये किस बात का पालन करें।
22 तौभी उन्होंने उसकी आज्ञा न मानी; परन्तु उसके विरुद्ध बातें कीं, और व्यर्थ बातें कल्पना कीं;
23 और अपने बुरे कामोंके द्वारा अपने आप को धोखा दिया; और परमप्रधान के विषय में कहा, कि वह नहीं है; और उसकी चाल नहीं जानता था;
24 परन्तु उन्होंने उसकी व्यवस्था को तुच्छ जाना, और उसकी वाचाओं को तुच्छ जाना है; वे उसकी विधियोंपर विश्वासयोग्य नहीं रहे, और उसके काम नहीं किए।
25 और इसलिए, एस्ड्रास, खाली के लिए खाली चीजें हैं, और भरे हुए के लिए पूरी चीजें हैं।
26 देख, वह समय आएगा, कि ये चिन्ह जो मैं ने तुझ से कहा है पूरे होंगे, और दुल्हन प्रकट होगी, और जो अब पृथ्वी पर से निकाली गई है, दिखाई देगी।
27 और जो कोई उपरोक्त बुराइयों से छुटकारा पाएगा वह मेरे आश्चर्यकर्म देखेगा।
28 क्योंकि मेरा पुत्र यीशु अपने साथियोंके साय प्रगट होगा, और जो बचे रहेंगे वे चार सौ वर्ष तक आनन्द करेंगे।
29 इन वर्षों के बाद मेरा पुत्र मसीह, और सब प्राणी जो जीवित हैं, मर जाएंगे।
30 और जगत पहिले न्याय के समान सात दिन के लिये ख़ामोशी में बदल जाएगा, यहां तक कि कोई भी न बचेगा।
31 और सात दिन के बाद जगत में जो अब तक नहीं जागेगा, वह उठ खड़ा होगा, और जो भ्रष्ट हो वह मर जाएगा।
32 और पृथ्वी अपने में सोए हुओं को फेर देगी, और धूल उनको जो चुपचाप बस गए हैं, और गुप्त स्थान उन प्राणों को बचा लेंगे जो उनको सौंपे गए हैं।
33 और परमप्रधान न्याय आसन पर प्रकट होगा, और दुख दूर हो जाएगा, और लंबे समय की पीड़ा का अंत हो जाएगा:
34 परन्तु न्याय कायम रहेगा, सत्य स्थिर रहेगा, और विश्वास दृढ़ रहेगा;
35 और काम का पालन किया जाएगा, और प्रतिफल दिखाया जाएगा, और अच्छे कर्म प्रभावशाली होंगे, और दुष्ट कर्मों पर शासन न किया जाएगा।
36 तब मैं ने कहा, पहिले इब्राहीम ने सदोमियोंके लिये और मूसा ने उन बापदादोंके लिये जो जंगल में पाप करते थे प्रार्थना की।
37 और आकान के समय में यीशु इस्राएल की ओर से उसके पीछे हो लिया;
38 और विनाश के लिथे शमूएल और दाऊद, और पवित्रस्थान में आनेवालोंके लिथे सुलैमान।
39 और मेह बरसानेवालोंके लिथे हेलियास; और मरे हुओं के लिये, कि वह जीवित रहे:
40 और सन्हेरीब के समय में लोगोंकी ओर से हिजकिय्याह, और बहुतोंके लिथे बहुत।
41 सो अब भी जब देखा कि बिगाड़ बढ़ गया है, और दुष्टता बढ़ गई है, और धर्मी दुष्टों के लिये प्रार्थना करने लगे, तो अब भी ऐसा क्यों न हो?
42 उस ने मुझे उत्तर दिया, कि यह वर्तमान जीवन अन्त नहीं है, जहां बड़ी महिमा बनी रहेगी; इसलिए उन्होंने कमज़ोरों के लिए प्रार्थना की है।
43 परन्तु विनाश का दिन इस समय का अन्त होगा, और आनेवाले अमरत्व का आरम्भ होगा, जिस में विनाश मिट जाएगा,
44 असंयम का अन्त हो जाता है, विश्वासघात का नाश होता है, धर्म बढ़ता है, और सच्चाई उगती है।
45 तब कोई नाश किए हुए को बचा न सकेगा, और जो जय को प्राप्त हो उस पर अन्धेर कर सकेगा।
46 तब मैं ने उत्तर दिया, यह मेरी पहिली और अन्तिम बात है, कि यह भला होता, कि आदम को पृथ्वी न दी जाती; नहीं तो जब वह दी गई, तो उसे पाप करने से रोक देता।
47 क्योंकि इस समय मनुष्य को कष्ट में रहने और मरने के बाद दण्ड की आशा करने से क्या लाभ?
48 हे आदम, तू ने क्या किया है? यद्यपि तू ही ने पाप किया है, तौभी तू अकेला नहीं, परन्तु हम सब जो तुझ से उत्पन्न हुए हैं, पाप में गिरे हैं।
49 क्योंकि यदि हम से अमर समय की प्रतिज्ञा की जाए, तो हमें क्या लाभ क्या हम ने वे काम किए हैं जो मृत्यु लाते हैं?
50 और हम से अनन्त आशा की प्रतिज्ञा की गई है, और हम तो बड़े ही दुष्ट होकर व्यर्थ ठहरे हैं?
51 और हमारे लिथे स्वास्थ्य और निडरता के घर तैयार किए गए हैं, और हम दुष्टता से जी रहे हैं?
52 और परमप्रधान की महिमा उनकी रक्षा के लिये बनी रहती है, जिन्होंने सावधान जीवन व्यतीत किया है, जबकि हम सब से अधिक बुरे मार्गों पर चले हैं?
53 और वहां एक ऐसा स्वर्ग दिखाया जाए, जिसका फल सर्वदा बना रहे, जिस में सुरक्षा और औषधि है, क्योंकि हम उस में प्रवेश करने न पाएंगे?
54 (क्योंकि हम अप्रिय स्थानों में चले हैं।)
55 और उन लोगों के चेहरे जो परहेज़गार हैं तारों से अधिक चमकेंगे, और हमारे चेहरे अन्धियारे से भी अधिक काले होंगे?
56 क्योंकि जब तक हम जीवित रहे, और अधर्म करते रहे, तो यह नहीं सोचा, कि मरने के बाद उसका फल भोगें।
57 तब उस ने मुझे उत्तर देकर कहा, युद्ध की रीति यह है, कि जो मनुष्य पृथ्वी पर उत्पन्न हो वह लड़ेगा;
58 कि यदि वह जीत जाए, तो तेरे कहने के अनुसार दुख उठाए; परन्तु यदि वह जीत जाए, तो जो कुछ मैं कहता हूं, वह मान लेगा।
59 क्योंकि यह वह जीवन है, जिसके विषय में मूसा ने अपने जीवित रहते लोगोंसे कहा या, कि जीवन को ही चुन लो, कि तुम जीवित रहो।
60 तौभी न उन्होंने उस की प्रतीति की, और न उसके बाद के भविष्यद्वक्ताओं की, और न मुझ की, जिन्होंने उन से बातें की।
61 कि उनके नाश में इतना भारीपन न हो, जितना उद्धार की आशा करनेवालों को आनन्द होगा।
62 तब मैं ने उत्तर दिया, हे प्रभु, मैं जानता हूं, कि परमप्रधान दयालु कहलाता है, कि वह उन पर भी दया करता है जो अब तक जगत में नहीं आए।
63 और उन पर भी जो उसकी व्यवस्था की ओर फिरते हैं;
64 और वह धैर्यवान है, और अपने प्राणियों की नाईं पाप करने वालों को धीरज धरता है;
65 और वह उदार है, क्योंकि जहां जरूरत हो वह देने को तैयार है;

66 और वह बड़ा दयालु है, क्योंकि वह वर्तमान, और भूतकाल, और आनेवाले पर भी बहुत अधिक दया करता है।
67 क्योंकि यदि वह अपनी दया न बढ़ाए, तो संसार अपने उत्तराधिकारियों के साथ बना न रहेगा।
68 और उस ने क्षमा किया; क्योंकि यदि उस ने अपनी भलाई के अनुसार ऐसा न किया, कि अधर्म करनेवालोंको उन से छुटकारा मिले, तो मनुष्योंका दस हजारवाँ भाग भी जीवित न बचेगा।
69 और न्यायी होकर यदि वह उन को झमा न करे जो उसके वचन से चंगे हो गए, और बहुत से झगड़ों को दूर न कर दे,
70 असंख्य भीड़ में बहुत कम साहस शेष रह जाना चाहिए।

अध्याय 8

1 और उस ने मुझे उत्तर दिया, कि परमप्रधान ने यह जगत तो बहुतोंके लिये बनाया, परन्तु आनेवाला जगत थोड़े ही लोगोंके लिये बनाया है।
2 हे एस्द्रास, मैं तुझे एक उपमा बताऊंगा; जैसे जब तू पृथ्वी से पूछेगा, तब वह तुझ से कहेगी, कि मिट्टी के बर्तन तो सांचे में बहुत ढलते हैं, परन्तु मिट्टी में बहुत कम सोना निकलता है; इसी प्रकार इस वर्तमान संसार की रीति भी है।
3 सृजे गए बहुत हैं, परन्तु उद्धार थोड़े ही किया जाएगा।
4 मैं ने उत्तर दिया, हे मेरे मन, समझ, सो निगल जा, और बुद्धि को निगल जा।
5 क्योंकि तू कान लगाने को तैयार है, और भविष्यद्वाणी करने को तैयार है; क्योंकि जीवित रहने को छोड़ तेरे पास अब कुछ भी नहीं बचा।
6 हे प्रभु, यदि तू अपने दास को यह न दे, कि हम तेरे साम्हने प्रार्थना करें, और तू हमारे मन के अनुसार बीज, और हमारी समझ के अनुसार संस्कार दे, कि उसका फल निकले; जो मनुष्य भ्रष्ट है, और मनुष्य का पद धारण करता है, वह किस रीति से जीवित रहेगा?
7 क्योंकि तू अकेला है, और हम सब तेरे हाथ की बनी हुई वस्तुएं हैं, जैसा तू ने कहा है।
8 क्योंकि जब शरीर माता के गर्भ में बनता है, और तू उसके अंग देता है, तब तेरी सृष्टी आग और जल में रक्षित रहती है, और तेरी बनाई हुई सृष्टी जो उसमें उत्पन्न होती है, नौ महीने तक जीवित रहती है।
9 परन्तु जो सुरक्षित रखा जाता है और रखा जाता है, वह दोनों सुरक्षित रखा जाएगा: और समय आने पर गर्भ अपने में पले हुए को सौंप देता है।
10 क्योंकि तू ने शरीर के अंगों से अर्थात् स्तनों से दूध देने की आज्ञा दी है, जो स्तनों का फल है।
11 कि जो वस्तु गढ़ी गई है, वह जब तक तू उस पर दया न करे, तब तक उसका पालन पोषण होता रहे।
12 तू ने उसे अपने धर्म से पाला, और अपनी व्यवस्था के अनुसार बड़ा किया, और अपने न्याय से उसे सुधारा।
13 और अपके प्राणी के समान उसे घात करना, और अपके काम के समान उसे जिलाना।
14 इसलिये यदि तू उसे नाश करेगा, जो बड़े परिश्रम से रचा गया है, तो तेरी आज्ञा से ठहराया जाना आसान बात है, कि जो वस्तु बनाई गई है वह बनी रहे।
15 इसलिये अब, हे प्रभु, मैं बोलूंगा; आम तौर पर मनुष्य को छूना, आप सबसे अच्छी तरह जानते हैं; परन्तु तेरी प्रजा को छू रहा हूं, जिसके कारण मुझे खेद है;
16 और तेरे निज भाग के लिथे मैं विलाप करूंगा; और इस्राएल के लिथे मैं भारी हूं; और याकूब के लिये मैं व्याकुल हूं;
17 इसलिथे मैं अपके लिथे और उनके लिथे तेरे साम्हने प्रार्यना करूंगा; क्योंकि मैं हम लोगोंको जो इस देश में रहते हैं उनकी हानि देखता हूं।
18 परन्तु मैं ने आनेवाले न्यायी की फुर्ती सुनी है।
19 इसलिये मेरी सुनो, और मेरी बातें समझो, और मैं तुम्हारे साम्हने बोलूंगा। यह एस्ड्रास के शब्दों की शुरुआत है, उसके ऊपर उठाए जाने से पहले: और मैं एस सहायता,
20 हे प्रभु, तू जो अनन्त काल में निवास करता है, जो आकाश और वायु में सब कुछ ऊपर से देखता है;
21 जिसका सिंहासन अतुलनीय है; जिसकी महिमा समझी न जा सके; जिसके सामने स्वर्गदूतों की सेना थरथराती हुई खड़ी है,
22 जिसकी सेवा वायु और आग से परिचित हो; जिसका वचन सत्य है, और बातें स्थिर हैं; उसकी आज्ञा दृढ़ और विधि भययोग्य है;
23 जिस की दृष्टि से गहिरे स्थान सूख जाते, और जलजलाहट से पहाड़ पिघल जाते हैं; जो सत्य गवाही देता है:
24 हे अपने दास की प्रार्थना सुन, और अपने प्राणी की बिनती की ओर कान लगा।
25 क्योंकि जब तक मैं जीवित रहूंगा, तब तक बोलता रहूंगा, और जब तक मैं समझूंगा तब तक उत्तर देता रहूंगा।
26 अपक्की प्रजा के पापोंपर दृष्टि न कर; परन्तु उन पर जो सच्चाई से तेरी सेवा करते हैं।
27 अन्यजातियों की दुष्ट युक्तियोंपर ध्यान न दे, परन्तु जो क्लेशोंमें तेरी चितौनियोंको मानते हैं, उनकी लालसा पर ध्यान दे।
28 जो तेरे साम्हने कपट की चाल चलते थे, उन पर ध्यान न कर; परन्तु उनको स्मरण कर, जो तेरी इच्छा के अनुसार तेरे भय को जान लेते हैं।
29 जो पशु के समान रहते हैं उनको नाश करना तेरी इच्छा न हो; परन्तु उन पर दृष्टि करना जिन्होंने तेरी व्यवस्था स्पष्ट रीति से सिखाई है।
30 जो पशु से भी बदतर समझे जाते हैं उन पर क्रोध न करना; परन्तु उन से प्रेम रखो जो सदैव तेरे धर्म और महिमा पर भरोसा रखते हैं।
31 क्योंकि हम और हमारे बाप-दादा ऐसे रोगों से सूखते रहते हैं; परन्तु हम पापियोंके कारण तू दयालु कहलाएगा।
32 क्योंकि यदि तू हम पर दया करना चाहे, तो हम पर, अर्थात् जिन लोगों ने धर्म के काम नहीं किए, दयालु कहलाएगा।
33 क्योंकि जो धर्मी तुझ से बहुत भले काम करते हैं, वे अपने ही कामों के अनुसार प्रतिफल पाएंगे।
34 मनुष्य क्या है, कि तू उस पर क्रोध करे? या नाशवान पीढ़ी क्या है, कि तू उसके प्रति इतना कड़ुआ हो?
35 क्योंकि जो उत्पन्न हुए हैं उन में से सचमुच मनुष्य कोई नहीं, परन्तु उस ने दुष्टता की है; और ईमान वालों में से कोई ऐसा नहीं जिसने ग़लती न की हो।
36 क्योंकि हे यहोवा, इसी से तेरा धर्म और भलाई प्रगट होगी, यदि तू उन पर दया करेगा जो भले कामों पर भरोसा नहीं रखते।
37 तब उस ने मुझे उत्तर देकर कहा, कुछ बातें तू ने ठीक कही हैं, और तेरे वचन के अनुसार ही होगा।
38 क्योंकि मैं उन लोगों के स्वभाव पर विचार नहीं करूंगा, जिन्होंने मृत्यु से पहिले, न्याय से पहिले, और विनाश से पहिले पाप किया है।
39 परन्तु मैं धर्मियों के स्वभाव पर आनन्द करूंगा, और उनके तीर्थयात्रा, और उद्धार, और प्रतिफल को, जो उन्हें मिलेगा, स्मरण करूंगा।
40 जैसा मैं ने अब कहा है, वैसा ही हो जाएगा।
41 क्योंकि जैसे किसान भूमि पर बहुत बीज बोता, और बहुत से वृक्ष लगाता है, तौभी जो कुछ अच्छा समय पर बोया जाता है, वह नहीं उगता, और जो कुछ बोया जाता है, वह जड़ नहीं पकड़ पाता; वैसा

ही बोए गए लोगों का होता है। इस दुनिया में; वे सभी नहीं बचाये जायेंगे.
42 तब मैं ने उत्तर दिया, यदि मुझ पर अनुग्रह हुआ हो, तो बोलूं।
43 जैसे किसान का बीज यदि न उगे, और समय पर वर्षा न हो, तो वह नाश हो जाता है; या यदि बहुत अधिक वर्षा हो और वह जल को नष्ट कर दे,
44 वैसे ही मनुष्य भी जो तेरे हाथ का बनाया हुआ और तेरा स्वरूप कहलाता है, इसी रीति से नाश होता है, क्योंकि तू उसके समान है, जिसके लिये तू ने सब कुछ बनाया, और उसकी तुलना किसान के वंश से की।
45 हम पर क्रोध न कर, परन्तु अपनी प्रजा पर दया कर, और अपने निज निज भाग पर दया कर; क्योंकि तू अपनी सृष्टि पर दयालु है।
46 तब उस ने मुझे उत्तर दिया, जो कुछ वर्तमान में है वह वर्तमान के लिये है, और जो कुछ आने वाला है वह आनेवाले के लिये है।
47 क्योंकि तू मुझ से अधिक मेरी सृजी हुई वस्तु से प्रेम करने में असमर्थ है; परन्तु मैं बारम्बार तेरे और उसके निकट तो आया हूं, परन्तु अधर्मियों के पास कभी नहीं आया।
48 इस में भी तू परमप्रधान के साम्हने अद्‍भुत है;
49 इस से तू ने अपने आप को दीन किया है, जैसा तुझे होना चाहिए, और अपने आप को इस योग्य नहीं समझा कि धर्मियों के बीच अधिक महिमा हो।
50 क्योंकि जो लोग अन्त में जगत में बने रहेंगे, उन पर बहुत बड़ी विपत्तियां डाली जाएंगी, क्योंकि वे बड़े घमण्ड से चलते रहे हैं।
51 परन्तु अपने ही विषय में समझो, और अपने तुल्यों के लिये महिमा की खोज करो।
52 क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग खोला गया है, जीवन का वृक्ष लगाया गया है, आने वाला समय तैयार किया गया है, प्रचुरता तैयार की गई है, एक नगर बसाया गया है, और विश्राम की अनुमति दी गई है, हां, उत्तम भलाई और बुद्धि दी गई है।
53 बुराई की जड़ तुझ से छिपा दी गई है, दुर्बलता और कीड़ा तुझ से छिपा रखा गया है, और बुराई भूले जाने के लिथे नरक में डाल दी गई है।
54 दुख दूर हो जाते हैं, और अंत में अमरता का खजाना प्रकट होता है।
55 और इसलिये तू उन नाश होनेवालोंकी बहुतायत के विषय में फिर कोई प्रश्न न पूछना।
56 क्योंकि जब वे स्वतंत्र हुए, तो उन्होंने परमप्रधान का तिरस्कार किया, और उसकी व्यवस्था का तिरस्कार किया, और उसके मार्ग को त्याग दिया।
57 और उन्होंने उसके धर्म को रौंद डाला है,
58 और अपने मन में कहने लगे, कि परमेश्वर है ही नहीं; हाँ, और यह जानते हुए भी कि उन्हें मरना होगा।
59 क्योंकि जैसा ऊपर कहा गया है वह तुम्हें ग्रहण करेगा, वैसे ही उनके लिये प्यास और पीड़ा तैयार है; क्योंकि उसकी इच्छा न थी, कि मनुष्य नाश हो जाएं।
60 परन्तु जो सृजे गए, उन्होंने किया उन्होंने अपने रचयिता के नाम को अशुद्ध किया, और जिस ने उनके लिये जीवन तैयार किया उसके प्रति कृतघ्न रहे।
61 और इसलिये मेरा न्याय अब निकट है ।
62 ये बातें मैं ने सब मनुष्यों को नहीं, परन्तु तुम को और तुम्हारे समान कितने लोगों को दिखाई हैं। तब मैंने उत्तर दिया और कहा,
63 देख, हे प्रभु, अब तू ने मुझे बहुत से आश्चर्यकर्म दिखाए हैं, जो तू अन्त के समय में करना आरम्भ करेगा; परन्तु किस समय करेगा, यह तू ने मुझे नहीं दिखाया।

अध्याय 9

1 उस ने मुझे उत्तर दिया, और कहा, समय को अपके आप में भलीभांति माप लो; और जब तुम पिछले चिन्हों में से कुछ को देखो, जो मैं ने तुम से पहिले कहा है,
2 तब तू समझ लेगा, कि यह वही समय है, जिस में परमप्रधान उस जगत का दर्शन करना आरम्भ करेगा जिसे उसने बनाया है।
3 इसलिये जब जगत में भूकम्प और लोगों का कोलाहल देखा जाएगा;
4 तब तू भलीभांति समझ लेगा, कि परमप्रधान ने जो बातें तुझ से पहिले से वरन आरम्भ से आरम्भ तक की हैं, उन सब के विषय में कहा है।
5 क्योंकि जैसे जगत में जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसका आदि और अन्त है, और अन्त प्रगट है;
6 इसी प्रकार परमप्रधान के समय का भी स्पष्ट आरम्भ आश्चर्य और सामर्थी कामों से होता है, और प्रभाव और चिन्हों से अन्त होता है।
7 और जो कोई अपने कामों और उस विश्वास के कारण जिस पर तुम ने विश्वास किया है, उद्धार पाएगा, और बच सकेगा,
8 वे उक्त संकटों से बचे रहेंगे, और अपने देश में और अपनी सीमाओं के भीतर मेरा उद्धार देखेंगे; क्योंकि मैं ने आरम्भ ही से उन्हें अपने लिये पवित्र किया है।
9 तब जो लोग मेरे चालचलन का अपमान करते हैं, वे अभागे होंगे; और जिन्हों ने उनको द्वेष करके त्याग दिया है, वे यातना में पड़े रहेंगे।
10 क्योंकि जितनों ने अपने जीवन में लाभ उठाया, और मुझे नहीं जाना;
11 और जब तक वे स्वतंत्र नहीं रहे, और जब तक उनके लिये मन फिराव का द्वार खुला रहा, तब तक उन्होंने मेरी व्यवस्था से घृणा की, परन्तु उसे न समझा, वरन उसका तिरस्कार किया;
12 वही पीड़ा से मरने के बाद इसे जान ले।
13 और इस कारण यह न जानना, कि दुष्टोंको किस प्रकार दण्ड दिया जाएगा, और कब; परन्तु यह पूछो, कि धर्मी लोग किस प्रकार उद्धार पाएंगे, जगत किसका है, और जगत किसके लिये रचा गया है।
14 तब मैं ने उत्तर देकर कहा,
15 मैं पहिले भी कह चुका हूं, और अब भी कहूंगा, और आगे भी कहूंगा, कि जो बच जाएंगे उन से अधिक नाश होनेवाले हैं।
16 जैसे लहर बूंद से बड़ी होती है।
17 और उस ने मुझे उत्तर दिया, कि जैसा खेत है, वैसा ही बीज भी है; जैसे फूल होंगे, वैसे ही रंग भी होंगे; जैसा कर्म करने वाला है, वैसा ही कार्य भी है; और जैसा किसान आप है, वैसा ही उसका पति भी है: क्योंकि जगत का समय आ गया है।
18 और अब जब मैं ने उस जगत को जो उस समय तक नहीं बना या, उस में अब जीवितों के रहने के लिये तैयार किया, तो किसी ने मेरे विरोध में कुछ नहीं कहा।
19 क्योंकि तब तो सब मानते थे, परन्तु अब इस जगत में जो सृजे गए हैं, उनका चालचलन सनातन वंश के द्वारा बिगड़ जाता है, और अगम्य व्यवस्था के द्वारा वे अपने आप को छुड़ा लेते हैं।
20 सो मैं ने जगत पर विचार किया, और क्या देखा, कि जो युक्तियां उस में घुसी हैं, उनके कारण संकट है।
21 और मैं ने देखा, और उसको बहुत बचा लिया, और गुच्छे में से एक दाख, और बहुत जाति के लोगोंके बीच में से एक पौधा अपने लिये रख लिया।
22 सो वह भीड़ जिसका जन्म व्यर्थ हुआ, नाश हो; और मेरी दाख और मेरा पौधा बचा रहे; क्योंकि मैं ने बड़े परिश्रम से उसे सिद्ध किया है।
23 तौभी यदि तू सात दिन तक और उपवास न करना चाहे,

24 परन्तु फूलों के खेत में जाकर, जहां कोई घर न बना हो, और मैदान के फूल ही खाओ; मांस का स्वाद न चखें, शराब न पियें, केवल फूल खायें;)
25 और परमप्रधान से निरन्तर प्रार्थना किया करो, तब मैं आकर तुझ से बातें करूंगा।
26 इसलिये मैं उस की आज्ञा के अनुसार अर्दथ नाम मैदान में चला गया; और वहां मैं फूलों के बीच बैठा, और खेत की सब्जियाँ खाईं, और उनके मांस से मुझे तृप्ति मिली।
27 सात दिन के बाद मैं घास पर बैठा, और मेरा मन पहिले के समान व्याकुल हो गया;
28 और मैं ने अपना मुंह खोलकर परमप्रधान के साम्हने बातें करना आरम्भ किया, और कहा,
29 हे यहोवा, तू जो अपने आप को हम पर प्रगट करता है, तू हमारे पुरखाओं को मिस्र से निकलते समय जंगल में, अर्थात बंजर स्थान में, जहां कोई पांव नहीं रखता था प्रगट हुआ।
30 और तू ने कहा, हे इस्राएल मेरी सुन; और हे याकूब के वंश, मेरे वचन पर ध्यान दे।
31 क्योंकि देख, मैं अपनी व्यवस्था तुम में बोता हूं, और वह तुम में फल लाएगी, और तुम उसके द्वारा सर्वदा आदर पाते रहोगे।
32 परन्तु हमारे पुरखाओं ने जिनको व्यवस्या दी, उन्होंने न मानी, और न तेरे नियमोंको माना; और यद्यपि तेरी व्यवस्या का फल नाश न हुआ, और न हो सका, क्योंकि वह तो तेरी ही देन थी;
33 तौभी जिन्हों ने उसे पाया, वे नाश हो गए, क्योंकि जो कुछ उन में बोया गया था, उसे उन्होंने न रखा।
34 और देखो, यह रीति है, कि जब भूमि में बीज, या समुद्र में कोई जहाज, या किसी जहाज में मांस या पेय मिला हो, और जिस में वह बोया या डाला गया, वह नाश हो जाता है,
35 और जो कुछ बोया गया, या डाला गया, या प्राप्त किया गया, वह नाश हो जाता है, और हमारे पास नहीं रहता; परन्तु हमारे साथ ऐसा नहीं हुआ।
36 क्योंकि हम िजन्होंने व्यवस्या पाई है, वे पाप ही से नाश होते हैं, और हमारा मन भी िजसने उसे िकया, पाप ही से नाश हो जाते हैं
37 तौभी व्यवस्था नाश नहीं होती, वरन बनी रहती है उसका बल.
38 और जब मैं ने ये बातें अपने मन में कही, तब मैं ने पीछे फिरकर दाहिनी ओर एक स्त्री को देखा, और क्या देखता हूं, कि वह विलाप करती और ऊंचे शब्द से रोती है, और मन में बहुत उदास हो रही है। कपड़े किराए के थे, और उसके सिर पर राख थी।
39 तब मैं ने अपना विचार जो मैं में या, जाने दिया, और मुझे उसकी ओर फेर दिया,
40 और उस से कहा, तू क्यों रोती है? तू मन में इतना दुखी क्यों है?
41 और उस ने मुझ से कहा, हे प्रभु, मुझे छोड़ दे, कि मैं विलाप करके अपना दु:ख बढ़ाऊं, क्योंकि मैं मन में बहुत क्रोधित हो गई हूं, और बहुत उदास हो गई हूं।
42 और मैं ने उस से कहा, तुझे क्या हुआ? मुझे बताओ।
43 उस ने मुझ से कहा, मैं तेरी दासी बांझ हूं, और मेरे पति को तीस वर्ष हो गए, तौभी मेरे कोई सन्तान न हुई।
44 और उन तीस वर्षों में मैं ने दिन और रात, और हर घंटे और कुछ नहीं किया, केवल परमप्रधान से प्रार्थना की।
45 तीस वर्ष के बाद परमेश्वर ने मेरी सुन ली, जो तेरी दासी थी, उसने मेरी सुन ली, और मेरे दुख पर दृष्टि की, और मेरे संकट पर विचार किया, और मुझे एक पुत्र दिया; और मैं और मेरा पति, और मेरे सब पड़ोसी भी उस से बहुत प्रसन्न हुए, और हम ने उसका बड़ा आदर किया। सर्वशक्तिमान।
46 और मैं ने बड़े कष्ट से उसका पालन-पोषण किया।
47 सो जब वह बड़ा हुआ, और उसके पत्नी उत्पन्न करने का समय आया, तो मैं ने जेवनार की।

अध्याय 10

1 और ऐसा हुआ, कि जब मेरा पुत्र विवाह के घर में गया, तो गिरकर मर गया।
2 तब हम सब ने बत्ती बुझा दी, और मेरे सब पड़ोसी मुझे शान्ति देने के लिथे उठे; इस प्रकार मैं ने दूसरे दिन की रात को विश्राम किया।
3 और ऐसा हुआ, कि जब वे सब मुझे शान्ति देने को चले गए, तब मैं अन्त तक शान्त रहा; तब मैं रात को उठकर भागा, और जैसा तू देख रहा है, इस मैदान में आ गया।
4 और अब मैं ने ठाना है, कि नगर में न लौटूं, परन्तु यहीं रहूं, और न खाऊं, न पीऊं, परन्तु जब तक मर न जाऊं, तब तक विलाप करता और उपवास करता रहूं।
5 तब मैं ने जो ध्यान किया या, वह छोड़ दिया, और क्रोध में आकर उस से कहा;
6 हे सब से अधिक मूर्ख स्त्री, क्या तू हमारा विलाप नहीं देखती, और हमें क्या होता है?
7 हमारी माता सिय्योन किस कारण बहुत भारी और दीन है, और बहुत बड़े दुख से विलाप करती है?
8 और अब यह देखकर, कि हम सब शोक करते और उदास हैं, हम सब भारी दुख में हैं, क्या तू एक ही पुत्र के कारण दुखी है?
9 और पृथ्वी से पूछो, और वह तुझ से कहेगी, कि वही है, जो उस पर जितने उपजते हैं उनके गिरने पर शोक मनाती है।
10 क्योंकि पहिले सब उसी में से निकले, और सब उसी में से आएंगे, और देखो, वे सब प्राय: विनाश की ओर चलेंगे, और उन में से बहुतेरे जड़ से उखाड़ दिए जाएंगे।
11 तो उस से अधिक शोक कौन मनाएगा, जिस ने इतनी बड़ी भीड़ खोई है; और तुम्हें नहीं, एक के अलावा और किस चीज़ पर खेद है?
12 परन्तु यदि तू मुझ से कहे, मेरा विलाप पृथ्वी के विलाप के समान नहीं, क्योंकि मैं ने अपने गर्भ का फल खो दिया है, जिसे मैं ने दु:ख सहते हुए उत्पन्न किया, और दु:ख ही सहते हुए उसे जन्म दिया;
13 परन्तु पृथ्वी ऐसी नहीं, क्योंकि पृथ्वी की रीति के अनुसार उस में जो बहुतायत थी, वैसे ही लोट गई है।
14 तो मैं तुझ से कहता हूं, जैसा तू ने परिश्रम करके उत्पन्न किया है; वैसे ही पृथ्वी ने भी आरम्भ से अपने सृजनहार को, अर्थात् मनुष्य को, अपना फल दिया है।
15 इसलिये अब अपना दु:ख अपने ही मन में रख, और जो कुछ तुझ पर पड़ा है उसे हियाव से सह ले।
16 क्योंकि यदि तू परमेश्वर के न्यायी होने का निश्चय कर ले, तो तू समय पर अपने बेटे को प्राप्त करेगी, और स्त्रियों के बीच प्रशंसा की पात्र बनेगी।
17 फिर नगर में अपने पति के पास जा।
18 और उस ने मुझ से कहा, मैं ऐसा न करूंगी; मैं नगर में न जाऊंगी, वरन यहीं मर जाऊंगी।
19 इसलिये मैं ने उस से आगे बातें करना आरम्भ करके कहा,
20 ऐसा न करो, परन्तु सम्मति लो। मेरे द्वारा: सायन की विपत्तियाँ कितने लोगों के लिए हैं? यरूशलेम के दुख के विषय में शान्ति पाओ।
21 क्योंकि तू देखता है, कि हमारा पवित्रस्थान उजाड़ हो गया, हमारी वेदी टूट गई, और हमारा मन्दिर नाश हो गया;
22 हमारा भजन भूमि पर रख दिया गया है, हमारा गीत बन्द कर दिया गया है, हमारा आनन्द समाप्त हो गया है, हमारी दीवट की रोशनी बुझ गई है, हमारी वाचा का सन्दूक नष्ट हो गया है, हमारी पवित्र वस्तुएं अशुद्ध हो गई हैं, और उसका नाम भी अशुद्ध हो गया

है। हमारे लिए बुलाया गया लगभग अपवित्र है: हमारे बच्चों को लज्जित किया गया है, हमारे याजकों को जला दिया गया है, हमारे लेवियों को बंधुआई में ले जाया गया है, हमारी कुंवारियों को अशुद्ध कर दिया गया है, और हमारी पत्नियों को लूट लिया गया है; हमारे धर्मी पुरूष बन्धुवाई में चले गए, हमारे बाल-बच्चे नष्ट हो गए, हमारे जवान दासत्व में लाए गए, और हमारे बलवन्त पुरूष निर्बल हो गए;
23 और, जो सब से बड़ी बात है, सायन की मुहर ने अब अपना सम्मान खो दिया है; क्योंकि वह हमारे बैरियों के हाथ में पकड़ दी गई है।
24 और इसलिये अपना भारी भारीपन दूर करो, और बहुत से दुख दूर करो, कि पराक्रमी फिर तुम पर दयालु हो, और परमप्रधान तुझे तेरे परिश्रम से विश्राम और आराम देगा।
25 और जब मैं उस से बातें कर रहा या, तो ऐसा हुआ, कि उसका मुख एकाएक बहुत चमक गया, और उसका मुख ऐसा चमका, कि मैं उस से डर गया, और सोचने लगा, कि यह क्या होगा।
26 और देखो, वह अचानक बहुत भयानक चिल्ला उठी: यहां तक कि स्त्री के शब्द से पृथ्वी हिल गई।
27 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि वह स्त्री फिर मुझे दिखाई न दी, परन्तु वहां एक नगर बसा हुआ है, और नेव से बड़ा स्यान दिखाई देता था; तब मैं डर गया, और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा,
28 उरीएल स्वर्गदूत कहां है, जो सबसे पहले मेरे पास आया था? क्योंकि उस ने मुझे बहुत मूर्च्छा में डाला, और मेरा अन्त विनाश में और मेरी प्रार्थना में घुड़का का हुआ।
29 और जब मैं ये बातें कह ही रहा या, तो वह मेरे पास आया, और मुझ पर दृष्टि की।
30 और देखो, मैं मुर्दे के समान पड़ा हूं, और मेरी समझ मुझ से छीन ली गई है; और उस ने मेरा दाहिना हाथ पकड़कर मुझे शान्ति दी, और पांवोंके बल खड़ा करके मुझ से कहा,
31 तुझे क्या रोग है? और तू इतना व्याकुल क्यों है? और तेरी समझ और तेरे मन के विचार क्यों घबरा गए हैं?
32 और मैं ने कहा, तू ने तो मुझे त्याग दिया, तौभी मैं ने तेरे वचन के अनुसार किया, और मैदान में जाकर क्या देखा, और फिर भी देखता हूं, कि बता नहीं सकता।
33 और उस ने मुझ से कहा, पुरूष होकर खड़ा हो, और मैं तुझे सम्मति दूंगा।
34 तब मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु, मुझ में बोल; परन्तु मुझे मत त्यागना, ऐसा न हो कि मैं अपनी आशा तोड़ कर मर जाऊं।
35 क्योंकि मैं ने देखा है कि मैं नहीं जानता, और सुना है कि मैं नहीं जानता।
36 या मेरी बुद्धि वा मेरा प्राण स्वप्न में धोखा खा गया है?
37 इसलिये अब मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू अपने दास को यह दर्शन दिखा।
38 तब उस ने मुझे उत्तर दिया, और मेरी सुन, मैं तुझे बताऊंगा, और तुझे बताऊंगा, कि तू क्यों डरता है; क्योंकि परमप्रधान तुझ पर बहुत सी गुप्त बातें प्रगट करेगा।
39 उस ने देखा है, कि तेरी चाल सीधी है; इस कारण तू अपक्की प्रजा के लिथे निरन्तर शोक करता है, और सिय्योन के लिथे बड़ा विलाप करता है।
40 इसलिये जो दर्शन तू ने अभी देखा उसका अर्थ यह है:
41 तू ने एक स्त्री को विलाप करते देखा, और उसे शान्ति देने लगा;
42 परन्तु अब तुझे उस स्त्री की शक्ल फिर न दिखाई पड़ी, पर एक नगर बनता हुआ दिखाई पड़ा।
43 और उस ने अपके बेटेके मरने का समाचार तुझ से कहा, इसका उपाय यह है:
44 यह स्त्री जिसे तू ने देखा, वह सिय्योन है; और उस ने तुझ से कहा, कि जिसे तू एक नगर बनता हुआ देख रहा है,
45 मैं तो कहता हूं, कि उस ने तुम से कहा, कि वह तीस वर्ष से बांझ है; ये वे तीस वर्ष हैं, जिन में उस ने कुछ भी अन्नबलि न किया।
46 परन्तु तीस वर्ष के बाद सुलैमान ने नगर को बसाया, और भेंट चढ़ाई, और बांझ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ।
47 और उस ने तुझ से कहा, कि मैं ने उसे जच्चा-बच्चा करके पाला, यरूशलेम में यही निवास है।
48 परन्तु जब उस ने तुझ से कहा, कि मेरा पुत्र ब्याह की कोठरी में आया या, तब उसका मुंह टूट गया, और वह मर गया; इस प्रकार यरूशलेम का विनाश हुआ।
49 और देख, तू ने उसका स्वरूप देखा, और वह अपके बेटे के लिथे विलाप करती थी, इसलिये तू उसे शान्ति देने लगा; और इन बातोंमें से जो संयोग से घटी हैं, वे तेरे लिथे खुल गई हैं।
50 क्योंकि अब परमप्रधान ने देखा है, कि तू निष्कपट शोक करता है, और उसके लिये अपने सम्पूर्ण मन से दुख उठाता है, इसलिथे उस ने तुझे अपनी महिमा का तेज और सुन्दरता दिखाई है।
51 इसलिथे मैं ने तुझ से बिनती की, कि तू उसी खेत में रह, जहां कोई घर न बना या।
52 क्योंकि मैं जानता था, कि परमप्रधान तुझे यह बताएगा।
53 इसलिये मैं ने तुझे उस मैदान में जाने की आज्ञा दी, जहां किसी भवन की नेव न पड़ी हो।
54 क्योंकि जिस स्थान में परमप्रधान अपके नगर का प्रगट करना आरम्भ करता है, वहां किसी का भवन टिक न सकेगा।
55 इसलिये मत डर, तेरा मन व्याकुल न हो, परन्तु भीतर जाकर उस भवन का सौन्दर्य और बड़ाई देख, जहां तक तेरी आंखें देख सकें।
56 और तब तुम उतना सुनोगे जितना तुम्हारे कान समझ सकें।
57 क्योंकि तू बहुतोंसे अधिक धन्य है, और परमप्रधान के द्वारा बुलाया गया है; और इसलिए बहुत कम हैं।
58 परन्तु कल रात को तू यहीं ठहरना;
59 और इस प्रकार सर्वोच्च तुम्हें उच्च चीजों के दर्शन दिखाएगा, जो परमप्रधान अंतिम दिनों में पृथ्वी पर रहने वालों के साथ करेगा । इसलिए मैं उस रात और दूसरी रात सोया, जैसे उसने मुझे आज्ञा दी थी।

अध्याय 11

1 फिर मैं ने स्वप्न देखा, और क्या देखा, कि झील में से एक उकाब निकला, जिसके बारह पंख और तीन सिर थे।
2 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखता हूं, कि वह अपने पंख सारी पृथ्वी पर फैला रही है, और आकाश के सब पवन उस पर उड़कर इकट्ठे हो गए हैं।
3 और मैं ने दृष्टि की, और उसके पंखों से और भी विपरीत पंख निकले; और वे छोटे पंख वाले और छोटे हो गये।
4 परन्तु उसके सिर एक दूसरे से अलग थे; और जो सिर बीच में था, वह दूसरे से बड़ा था, तौभी वह बचे हुए भाग के साथ टिका हुआ था।
5 फिर मैं ने दृष्टि की, और उकाब अपके पंखोंके साय उड़कर पृथ्वी पर और उस में रहनेवालोंके ऊपर राज्य करने लगा।
6 और मैं ने देखा, कि आकाश के नीचे की सारी वस्तुएं उसके वश में हो गईं, और कोई मनुष्य क्या पृथ्वी भर का कोई प्राणी उसके विरोध में कुछ नहीं बोलता था।
7 और मैं ने दृष्टि की, और देखो, उकाब उसके पंजोंके बल उठा, और उसके पंखोंकी ओर से कहने लगा,
8 सब को एक साथ न जागना; हर एक अपने ही स्थान पर सोना, और क्रमानुसार जागते रहना।

9 परन्तु सिरोंको अन्त तक सुरक्षित रखा जाए।
10 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, वह शब्द उसके सिर से नहीं, पर उसके शरीर के बीच से निकला।
11 और मैं ने उसके विपरीत पंखों को गिन लिया, और क्या देखा, कि वे आठ हो गए।
12 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि दाहिनी ओर एक पंख और राज उग आया है सारी पृथ्वी पर;
13 और ऐसा हुआ, कि जब वह राज्य करता रहा, तब उसका अन्त आ गया, और उसका स्थान फिर न रहा; और जो अगला हो वह उठ खड़ा हुआ। और राज्य किया, और बड़ा आनन्द किया;
14 और ऐसा हुआ, कि जब वह राज्य करता रहा, तो पहिले के समान उसका अन्त भी हुआ, यहां तक कि फिर दिखाई न देता था।
15 तब वहां से एक आवाज आई, और कहा,
16 सुनो तुम जो बहुत दिन तक पृथ्वी पर प्रभुता करते आए हो, मैं तुम से यह कहता हूं, इस से पहिले कि तुम फिर प्रगट न होओ,
17 तेरे बाद कोई तेरे समय तक, वरन उसके आधे तक न पहुंचेगा।
18 फिर तीसरा उठकर पहिले के समान राज्य करने लगा, और फिर कभी दिखाई न दिया।
19 और सब बचे हुए लोगोंके साय एक के बाद एक ऐसा होता गया, कि सब ने राज्य किया, और फिर कभी दिखाई न दिए।
20 फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, कुछ समय बाद जो पंख उसके पीछे आए वे दाहिनी ओर खड़े हो गए, कि वे भी प्रभुता करें; और उन में से कितनों ने राज्य किया, परन्तु थोड़े ही समय में वे फिर दिखाई न दिए।
21 क्योंकि उन में से कुछ खड़े तो हुए, परन्तु प्रभुता न कर सके।
22 इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि बारह पंख फिर न दिखाई दिए, और न वे दोनों छोटे पंख दिखाई दिए।
23 और उकाब की देह पर और कुछ न रहा, केवल तीन सिर और छ: छोटे पंख थे।
24 फिर मैं ने यह भी देखा, कि छ: में से दो छोटे पंख अलग हो गए, और सिर के नीचे जो दाहिनी ओर था वही रह गए, और चारों अपने स्थान पर बने रहे।
25 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, पंखों के नीचे जो पंख थे, उन्होंने अपने आप को स्थिर करने और नियम रखने का विचार किया।
26 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि एक खड़ा हुआ है, परन्तु शीघ्र ही वह फिर दिखाई न दिया।
27 और दूसरा पहिले से जल्दी दूर हो गया।
28 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि जो रह गए थे, उन्होंने भी अपने आप में राज्य करने का निश्चय किया।
29 और जब उन्होंने यह सोचा, तो देखो, जो सिर विश्राम के बीच में थे, उनमें से एक जाग उठा; क्योंकि वह अन्य दोनों सिरों से बड़ा था।
30 और फिर मैं ने देखा, कि और दो सिर उसी से जुड़े हुए हैं।
31 और, देखो, सिर उसके साथियों समेत उलट गया, और उस पंख के नीचे के दोनों पंखों को, जो राज करते, खा गए।
32 परन्तु इसी सिर ने सारी पृथ्वी को भय में डाल दिया, और पृथ्वी के सब रहनेवालोंपर अन्धेर करके उन पर प्रभुता की; और उसके पास विश्व के सभी स्कंधों से अधिक शासन था।
33 और इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और जो सिर बीच में था, वह अचानक पंखों के समान दिखाई न दिया।
34 परन्तु वे दो मुख्य पुरूष रह गए, जो इसी रीति से पृथ्वी पर और उस में रहनेवालोंपर प्रभुता करते थे।
35 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि दाहिनी ओर का एक सिर बाईं ओर के को निगल गया।
36 तब मुझे एक शब्द सुनाई दिया, जिस ने मुझ से कहा, अपके साम्हने दृष्टि करके जो कुछ तू देखता है उस पर ध्यान कर।
37 और मैं ने दृष्टि की, और मानो कोई गर्जनेवाला सिंह जंगल में से खदेड़ा जा रहा हो; और मैं ने देखा, कि उस ने उकाब को मनुष्य का सा शब्द सुनाकर कहा,
38 सुन, मैं तुझ से बातें करूंगा, और परमप्रधान तुझ से कहेगा,
39 क्या तू वही नहीं जो उन चार पशुओं में से बचा हुआ है, जिन्हें मैं ने अपने जगत पर राज्य करने को ठहराया, कि उनके द्वारा उनके समय का अन्त आ जाए?
40 और चौथे ने आकर अतीत के सब पशुओं पर विजय प्राप्त की, और बड़े भय से जगत पर, और पृथ्वी की सारी परिधि पर बड़े दुष्ट अन्धेर से अधिकार कर लिया; और वह बहुत दिन तक छल से पृथ्वी पर रहा।
41 क्योंकि तू ने पृथ्वी का न्याय सच्चाई से नहीं किया।
42 क्योंकि तू ने नम्र लोगोंको दु:ख दिया है, तू ने मेल रखनेवालोंको दु:ख दिया है, तू ने झूठोंसे प्रेम रखा है, और फल उपजानेवालोंके घरोंको उजाड़ दिया है, और जिन से तू ने कुछ हानि नहीं पहुंचाई, उनकी शहरपनाह को ढा दिया है।
43 इस कारण तेरा अधर्म का काम परमप्रधान तक, और तेरा घमण्ड परमप्रधान तक पहुंच गया है।
44 परमप्रधान ने भी घमण्ड के दिनोंपर दृष्टि की, और देखो, वे समाप्त हो गए, और उसके घृणित काम पूरे हुए।
45 इसलिये हे उकाब, तू फिर कभी न दिखाई देना, न तेरे भयानक पंख, न तेरे दुष्ट पंख, न तेरे द्वेषपूर्ण सिर, न तेरे हानिकारक पंजे, न तेरा सारा घिनौना शरीर;
46 ताकि सारी पृथ्वी तरोताजा हो जाए, और तेरे उपद्रव से छुटकारा पाकर लौट आए, और अपने सृजनहार से न्याय और दया की आशा रखे।

अध्याय 12

1 और ऐसा हुआ कि जब सिंह उकाब से ये बातें कह रहा था, तो मैं ने देखा,
2 और देखो, जो सिर रह गया और चारों पंख फिर दिखाई न दिए, और वे दोनों उसके पास जाकर राज्य करने को खड़े हुए, और उनका राज्य छोटा और उपद्रव से भर गया।
3 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि वे फिर दिखाई न दिए, और उकाब का सारा शरीर जल गया, यहां तक कि पृथ्वी पर बड़ा भय छा गया; तब मैं अपने मन की घबराहट और मूर्च्छा से और बड़े भय से जाग उठा। और मेरी आत्मा से कहा,
4 देखो, तू ने मुझ से यह किया है, कि तू परमप्रधान का मार्ग ढूंढ़ता है।
5 देखो, मैं तो मन में थक गया हूं, और आत्मा में बहुत दुर्बल हो गया हूं; और इस रात जिस बड़े भय से मैं पीड़ित हुआ, उसके कारण मुझ में थोड़ी शक्ति रह गई है।
6 इसलिये अब मैं परमप्रधान से बिनती करूंगा, कि वह अन्त तक मुझे शान्ति दे।
7 और मैं ने कहा, हे प्रभु, प्रभु, यदि मुझ पर पहिले अनुग्रह हो तेरी दृष्टि, और यदि मैं तेरे साथ बहुतों के साम्हने धर्मी ठहरूं, और यदि मेरी प्रार्थना सचमुच तेरे साम्हने पूरी हो;
8 सो तू मुझे शान्ति दे, और अपने दास को उस भयानक दर्शन का अर्थ और भेद बता, जिस से तू मेरे प्राण को शान्ति दे।
9 क्योंकि तू ने मुझे अन्तिम समय में मुझे दिखाने के योग्य समझा।
10 और उस ने मुझ से कहा, उस दर्शन का फल यह है:

11 जिस उकाब को तू ने समुद्र में से निकलते देखा, वह वही राज्य है
जो तेरे भाई दानिय्येल ने स्वप्न में देखा या।
12 परन्तु यह बात उस को नहीं बताई गई, इसलिथे अब मैं तुझ से यह
कहता हूं।
13 देख, ऐसे दिन आएंगे, कि पृथ्वी पर एक राज्य उदय होगा, और
वह सब पहिले राज्यों से अधिक डरेगा।
14 उसी में बारह राजा एक के बाद एक राज्य करेंगे;
15 और दूसरा राज्य करना आरम्भ करेगा, और बारहोंमें से सब से
अधिक समय तक रहेगा।
16 और वे बारह पंख, जो तू ने देखा, इसी को दर्शाते हैं।
17 और जो शब्द तू ने बातें करते सुना, और जो तू ने देखा, कि वह
उनके सिरोंके बीच से नहीं, परन्तु उनके बीच से निकलता है, उसका
अर्थ यह है:
18 कि उस राज्य के समय के बाद बड़े-बड़े झगड़ों का उदय होगा,
और उसके नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा; तौभी वह न गिरेगा,
वरन अपने आरम्भ में फिर स्थापित हो जाएगा।
19 और तू ने उसके पंखों से चिपके हुए आठ छोटे छोटे पंखों को
देखा, इसका अर्थ यह है:
20 उस में आठ राजा उदय होंगे, जिनके समय छोटे-छोटे होंगे, और
उनके वर्ष बहुत तीव्र होंगे।
21 और उन में से दो तो मध्यकाल तक पहुंचते-पहुंचते नाश हो जाएंगे;
चार तो तब तक बचे रहेंगे जब तक उनका अन्त न आ जाए; परन्तु दो
अन्त तक बचे रहेंगे।
22 और तू ने तीन सिर पड़े हुए देखे, तो इसका अर्थ यह है:
23 अपने अन्तिम दिनों में परमप्रधान तीन राज्यों को खड़ा करेगा,
और उन में बहुत कुछ नया करेगा, और वे पृथ्वी पर प्रभुता करेंगे।
24 और उस में के रहनेवालोंपर जो उन से पहिले थे उन सभोंसे
अधिक अन्धेर सहा; इस कारण वे उकाब के सरदार कहलाए।
25 क्योंकि यही वे हैं जो उसकी दुष्टता को पूरा करेंगे, और उसका
अन्त करेंगे।
26 और तू ने देखा, कि बड़ा सिर फिर दिखाई नहीं देता, इसका यह
अर्थ है, कि उन में से एक अपके बिछौने पर ही पीड़ा सहते हुए मर
जाएगा।
27 क्योंकि जो दो बचे रहेंगे वे तलवार से मार डाले जाएंगे।
28 क्योंकि एक की तलवार दूसरे को भस्म करेगी, परन्तु अन्त में वह
आप ही तलवार से मार डाला जाएगा।
29 और तू ने पंखों के नीचे सिर के ऊपर से, जो दाहिनी ओर है, दो
पंख देखे;
30 इसका अर्थ यह है, कि ये वही हैं, जिन्हें परमप्रधान ने अन्त तक
बचाए रखा; जैसा तू ने देखा, यह छोटा सा और उपद्रव से भरा हुआ
राज्य है।
31 और वह सिंह जिसे तू ने जंगल में से उठकर गरजते और उकाब
से बातें करते, और सब वचनों के द्वारा जो तू ने सुने हैं, उसके अधर्म
के कारण डांटते देखा;
32 यही वह अभिषिक्त है, जिसे परमप्रधान ने उनके लिये और उनकी
दुष्टता के कारण अन्त तक बचाए रखा है;
33 क्योंकि वह न्याय के समय उन को अपने साम्हने जीवित करेगा,
और उनको डांटेगा, और ताड़ना देगा।
34 क्योंकि वह मेरी शेष प्रजा के लोगोंको, जो मेरी सीमा पर दब गए
हैं, दया करके छुड़ाएगा, और न्याय के दिन के आने तक उनको
आनन्द देगा, जिसके विषय में मैं ने आरम्भ से तुम से कहा है।
35 जो स्वप्न तू ने देखा वह यही है, और उसका फल ये ही है।
36 तू केवल सर्वोच्च के इस रहस्य को जानने के लिये ही मिला है।
37 इसलिये ये सब बातें जो तू ने देखी हैं, पुस्तक में लिखकर छिपा
रख;
38 और उनको बुद्धिमान लोगोंको सिखा, जिनके मन को तू जानता
हो, और वे ये भेद समझकर रख सकें।
39 परन्तु तू यहीं सात दिन तक और ठहरना, कि जो कुछ परमप्रधान
तुझ से कहना चाहे वह तुझे बता दे। और इसके साथ ही वह अपने
रास्ते चला गया।
40 और ऐसा हुआ, कि जब सब लोगोंने देखा कि सात दिन बीत गए,
और मैं नगर में फिर न आनेवाला, तब छोटे से लेकर बड़े तक सब
सभों को इकट्ठा किया, और मेरे पास आकर कहने लगे,
41 हम ने तेरा क्या बिगाड़ा है? और हम ने तुझ से कौन सी बुराई की
है, कि तू हम को त्यागकर यहां इस स्थान पर बैठा है?
42 क्योंकि सब भविष्यद्वक्ताओं में से केवल तू ही हमारे लिये छोड़
दिया गया, अर्थात अंगूर के गुच्छे के समान, और अन्धेरे स्थान में
दीवट के समान, वा आन्धी से बचे हुए आश्रय वा जहाज के समान।
43 क्या जो विपत्तियां हम पर आती हैं, वे काफी नहीं?
44 यदि तू हम को त्याग देगा, तो यदि हम भी सिय्योन के बीच में
जलाए जाते, तो हमारा क्या भला होता?
45 क्योंकि जो वहां मर गए, उन से हम कुछ भी अच्छे नहीं। और वे
ऊंचे शब्द से रोने लगे। तब मैं ने उनको उत्तर दिया, और कहा,
46 हे इस्राएल, ढाढ़स बंधाओ; और हे याकूब के घराने, भारी मत बनो;
47 क्योंकि परमप्रधान ने तुझे स्मरण किया है, और पराक्रमी ने परीक्षा
में तुझे नहीं भुलाया।
48 जहां तक मेरी बात है, मैं ने तुम को नहीं त्यागा, और न मैं तुम से
अलग हुआ हूं; परन्तु इस स्थान में आया हूं, कि सिय्योन के उजड़े
जाने के लिथे प्रार्थना करूं, और तुम से जो दीन जाति पर दया करूं
आपका अभयारण्य.
49 और अब तुम सब अपने अपने घर लौट जाओ, और इन दिनों के
बाद मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा।
50 सो लोग मेरी आज्ञा के अनुसार नगर में चले गए।
51 परन्तु स्वर्गदूत की आज्ञा के अनुसार मैं सात दिन तक मैदान में
रहा; और उन दिनों में केवल मैदान के फूल खाता था, और जड़ी-
बूटियों का मांस खाता था।

अध्याय 13

1 और सात दिन के बाद ऐसा हुआ, कि मैं ने रात को स्वप्न देखा;
2 और देखो, समुद्र से ऐसी आँधी उठी, कि उस ने उसकी सब लहरें
हिला दीं।
3 और मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि वह पुरूष हजारों
आकाशोंके समान बलवन्त हो गया; और जब उस ने मुंह फेरकर
देखा, तो जो वस्तुएं उसके नीचे दिखाई देती थीं वे सब कांप उठे।
4 और जब जब उसका शब्द उसके मुंह से निकलता, तब तब वे सब
जल जाते, जो उसका शब्द सुनते थे, मानो पृथ्वी आग लगने से जल
जाती है।
5 और इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि जो मनुष्य समुद्र
से निकला या, उस को वश में करने के लिथे आकाश की
चारोंदिशाओंसे बहुत से मनुष्य इकट्ठे हो गए।
6 परन्तु मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि उस ने एक बड़ा पहाड़
बना लिया, और उस पर उड़ गया।
7 परन्तु मैं उस क्षेत्र या स्थान को देखता, जहां पहाड़ी खोदी गई थी,
और नहीं देख सका।
8 और इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और क्या देखा, कि जितने लोग उसे
वश में करने के लिये इकट्ठे हुए थे, वे सब बहुत डर गए, और फिर भी
लड़ने का साहस किया।
9 और देखो, उस ने उस भीड़ का उपद्रव देखा, और न हाथ उठाया,
न तलवार वा कोई हथियार उठाया;

10 परन्तु मैं ने केवल यह देखा, कि उस ने अपने मुंह से आग का झोंका, और अपने होठों से धधकती हुई सांस निकाली, और अपनी जीभ से चिंगारी और आन्धी निकाली।
11 और वे सब एक साथ मिल गए; आग का झोंका, धधकती सांस, और बड़ा तूफ़ान; और उस भीड़ पर जो लड़ने को तैयार थी, बुरी तरह टूट पड़ा, और सब को जला डाला, यहां तक कि अचानक भीड़ को धूल और धुएं की गंध के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता था: जब मैंने यह देखा तो मैं डर गया .
12 इसके बाद मैं ने वही पुरूष पहाड़ से उतरकर एक और मेल मिलाप करनेवाली भीड़ को अपने पास बुलाते देखा।
13 और बहुत से लोग उसके पास आए, और उन में से कुछ आनन्दित हुए, और कुछ उदास हुए, और उन में से कुछ बन्धे हुए थे, और कुछ चढ़ावे में से कुछ लाए; तब मैं बड़े डर के मारे व्याकुल हो गया, और जागकर कहा,
14 तू ने आरम्भ से अपने दास को ये अद्‌भुत काम दिखाए, और मुझे इस योग्य समझा कि तू मेरी प्रार्थना ग्रहण करे:
15 अब मुझे इस स्वप्न का फल बताओ।
16 क्योंकि जैसा मैं ने अपनी समझ में सोचा है, उन दिनों में जो छूट जाएंगे उन पर हाय, और जो पीछे नहीं छूटेंगे उन पर उस से भी अधिक हाय!
17 क्योंकि जो बचे नहीं थे, वे संकट में थे।
18 अब मैं उन बातों को समझ गया हूं जो अन्त के दिनों में रखी जाएंगी, और उनका भी, और जो पीछे छूट गए हैं उनका भी क्या हाल होगा।
19 इस कारण उन पर बड़े संकट और बहुत सी कठिनाइयां पड़ीं, जैसा इन स्वप्नोंसे पता चलता है।
20 तौभी जो खतरे में है उसके लिये इन बातोंमें आना क्या सहज है, इस से कि वह बादल की नाईं जगत में से उड़ जाए, और अन्त के दिनोंकी बातें न देख सके। और उस ने मुझे उत्तर दिया, और कहा,
21 मैं उस दर्शन का फल तुझे बताऊंगा, और जो कुछ तू ने चाहा है वह तुझ को बताऊंगा।
22 तू ने जो पीछे रह गए हैं उनके विषय में कहा, उसका अर्थ यह है:
23 जो उस समय संकट सहेगा, उसने अपने आप को बचा रखा है; जो संकट में पड़ते हैं, वे कर्म करते और सर्वशक्तिमान पर विश्वास रखते हैं।
24 इसलिये यह जान लो, कि जो पीछे छूट गए हैं, वे मरे हुओं से अधिक धन्य हैं।
25 उस दर्शन का अर्थ यह है, कि तू ने एक मनुष्य को समुद्र के बीच से निकलते देखा;
26 वही है जिसके लिये परमप्रधान परमेश्वर ने बड़ा समय ठहराया है, कि वह आप ही अपनी सृष्टी को बचाएगा; और जो पीछे रह गए हैं उनको भी वही आज्ञा देगा।
27 और तू ने देखा, कि उसके मुंह से बड़ी आँधी, और आग, और बवंडर निकला;
28 और उसके पास न तो तलवार थी, और न युद्ध का कोई हथियार, परन्तु जो भीड़ उसे वश में करने को आती थी, वह उसके दौड़ने से नाश हो गई; यह व्याख्या है:
29 देखो, वे दिन आते हैं, जब परमप्रधान पृथ्वी पर के लोगोंको छुड़ाना आरम्भ करेगा।
30 और वह पृथ्वी के रहनेवालोंको चकित कर देगा।
31 और एक दूसरे से, एक नगर दूसरे से, एक स्थान दूसरे स्थान से, एक देश दूसरे देश से, और एक राज्य दूसरे राज्य से लड़ने का यत्न करेगा।
32 और वह समय आएगा जब ये बातें पूरी होंगी, और जो चिन्ह मैं ने तुम को पहिले दिखाए थे, वे प्रगट होंगे, और तब मेरा पुत्र, जिसे तू ने पुरूष की नाईं चढ़ते देखा है, प्रगट किया जाएगा।
33 और जब सब लोग उसका शब्द सुनेंगे, तब सब लोग अपने अपने देश में एक दूसरे से युद्ध करने को निकल पड़ेंगे।
34 और जैसा तू ने उन्हें देखा, उसके अनुसार अनगिनत भीड़ इकट्ठी होगी, जो आकर लड़ने को उस पर विजय पाने को इच्छुक हों।
35 परन्तु वह सिय्योन पर्वत की चोटी पर खड़ा रहेगा।
36 और सिय्योन आकर तैयार और बनाया हुआ सब मनुष्यों को प्रगट किया जाएगा, जैसे तू ने पहाड़ी को बिना हाथों के खुदा हुआ देखा।
37 और यह मेरा पुत्र उन जातियों की दुष्ट कल्पनाओं को घुड़केगा, जो अपने दुष्ट जीवन के कारण आँधी में गिरे पड़े हैं;
38 और उनके बुरे विचार उन के साम्हने रख देगा, और वे आग के समान यातनाएं सहने लगेंगे; और वह मेरे समान व्यवस्था के द्वारा उन्हें बिना परिश्रम के नाश कर डालेगा।
39 और तू ने देखा, कि उस ने एक और मेल मिलाप करनेवाली भीड़ को अपने पास इकट्ठा कर लिया;
40 वे दस गोत्र हैं, जो ओसिया राजा के समय में अपके देश में से बन्धुवाई करके ले गए थे; और उनको अश्शूर का राजा सलमानसार बन्धुवाई करके जल के पार ले गया, और वे दूसरे देश में चले गए। .
41 परन्तु उन्होंने आपस में यह सम्मति की, कि अन्यजातियों की भीड़ को छोड़कर दूसरे देश में चले जाएं, जहां मनुष्य कभी नहीं बसे।
42 इसलिये कि वे वहां अपनी वे विधियां मानें, जिन्हें उन्होंने अपके देश में कभी न मानीं।
43 और वे महानद के संकरे स्थानों से होते हुए परात तक पहुंच गए।
44 तब परमप्रधान ने उनके लिथे चिन्ह दिखाए, और जल को तब तक रोके रखा जब तक वे पार न हो गए।
45 क्योंकि उस देश से होकर डेढ़ वर्ष का बड़ा मार्ग या, और वही देश असरित कहलाता है।
46 तब वे अन्त समय तक वहीं रहे; और अब जब वे आना शुरू करेंगे,
47 परमप्रधान नाले के सोतों को फिर रोकेगा, कि वे होकर चलें; इस कारण तू ने लोगों को शान्ति से देखा।
48 परन्तु जो तेरी प्रजा में से बच गए हैं, वे ही मेरी सीमा के भीतर पाए गए हैं।
49 अब जब वह इकट्ठे हुए राष्ट्रों की भीड़ को नाश करेगा, तब वह अपनी बची हुई प्रजा की रक्षा करेगा।
50 और तब वह उन को बड़े बड़े आश्चर्यकर्म दिखाएगा।
51 तब मैं ने कहा, हे प्रभु, प्रभु, मुझे यह दिखा, मैं ने उस पुरूष को समुद्र के बीच में से निकलते क्यों देखा?
52 और उस ने मुझ से कहा, जिस प्रकार तू गहरे समुद्र की वस्तुएं न ढूंढ़ सकता, और न जान सकता, वैसे ही पृथ्वी पर कोई मनुष्य मेरे पुत्र को, वा उसके साथियों को दिन के सिवाए नहीं देख सकता। .
53 जो स्वप्न तू ने देखा, उसका फल यह है, और इस से तू ही यहां हलका हुआ है।
54 क्योंकि तू ने अपना मार्ग छोड़ दिया, और मेरी व्यवस्था की ओर ध्यान लगाकर उसकी खोज की है।
55 तू ने अपके प्राण को बुद्धि से ठहराया है, और समझ को अपनी माता को बुलाया है।
56 और इसलिथे मैं ने तुझे परमप्रधान के भण्डार दिखाए हैं; और तीन दिन के बाद मैं तुझ से और भी बातें कहूंगा, और सामर्थ की और अद्‌भुत बातें तुझे बताऊंगा।
57 तब मैं मैदान में गया, और परमप्रधान को उसके आश्चर्यकर्मों के कारण जो उस ने समय पर किए थे, बहुत स्तुति और धन्यवाद दिया;

58 और क्योंकि वह उन पर प्रभुता करता है, और जो वस्तुएं अपने समय पर घटती हैं उन पर प्रभुता करता है: और मैं वहां तीन दिन तक बैठा रहा।

अध्याय 14

1 और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि मैं एक बांज वृक्ष के तले बैठा, और क्या देखता हूं, कि एक झाड़ी में से मेरे साम्हने यह आवाज आई, कि एस्द्रस, एस्द्रस।
2 और मैं ने कहा, हे प्रभु, मैं यहां हूं, और मैं अपके पांवोंके बल खड़ा हो गया।
3 तब उस ने मुझ से कहा, जब मेरी प्रजा मिस्र में सेवा करती या, तब मैं ने झाड़ी में अपने आप को मूसा पर प्रगट करके उस से बातें किया या।
4 और मैं ने उसको भेजकर अपनी प्रजा को मिस्र से निकाल लिया, और उस पहाड़ पर पहुंचा जहां मैं ने उसे बहुत दिन तक अपने पास रखा।
5 और उसे बहुत सी अद्‌भुत बातें बताईं, और समयों और अन्त का भेद दिखाया; और उसे आज्ञा देते हुए कहा,
6 ये बातें तू कहना, और ये बातें छिपा रखना।
7 और अब मैं तुझ से कहता हूं,
8 और जो चिन्ह मैं ने दिखाए हैं, और जो स्वप्न तू ने देखा, और जो फल तू ने सुना है, उसे अपने हृदय में स्मरण रखो;
9 क्योंकि तू सब से अलग किया जाएगा, और अब से तू युग के अन्त तक मेरे पुत्र और तेरे तुल्य लोगों के साथ रहेगा।
10 क्योंकि जगत ने अपनी जवानी खो दी है, और समय पुराना होने लगा है।
11 क्योंकि जगत बारह भागोंमें बंट गया है, और उसके दस भाग तो मिट गए, और दसवें भाग का आधा भी मिट गया।
12 और दसवें भाग के आधे के बाद का भाग बाकी रह जाता है।
13 इसलिये अब अपना घर सुधार, और अपनी प्रजा को डांट, और जो संकट में हों उनको शान्ति दे, और अब बिगाड़ करना छोड़ दे।
14 नाशवान विचारों को अपने पास से दूर करो, मनुष्य के बोझ को दूर करो, निर्बल स्वभाव को दूर करो,
15 और जो विचार तुझ पर भारी पड़ते हैं उन्हें दूर कर, और इस समय से भागने के लिये फुर्ती कर।
16 क्योंकि जो बुराई तू ने अब तक देखी है, उस से भी बड़ी बुराई भविष्य में घटेगी।
17 क्योंकि देखो, जगत ज्यों का त्यों दुर्बल होता जाएगा, और उस में रहनेवालोंपर विपत्तियां और भी अधिक बढ़ती जाएंगी।
18 क्योंकि समय बहुत दूर चला गया है, और पट्टे देना कठिन है; क्योंकि जो दर्शन तू ने देखा है वह अब निकट है।
19 तब मैं ने तेरे साम्हने उत्तर देकर कहा,
20 देख, हे प्रभु, मैं तेरी आज्ञा के अनुसार जाऊंगा, और जो लोग उपस्थित हैं उनको डांटूंगा; परन्तु जो उसके बाद उत्पन्न होंगे उनको कौन समझाएगा? इस प्रकार जगत अन्धियारा हो गया है, और उस में रहनेवाले उजियाले से रहित हो गए हैं।
21 इस कारण तेरी व्यवस्था जल गई है जो काम तुझ से किए जाएंगे, या जो काम आरम्भ होगा, वह कोई नहीं जानता।
22 परन्तु यदि मुझ पर तेरी कृपा हो, तो पवित्र आत्मा को मुझ में भेज, और जो कुछ जगत में आरम्भ से हुआ है, और जो तेरी व्यवस्था में लिखा है, वह सब मैं लिखूंगा, कि मनुष्य तेरा मार्ग पा सकें, और जो बाद के दिनों में जीवित रहेगा वह जीवित रह सकता है।
23 और उस ने मुझ से कहा, जा, और लोगोंको इकट्ठे करके कह, कि वे चालीस दिन तक तुझे न ढूंढ़ें।
24 परन्तु देख, तू बहुत से सन्दूक के वृक्ष तैयार करना, और सारेआ, दब्रीया, सेलेमिया, एकानुस, और असीएल अर्थात् पांचों को जो फुर्ती से लिखने को तैयार हैं, अपने साथ ले लेना;
25 और यहां आओ, और मैं तुम्हारे हृदय में समझ की एक मोमबत्ती जलाऊंगा, जो तब तक नहीं बुझेगी, जब तक कि वे बातें पूरी न हो जाएं जिन्हें तुम लिखना शुरू करोगे ।
26 और जब तू ऐसा कर चुका तो कुछ बातें प्रकाशित करना, और कुछ बातें बुद्धिमानों को गुप्त रूप से बताना, और कल इसी घड़ी से लिखना आरम्भ कर देना।
27 तब उसकी आज्ञा के अनुसार मैं निकला, और सब लोगों को इकट्ठा करके कहा,
28 हे इस्राएल, ये बातें सुनो!
29 हमारे बाप पहिले मिस्र में परदेशी थे, और वहीं से छुड़ाए गए थे;
30 और जीवन की व्यवस्था पाई, जिसे उन्होंने नहीं माना, और तुम ने भी उनके पीछे हो कर उसका उल्लंघन किया है।
31 तब सिय्योन का देश भी चिट्ठी डालकर तुम्हारे बीच बाँट दिया गया; परन्तु तुम्हारे पुरखाओं ने, और तुम ने भी कुटिल काम किया, और परमप्रधान की आज्ञा के अनुसार नहीं चले।
32 और क्योंकि वह धर्मी न्यायी है, इस कारण जो कुछ उस ने तुम्हें दिया था, वह समय पर तुम से ले लिया।
33 और अब तुम यहां हो, और तुम्हारे भाई भी तुम्हारे बीच में हैं।
34 इसलिये यदि ऐसा हो, कि तुम अपनी समझ को वश में करोगे, और अपने मन को सुधारोगे, तो तुम जीवित रहोगे, और मरने के बाद तुम पर दया की जाएगी।
35 क्योंकि मरने के बाद न्याय आएगा, कि हम फिर जीएंगे; और तब धर्मियोंके नाम प्रगट होंगे, और दुष्टोंके काम प्रगट होंगे।
36 इसलिये अब चालीस दिन तक कोई मेरे पास न आए, और न मेरी खोज करे।
37 इसलिये उस की आज्ञा के अनुसार मैं ने उन पांच पुरूषोंको साथ लिया, और हम मैदान में गए, और वहीं रहे।
38 और दूसरे दिन मुझे किसी शब्द ने पुकारकर कहा, हे एस्द्रा, अपना मुंह खोल, और पी ले जो मैं तुझे पिलाऊंगा।
39 तब मैं ने अपना मुंह खोला, और क्या देखा, कि वह मेरे पास एक भरा हुआ कटोरा ले आया, जो मानो जल से तो भरा हुआ या, परन्तु उसका रंग आग के समान था।
40 और मैं ने उसे लेकर पीया; और जब मैं ने उसे पीया, तब मेरे हृदय में समझ उत्पन्न हुई, और मेरी छाती में बुद्धि उत्पन्न हुई, और मेरी आत्मा ने मेरी स्मरण शक्ति को दृढ़ किया।
41 और मेरा मुंह खुल गया, और फिर बन्द न हुआ।
42 और परमप्रधान ने उन पांच पुरूषों को समझ दी, और उन्होंने रात के अद्‌भुत दर्शन जो वे नहीं जानते थे, लिख डाला; और वे चालीस दिन तक बैठे रहे, और दिन को लिखते रहे, और रात को रोटी खाते रहे।
43 जहां तक मेरी बात है. मैं दिन को बोलता था, और रात को अपनी जीभ नहीं पकड़ता था।
44 चालीस दिन में उन्होंने दो सौ चार पुस्तकें लिखीं।
45 और जब चालीस दिन पूरे हो गए, तो परमप्रधान ने कहा, पहिले जो तू ने लिखा है, उसे खोलकर प्रकाशित कर, कि क्या योग्य और क्या अयोग्य, सब उसे पढ़ सकें।
46 परन्तु पिछले सत्तर को अपने पास रखना, कि तू उन को केवल लोगोंमें से बुद्धिमानोंको ही सौंपना।
47 क्योंकि उन में समझ का सोता, बुद्धि का सोता, और ज्ञान की धारा है।
48 और मैंने वैसा ही किया।

अध्याय 15

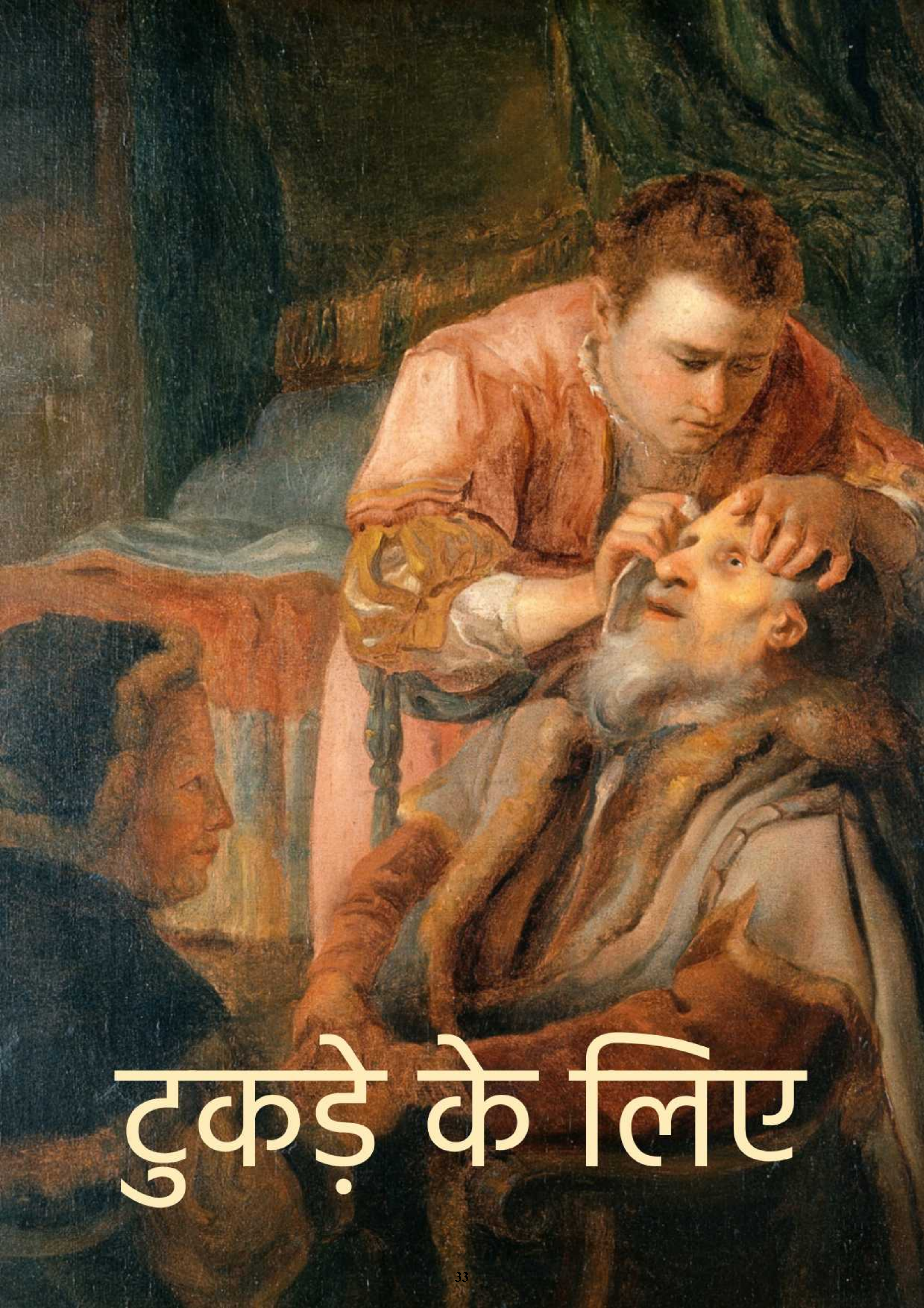
1 देख, तू भविष्यद्वाणी के वचन मेरी प्रजा को सुना, जो मैं तेरे मुंह में डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है।
2 और उन्हें कागज पर लिखवाओ: क्योंकि वे विश्वासयोग्य और सच्चे हैं।
3 जो तेरे विरोध में कल्पनाएं करते हैं, उन से मत डर; जो तेरे विरोध में बातें करते हैं, उनकी अविश्वासता से तू घबरा न जाए।
4 क्योंकि सब विश्वासघाती अपने विश्वासघात में मरेंगे।
5 देखो, यहोवा की यह वाणी है, मैं जगत पर विपत्तियां डालूंगा; तलवार, अकाल, मृत्यु, और विनाश।
6 क्योंकि दुष्टता ने सारी पृथ्वी को अत्यन्त अशुद्ध कर दिया है, और उनके दु:ख के काम पूरे हो गए हैं।
7 इसलिये यहोवा यों कहता है,
8 मैं उनकी दुष्टता को जो वे अपवित्रता से करते हैं, अपनी जीभ फिर न रोकूंगा, और न उनको उन कामों में सताऊंगा, जिन में वे दुष्टता करते हैं; देखो, निर्दोष और धर्मी का खून मेरी दोहाई दे रहा है, और उनके प्राण भी मेरी दोहाई दे रहे हैं। बस लगातार शिकायत करें.
9 और इस कारण यहोवा की यह वाणी है, मैं निश्चय उन से पलटा लूंगा, और उन में से जितने निर्दोष का खून होगा उन सभों का बदला लूंगा।
10 देख, मेरी प्रजा घात के लिये झुण्ड की नाईं ले जाई गई है; अब मैं उनको मिस्र देश में रहने न दूंगा;
11 परन्तु मैं बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से उनको ले आऊंगा, और मिस्र को पहिले की नाईं मरी से मारूंगा, और उसके सारे देश को नाश करूंगा।
12 मिस्र विलाप करेगा, और उसकी नेव उस विपत्ति और दण्ड से जो परमेश्वर उस पर डालेगा, नष्ट हो जाएगी।
13 जो भूमि पर खेती करते हैं वे छाती पीटेंगे, क्योंकि उनके बीज भारी वर्षा और ओलों के कारण नष्ट हो जाएंगे।
14 हाय जगत और उस में रहनेवालोंपर!
15 क्योंकि तलवार और उनका विनाश निकट आ गया है, और एक जाति उठकर लड़ने लगेगी दूसरा, और उनके हाथों में तलवारें।
16 क्योंकि मनुष्य आपस में बलवे करेंगे, और एक दूसरे पर आक्रमण करेंगे; वे अपने राजाओं और हाकिमों की ओर कुछ न मानेंगे, और उनके कार्यों का मार्ग उनके वश में रहेगा।
17 कोई मनुष्य नगर में जाना चाहे, परन्तु न जा सके।
18 क्योंकि उनके घमण्ड के कारण नगर व्याकुल हो जाएंगे, घर नष्ट हो जाएंगे, और लोग डर जाएंगे।
19 मनुष्य अपने पड़ोसी पर तरस न खाएगा, परन्तु रोटी न मिलने और बड़े क्लेश के कारण उनके घरों को तलवार से नष्ट कर देगा, और उनकी सम्पत्ति लूट लेगा।
20 देख, परमेश्वर कहता है, मैं पृथ्वी के सब राजाओं को, जो सूर्य के उदय से लेकर दक्खिन से, और पूर्व से, और लिबानुस से हैं, अपने पास बुलाऊंगा; कि एक दूसरे के विरूद्ध हो जाएं, और जो कुछ उन्होंने उन से किया है उसका बदला चुकाएं।
21 जैसा वे आज तक मेरे चुने हुओं से करते हैं वैसा ही मैं भी करूंगा, और उनको बदला दूंगा। परमेश्वर यहोवा यों कहता है;
22 मेरा दहिना हाथ पापियोंको न बचाएगा, और मेरी तलवार उन पर जो भूमि पर निर्दोष का लोहू बहाते हैं, बन्द न होगी।
23 उसके क्रोध की आग भड़क उठी, और उस ने पृथ्वी की नेव को और पापियोंको आग के भूसे के समान भस्म कर दिया है।
24 हाय उन पर जो पाप करते हैं, और मेरी आज्ञाएं नहीं मानते! प्रभु कहते हैं.
25 मैं उनको न छोड़ूंगा; हे बालको, अपना मार्ग ले लो, और मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध न करो।
26 क्योंकि यहोवा उन सब को जानता है जो उसके विरूद्ध पाप करते हैं, और इस कारण वह उन्हें मृत्यु और विनाश के लिये पहुंचा देता है।
27 क्योंकि अब विपत्तियां सारी पृथ्वी पर आएंगी, और तुम उन में बने रहोगे; क्योंकि परमेश्वर तुम्हें न बचाएगा, क्योंकि तुम ने उसके विरूद्ध पाप किया है।
28 एक भयानक दर्शन और पूर्व की ओर से उसका रूप देखो;
29 जहां अरब के अजगरोंकी जाति के लोग बहुत से रथ लिए हुए निकलेंगे, और उनकी बहुतायत वायु की नाईं पृथ्वी पर उड़ाई जाएगी, यहां तक कि जो कोई उनको सुनेगा वे डरेंगे और कांप उठेंगे।
30 और कर्मण्य लोग क्रोध से जलते हुए जंगली सूअरों की नाईं निकलेंगे, और बड़े बल से आकर उन से लड़ेंगे, और अश्शूरियों के देश का एक भाग उजाड़ डालेंगे।
31 और तब अपने स्वभाव को याद करते हुए, ड्रेगनों का प्रभुत्व होगा; और यदि वे फिरें, और मिलकर बड़ी शक्ति से उनको सताने की युक्ति करें,
32 तब वे लहूलुहान होकर घबराएंगे, और अपने बल से चुप होकर भाग जाएंगे।
33 और अश्शूरियोंके देश में से शत्रु उनको घेर लेंगे, और उन में से कितने को नाश कर डालेंगे, और उनकी सेना में डर और भय फैल जाएगा, और उनके राजाओंमें कलह होगा।
34 पूर्व से और उत्तर से दक्खिन तक बादलों को देखो, और वे क्रोध और तूफ़ान से भरे हुए देखने में बहुत भयानक हैं।
35 वे एक दूसरे को मारेंगे, और पृथ्वी पर बहुत से तारों को, वरन अपने अपने तारे को भी गिरा देंगे; और खून तलवार से पेट तक बहेगा,
36 और मनुष्यों का गोबर ऊँट की टाँगों के बराबर है।
37 और पृथ्वी पर बड़ा भय और थरथराहट फैल जाएगी; और जो क्रोध देखेंगे वे डर जाएंगे, और थरथरा उठेंगे।
38 और तब दक्खिन से, और उत्तर से, और पश्चिम से भी बड़े तूफ़ान आएंगे।
39 और पूर्व से प्रचण्ड आन्धियाँ उठेंगी, और उसे खोल देंगी; और जो बादल उस ने क्रोध करके खड़ा किया, और जिस तारे को पूरब और पच्छिम की ओर भय भड़काने के लिये उभारा था, वे नाश हो जाएंगे।
40 बड़े और सामर्थी बादल क्रोध से फुलाए जाएंगे, और तारा उस से सारी पृथ्वी और उसके रहनेवालोंको डरा देगा; और वे हर एक ऊंचे और प्रतिष्ठित स्थान पर एक भयानक तारा उण्डेलेंगे,
41 आग, और ओले, और उड़नेवाली तलवारें, और बहुत जल, जिस से सब खेत भर जाएं, और सब नदियां बहुत जल से भर जाएं।
42 और वे नगरोंऔर शहरपनाहोंको, और पहाड़ोंऔर टीलोंको, और जंगल के वृझोंको, और घास के मैदानोंको, और उनकेअनाजको तोड़ डालेंगे।
43 और वे बाबुल तक दृढ़ता से चलेंगे, और उसे डरा देंगे।
44 वे उसके पास आकर उसे घेर लेंगे, और सारा क्रोध उस पर भड़काएंगे; तब धूल और धुआं आकाश तक उठेगा, और उसके चारों ओर के सब लोग उसके लिथे छाती पीटेंगे।
45 और जो उसके वश में रहें वे उनको डरानेवालोंकी सेवा करें।
46 और हे आसिया, तू बाबुल की आशा का भागी है, और उसके निज भाग की महिमा है;
47 हे अभागे, तुझ पर हाय, क्योंकि तू ने अपने आप को उसके समान बना लिया है; और अपनी बेटियों से व्यभिचार कराया है, कि वे तेरे मित्रोंको प्रसन्न करें, और उन पर बड़ाई करें, जो सदा तेरे साय व्यभिचार करना चाहते हैं।

48 तू उसके सब कामों और कल्पनाओंके द्वारा उस घृणित पुरूष के पीछे हो लिया; इस कारण परमेश्वर कहता है,
49 मैं तुझ पर विपत्तियां भेजूंगा; विधवापन, दरिद्रता, अकाल, तलवार और मरी, कि तेरे घर उजाड़ हो जाएं, और विनाश और मृत्यु हो जाएं।
50 और तेरी शक्ति की महिमा फूल की नाईं सूख जाएगी, और जो तेरे ऊपर भेजा गया है उस से गर्मी उत्पन्न होगी।
51 तू कोड़े लगनेवाली कंगाल स्त्री के समान, और घावों से ताड़ना पानेवाली के समान निर्बल हो जाएगी, यहां तक कि शूरवीर और प्रेमी भी तुझे ग्रहण न कर सकेंगे। हम तुमको
52 क्या मैं डाह से तेरे विरूद्ध आगे बढ़ता, यहोवा की यही वाणी है,
53 यदि तू ने मेरे चुने हुओं को सदैव अपने हाथों की मार से घात न किया होता, और मतवाले होकर उनके मरे हुओं के विषय में यह न कहा होता,
54 अपने मुख की सुन्दरता प्रगट करो?
55 तेरे व्यभिचार का प्रतिफल तेरी गोद में रहेगा, इसलिथे तुझे प्रतिफल मिलेगा।
56 यहोवा की यह वाणी है, जैसा तू ने मेरे चुने हुओं के साथ किया है, वैसा ही परमेश्वर तुझ से करेगा, और तुझे विपत्ति में डालेगा।
57 तेरे लड़के भूखों मरेंगे, और तू तलवार से मारा जाएगा; तेरे नगर ढाए जाएंगे, और तेरे सब लोग मैदान में तलवार से नाश किए जाएंगे।
58 और पहाड़ोंके लोग भूख से मरेंगे, और अपना मांस खाएंगे, और अपना ही लोहू पीएंगे, क्योंकि वे रोटी और पानी के भूखे होंगे।
59 तू दु:ख की नाईं समुद्र के पार होकर आएगा, और फिर विपत्तियां ग्रहण करेगा।
60 और मार्ग में वे उजड़े हुए नगर पर धावा बोलेंगे, और तेरे देश का कुछ भाग नाश करेंगे, और तेरी महिमा का कुछ भाग लूट लेंगे, और नाश हुए बाबुल में लौट जाएंगे।
61 और तू उनके द्वारा भूसी के समान फेंक दिया जाएगा, और वे तेरे लिये आग के समान ठहरेंगे;
62 और तेरे नगरोंऔर भूमि और पहाड़ोंको भी सत्यानाश कर डालेंगे; तेरे सारे जंगल और फलदार वृक्ष आग में जला दिए जाएंगे।
63 तेरे लड़केबाले बन्धुवाई में ले जाएंगे, और जो कुछ तेरा है उसे भी लूट लेंगे, और तेरे मुख की शोभा बिगाड़ देंगे।

अध्याय 16

1 हे बाबुल, और आसिया, तुम पर हाय! हे मिस्र और सीरिया, तुम पर धिक्कार है!
2 और अपके अपके अपके अपके अपके बालकोंके लिथे विलाप करो, और शोक करो; क्योंकि तुम्हारा विनाश निकट है।
3 तेरे पास तलवार भेजी गई है, और उसे कौन लौटा सकता है?
4 तुम्हारे बीच आग भड़क उठी है, उसे कौन बुझा सकता है?
5 तुम्हारे पास विपत्तियां भेजी गई हैं, और वह कौन है जो उन्हें दूर कर सके?
6 क्या कोई मनुष्य भूखे सिंह को जंगल में से भगा सकता है? क्या खूंटी के जलने पर कोई उसकी आग बुझा सकता है?
7 क्या कोई बलवन्त धनुर्धर का छोड़ा हुआ तीर फिर फेर सकता है?
8 पराक्रमी यहोवा विपत्तियां भेजता है, और वह कौन है जो उन्हें दूर कर सकता है?
9 उसके क्रोध से आग भड़केगी, और उसे बुझानेवाला कौन है?
10 वह बिजलियां गिराएगा, और कौन न डरेगा? वह गरजेगा, और कौन न डरेगा?
11 यहोवा धमकी देगा, और कौन उसके साम्हने कूटकर चूर्ण न कर देगा?
12 पृथ्वी और उसकी नेवें भी डोल उठीं; समुद्र की गहराइयों से लहरें उठती हैं, और उसकी लहरें और मछलियाँ भी यहोवा के साम्हने और उसकी शक्ति के तेज के साम्हने व्याकुल हो जाती हैं।
13 क्योंकि उसका दहिना हाथ जो धनुष को झुकाता है, वह बलवन्त है, और उसके तीर जो वह चलाता है वे चोखे हैं, और जब वे जगत की छोर तक मारे जाने लगेंगे, तब वे चूकेंगे नहीं।
14 देखो, विपत्तियां भेजी गई हैं, और जब तक पृथ्वी पर न आएं तब तक लौटकर न आएंगी।
15 आग भड़क उठी है, और जब तक पृथ्वी की नेव को भस्म न कर दे तब तक नहीं बुझेगी।
16 जैसे पराक्रमी धनुर्धर का छोड़ा हुआ तीर पीछे नहीं लौटता, वैसे ही विपत्तियां जो पृथ्वी पर भड़केंगी, फिर लौटकर न आएंगी।
17 हाय मुझ पर! धिक्कार है मुझ पर! उन दिनों में मुझे कौन छुड़ाएगा?
18 दु:ख और बड़े शोक का आरम्भ; अकाल और महामृत्यु की शुरुआत; युद्धों की शुरुआत, और शक्तियाँ भयभीत हो जाएँगी; बुराइयों की शुरुआत! जब ये बुराइयाँ आएँगी तो मैं क्या करूँगा?
19 देखो, अकाल और महामारी, क्लेश और पीड़ा, सुधार के लिए विपत्ति के रूप में भेजे गए हैं ।
20 परन्तु इन सब बातोंके कारण भी वे अपनी दुष्टता से न फिरेंगे, और विपत्तियोंपर सर्वदा स्मरण न रखेंगे।
21 देख, पृथ्वी पर भोजन की वस्तुएं इतनी सस्ती हो जाएंगी, कि वे अपने आप को अच्छा समझेंगे, और तब पृथ्वी पर विपत्तियां, तलवार, महंगी, और बड़ा उपद्रव बढ़ेगा।
22 क्योंकि पृथ्वी के रहनेवालोंमें से बहुतेरे भूख से नाश होंगे; और दूसरे जो भूख से बच जाएं, उनको तलवार से नाश किया जाएगा।
23 और मरे हुए गोबर के समान फेंक दिए जाएंगे, और कोई उनको शान्ति देनेवाला न होगा; क्योंकि पृथ्वी उजड़ जाएगी, और नगर ढाए जाएंगे।
24 पृथ्वी पर खेती करने वा बोनेवाला कोई मनुष्य न रहेगा
25 वृक्ष फल लाएंगे, और उनको कौन बटोरेगा?
26 अंगूर पकेंगे, और उन्हें कौन रौंदेगा? क्योंकि सब स्थान मनुष्यों से उजाड़ हो जाएंगे;
27 यहां तक कि एक मनुष्य दूसरे को देखने, और उसका शब्द सुनने की इच्छा करेगा।
28 क्योंकि एक नगर में से दस बचे रहेंगे, और दो मैदान में, जो घने अशेरा और चट्टानों की दरारों में छिप जाएंगे।
29 जैसे जैतून की बारी में एक एक पेड़ पर तीन या चार जैतून बचे रहते हैं;
30 या जैसे जब दाख की बारी इकट्ठी की जाती है, तो जो लोग दाख की बारी में यत्न से ढूंढ़ते हैं, उन में से कुछ झुण्ड रह जाते हैं;
31 इसी रीति से उन दिनोंमें जो तलवार से उनके घरोंकी तलाशी लेते हैं उन में से तीन या चार लोग बचे रहेंगे।
32 और पृथ्वी उजाड़ हो जाएगी, और उसके खेत पुराने हो जाएंगे, और उसके मार्ग और सब मार्ग कांटों से भर जाएंगे, क्योंकि कोई उस से होकर चलने न पाएगा।
33 कुँवारियाँ बिना दूल्हे के विलाप करेंगी; स्त्रियाँ बिना पति के विलाप करेंगी; उनका बेटियाँ विलाप करेंगी, और उनका कोई सहायक न होगा।
34 उनके दूल्हे युद्ध में नाश हो जाएंगे, और उनके पति भूख से मर जाएंगे।
35 हे यहोवा के दासो, ये बातें सुनो, और समझो।
36 देखो, यहोवा का वचन है, ग्रहण करो; जिन देवताओं की चर्चा यहोवा ने की है उन पर विश्वास मत करो।
37 देखो, विपत्तियां निकट आती हैं, और थमती नहीं।

38 जैसे जब स्त्री नौवें महीने में बेटे को जन्म देती है, तो दो-तीन घंटे तक उसके पेट में बड़ी पीड़ा होती रहती है, और जब बच्चा उत्पन्न होता है, तब एक क्षण की भी पीड़ा नहीं होती।
39 इसी रीति से विपत्तियां पृथ्वी पर आने में विलम्ब से न होंगी, और जगत छाती पीटेगा, और चारों ओर से दु:ख पड़ेगा।
40 हे मेरी प्रजा, मेरा वचन सुन, युद्ध के लिथे तैयार हो, और उन विपत्तियोंमें पृथ्वी पर पथिकोंकी नाईं हो।
41 जो बेचता है, वह भागने वाले के समान हो; और जो मोल लेता है, वह हानि उठानेवाले के समान हो।
42 जो माल का व्यापार करता है, वह उस से कुछ लाभ नहीं पाता, और जो निर्माण करता है, वह उस में रहने न पाता।
43 जो बोता है, वह मानो काटता ही नहीं; वैसे ही दाख की बारी लगानेवाला भी ऐसा ठहरता है, मानो अंगूर न तोड़ सके।
44 जो ब्याह करते हैं, वे उनके समान होते हैं जिनके सन्तान नहीं होती; और जो विवाह नहीं करते, वे विधुर के समान हैं।
45 इस कारण परिश्रम करनेवालोंका परिश्रम व्यर्थ होता है;
46 क्योंकि परदेशी उनका फल काटेंगे, और उनकी सम्पत्ति लूट लेंगे, उनके घरोंको उजाड़ देंगे, और उनके बच्चों को बन्धुवाई में ले लेंगे, क्योंकि बन्धुवाई और महंगी में उनके बच्चे उत्पन्न होंगे।
47 और जो अपना माल लूट लेते हैं, वे उतना ही अपने नगरों, और घरों, और सम्पत्तियों, और निज सम्पत्ति को लूट लेते हैं।
48 यहोवा का यही वचन है, कि मैं उनके पाप के कारण उन पर और भी अधिक क्रोधित होऊंगा।
49 जैसे कोई वेश्या किसी सीधी साधी और सदाचारिणी स्त्री से डाह करती है;
50 इसलिये धर्म अधर्म से बैर रखेगा, जब वह अपना श्रृंगार करेगी, और जब वह आकर उसकी रक्षा करेगा, जो पृथ्वी पर सब पापों का भलीभांति पता लगाता है, तब वह उसके साम्हने उस पर दोष लगाएगी।
51 और इसलिथे तुम उसके समान न हो जाओ, और न उसके कामोंके समान हो जाओ।
52 क्योंकि थोड़े ही में अधर्म पृथ्वी पर से दूर किया जाएगा, और तुम्हारे बीच धर्म राज्य करेगा।
53 पापी यह न कहे, कि उस ने पाप नहीं किया; क्योंकि परमेश्वर उसके सिर पर आग के अंगारे जलाएगा, और वह प्रभु परमेश्वर और अपनी महिमा के साम्हने कहता हो, मैं ने पाप नहीं किया।
54 देखो, प्रभु मनुष्यों के सब कामों को, उनकी कल्पनाओं, विचारों और उनके हृदयों को जानता है;
55 जिस ने यह वचन दिया, पृथ्वी बनाई जाए; और यह बनाया गया: स्वर्ग बनाया जाए; और इसे बनाया गया.
56 उसके वचन से तारे बने, और वह उनकी गिनती जानता है।
57 वह गहिरे धन और उसके खजानों को ढूंढ़ता है; उस ने समुद्र को, उस में जो कुछ है, सब नाप लिया है।
58 उस ने समुद्र को जल के बीच में बन्द कर दिया, और अपने वचन से पृथ्वी को जल के ऊपर लटका दिया।
59 वह आकाश को बन्दरगाह के समान फैलाता है; उस ने उसे जल के ऊपर स्थापित किया।
60 उस ने जंगल में जल के सोते, और पहाड़ोंकी चोटियोंपर कुण्ड बनाए, कि ऊंची चट्टानोंसे बाढ़ निकलकर पृथ्वी पर जल बरसाए।
61 उस ने मनुष्य को बनाया, और उसका मन शरीर के बीच में लगाया, और उसे सांस, जीवन और समझ दी।
62 हां, सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आत्मा, जिसने सब कुछ बनाया, और पृथ्वी के रहस्यों में सब छिपी हुई बातों का पता लगाता है,
63 निश्चय वह तुम्हारे आविष्कारों को जानता है, और तुम अपने मन में क्या सोचते हो, अर्थात् उन लोगों को भी जो पाप करते हैं, और अपना पाप छिपाना चाहते हैं।
64 इसलिथे यहोवा ने तुम्हारे सब कामोंको भलीभांति जांच लिया है, और तुम सब को लज्जित करेगा।
65 और जब तुम्हारे पाप प्रगट होंगे, तब तुम मनुष्योंके साम्हने लज्जित होगे, और उस दिन तुम्हारे ही पाप ही तुम पर दोष लगानेवाले ठहरेंगे।
66 तुम क्या करोगे? या तुम अपने पापों को परमेश्वर और उसके स्वर्गदूतों के साम्हने कैसे छिपाओगे?
67 देखो, परमेश्वर आप ही न्यायी है, उस से डरो; अपने पापों से दूर रहो, और अपने अधर्म के कामों को भूल जाओ, और सदा के लिये उन में हस्तक्षेप न करो; इसी रीति से परमेश्वर तुम्हें आगे ले जाएगा, और तुम्हें सब विपत्तियों से बचाएगा।
68 क्योंकि देखो, बड़ी भीड़ का क्रोध तुम पर भड़का है, और वे तुम में से कुछ को छीन लेंगे, और आलसी होकर मूरतों पर चढ़ाए हुए पदार्थों से तुम्हें खिलाएंगे।
69 और जो उन से सहमत हों, वे ठट्ठों में और निन्दा में, और पैरों से रौंदे जाएंगे।
70 क्योंकि यहोवा के डरवैयोंसे सब स्थानोंमें और सब नगरोंमें बड़ा बलवा होगा।
71 वे पागलोंके समान होंगे, और किसी को भी न बख्शेंगे, वरन यहोवा के डरवैयोंको लूटेंगे और नाश करेंगे।
72 क्योंकि वे उनका माल उजाड़ देंगे, और उनका माल छीन लेंगे, और अपने घरों से निकाल देंगे।
73 तब वे प्रगट हो जाएंगे, जो मेरे चुने हुए हैं; और वे आग में सोने के समान जांचे जाएंगे।
74 हे मेरे प्रियो, सुनो, यहोवा की यही वाणी है: देखो, संकट के दिन निकट हैं, परन्तु मैं तुम्हें उस से बचाऊंगा।
75 मत डरो, और न सन्देह करो; क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा मार्गदर्शक है,
76 और जो मेरी आज्ञाओं और उपदेशोंको मानते हैं, उनके अगुवे, प्रभु यहोवा यों कहता है, तुम्हारे पाप तुम पर भारी न पड़ें, और तुम्हारे अधर्म के काम तुम पर न बढ़ें।
77 धिक्कार है उन पर जो अपने पापों से बंधे हैं, और अपने पापों से ढके हुए हैं जैसे कोई मैदान झाड़ियों से, और उसका मार्ग काँटों से ढँका हुआ हो, जिस से कोई मनुष्य न चल सके!
78 उसे बिना कपड़ों के छोड़ दिया जाता है, और भस्म होने के लिये आग में डाल दिया जाता है।



टुकड़े के लिए

अध्याय 1

1 टोबीत के वचनों की पुस्तक, वह तोबीएल का पुत्र, वह अनानीएल का पुत्र, वह अदूएल का पुत्र, वह गबाएल का पुत्र, और नेप्ताली के गोत्र में से असाएल के वंश में से था;
2 जो अश्शूरियों के राजा एनेमेसार के समय में बन्धुवाई करके इस्बे से निकाला गया, जो उस नगर के दाहिने हाथ पर है, जिसे गलील में आसेर के ऊपर नेफ्थाली कहा जाता है।
3 मैं तोबीत अपके जीवन भर सत्य और न्याय के मार्ग पर चलता रहा, और मैं ने अपके भाइयोंऔर अपक्की जाति के लिथे, जो मेरे साय अश्शूरियोंके देश निनेवे को आए थे, बहुत से दान किए।
4 और जब मैं अपने देश में, अर्थात् इस्राएल के देश में या, और छोटा ही या, तब मेरे पिता नेप्ताली का सारा गोत्र यरूशलेम के घराने में से गिर गया, और इस्राएल के सब गोत्रों में से इसलिये चुन लिया गया, कि सब गोत्रोंके लोग बलि चढ़ाएं। वहां, जहां परमप्रधान के निवास का मंदिर सभी युगों के लिए पवित्र और निर्मित किया गया था।
5 और जितने गोत्रोंने एक होकर बलवा किया, और मेरे पिता नप्ताली के घराने ने बछिया बाल के लिथे बलिदान किया।
6 परन्तु मैं अकेला ही पर्वों में यरूशलेम को जाया करता था, जैसा कि इस्राएल के सब लोगों के लिये सनातन नियम के अनुसार ठहराया गया था, कि उन्हें पहिले फल और पहिले कतरे हुए अन्न का दसवां अंश भी दिया जाए; और उन्होंने मैं को वेदी पर हारून की सन्तान याजकों को सौंप दिया।
7 सारी उपज का पहिला दसवां भाग मैं ने हारून के पुत्रों को दिया, जो यरूशलेम में सेवा टहल करते थे; और दसवां भाग भी मैं बेचकर प्रति वर्ष यरूशलेम में खर्च करता था।
8 और तीसरा मैं ने अपने पिता की माता देबोरा की आज्ञा के अनुसार उनको दे दिया, जो उचित था, क्योंकि मेरे पिता ने मुझे अनाथ छोड़ दिया था।
9 फिर जब मैं पुरूष का हो गया, तब मैं ने अपनी ही कुटुम्बी अन्ना से ब्याह किया, और उस से टोबीयाह उत्पन्न हुआ।
10 और जब हम बंधुआई में नीनवे को ले जाए गए, तब मेरे सब भाइयोंऔर मेरे कुटुम्बियोंने अन्यजातियोंकी रोटी खाई।
11 परन्तु मैं ने अपने आप को भोजन से रोक रखा;
12 क्योंकि मैं ने परमेश्वर को पूरे मन से स्मरण किया।
13 और परमप्रधान ने मुझ पर एनेमेसर के साम्हने अनुग्रह और अनुग्रह किया, कि मैं उसका पालनहार हुआ।
14 और मैं मादे में गया, और गब्रियास के भाई गबाएल के हाथ में मेदियों के नगर रगेस में दस किक्कार चान्दी छोड़ गया।
15 जब एनेमेसार मर गया, तब उसका पुत्र सन्हेरीब उसके स्थान पर राज्य करने लगा; जिसकी संपत्ति परेशान थी, कि मैं मीडिया में नहीं जा सका।
16 और एनेमेसर के समय में मैं ने अपने भाइयोंको बहुत दान दिया, और अपनी रोटी भूखोंको खिला दी,
17 और नंगे को मेरे वस्त्र पहनाए; और यदि मैं ने अपक्की जाति में से किसी को मरा हुआ या नीनवे की शहरपनाह पर फेंका हुआ देखा, तो उसे मिट्टी दी।
18 और यदि सन्हेरीब राजा ने आकर किसी को घात किया हो, और वह यहूदिया से भाग गया हो, तो मैं ने उनको गुप्त में मिट्टी दी; क्योंकि उसने अपने क्रोध में बहुतों को मार डाला; परन्तु जब राजा से शव ढूंढ़े गए तो वे नहीं मिले।
19 और नीनवेइयों में से एक ने जाकर राजा से मेरे विषय में शिकायत की, कि मैं ने उनको मिट्टी दी, और अपने आप को छिपा रखा; यह समझ कर कि मुझे मार डालना चाहा गया है, मैं डर के मारे अपने आप से अलग हो गया।
20 तब मेरा सारा धन बलपूर्वक छीन लिया गया, और मेरी पत्नी हन्ना और मेरे पुत्र टोबियास को छोड़ मेरे पास कुछ भी न बचा।
21 और साढ़े पांच सौ दिन भी न बीते, कि उसके दो बेटों ने उसे मार डाला, और वे अरारात के पहाड़ों में भाग गए; और उसका पुत्र सारकेदोनस उसके स्थान पर राज्य करने लगा; और उसने मेरे भाई अनाएल के पुत्र अखियाखरूस को अपने पिता के लेखाओं और सब कामों का अधिकारी नियुक्त किया।
22 और अखिक्रुस मेरे लिये बिनती करके नीनवे को लौट आया। और अखियाकारुस पिलानेहारा, और मुहर का रखवाला, और भण्डारी, और हिसाब-किताब का देख-रेख करनेवाला था; और सारकेदोनुस ने उसे अपने पास नियुक्त किया: और वह मेरे भाई का पुत्र था।

अध्याय दो

1 अब जब मैं पिन्तेकुस्त के पर्व पर, जो सात सप्ताहों का पवित्र पर्व है, घर आया, और मेरी पत्नी हन्ना और मेरा पुत्र टोबीयाह मेरे पास आ गए, तो उस समय मेरे लिये बढ़िया भोजन तैयार किया गया। मैं खाना खाने बैठ गया.
2 और जब मैं ने बहुत सारा मांस देखा, तो अपने बेटे से कहा, जा कर हमारे भाइयों में से जो प्रभु का स्मरण रखता हो, उस कंगाल को ले आ; और, देखो, मैं तुम्हारे लिए इंतज़ार कर रहा हूँ।
3 परन्तु वह फिर आया, और कहा, हे पिता, हमारी जाति में से एक पुरूष गला घोंटा जाएगा, और बाजार में फेंक दिया जाएगा।
4 तब मैं ने मांस का स्वाद चखने से पहिले ही चल दिया, और सूर्य डूबने तक उसे एक कोठरी में ले गया।
5 तब मैं लौट आया, और नहा धोकर पेट भर भोजन खाया।
6 और आमोस की उस भविष्यद्वाणी को स्मरण करके, जो उस ने कहा या, कि तेरी पर्ब्बियां शोक में, और तेरा सारा आनन्द विलाप में बदल जाएगा।
7 इसलिये मैं रोया: और सूरज डूबने के बाद मैं ने जाकर कब्र बनाई, और उसे मिट्टी दी।
8 परन्तु मेरे पड़ोसियों ने मेरा ठट्ठा करके कहा, यह मनुष्य अब तक इस बात के कारण मार डाले जाने से नहीं डरता: जो भाग गया; और फिर भी, देखो, वह मरे हुओं को फिर से गाड़ता है।
9 उसी रात मैं भी गाड़ से लौट आया, और अशुद्ध होकर अपने आंगन की भीत के पास सो गया, और मुंह उघाड़े हुए या।
10 और मैं न जानता था, कि शहरपनाह में गौरैया हैं, और मेरी आंखें खुली हैं, और गौरैयों ने मेरी आंखों में गरम गोबर डाला, और मेरी आंखों में सफेदी छा गई; और मैं वैद्यों के पास गया, परन्तु उन्होंने मेरी कुछ सहायता न की; जब तक मैं एलिमाइस में नहीं गया, अचियाचारस ने मेरा पोषण किया।
11 और मेरी पत्नी हन्ना ने स्त्रियों का काम लिया।
12 और जब उस ने उन्हें स्वामियोंके पास घर भेज दिया, तब उन्हों ने उसको मजदूरी दी, और एक बच्चा भी दिया।
13 और जब वह मेरे घर में थी, और चिल्लाने लगी, तब मैं ने उस से पूछा, यह बच्चा कहां का है? क्या यह चोरी नहीं हुई है? इसे मालिकों को सौंपें; क्योंकि चुराई हुई वस्तु खाना उचित नहीं।
14 परन्तु उस ने मुझ से उत्तर दिया, यह मजदूरी से अधिक की भेंट के लिथे दिया गया है। हालाँकि, मैंने उस पर विश्वास नहीं किया, लेकिन उसे इसे मालिकों को सौंपने का आदेश दिया: और मैं उस पर लज्जित हो गया। परन्तु उस ने मुझ से उत्तर दिया, तेरे दान और तेरे धर्म के काम कहां गए? देख, तू और तेरे सारे काम प्रगट हो गए हैं।

अध्याय 3

1 तब मैं उदास होकर रोया, और शोक में प्रार्थना करके कहा,
2 हे यहोवा, तू न्यायी है, और तेरे सब काम और तेरी सारी चाल-चलन दया और सच्चाई है, और तू सर्वदा सच्चा और न्यायपूर्ण न्याय करता है।
3 मुझे स्मरण कर, और मुझ पर दृष्टि करके मुझे मेरे पापों और अज्ञानता का, और मेरे बापदादों के पापों का दण्ड न दे, जो तुझ से पहिले पाप करते आए हैं।
4 क्योंकि उन्होंने तेरी आज्ञाएं नहीं मानीं; इस कारण तू ने हमें लूटने, और बन्धुवाई, और मार डालने के लिये सौंप दिया है, और उन सब जातियोंके बीच में जिनके बीच हम तितर-बितर हो गए हैं, हमारी नामधराई हुई है।

5 और अब तेरे न्याय बहुत से और सच्चे हैं; मेरे और मेरे पुरखाओं के पापों के अनुसार मुझ से व्यवहार कर; क्योंकि हम ने तेरी आज्ञाएं नहीं मानीं, और तेरे साम्हने सच्चाई पर नहीं चले।
6 इसलिये अब जो तुझे उचित समझे वही मुझ से व्यवहार कर, और मेरी आत्मा को मुझ से छीन लेने की आज्ञा दे, कि मैं घुलकर मिट्टी में मिल जाऊं; क्योंकि मेरे लिये जीवित रहने से अच्छा मरना ही भला है, क्योंकि मैं ने झूठ सुना है। तुम नामधराई करते हो, और बहुत दु:ख करते हो; इसलिये आज्ञा दो, कि मैं अब इस संकट से छूटकर सर्वदा के स्थान में चला जाऊं; अपना मुख मुझ से न फेर ले।
7 उसी दिन ऐसा हुआ, कि मेदिया के एकबताने नगर में रागुएल की बेटी सारा को भी उसके पिता की लौंडियोंने अपमानित किया;
8 क्योंकि वह सात पतियोंके साथ ब्याह चुकी थी, और जिन को अस्मोदुस दुष्टात्मा ने उस से सहवास करने से पहिले मार डाला या। उन्होंने कहा, क्या तू नहीं जानती, कि तू ने अपने अपने पतियों का गला घोंट डाला है? तुम्हारे पहले से ही सात पति थे, उनमें से किसी के नाम पर भी तुम्हारा नाम नहीं रखा गया।
9 तू उनके लिये हम को क्यों मारता है? यदि वे मर जाएं, तो उनके पीछे हो लेना, ऐसा न हो कि हम तुझे कभी बेटा या बेटी देखें।
10 जब उसने ये बातें सुनीं, तो वह बहुत उदास हुई, यहां तक कि उस ने सोचा, कि अपना गला घोंट डालूं; और उस ने कहा, मैं अपने पिता की एकलौती बेटी हूं, और यदि मैं ऐसा करूंगी, तो उसका अपमान होगा, और मैं उसके बुढ़ापे को दु:ख सहित अधोलोक में पहुंचा दूंगी।
11 तब उस ने खिड़की की ओर मुंह करके प्रार्थना की, और कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू धन्य है, और तेरा पवित्र और महिमामय नाम सर्वदा धन्य और आदरयोग्य है; तेरे सारे काम सर्वदा तेरी प्रशंसा करें।
12 और अब, हे यहोवा, मैं अपनी आंखें और अपना मुख तेरी ओर लगाए रखता हूं,
13 और कह, मुझे पृथ्वी पर से उठा ले, कि मैं फिर नामधराई न सुनूं।
14 हे प्रभु, तू जानता है, कि मैं मनुष्य के सब पापों से शुद्ध हूं।
15 और मैं ने अपके बन्धुवाई के देश में अपना नाम और अपके पिता का नाम कभी अशुद्ध न किया; मैं अपके पिता की एकलौती बेटी हूं, न उसके कोई सन्तान है, और न उसका कोई निकट कुटुम्बी है, और न उसका कोई पुत्र है। उसके जीवित रहने पर मैं अपने आप को उसके लिये ब्याह रखूं; मेरे सातों पति तो मर चुके हैं; और मुझे क्यों जीना चाहिए? परन्तु यदि तुझे यह अच्छा नहीं लगता, कि मैं मर जाऊं, तो मुझे आज्ञा दे, और मुझ पर दया कर, कि मैं फिर नामधराई न सुनूं।
16 इस प्रकार उन दोनोंकी प्रार्थनाएं महान परमेश्वर के प्रताप के साम्हने सुनी गईं।
17 और राफेल को उन दोनों को चंगा करने, अर्थात टोबीत की आंखों की सफेदी दूर करने, और रागुएल की बेटी सारा को टोबीत के पुत्र टोबीयाह से ब्याह देने के लिये भेजा गया; और एस्मोडेस को दुष्टात्मा बाँधने के लिये; क्योंकि वह विरासत के अधिकार से टोबियास की थी। उसी समय टोबीत घर आया, और अपने घर में गया, और रागुएल की बेटी सारा अपनी अटारी से उतरी।

अध्याय 4

1 उस दिन टोबीत को वह धन स्मरण आया, जो उस ने मेदिया के क्रोध में गबाएल को दिया था।
2 और आप से कहा, मैं ने तो मृत्यु की अभिलाषा की है; मैं अपने बेटे टोबियास को क्यों नहीं बुलाता कि मरने से पहले उसे धन का संकेत दे दूं?
3 और उस ने उसे बुलाकर कहा, हे मेरे बेटे, जब मैं मर जाऊं, तो मुझे मिट्टी देना; और अपनी माता का तिरस्कार न करना, वरन जीवन भर उसका आदर करना, और जिस से वह प्रसन्न हो वही काम करना, और उसे उदास न करना।
4 हे मेरे पुत्र, स्मरण कर, कि जब तू उसके पेट में था, तब उस ने तेरे लिये बहुत बड़े खतरे देखे; और जब वह मर जाए, तो उसे मेरे पास एक कब्र में गाड़ देना।
5 हे मेरे पुत्र, तू जीवन भर अपने परमेश्वर यहोवा का स्मरण करता रहे, और तू पाप करने, और उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन न करने पाए; तू जीवन भर सीधाई से काम करता रह, और अधर्म के मार्ग पर न चलना।
6 क्योंकि यदि तू सच्चाई से काम करेगा, तो तेरे कामों का तुझे और सब धर्म से जीनेवालों को फल मिलेगा।
7 अपनी सम्पत्ति में से दान करना; और जब तू दान करे, तो डाह न करना, और किसी कंगाल से मुंह न मोड़ना, और परमेश्वर का मुंह तुझ से न हटना।
8 यदि तेरे पास धन हो तो उसके अनुसार दान देना; यदि तेरे पास थोड़ा हो, तो उस थोड़े के अनुसार देने से न डरना।
9 क्योंकि तू विपत्ति के दिन के लिथे अपने लिथे अच्छा भण्डार इकट्ठा करता है।
10 क्योंकि वह दान मृत्यु से बचाता है, और अन्धकार में पड़ने नहीं देता।
11 क्योंकि दान परमप्रधान की दृष्टि में सब देने वालों के लिये अच्छा दान है।
12 हे मेरे पुत्र, सब प्रकार के व्यभिचार से सावधान रह, मुख्य करके अपने पुरखाओं के वंश में से किसी से स्त्री ब्याह करना, और पराई स्त्री से जो तेरे पिता के गोत्र की न हो, ब्याह न लेना; क्योंकि हम हे इब्राहीम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान हैं। , इसहाक, और याकूब: हे मेरे पुत्र, स्मरण रख, कि हमारे पुरखा आदि से सब ने अपनी ही जाति की स्त्रियों से ब्याह किया, और अपने अपने वंश में आशीष पाए, और उनका वंश देश का अधिक्कारनी होगा।
13 इसलिये अब हे मेरे पुत्र, तू अपने भाइयों से प्रेम रख, और अपने भाइयों अर्थात अपनी प्रजा के बेटे-बेटियों को मन में तुच्छ न जाना, और उन में से किसी को ब्याह न ले; क्योंकि अभिमान से विनाश और बहुत उपद्रव होता है, और महापाप से विनाश होता है और बड़ी कमी है: क्योंकि अपवित्रता अकाल की जननी है।
14 किसी मनुष्य ने जो कुछ तेरे लिथे काम किया हो, उसका पारिश्रमिक रोक न रखना; परन्तु उसे हाथ से दे देना; क्योंकि यदि तू परमेश्वर की सेवा करेगा, तो वह भी तुझे प्रतिफल देगा; हे मेरे पुत्र, तू जो कुछ भी करता है, उस में चौकस रह और अपनी सारी बातचीत में बुद्धिमान बनो।
15 जिस मनुष्य से तू बैर रखता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना; दाखमधु न पिलाना जो तुझे मतवाला बना दे; और मतवालापन तेरे संग यात्रा में न हो।
16 अपनी रोटी भूखोंको, और अपने वस्त्रोंमें से नंगे लोगोंको दे; और अपनी बहुतायत के अनुसार दान देना; और जब तू दान दे, तो डाह न करना।
17 धर्मियों के गाड़ने के लिये अपनी रोटी उण्डेल दो, परन्तु दुष्टों को कुछ न दो।
18 सब बुद्धिमानों से सम्मति पूछो, और किसी लाभ की सम्मति को तुच्छ न जानना।
19 अपके परमेश्वर यहोवा को सदा धन्य कह, और उसी से अभिलाषा कर, कि तेरा मार्ग सीधा हो, और तेरे सब मार्ग और युक्तियां सफल हों; परन्तु यहोवा आप ही सब अच्छी वस्तुएं देता है, और जिसे चाहता है, उसे अपनी इच्छानुसार नम्र बनाता है; इसलिये अब, हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञाओं को स्मरण रख, और उन्हें अपने मन से न जाने दे।
20 और अब मैं उन्हें यह बताता हूं, कि मैं ने मेदिया के रागेस में गब्रियास के पुत्र गबाएल को दस किक्कार सौंपे हैं।
21 और हे मेरे बेटे, इस से मत डर, कि हम कंगाल हो गए; क्योंकि यदि तू परमेश्वर का भय माने, और सब पापों से दूर रहे, और जो उसे भाए वही करे, तो तू बहुत धन पाएगा।

अध्याय 5

1 तोबीयाह ने उत्तर दिया, हे पिता, जो कुछ तू ने मुझ से कहा है वह सब मैं करूंगा;
2 परन्तु मैं रूपया कैसे ले सकता हूं, क्योंकि मैं उसे नहीं जानता हूं?
3 तब उस ने उसे लिखावट देकर कहा, एक पुरूष को ढूंढ़ ले जो मेरे जीवित रहते तक तेरे संग चले, और मैं उसे मजदूरी दूंगा; और जाकर रूपया ले ले।
4 इसलिये जब वह मनुष्य को ढूंढ़ने को गया, तो उसे राफेल अर्थात स्वर्गदूत मिला।

5 परन्तु वह नहीं जानता था; और उस ने उस से कहा, क्या तू मेरे साथ रेजेज को चल सकता है? और क्या आप उन स्थानों को अच्छी तरह से जानते हैं?
6 स्वर्गदूत ने उस से कहा, मैं तेरे साय चलूंगा, और मार्ग भली भाँति जानता हूं; क्योंकि मैं ने हमारे भाई गबाएल के यहां टिकी है।
7 तब टोबीयाह ने उस से कहा, जब तक मैं अपने पिता से न कहूं, तब तक मेरी सेवा करना।
8 तब उस ने उस से कहा, जा, देर न कर। तब उस ने भीतर जाकर अपने पिता से कहा, सुन, मुझे एक मिल गया है जो मेरे संग चलेगा। तब उस ने कहा, उसे मेरे पास बुला, कि मैं जानूं कि वह किस गोत्र का है, और क्या वह तेरे संग चलने के लिथे विश्वासयोग्य मनुष्य है।
9 तब उस ने उसे बुलाया, और वह भीतर आया, और उन्होंने एक दूसरे को नमस्कार किया।
10 तब टोबीत ने उस से कहा, हे भाई, मुझे बता कि तू किस गोत्र और कुल का है।
11 उस ने उस से कहा, क्या तू किसी गोत्र वा कुल वा किसी मजदूर को ढूंढ़ता है जो तेरे बेटे के संग चले? तब टोबीत ने उस से कहा, हे भाई, मैं तेरे कुटुम्ब का और नाम जानूंगा।
12 तब उस ने कहा, मैं अजर्याह जो महान् हनन्याह का पुत्र और तेरे भाइयोंमें से हूं।
13 तब टोबीत ने कहा, हे भाई, तेरा स्वागत है; अब मुझ पर क्रोध न करना, क्योंकि मैं ने तेरे गोत्र और तेरे कुल का हाल जानने के लिये पूछताछ की है; क्योंकि तू मेरा भाई है, और नेक और धनवान है; क्योंकि मैं उस महान सामायाह के पुत्र हनन्याह और योनातास को जानता हूं, जब हम इकट्ठे होकर यरूशलेम को दण्डवत् करने को जाते थे, और पहिलौठे को, और फल का दसवां अंश भी चढ़ाते थे; और वे हमारे भाइयों की भूल के कारण धोखा न खाये; हे मेरे भाई, तू तो अच्छे धनवान है।
14 परन्तु मुझे बता, मैं तुझे क्या मजदूरी दूं? क्या तू मेरे अपने बेटे के लिये एक दिन में एक पैसा और आवश्यक वस्तुएँ लेगा?
15 हां, यदि तुम सुरक्षित लौट आओ, तो मैं तुम्हारी मजदूरी में कुछ जोड़ दूंगा।
16 सो वे बहुत प्रसन्न हुए। तब उस ने टोबीयाह से कहा, यात्रा के लिये तैयार हो जा, और परमेश्वर तुझे कुशल यात्रा भेजे। और जब उसके बेटे ने यात्रा के लिए सब कुछ तैयार किया, तो उसके पिता ने कहा, तुम इस आदमी के साथ जाओ, और भगवान, जो स्वर्ग में रहता है, तुम्हारी यात्रा सफल करे, और भगवान का दूत तुम्हें साथ दे। अत: वे दोनों बाहर चले गए, और उस युवक का कुत्ता भी उनके साथ चला गया।
17 परन्तु उसकी माता अन्ना ने रोते हुए टोबीत से कहा, तू ने हमारे बेटे को क्योंछोड़ दिया? क्या वह हमारे आगे आने जाने में हमारे हाथ की लाठी नहीं?
18 धन में धन जोड़ने का लालच न करो, परन्तु वह हमारे लड़केबालों के लिये तुच्छ ठहरे।
19 क्योंकि जो कुछ यहोवा ने हमें जीने के लिये दिया है वही हमारे लिये काफी है।
20 तब टोबीत ने उस से कहा, हे मेरी बहिन, चिन्ता न कर; वह निडर होकर लौट आएगा, और तेरी आंखें उसे देख सकेंगी।
21 क्योंकि अच्छा स्वर्गदूत उसकी रक्षा करेगा, और उसकी यात्रा सफल होगी, और वह सुरक्षित लौट आएगा।
22 तब उसका रोना बन्द हो गया।

अध्याय 6

1 और वे चलते चलते सांझ को तिग्रिस नदी पर पहुंचे, और वहां टिके।
2 और जब वह जवान नहाने के लिये नीचे गया, तो एक मछली नदी में से छलाँग लगाकर उसे निगल गई।
3 तब स्वर्गदूत ने उस से कहा, मछली ले ले। और उस जवान ने मछली को पकड़कर किनारे पर खींच लिया।
4 स्वर्गदूत ने उस से कहा, मछली को खोल, और हृदय, और कलेजे, और पित्त को निकालकर सुरक्षित रख दे।
5 इसलिये उस जवान ने स्वर्गदूत की आज्ञा के अनुसार किया; और जब उन्होंने मछली भून ली, तब उसे खा लिया; तब वे दोनों एक्बताने के निकट पहुंचने तक अपने मार्ग पर चलते रहे।
6 तब जवान ने स्वर्गदूत से कहा, हे भाई अजर्याह, मछली का हृदय, कलेजे, और गाल किस काम के?
7 और उस ने उस से कहा, यदि कोई शैतान वा दुष्टात्मा किसी को सताए, तो हम उसके हृदय और कलेजे को छूकर उस पुरूष वा स्त्री के साम्हने उसका धुआं करें, और उस दल को फिर कष्ट न हो।
8 जहां तक पित्त का प्रश्न है, उस मनुष्य का अभिषेक करना अच्छा है जिसकी आंखों में उजियाला हो, और वह चंगा हो जाएगा।
9 और जब वे रगेस के निकट पहुंचे,
10 स्वर्गदूत ने जवान से कहा, हे भाई, आज हम रागुएल नाम तेरे चचेरे भाई के यहां टिकेंगे; उनकी एक इकलौती बेटी भी है, जिसका नाम सारा है; मैं उसके लिये बोलूंगा, कि वह तेरे लिये ब्याह दी जाए।
11 क्योंकि तू तो उसके कुटुम्बियों में से ही है, इसलिये उसका अधिकार तुझे ही मिलता है।
12 और दासी तो सुन्दर और बुद्धिमान है; इसलिये अब मेरी सुन, और मैं उसके पिता से कहूंगा; और जब हम रेजेज से लौटेंगे तो विवाह का उत्सव मनाएंगे: क्योंकि मैं जानता हूं कि मूसा की व्यवस्था के अनुसार रागुएल उसका विवाह किसी दूसरे से नहीं कर सकता, परन्तु वह मृत्यु का दोषी होगा, क्योंकि विरासत का अधिकार किसी से भी अधिक तुझ से संबंधित है अन्य।
13 तब जवान ने स्वर्गदूत को उत्तर दिया, हे भाई अजर्याह, मैं ने सुना है, कि यह दासी सात पुरूषोंको सौंप दी गई है, और वे सब ब्याह के भवन में मर गए।
14 और अब मैं अपने पिता का एकलौता पुत्र हूं, और डरता हूं, ऐसा न हो कि यदि मैं उसके पास जाऊं, तो पहिले की नाईं मर जाऊं; क्योंकि एक दुष्ट आत्मा उस से प्रेम रखती है, जो किसी को नहीं, परन्तु जो उसके पास आते हैं उनको हानि पहुंचाती है। उसकी; इस कारण मैं भी डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि मैं मर जाऊं, और अपने पिता और अपनी माता के प्राणों को दुख के साथ कब्र में फेंक दूं: क्योंकि उनके पास उन्हें दफनाने के लिए कोई दूसरा पुत्र नहीं है।
15 तब स्वर्गदूत ने उस से कहा, क्या तुझे वे उपदेश स्मरण नहीं जो तेरे पिता ने तुझे दिए थे, कि तू अपने ही कुल की स्त्री से ब्याह कर। इसलिये हे मेरे भाई, मेरी सुन; क्योंकि वह तुझे पत्नी के लिये ब्याह दी जाएगी; और तू किसी दुष्टात्मा का लेखा न लेना; क्योंकि इसी रात वह तुझ से ब्याह कर दी जाएगी।
16 और जब तू ब्याह के घर में पहुंचे, तब सुगन्धद्रव्य की राख लेना, और मछली के हृदय और कलेजे में से कुछ लेकर उस से धुआं करना।
17 और शैतान इसे सूँघकर भाग जाएगा, और फिर कभी न आएगा: परन्तु जब तू उसके पास आए, तब तुम दोनों उठकर दयालु परमेश्वर से प्रार्थना करो, और वह तुम पर दया करेगा, और बचाएगा। तुम मत डरो, क्योंकि वह आरम्भ से ही तुम्हारे लिये नियुक्त की गई है; और तू उसकी रक्षा करना, और वह तेरे संग चलेगी। इसके अलावा मैं सोचता हूँ कि वह तुम्हारे लिये सन्तान उत्पन्न करेगी। जब टोबियास ने ये बातें सुनीं, तो उसे उस से प्रेम हो गया, और उसका हृदय उस से जुड़ गया।

अध्याय 7

1 और जब वे एकबताने में पहुंचे, तो रागुएल के घर में पहुंचे, और सारा ने उन से मुलाकात की: और एक दूसरे को नमस्कार करके वह उन्हें घर में ले आई।
2 तब रागुएल ने अपनी पत्नी एडना से कहा, यह जवान मेरे चचेरे भाई टोबिट के समान है!
3 और रागुएल ने उन से पूछा, हे भाइयो, तुम कहां से हो? उन्होंने उस से कहा, हम नप्तालिम की सन्तान में से हैं, जो नीनवे में बन्धुए हैं।
4 तब उस ने उन से कहा, क्या तुम हमारे कुटुम्बी तोबीत को जानते हो? और उन्होंने कहा, हम उसे जानते हैं। फिर उन्होंने कहा, क्या वह अच्छे स्वास्थ्य में हैं?
5 और उन्होंने कहा, वह जीवित और कुशल है; और टोबीयाह ने कहा, वह मेरा पिता है।

6 तब रागुएल ने उछलकर उसे चूमा, और रोया,
7 और उसे आशीर्वाद देकर कहा, तू खरे और भले मनुष्य का पुत्र है। परन्तु जब उस ने सुना, कि टोबिट अन्धा है, तो वह उदास हुआ, और रोने लगा।
8 और उसकी पत्नी एदना और उसकी बेटी सारा भी इसी प्रकार रोने लगीं। इसके अलावा उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक उनका सत्कार किया; और जब उन्होंने भेड़-बकरी के एक मेढ़े को मार डाला, तब उन्होंने मेज पर मांस का ढेर रख दिया। तब टोबीयास ने राफेल से कहा, हे भाई अजर्याह, जो बातें तू ने मार्ग में कही हैं, उन की चर्चा कर, और यह बात चल जाए।
9 तब उस ने रागुएल को यह बात बतायी; और रागुएल ने तोबीयाह से कहा, खाओ, पीओ, और आनन्द करो।
10 क्योंकि तुझे मेरी बेटी से ब्याह करना उचित है; तौभी मैं तुझ से सत्य बात बताऊंगा।
11 मैं ने अपनी बेटी का ब्याह सात पुरूषोंके साथ किया है, वे उसके पास आने ही रात को मर गए; तौभी वर्तमान के लिथे आनन्द मनाओ। परन्तु टोबीयास ने कहा, जब तक हम एक मन होकर एक दूसरे से शपथ न खा लें, तब तक मैं यहां कुछ न खाऊंगा।
12 रागुएल ने कहा, तो आगे से उसे इस रीति के अनुसार ले लेना, क्योंकि तू उसका चचेरा भाई है, और वह तेरी है, और दयालु परमेश्वर तुझे सब बातों में अच्छी सफलता देता है।
13 तब उस ने अपक्की बेटी सारा को बुलाया, और वह अपके पिता के पास आई, और उस ने उसका हाथ पकड़कर तोबियाह को ब्याह दिया, और कहा, सुन, मूसा की व्यवस्या के अनुसार इसे ले जा, और अपके पास ले जा। पिता। और उस ने उनको आशीष दी;
14 और एडना ने अपक्की पत्नी को बुलाया, और कागज लेकर वाचा का लेख लिखकर उस पर मुहर लगाई।
15 तब वे खाने लगे।
16 तब रागुएल ने अपनी पत्नी एडना को बुलाकर उस से कहा, हे बहन, एक और कोठरी तैयार करके उसे वहां ले आ।
17 और जब उस ने उस की आज्ञा के अनुसार किया, तब वह उसे वहां ले आई; और वह रोई, और अपनी बेटी के आंसू पोंछकर उस से कहा,
18 हे मेरी बेटी, शान्ति रख; स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु, तेरे इस दु:ख के कारण तुझे आनन्द दे; हे मेरी बेटी, शान्ति दे।

अध्याय 8

1 और जब उन्होंने भोजन किया, तो टोबीयाह को उसके पास ले आए।
2 और चलते चलते उसे राफेल की बातें याद आईं, और उसने इत्र की राख ली, और उस पर मछली का हृदय और कलेजा लगाया, और उससे धुआं किया।
3 जिस को दुष्टात्मा सूंघकर वह मिस्र देश के दूर दूर तक भाग गया, और स्वर्गदूत ने उसे बन्धवाया।
4 और जब वे दोनों भीतर बन्द हो गए, तो टोबीयाह ने खाट पर से उठकर कहा, हे बहन, उठ, और हम प्रार्थना करें, कि परमेश्वर हम पर दया करे।
5 तब टोबीयाह कहने लगा, हे हमारे पूर्वजोंके परमेश्वर, तू धन्य है, और तेरा पवित्र और महिमामय नाम सर्वदा धन्य है; स्वर्ग तुम्हें और तुम्हारे सभी प्राणियों को आशीर्वाद दे।
6 तू ने आदम को बनाया, और उसकी पत्नी हव्वा को उसके सहायक और रहने के लिथे दिया; उन्हीं में से मनुष्य उत्पन्न हुए: तू ने कहा, मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; आइए हम उसके लिए उसके समान एक सहायता बनाएं।
7 और अब, हे प्रभु, मैं अपनी इस बहिन को अभिलाषा के कारण नहीं, परन्तु सीधाई से ग्रहण करता हूं: इसलिये दया करके ऐसा ठहरा कि हम एक साथ बूढ़े हो जाएं।
8 और उस ने उस से कहा, आमीन।
9 सो वे दोनों उस रात सो गए। और रागुएल उठा, और जाकर कब्र बनाई,
10 और कहता हूं, मुझे डर है, ऐसा न हो कि वह भी मर जाए।
11 परन्तु जब रागुएल अपके घर में आया,
12 उस ने अपक्की पत्नी एडना से कहा। एक दासी को भेज कर देख ले कि वह जीवित है या नहीं; यदि नहीं है, तो हम उसे मिट्टी देंगे, और किसी को पता न चलेगा।
13 तब दासी द्वार खोलकर भीतर गई, और उन दोनोंको सोते पाया।
14 और बाहर आकर उन से कहा, कि वह जीवित है।
15 तब रागुएल ने परमेश्वर की स्तुति करके कहा, हे परमेश्वर, तू सारी शुद्ध और पवित्र स्तुति के योग्य है; इसलिये तेरे पवित्र लोग तेरे सारे प्राणियोंसमेत तेरी स्तुति करें; और तेरे सब स्वर्गदूत और तेरे चुने हुए लोग सर्वदा तेरी स्तुति करते रहें।
16 तू स्तुति के योग्य है, क्योंकि तू ने मुझे आनन्दित किया है; और जिस बात का मुझे सन्देह था वह बात मुझ तक नहीं पहुंची; परन्तु तू ने अपनी बड़ी करूणा के अनुसार हम से व्यवहार किया।
17 तू स्तुति के योग्य है, क्योंकि तू ने उन दो पर दया की जो अपने पितरों के एकलौते पुत्र थे; हे प्रभु, उन पर दया कर, और उनका जीवन आनन्द और दया के साथ स्वस्थ होकर पूरा कर।
18 तब रागुएल ने अपने सेवकों को कब्र भरने को कहा।
19 और उस ने चौदह दिन तक ब्याह का जेवनार रखा।
20 क्योंकि ब्याह के दिन पूरे होने से पहिले रागुएल ने उस से शपथ खाकर कहा, कि जब तक ब्याह के चौदह दिन पूरे न हो जाएं, तब तक वह न जाएगा;
21 तब वह अपके धन में से आधा भाग लेकर निडर होकर अपने पिता के पास चला जाए; और शेष राशि मेरे और मेरी पत्नी के मरने पर मिलनी चाहिए।

अध्याय 9

1 तब टोबीयाह ने राफेल को बुलाकर उस से कहा,
2 हे भाई अजर्याह, एक दास और दो ऊंट संग ले कर मादे के राजगेल में गबाएल को जा, और रूपया मेरे पास ले आ, और उसे ब्याह में ले आ।
3 क्योंकि रगुएल ने शपय खाई है, कि मैं न जाऊंगा।
4 परन्तु मेरा पिता दिन गिनता है; और यदि मैं देर करूंगा, तो वह बहुत खेदित होगा।
5 तब राफेल बाहर गया, और गबाएल के पास रहा, और उसे लिखावट दी; और उस ने मुहरबंद की हुई थैलियां निकालकर उसे दीं।
6 और बिहान को वे दोनों इकट्ठे होकर विवाह में आए; और टोबीयाह ने अपनी पत्नी को आशीर्वाद दिया।

अध्याय 10

1 और उसके पिता टोबीत ने एक एक दिन गिन लिया; और जब जब यात्रा के दिन पूरे होते, और वे न आते,
2 तब टोबीत ने कहा, क्या वे हिरासत में हैं? या गबाएल मर गया, और कोई उसे रूपया देनेवाला न रहा?
3 इसलिये उसे बहुत खेद हुआ।
4 तब उसकी पत्नी ने उस से कहा, मेरा बेटा मर गया, वह बहुत दिन तक जीवित रहा; और वह उसके लिये विलाप करने लगी, और कहने लगी,
5 हे मेरे पुत्र, अब मुझे कुछ चिन्ता नहीं, क्योंकि मैं ने तुझे जो अपनी आंखों की ज्योति है, जाने दिया है।
6 तोबीत ने उस से कहा, चुप रह, कुछ चिन्ता न कर, क्योंकि वह सुरक्षित है।
7 परन्तु उस ने कहा, चुप रहो, और मुझे धोखा न दो; मेरा बेटा मर गया है. और वह प्रति दिन उसी मार्ग पर जाती जिस मार्ग पर वे जाते थे, और दिन के समय कुछ भी खाना नहीं खाती थी, और जब तक विवाह के चौदह दिन पूरे नहीं हो गए, जिसके विषय में रागुएल ने शपथ खाई थी, तब तक वह रात भर अपने पुत्र टोबियास के लिए शोक मनाती रही। वहां बिताओ. तब टोबीयाह ने रागुएल से कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि मेरे पिता और मेरी माता फिर मेरी ओर फिर न देखते हैं।
8 परन्तु उसके ससुर ने उस से कहा, तू मेरे साय रह, और मैं तेरे पिता के पास भेजूंगा, और वे तुझे बता देंगे कि तेरा क्या हाल हुआ है।
9 परन्तु टोबीयाह ने कहा, नहीं; परन्तु मुझे अपने पिता के पास जाने दो।
10 तब रागुएल ने उठकर अपक्की पत्नी सारा, और अपक्की आधी सम्पत्ति, दास-दासियां, पशु, और रूपया उसे दिया।
11 और उस ने उनको आशीष देकर यह कहकर विदा किया, कि हे मेरे बालको, स्वर्ग का परमेश्वर तुम्हारी कुशल यात्रा करे।

12 और उस ने अपनी बेटी से कहा, अपने पिता और अपनी सास का, जो अब तेरे माता-पिता हैं, आदर करना, जिस से मैं तेरी चर्चा सुन सकूं। और उसने उसे चूमा। एडना ने टोबीयास से यह भी कहा, हे मेरे प्रिय भाई, स्वर्ग का यहोवा तुझे लौटा दे, और यह अनुदान दे कि मैं मरने से पहिले अपनी बेटी सारा से तेरे बच्चों को देख सकूं, कि मैं यहोवा के साम्हने आनन्द कर सकूं: देख, मैं अपनी बेटी को तुझ को सौंपता हूं विशेष भरोसा; कहाँ हैं उससे बुराई मत करो।

अध्याय 11

1 इन बातों के बाद टोबियाह परमेश्वर की स्तुति करता हुआ, कि उस ने उसे सुखमय यात्रा दी, चला गया, और रागुएल और उसकी पत्नी एडना को आशीर्वाद दिया, और जब तक वे नीनवे के निकट नहीं पहुंचे, तब तक अपने मार्ग पर चलता रहा।
2 तब राफेल ने टोबियास से कहा, हे भाई, तू जानता है, कि तू ने अपने पिता को किस प्रकार त्याग दिया?
3 हम तेरी पत्नी के साम्हने फुर्ती करके घर तैयार करें।
4 और मछली का गूदा अपने हाथ में ले लो। इसलिये वे अपनी राह चले गये, और कुत्ता उनके पीछे चला गया।
5 और हन्ना अपके पुत्र के लिथे मार्ग की ओर ताकता हुआ बैठा रहा।
6 और उस ने उस को आते देख कर उसके पिता से कहा, देख, तेरा पुत्र और वह पुरूष जो उसके संग गया था, आ रहा है।
7 तब राफेल ने कहा, हे टोबियास, मैं जानता हूं, कि तेरा पिता अपनी आंखें खोलेगा।
8 इसलिथे तू उसकी आंखोंमें पित्त का लेप करना, और उस से उसे घिसना, और उसकी सफेदी दूर हो जाएगी, और वह तुझे देखने लगेगा।
9 तब हन्ना दौड़कर अपके बेटे की गर्दन पर गिर पड़ी, और उस से कहा, हे मेरे बेटे, मैं ने तुझे जो देखा है, अब से मैं मरने ही को तृप्त हूं। और वे दोनों रोये।
10 तोबीत भी द्वार की ओर निकलकर लड़खड़ाया, परन्तु उसका पुत्र उसके पास दौड़कर आया।
11 और उसके पिता को पकड़कर उस ने उसकी आंखों पर कलंक लगाया, और कहा, हे मेरे पिता, आशा रख।
12 और जब उस की आंखें चौंधियाने लगीं, तब उस ने उन्हें मला;
13 और उसकी आंखों की कोरों से उजियाला दूर हो गया: और जब उस ने अपके बेटे को देखा, तो उसके गले पर गिर पड़ा।
14 और उस ने रोते हुए कहा, हे परमेश्वर तू धन्य है, और तेरा नाम सर्वदा धन्य है; और आपके सभी पवित्र देवदूत धन्य हैं:
15 क्योंकि तू ने कोड़े मारे, और मुझ पर तरस खाया है; क्योंकि देख, मैं अपने पुत्र तोबीयाह को देखता हूं। और उसका पुत्र आनन्द करता हुआ भीतर गया, और अपने पिता से मादिया में उस पर जो बड़े बड़े काम हुए थे सब कह सुनाया।
16 तब टोबीत आनन्दित और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ, नीनवे के फाटक पर अपनी बहू से भेंट करने को निकला; और जिन्होंने उसे जाते देखा, वे अचम्भित हुए, क्योंकि वह देखने लगा था।
17 परन्तु टोबीयाह ने उनके साम्हने धन्यवाद किया, क्योंकि परमेश्वर ने उस पर दया की। और जब वह अपनी बहू सारा के निकट आया, तब उस ने उसे आशीर्वाद देकर कहा, हे बेटी, तेरा स्वागत है; धन्य है परमेश्वर, जो तुझे हमारे यहां ले आया, और तेरे माता-पिता भी धन्य हों। और नीनवे में रहनेवाले उसके सब भाइयोंमें आनन्द हुआ।
18 और अखिक्रुस और उसके भाई का पुत्र नस्बास आए।
19 और टोबीयाह का ब्याह सात दिन तक बड़े आनन्द से मनाया गया।

अध्याय 12

1 तब टोबीत ने अपके पुत्र तोबीयाह को बुलाकर उस से कहा, हे मेरे पुत्र, देख, कि जो मजदूरी तेरे संग गई थी वह उसे मिल जाए, और तू उसे और भी देना।
2 और टोबीयाह ने उस से कहा, हे पिता, जो कुछ मैं ले आया हूं उन में से आधा उसे देने से मुझे कुछ हानि नहीं;
3 क्योंकि उस ने मुझे तेरे पास कुशल क्षेम से लौटा लाया, और मेरी पत्नी को चंगा किया, और मेरे लिये रूपया लाया, और तुझे भी चंगा किया है।
4 तब बूढ़े ने कहा, यह तो उसी को करना है।
5 तब उस ने स्वर्गदूत को बुलाकर उस से कहा, जो कुछ तुम ले आए हो, उस में से आधा ले लो, और निडर होकर चला जाओ।
6 तब उस ने उन दोनोंको अलग ले जाकर उन से कहा, परमेश्वर को धन्य कहो, उसकी स्तुति करो, और उसकी बड़ाई करो, और उस काम के लिथे जो उस ने सब जीवित प्राणियोंके साम्हने तुम्हारे साय किया है, उसकी स्तुति करो। परमेश्वर की स्तुति करना, और उसके नाम का गुणगान करना, और आदरपूर्वक परमेश्वर के कामों का प्रगट करना अच्छा है; इसलिये उसकी स्तुति करने में ढिलाई न करो।
7 राजा का भेद छिपा रखना अच्छा है, परन्तु परमेश्वर के काम प्रगट करना आदर की बात है। जो अच्छा है वही करो, और कोई बुराई तुम्हें छू न सकेगी।
8 उपवास और दान और धर्म के साथ प्रार्थना अच्छी है। धर्म के साथ थोड़ा सा, अधर्म के साथ अधिक से बेहतर है। सोना रखने से दान देना उत्तम है;
9 क्योंकि दान मृत्यु से बचाता है, और सब पापों को दूर कर देता है। जो दान और धर्म करते हैं, वे जीवन से भर जाएंगे:
10 परन्तु जो पाप करते हैं, वे अपने प्राण के शत्रु हैं।
11 निश्चय मैं तुझ से कुछ भी छिपा न रखूंगा। क्योंकि मैं ने कहा, राजा का भेद छिपा रखना तो अच्छा है, परन्तु परमेश्वर के काम प्रगट करना आदर की बात है।
12 इसलिये अब जब तू और तेरी बहू सारा ने प्रार्थना की, तब मैं ने तेरी प्रार्थनाओं का स्मरण पवित्र के साम्हने पहुंचाया; और जब तू ने मरे हुओं को गाड़ा, तब भी मैं तेरे संग था।
13 और जब तू ने उठकर मृतकों को ढांपने को जाने में विलम्ब न किया, तब तेरा भला काम मुझ से छिपा न रहा; परन्तु मैं तेरे संग था।
14 और अब परमेश्वर ने मुझे तुझे और तेरी बहू सारा को चंगा करने को भेजा है।
15 मैं राफेल हूं, सात पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, जो संतों की प्रार्थना प्रस्तुत करता है, और जो पवित्र की महिमा के सामने अंदर और बाहर जाता है।
16 तब वे दोनों घबरा गए, और मुंह के बल गिर पड़े; क्योंकि वे डरते थे।
17 परन्तु उस ने उन से कहा, मत डरो, क्योंकि तुम्हारा भला ही होगा; इसलिये परमेश्वर की स्तुति करो।
18 क्योंकि मैं अपने किसी अनुग्रह से नहीं, परन्तु अपने परमेश्वर की इच्छा से आया हूं; इसलिये सर्वदा उसकी स्तुति करो।
19 इतने दिन तक मैं तुम्हें दिखाई देता रहा; परन्तु मैं ने न खाया, न पीया, परन्तु तुम ने एक दर्शन देखा।
20 इसलिये अब परमेश्वर का धन्यवाद करो; क्योंकि मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं; परन्तु जो कुछ किया जाता है, वह सब पुस्तक में लिखो।
21 और जब वे उठे, तो उसे फिर न देखा।
22 तब उन्होंने परमेश्वर के बड़े और आश्चर्यकर्मोंको मान लिया, और यह भी कि यहोवा का दूत उन्हें कैसे दिखाई दिया या।

अध्याय 13

1 तब टोबीत ने आनन्द की प्रार्थना लिखकर कहा, धन्य परमेश्वर है जो सर्वदा जीवित है, और उसका राज्य धन्य है।
2 क्योंकि वह कोड़े मारता है, और दया करता है; वह अधोलोक में पहुंचाता है, और फिर ऊपर ले आता है; कोई उसके हाथ से बच नहीं सकता।
3 हे इस्राएलियो, अन्यजातियोंके साम्हने उसका अंगीकार करो; क्योंकि उस ने हम को उनके बीच तितर-बितर कर दिया है।
4 वहां उसकी महिमा का वर्णन करो, और सब जीवितों के साम्हने उसकी बड़ाई करो; क्योंकि वह हमारा प्रभु है, और युगानुयुग हमारा परमेश्वर पिता है।
5 और वह हमारे अधर्म के कारण हम को कोड़े मारेगा, और फिर दया करेगा, और हम को उन सब जातियोंमें से जिनके बीच उस ने तितर-बितर कर दिया है, इकट्ठा करेगा।

6 यदि तुम अपके सारे मन और अपके सारे मन से उसकी ओर फिरो, और उसके साम्हने सीधाई से काम करो, तो वह तुम्हारी ओर फिरेगा, और अपना मुंह तुझ से न छिपाएगा। इसलिये देखो, वह तुम्हारे साथ क्या करेगा, और उसे पूरे मुंह से मान लो, और पराक्रमी प्रभु की स्तुति करो, और अनन्त राजा की स्तुति करो। अपनी बन्धुवाई के देश में मैं उसकी स्तुति करता हूं, और पापी जाति पर उसके पराक्रम और ऐश्वर्य का वर्णन करता हूं। हे पापियों, फिरो और उसके साम्हने न्याय करो: कौन बता सकता है कि वह तुम्हें ग्रहण करेगा, और तुम पर दया करेगा?
7 मैं अपके परमेश्वर का धन्यवाद करूंगा, और अपके प्राण से स्वर्ग के राजा की स्तुति करूंगा, और उसकी महिमा से आनन्दित होऊंगा।
8 सब मनुष्य बोलें, और उसके धर्म के कारण उसकी स्तुति करें।
9 हे पवित्र नगर यरूशलेम, वह तेरे पुत्रोंके कामोंके कारण तुझे कोड़े मारेगा, और धर्मियोंपर फिर दया करेगा।
10 यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि वह भला है; और सनातन राजा की स्तुति करो, कि उसका निवास तुझ में फिर आनन्द से बनाया जाए, और जो बन्धुए हैं उनको तुझ में आनन्दित करे, और जो बन्धुए हैं उन को तुझ में सदा प्रेम रखे। वह दुखद हैं.
11 बहुत सी जातियां दूर दूर से हाथ में भेंट, अर्यात् स्वर्ग के राजा के लिथे भेंट लिए हुए प्रभु परमेश्वर के नाम के पास आएंगी; सभी पीढ़ियाँ बड़े आनन्द से तेरी स्तुति करेंगी।
12 शापित हैं वे सब जो तुझ से बैर रखते हैं, और धन्य होंगे वे सब जो तुझ से सदा प्रेम रखेंगे।
13 धर्मी सन्तान के लिये आनन्द करो और मगन हो, क्योंकि वे इकट्ठे होकर धर्मी प्रभु का धन्यवाद करेंगे।
14 हे धन्य वे जो तुझ से प्रेम रखते हैं, क्योंकि वे तेरी शान्ति से आनन्द करेंगे; धन्य हैं वे जो तेरे सब संकटोंके कारण दुखी हुए हैं; क्योंकि वे तेरी सारी महिमा को देखकर तेरे कारण आनन्दित होंगे, और सर्वदा आनन्दित रहेंगे।
15 मेरी आत्मा महान राजा परमेश्वर को धन्य कहे।
16 क्योंकि यरूशलेम नीलमणि, पन्ना, और मणियों से, और तेरी शहरपनाह, और गुम्मट, और खम्भे चोखे सोने से बनाए जाएंगे।
17 और यरूशलेम की सड़कें फीरोजा, और लालबत्ती, और ओपीर के पत्थरों से पक्की की जाएंगी।
18 और उसकी सब चौकियां कहेंगी, अल्लेलूया; और वे यह कहकर उसकी स्तुति करेंगे, कि धन्य है परमेश्वर, जिस ने इसे सर्वदा बढ़ाया है।

अध्याय 14

1 इस प्रकार टोबिट ने परमेश्वर की स्तुति करना बन्द कर दिया।
2 और जब उसकी दृष्टि जाती रही, तब वह साढ़े आठ वर्ष का या, और आठ वर्ष के बाद उसकी दृष्टि फिर लौट आई; और वह भिक्षा देने लगा, और यहोवा परमेश्वर का भय मानने लगा, और उसकी स्तुति करने लगा।
3 और जब वह बहुत बूढ़ा हो गया, तब उस ने अपके बेटे और उसके बेटोंको बुलाकर उस से कहा, हे मेरे बेटे, अपने लड़केबालोंको ले ले; क्योंकि, देखो, मैं बूढ़ा हो गया हूं, और इस जीवन से जाने को तैयार हूं।
4 हे मेरे पुत्र, मादिया में जा, क्योंकि जो बातें योना भविष्यद्वक्ता ने नीनवे के विषय में कही थीं, कि वह उलट दिया जाएगा, मैं उन बातों पर निश्चय विश्वास करता हूं; और कुछ समय के लिए मीडिया में शांति रहेगी; और हमारे भाई उस अच्छे देश में से पृथ्वी पर तितर-बितर हो जाएंगे; और यरूशलेम उजाड़ हो जाएगा, और परमेश्वर का जो भवन उस में है वह जला दिया जाएगा, और कुछ समय के लिये उजाड़ पड़ा रहेगा;
5 और परमेश्वर उन पर फिर दया करेगा, और उन्हें उस देश में फिर ले आएगा, जहां वे एक मन्दिर बनाएंगे, परन्तु पहिले के समान नहीं, जब तक कि उस युग का समय पूरा न हो जाए; और उसके बाद वे सब बंधुआई के स्थानों से लौट आएंगे, और यरूशलेम को महिमा के साथ बसाएंगे, और भविष्यद्वक्ताओं के वचन के अनुसार परमेश्वर का भवन उस में सदा के लिये महिमामय भवन के साथ बनाया जाएगा।
6 और सब जातियां फिरेंगी, और यहोवा परमेश्वर का सच्चा भय मानेंगी, और अपनी मूरतोंको मिट्टी देंगे।
7 इस प्रकार सब जातियां यहोवा की स्तुति करेंगी, और उसकी प्रजा परमेश्वर का अंगीकार करेगी, और यहोवा अपनी प्रजा को बड़ा करेगा; और वे सब जो प्रभु परमेश्वर से सच्चाई और न्याय के साथ प्रेम रखते हैं, हमारे भाइयों पर दया करके आनन्द करेंगे।
8 और अब, हे मेरे बेटे, नीनवे से निकल जा, क्योंकि जो बातें योना भविष्यद्वक्ता ने कहीं थीं वे अवश्य पूरी होंगी।
9 परन्तु तू व्यवस्था और आज्ञाओं का पालन कर, और दयालु और धर्मी बन, कि तेरा भला हो।
10 और मुझे और अपनी माता को मेरे साय मिट्टी देना; परन्तु अब नीनवे में मत रुकना। याद करो, मेरे बेटे, अमन ने अकियाकारस को कैसे संभाला जिसने उसे बड़ा किया, कैसे प्रकाश से वह उसे अंधेरे में ले आया, और उसने उसे फिर से कैसे इनाम दिया: फिर भी अकियाकारस बच गया, लेकिन दूसरे को उसका इनाम मिला: क्योंकि वह अंधेरे में चला गया था। मनश्शे ने भिक्षा दी, और मृत्यु के जाल से बच गया जो उन्होंने उसके लिए बिछाया था: परन्तु अमन जाल में फंस गया, और नष्ट हो गया।
11 इसलिये अब हे मेरे पुत्र, सोच, दान क्या करता है, और धर्म कैसे फल देता है। जब उस ने ये बातें कहीं, तब एक सौ आठ पचास वर्ष का होकर उस ने शय्या पर प्राण त्याग दिए; और उसने उसे सम्मानपूर्वक दफनाया।
12 और जब उसकी माता अन्ना मर गई, तब उस ने उसे अपके पिता के साय मिट्टी दी। परन्तु टोबियाह अपनी पत्नी और बच्चों समेत एक्बटाने को अपने ससुर रागुएल के पास चला गया।
13 वहां वह सम्मान के साथ बूढ़ा हो गया, और उसने अपने पिता और सास को सम्मानपूर्वक दफनाया, और उनका और अपने पिता टोबीत का धन भी उसे विरासत में मिला।
14 और वह एक सौ सात बीस वर्ष की अवस्था में मादिया के एक्बताने में मर गया।
15 परन्तु मरने से पहिले उस ने नीनवे के विनाश का समाचार सुना, जिस पर नबूकदोनोसर और अस्सुएरस ने कब्जा कर लिया था: और अपनी मृत्यु से पहिले नीनवे के कारण आनन्द किया।



जूडिथ

अध्याय 1

1 नबूकदोनोसर के राज्य के बारहवें वर्ष में, जो बड़े नगर निनेवे में राज्य करता था; अरफ़क्साड के दिनों में, जो एक्बटाने में मेदियों पर राज्य करता था,
2 और एकबताने में चारोंओर तीन हाथ चौड़े और छ: हाथ लम्बे खुदे हुए पत्थरोंकी शहरपनाह बनाई, और दीवार की ऊंचाई सत्तर हाथ और चौड़ाई पचास हाथ की बनाई।
3 और उसके फाटकोंके ऊपर सौ हाथ ऊंचे गुम्मट बनवाएं, और उसकी नेव की चौड़ाई साठ हाथ की हो।
4 और उस ने उसके फाटक बनाए, अर्यात् सत्तर हाथ ऊंचे ऊँचे, और उनकी चौड़ाई चालीस हाथ की यी, जिस से उसकी सामर्थी सेना निकल सके, और उसके प्यादोंकी पांति खड़ी हो सके।
5 उन दिनों में भी राजा नबूकदोनोसोर ने उस बड़े मैदान में, जो रागौ के सिवाने का मैदान है, राजा अर्पक्षद से युद्ध किया।
6 और पहाड़ी देश के सब रहनेवाले, और परात, और दजला, और हिदास्पेस, और एलीमियोंके राजा अर्योक के अराबा के सब रहनेवाले, और चेलोदियोंकी बहुत सी जातियां उसके पास आईं। लड़ाई के लिए.
7 तब अश्शूरियों के राजा नबूकदोनोसर ने फारस के सब रहनेवालोंके पास, और पच्छिम की ओर के सब रहनेवालोंके पास, और किलिकिया, और दमिश्क, और लिबानुस, और अन्तिलबानुस, और समुद्र के किनारे के सब रहनेवालोंके पास कहला भेजा।
8 और कर्मेल और गलाद और ऊंचे गलील और एस्ड्रेलोम के बड़े मैदान की जातियोंमें से जो लोग थे,
9 और सामरिया और उसके नगरोंमें और यरदन के पार यरूशलेम तक, और बेताने, और कलुस, और कादेस, और मिस्र की नदी, और तफनेस, और रामस्से, और गेसेम के सारे देश में जितने लोग थे,
10 जब तक तुम तानिस और मेम्फ़िस के पार, और मिस्र के सब निवासियोंके पास न पहुँचो, और कूश के सिवाने तक न पहुँचो।
11 परन्तु उस देश के सब निवासियोंने अश्शूरियोंके राजा नबूकदनेस्सर की आज्ञा न मानी, और उसके साय युद्ध में न गए; क्योंकि वे उस से नहीं डरते थे; वरन वह उनके साम्हने एक मनुष्य के समान रहता था, और उन्होंने उसके दूतों को बिना किसी प्रभाव और अपमान के अपने पास से लौटा दिया।
12 इस कारण नबूकदोनोसर इस सारे देश पर बहुत क्रोधित हुआ, और अपनी गद्दी और राज्य की शपथ खाई, कि वह निश्चय किलिकिया, और दमिश्क, और सीरिया के उन सब तटों से पलटा लेगा, और वहां के सब निवासियों को तलवार से मार डालेगा। मोआब का देश, और अम्मोनियों, और सारे यहूदिया, और मिस्र में जितने लोग थे, जब तक तुम दोनों समुद्रों की सीमा तक न पहुंच जाओ।
13 फिर सत्रहवें वर्ष में उस ने अपक्की शक्ति के साय राजा अर्पक्षद के विरूद्ध पांति बान्धकर चढ़ाई की, और युद्ध में वह प्रबल हुआ; क्योंकि उस ने अर्पक्षद की सारी शक्ति, और उसके सब सवारोंऔर सब रथोंको परास्त कर दिया,
14 और अपने नगरों का स्वामी हो गया, और एक्बताने तक आया, और गुम्मटोंको ले लिया, और उसकी सड़कें बिगाड़ दीं, और उसकी सुन्दरता को धूमिल कर दिया।
15 और उस ने रागाऊ के पहाड़ोंमें अर्पक्षद को भी ले लिया, और अपक्की भालोंसे उसे ऐसा मारा, और उसी दिन उसका सत्यानाश कर डाला।
16 तब वह अपनी सारी जाति समेत बहुत बड़ी सेना समेत नीनवे को लौट आया, और वहां वह विश्राम करता रहा, और अपनी सेना समेत एक सौ बीस दिन तक जेवनार करता रहा।

अध्याय दो

1 और अट्ठारहवें वर्ष के पहिले महीने के बीसवें दिन को अश्शूरियोंके राजा नबूकदोनोसर के घराने में चर्चा हुई, कि उसके कहने के अनुसार सारी पृथ्वी पर अपना पलटा ले।
2 तब उस ने अपके सब हाकिमोंऔर सब सरदारोंको बुलाकर उनको अपक्की गुप्त युक्ति सुनाई, और अपके मुंह से सारी पृथ्वी के क्लेश का अन्त कर दिया।
3 तब उन्होंने उन सभोंको नाश करने की आज्ञा दी, जो उसके मुंह की आज्ञा नहीं मानते थे।
4 और जब वह अपनी सम्मति पूरी कर चुका, तब अश्शूरियों के राजा नबूकदनेस्सर ने अपने सेनापति होलोफेरनिस को जो उसके पास था, बुलाकर कहा।
5 सारी पृथ्वी का स्वामी, महान राजा यों कहता है, देख, तू मेरे साम्हने से निकलकर अपने बल पर भरोसा रखनेवाले एक लाख बीस हजार प्यादोंको संग ले जाएगा; और सवारोंसमेत घोड़ों की गिनती बारह हजार थी।
6 और तू सारे पच्छिम देश पर चढ़ाई करेगा, क्योंकि उन्होंने मेरी आज्ञा नहीं मानी।
7 और तू यह बताना, कि वे मेरे लिथे पृथ्वी और जल तैयार करते हैं; क्योंकि मैं उन पर अपना क्रोध भड़काऊंगा, और सारी पृथ्वी को अपक्की सेना से ढांप दूंगा, और उनको लूट के लिथे दे दूंगा। उन्हें:
8 यहां तक कि उनके मारे हुओं से उनकी घाटियां और नाले भर जाएंगे, और नदी उनके लोथों से इतनी भर जाएगी कि वह उफान पर आ जाएगी।
9 और मैं उनको बन्धुआ करके सारी पृथ्वी की छोर तक ले जाऊंगा।
10 इसलिये तू आगे निकले। और उनके सब सिवानों को पहिले से मेरे लिये ले ले; और यदि वे तेरे वश में हो जाएं, तो तू उनके दण्ड के दिन तक उनको मेरे लिये बचा रखना।
11 परन्तु जो बलवा करते हैं उन पर तेरी दृष्टि न रह जाए; परन्तु उन्हें वध करो, और जहां कहीं तुम जाओ वहां उन्हें लूट लेना।
12 क्योंकि मैं जीवित हूं, और अपने राज्य की शक्ति से जो कुछ मैं ने कहा है, वही अपने हाथ से करूंगा।
13 और चौकस रहना, कि अपके प्रभु की किसी भी आज्ञा का उल्लंघन न करना, परन्तु जैसा मैं ने तुझे आज्ञा दी है वैसा ही पूरा करना, और उनके मानने में विलम्ब न करना।
14 तब होलोफेरनिस ने अपके स्वामी के साम्हने से निकलकर सब हाकिमोंऔर प्रधानोंऔर अश्शूर की सेना के सरदारोंको बुलाया;
15 और उस ने अपने स्वामी की आज्ञा के अनुसार युद्ध के लिथे चुने हुए पुरूषोंको इकट्ठा किया, अर्थात एक लाख बीस हजार, और बारह हजार घोड़ेपर सवार;
16 और उस ने उनको इस प्रकार घेरा, मानो युद्ध के लिथे बड़ी सेना ठहराई जाती है।
17 और उस ने बहुत गिनती के ऊंट और गदहे ले लिये; और उनकी जीविका के लिये अनगिनत भेड़-बकरियां, और बैल, और बकरियां,
18 और सेना के हर एक पुरूष के लिये बहुत सी भोजनवस्तु, और राजभवन में से बहुत सा सोना, चान्दी।
19 तब वह अपनी सारी शक्ति समेत राजा नबूकदनेस्सर के आगे आगे चलने को, और उनके रथों, सवारों, और चुने हुए प्यादों से पश्चिम की ओर सारी पृथ्वी को ढांपने को निकला।
20 और उनके साय टिड्डियोंऔर पृथ्वी की बालू के किनकोंके समान बहुत से देश आए; क्योंकि वह भीड़ गिनती से बाहर थी।
21 और वे नीनवे से निकल कर बेक्टिलेत के अराबा की ओर तीन दिन की यात्रा पर निकले, और बेक्टिलेत से उस पहाड़ के पास जो किलिकिया के ऊपरी भाग की बाईं ओर है, डेरे खड़े किए।
22 तब वह अपक्की सारी सेना, और प्यादों, सवारोंऔर रथोंको लेकर वहां से पहाड़ी देश में चला गया;

23 और फुद और लूद को नाश किया, और रस्सियों और इस्राएलियोंको जो जंगल की ओर चेल्योंके देश की दक्खिन ओर थे सब को लूट लिया।
24 तब वह परात के पार गया, और मेसोपोटामिया में चला गया, और अर्बोनै नदी के किनारे के सब ऊंचे नगरोंको यहां तक कि जब तक तुम समुद्र पर न पहुंच जाओ, नाश कर दिया।
25 और उस ने किलिकिया के सिवानों को ले लिया, और जितने उसके साम्हने थे उनको घात किया, और येपेत के सिवानों तक आया, जो दक्खिन की ओर अरब के साम्हने थे।
26 और उस ने मदियान के सब बालकों को भी घेर लिया, और उनके तम्बू फूंक दिए, और उनकी भेड़-बकरियां लूट लीं।
27 फिर वह गेहूँ की कटनी के समय दमिश्क के अराबा में गया, और उनके सब खेत फूंक डाले, और उनकी भेड़-बकरी और गाय-बैल नाश कर डाला, और उनके नगरोंको उजाड़ दिया, और उनके देशोंको सत्यानाश कर डाला, और उनके सब जवानोंको मार डाला। तलवार की धार.
28 इसलिये उसका डर और डर समुद्र के किनारे के सब रहनेवालोंपर, जो सीदोन और सोरस में थे, और सूर और ओकिना के रहनेवालोंपर, और यम्नान के सब रहनेवालोंपर छा गया; और अज़ोतुस और अस्कलोन के रहनेवाले उस से बहुत डरते थे।

अध्याय 3

1 तब उन्होंने मेल कराने के लिथे उसके पास दूत भेजे, और कहने लगे,
2 देख, हम महान राजा नबूकदनेस्सर के सेवक तेरे साम्हने लेटे हैं; हमें वही उपयोग करो जो तुम्हारी दृष्टि में अच्छा हो।
3 देख, हमारे घर और सब स्थान, और हमारे सारे गेहूं के खेत, और भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और हमारे तम्बुओंके सब मकान तेरे साम्हने पड़े हैं; जैसा तुम्हें अच्छा लगे उनका उपयोग करो।
4 देख, हमारे नगर और उनके निवासी तेरे दास हैं; आओ और उनके साथ वैसा व्यवहार करो जैसा तुम्हें ठीक लगे।
5 तब वे पुरूष होलोफेरनिस के पास आए, और उसे इस प्रकार का समाचार दिया।
6 तब वह अपक्की सेना समेत समुद्र के तीर पर उतर आया, और ऊंचे नगरोंमें पहरे बिठाए, और उन में से सहायता के लिथे चुने हुए पुरूषोंको निकाल लिया।
7 सो उन्होंने और आस-पास के सारे निवासियों ने फूलमालाएं पहनाकर, नाच गाकर, डफ बजाकर उनका स्वागत किया।
8 तौभी उस ने उनकी सीमाओंको ढा दिया, और उनकी अशेराओंको काट डाला; क्योंकि उस ने उस देश के सब देवताओंको नाश करने की आज्ञा दी या, कि सब जातियां केवल नबूकदनेस्सर की उपासना करें, और सब भाषाएं और कुल उसको परमेश्वर कहकर पुकारें।
9 फिर वह यहूदिया के निकट एस्द्रेलोन के साम्हने, और यहूदिया के बड़े जलडमरूमध्य के साम्हने आया।
10 और उस ने गेबा और स्किथोपुलिस के बीच डेरे खड़े किए, और वहां अपनी सेना की सारी गाडियां इकट्ठी करने के लिथे एक महीने तक ठहरा रहा।.

अध्याय 4

1 और यहूदिया में रहनेवाले इस्राएलियोंने सुना, कि अश्शूरियोंके राजा नबूकदनेस्सर के प्रधान हाकिम होलोफेरनिस ने अन्यजातियोंके साथ क्या क्या किया, और किस प्रकार उसने उनके सब मन्दिरोंको तोड़ डाला, और उनको ढा दिया।
2 इसलिये वे उस से बहुत डर गए, और यरूशलेम और अपने परमेश्वर यहोवा के मन्दिर के लिये व्याकुल हुए।
3 क्योंकि वे बन्धुवाई से लौटे हुए थे, और सब यहूदी लोग हाल ही में इकट्ठे हुए थे: और पात्र, और वेदी, और भवन अपवित्र किए जाने के कारण पवित्र किए गए।
4 इसलिये उन्होंने शोमरोन के सब सिवानों में, और गांवों में, और बेथोरोन, और बेल्मेन, और यरीहो, और चोबा, और एसोरा, और सलेम की तराई में दूत भेजे।
5 और ऊंचे पहाड़ों की सब चोटियोंपर पहिले से अपना अधिकार कर लिया, और उन गांवोंको दृढ़ किया, और युद्ध के लिथे भोजनवस्तुएं इकट्ठी कीं; क्योंकि उनके खेतोंमें हाल ही में फसल कटी थी।
6 और योआसिम महायाजक ने जो उन दिनों यरूशलेम में या, उस ने बेतूलिया और बेतोमेस्ताम में जो एस्ड्रेलोन के साम्हने दोतैम के निकट खुले देश में रहते थे, उनको यह लिखकर दिया,
7 और उन्हें पहाड़ी देश के मार्गों पर चौकसी रखने की आज्ञा दी; क्योंकि उन्हीं से होकर यहूदिया में प्रवेश होता था, और जो चढ़ते थे उनको रोकना आसान था, क्योंकि मार्ग सीधा था, अधिक से अधिक दो पुरूष ही जा सकते थे।
8 और इस्राएलियोंने यरूशलेम के रहनेवाले सब इस्राएलियोंके पुरनियोंसमेत योआकिम महायाजक की आज्ञा के अनुसार किया।
9 तब इस्राएल में से हर एक मनुष्य ने बड़े उत्साह से परमेश्वर की दोहाई दी, और बड़े हियाव से अपने अपने मन को नम्र किया।
10 और वे, और उनकी पत्नियां, और उनके बच्चे, और उनके मवेशी, और सब परदेशी और मजदूर, और उनके दास जो रूपे से मोल लिए गए थे, अपनी कमर में टाट बान्धे।
11 इस प्रकार सब पुरूष, और स्त्रियां, और छोटे-छोटे बच्चे, और यरूशलेम के निवासी मन्दिर के साम्हने गिर पड़े, और अपने अपने सिरों पर राख डाली, और अपना टाट यहोवा के साम्हने फैलाया; और वेदी के चारों ओर टाट ओढ़ लिया।
12 और सब ने एक मन होकर इस्राएल के परमेश्वर की दोहाई दी, कि वह उनके लड़केबालों को लूटकर, और उनकी स्त्रियोंको लूटकर न दे, और उनके निज भाग के नगरोंको नाश न करे, और पवित्रस्थान को अपवित्रता और निन्दा के लिथे न दे, और राष्ट्रों के लिए आनन्द मनाना।
13 तब परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी, और उनके कष्टों पर दृष्टि की; क्योंकि सारे यहूदिया और यरूशलेम में लोग सर्वशक्तिमान यहोवा के पवित्रस्थान के साम्हने बहुत दिन तक उपवास करते थे।
14 और योआकिम महायाजक, और जितने याजक यहोवा के साम्हने खड़े रहते थे, और जो यहोवा की सेवा टहल करते थे, वे अपनी कमर टाट से बान्धकर, और प्रति दिन होमबलि, और मन्नतें, और लोगोंकी ओर से दी हुई भेंटें चढ़ाते थे।
15 और उनके पैरों पर राख पड़ गई, और अपके सारे बल से यहोवा की दोहाई दी, कि वह इस्राएल के सारे घरानेपर कृपादृष्टि करे।

अध्याय 5

1 तब अश्शूर की सेना के प्रधान प्रधान होलोफेरनिस को यह समाचार दिया गया, कि इस्राएलियों ने युद्ध की तैयारी कर ली है, और पहाड़ी देश के मार्गों को बन्द कर दिया है, और ऊंचे टीलों की सब चोटियों को दृढ़ कर लिया है। शैंपेन देशों में बाधाएँ खड़ी कीं:
2 इस पर वह बहुत क्रोधित हुआ, और उसने मोआब के सब हाकिमों, अम्मोनियोंके हाकिमों, और समुद्रतट के सब हाकिमोंको बुलाया।
3 और उस ने उन से कहा, हे कनान के बेटों, अब मुझे बताओ, कि पहाड़ी देश में रहनेवाली यह प्रजा कौन है, और वे कौन से नगर में बसते हैं, और उनकी सेना कितनी है, और उनका निवास कहां है? शक्ति और सामर्थ, और उन पर कौन सा राजा नियुक्त है, या उनकी सेना का प्रधान;
4 और पच्छिम के सब निवासियोंसे अधिक उन्हों ने क्योंयह ठाना है, कि आकर मुझ से न मिलें।

5 तब अम्मोनियोंके सब पुत्रोंके प्रधान अहीओर ने कहा, हे मेरे प्रभु,
अपके दास के मुंह से एक वचन सुने, और मैं इन लोगोंके विषय में जो
तेरे निकट और पहाड़ी देश में बसे हुए हैं सच सच बताऊंगा। : और
तेरे दास के मुंह से कोई झूठ न निकले।
6 ये लोग कसदियों के वंशज हैं:
7 और वे अब तक मेसोपोटामिया में ही रहते रहे, क्योंकि उन्होंने
कसदियों के देश में रहनेवाले अपने पुरखाओं के देवताओं के पीछे
चलना न चाहा।
8 क्योंकि उन्होंने अपके पुरखाओं की चाल छोड़ दी, और स्वर्ग के
परमेश्वर अर्यात् जिस परमेश्वर को वे जानते थे उसको दण्डवत किया;
इसलिथे उन्हों ने उनको अपके देवताओं के साम्हने से निकाल दिया,
और मेसोपोटामिया में भाग गए, और बहुत दिन तक वहीं रहते रहे।
9 तब उनके परमेश्वर ने उनको आज्ञा दी, कि जिस स्यान में वे रहते थे
वहां से निकलकर कनान देश में चले जाओ, और वहां वे रहते थे,
और सोने, चान्दी, और बहुत से पशुओं से बहुत बढ़ गए।
10 परन्तु जब सारे कनान देश में अकाल पड़ा, तब वे मिस्र में चले गए,
और वहीं रहकर पालने-पोसने लगे, और वहां ऐसी बड़ी भीड़ हो गई,
कि कोई उनकी जाति को गिन नहीं सकता था।
11 इसलिथे मिस्र के राजा ने उन पर चढ़ाई करके उन से चतुराई की,
और उनको ईंट बनाने का काम करवाकर दास बना लिया।
12 तब उन्होंने अपके परमेश्वर की दोहाई दी, और उस ने सारे मिस्र
देश पर असाध्य विपत्तियां फैला दीं; इस प्रकार मिस्रियोंने उनको
अपके साम्हने से दूर कर दिया।
13 और परमेश्वर ने उनके साम्हने से लाल समुद्र को सुखा डाला,
14 और उनको सीना और कादेस-बरने पहाड़ पर ले आए, और
जंगल में के सब रहनेवालोंको निकाल दिया।
15 सो वे एमोरियोंके देश में रहने लगे, और अपके बल से एसेबोन के
सब लोगोंको नाश किया, और यरदन पार होते हुए सारे पहाड़ी देश
को अपने अधिक्कारने में कर लिया।
16 और उन्होंने उनके साम्हने कनानी, फेरेजी, यबूसी, और सिकमी,
और सब गेर्गेसियोंको निकाल दिया, और वे बहुत दिन तक उस देश
में बसे रहे।
17 और उन्होंने अपके परमेश्वर के साम्हने पाप न किया, तौभी वे
सफल हुए, क्योंकि अधर्म से बैर रखनेवाला परमेश्वर उनके साथ था।
18 परन्तु जब वे उस मार्ग से जो उस ने अपने लिथे ठहराया या फिर
चले गए, तब वे बहुत सी लड़ाइयोंमें मारे गए, और पराए देश में बन्धुए
होकर पहुंचाए गए, और उनके परमेश्वर का मन्दिर भूमि पर गिरा
दिया गया, और उनके नगर भी नष्ट कर दिए गए। दुश्मनों द्वारा लिया
गया.
19 परन्तु अब वे अपने परमेश्वर के पास लौट आए हैं, और उन स्यानों
से जहां वे तितर-बितर हो गए थे, आकर यरूशलेम को जहां उनका
पवित्रस्थान है, अपने वश में कर लिया, और पहाड़ी देश में बस गए हैं;
क्योंकि वह उजाड़ था।
20 इसलिये अब, हे मेरे प्रभु, हे हाकिम, यदि इन लोगोंके विरूद्ध
कोई पाप हो, और वे अपके परमेश्वर के विरूद्ध पाप करें, तो सोच लें
कि यही उनका नाश होगा, और हम आगे बढ़ें, और उन पर जय पा
लें।
21 परन्तु यदि उनकी जाति में कुछ कुटिलता न हो, तो मेरे प्रभु को
जाने दे, ऐसा न हो कि उनका प्रभु उनको बचाए, और उनका
परमेश्वर उनकी ओर से हो, और हम सारे जगत के साम्हने नामधराई
का कारण ठहरें।
22 और जब अहीओर ये बातें कह चुका, तो तम्बू के आस पास खड़े
सब लोग बुड़बुड़ाने लगे, और होलोफेरनिस के सरदारों ने, और समुद्र
के किनारे और मोआब के सब रहने वालों ने कहा, कि वह उसे मार
डाले।
23 क्योंकि वे कहते हैं, कि हम इस्राएलियोंके साम्हने से न डरेंगे;
क्योंकि देखो, यह ऐसी जाति है, जिसमें न तो बल है और न दृढ़ युद्ध
के लिथे सामर्थ।
24 इसलिथे अब हे प्रभु होलोफेरनिस, हम चढ़ाई करेंगे, और वे तेरी
सारी सेना के मारे जाएंगे।

अध्याय 6

1 और जब महासभा के मनुष्योंका कोलाहल थम गया, तब अश्शूर के
प्रधान सेनापति होलोफेरनिस ने अन्य जातियोंकी सारी मण्डली के
साम्हने अकीओर और सब मोआबियोंसे कहा,
2 और हे अहीओर, और एप्रैम के मजदूरों, तुम कौन हो, जो तुम ने
आज तक हमारे विरूद्ध भविष्यद्वाणी करके कहा है, कि हम
इस्राएलियोंसे युद्ध न करें, क्योंकि उनका परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा?
और नबूचोदोनोसर के अलावा भगवान कौन है?
3 वह अपक्की शक्ति भेजकर उनको पृथ्वी पर से नाश करेगा, और
उनका परमेश्वर उनको न बचाएगा; परन्तु हम उसके दास एक मन
होकर उनको नाश करेंगे; क्योंकि वे हमारे घोड़ों की शक्ति को बनाए
रखने में सक्षम नहीं हैं।
4 क्योंकि हम उनको रौंद डालेंगे, और उनके पहाड़ उनके खून से
डूब जाएंगे, और उनके खेत उनकी लोथों से भर जाएंगे, और उनके
पांव हमारे साम्हने टिक न सकेंगे, और वे सत्यानाश हो जाएंगे। राजा
नबूकदोनोसर, सारी पृथ्वी का स्वामी, कहता है, क्योंकि उस ने कहा,
मेरी कोई भी बात व्यर्थ न होगी।
5 और हे अहीओर, हे अम्मोनियों के मजदूर, जिस ने अपके अधर्म के
दिन ये बातें कहीं हैं, आज के दिन के बाद जब तक मैं मिस्र से
निकली हुई इस जाति से पलटा न लूं, तब तक तू मेरा मुंह फिर न
देखेगा।
6 और तब मेरी सेना की तलवार और मेरे सेवकों की भीड़ तेरे पास से
गुजर जाएगी, और जब मैं लौटूंगा तब तू उनके मारे हुओं के बीच
गिरेगा।
7 इसलिये अब मेरे दास तुझे पहाड़ी देश में लौटा ले आएंगे, और
घाटोंके किसी नगर में बसा देंगे;
8 और तू उस समय तक नाश न होगा, जब तक तू उनके संग नाश न
हो जाए।
9 और यदि तू अपने मन में निश्चय कर ले, कि वे पकड़े जाएंगे, तो
उदास न हो; मैं ने यह कह दिया है, और मेरी कोई भी बात व्यर्थ न
जाएगी।
10 तब होलोफेरनिस ने अपने सेवकों को, जो उसके तम्बू में बैठे थे,
आज्ञा दी, कि अहीओर को पकड़कर बेतूलिया में ले आओ, और
इस्राएलियोंके हाथ में सौंप दो।
11 तब उसके सेवक उसे पकड़कर छावनी से बाहर मैदान में ले गए,
और उस मैदान के बीच से पहाड़ी देश में चले गए, और बेतूलिया के
नीचे के सोतों के पास पहुंचे।
12 और जब नगर के पुरूषोंने उन्हें देखा, तब अपके अपके अपके
अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके
अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके
अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके
अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके
अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके
अपके अपके ऊपर चढ़ आना, और गोफन का उपयोग करनेवाले
सब पुरूषोंने उन पर पत्यर फेंककर उनको ऊपर आने से रोका।
13 तौभी उन्होंने छिपकर पहाड़ के नीचे घुसकर अहीओर को
बन्धवाया, और उसे नीचे गिरा दिया, और पहाड़ के नीचे छोड़ कर
अपने स्वामी के पास लौट गए।
14 परन्तु इस्राएली अपके नगर से निकलकर उसके पास आए, और
उसे छुड़ाकर बैतूलिया में ले आए, और नगर के हाकिमोंके साम्हने
खड़ा किया।

15 उन दिनोंमें शिमोन के गोत्र में से मीका का पुत्र ओजीयाह, और गोतोनीएल का पुत्र कैब्रिस, और मेल्कीएल का पुत्र चारमिस थे।

16 और उन्होंने नगर के सब पुरनियोंको, और उनके सब जवानोंको, और स्त्रियोंको, इकट्ठे करके सभा में बुलाया, और उन्होंने अहीओर को अपक्की सारी प्रजा के बीच में खड़ा किया। तब ओज़ियास ने उससे पूछा कि क्या किया गया था।

17 और उस ने उनको उत्तर दिया, और होलोफेरनिस की सभा की बातें, और जितने वचन उस ने अश्शूर के हाकिमोंके बीच में कहे थे, और जो कुछ होलोफेरनिस ने इस्राएल के घराने के विरूद्ध अभिमान से कहा था, उसका वर्णन किया।

18 तब लोगों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् किया, और परमेश्वर की दोहाई दी। कह रहा,

19 हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, उनके घमण्ड को देख, और हमारी जाति की दीन जाति पर दया कर, और उन लोगों के मुख पर दृष्टि कर जो आज के दिन तेरे लिये पवित्र ठहराए गए हैं।

20 तब उन्होंने अहीओर को शान्ति दी, और उसकी बहुत प्रशंसा की।

21 और ओजीयाह ने उसे मण्डली में से निकालकर अपने घर में ले जाकर पुरनियोंके साम्हने जेवनार की; और वे सारी रात सहायता के लिथे इस्राएल के परमेश्वर को पुकारते रहे।

अध्याय 7

1 दूसरे दिन होलोफेरनिस ने अपनी सारी सेना को, और अपनी सारी प्रजा को, जो उसका भाग लेने को आए थे, आज्ञा दी, कि वे बेतूलिया के साम्हने से अपके डेरे हटाएं, और पहाड़ी देश पर चढ़कर आगे बढ़ें, और इस्राएलियों से लड़ें। .

2 तब उनके वीर पुरूषोंने उसी दिन अपके डेरे हटा दिए, और योद्धाओंकी सेना एक लाख सत्तर हजार प्यादोंऔर बारह हजार सवारोंकी थी, और उनके पीछे सामान भी न रहा, और उनके बीच में बहुत बड़ी भीड़ थी। .

3 और उन्होंने बेतूलिया के पास की तराई में सोते के पास डेरे डाले, और दोतैम की चौड़ाई में बेलमाईम तक, और बेतूलिया से सिनामोन तक, जो एस्ड्रेलोन के साम्हने है, फैल गए।

4 और इस्राएलियोंने उन की बहुतायत देखकर बहुत घबराए, और अपके अपके पड़ोसी से कहने लगे, अब वे लोग पृथ्वी को चाट डालेंगे; क्योंकि न ऊँचे पहाड़, न घाटियाँ, न पहाड़ियाँ उनका भार सह सकेंगी।

5 तब हर एक मनुष्य ने अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके गुम्मटोंपर आग सुलगाकर रात भर जागते रहे।

6 परन्तु दूसरे दिन होलोफेरनिस ने बेतूलियावासी इस्राएलियोंके साम्हने अपने सब सवारोंको बाहर निकाला,

7 और नगर की ओर के मार्गोंको देखा, और उनके जल के सोतोंके पास जाकर उनको ले लिया, और उन पर सिपाहियोंके दल बैठा दिए, और आप ही अपके लोगोंकी ओर चला गया।

8 तब एसावियोंके सब मुख्य पुरूष, और मोआबियोंके सब हाकिम, और समुद्रतट के सरदार उसके पास आकर कहने लगे,

9 अब हमारा प्रभु यह समाचार सुने, कि तेरी सेना पराजय न हो।

10 क्योंकि इस्राएलियोंकी यह प्रजा अपके भालोंपर नहीं, परन्तु अपके बसे हुए पहाड़ोंकी ऊंचाई पर भरोसा रखती है, क्योंकि उनके पहाड़ोंकी चोटियोंपर चढ़ना कठिन है।

11 इसलिये अब हे मेरे प्रभु, पांति बान्धकर उन से मत लड़, नहीं तो तेरी प्रजा में से एक भी पुरूष नाश न होगा।

12 अपक्की छावनी में रहना, और अपक्की सेना के सब पुरूषोंको बचा रखना, और पहाड़ की तलहटी से निकलनेवाले जल के सोते को तेरे दासोंके वश में कर देना;

13 क्योंकि बैतूलिया के सब निवासी वहीं से जल पीते हैं; इस प्रकार वे प्यास से मार डाले जाएंगे, और वे अपना नगर छोड़ देंगे, और हम और हमारी सेना निकट के पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ जाएंगे, और उन पर डेरे डालेंगे, और चौकसी करेंगे, कि कोई नगर से बाहर न निकल सके।

14 इसलिथे वे और उनकी पत्नियांऔर बालक आग में जलाकर भस्म कर दिए जाएंगे, और तलवार चलने से पहिले वे जिन चौकोंमें रहते हैं उन्हीं में फेंक दिए जाएंगे।

15 तू उनको इस प्रकार बुरा बदला देगा; क्योंकि उन्होंने बलवा किया, और तेरे से मेल न किया।

16 और ये बातें होलोफेरनिस और उसके सब कर्मचारियों को अच्छी लगीं, और उस ने उनके कहे के अनुसार करने को कहा।

17 तब अम्मोनियोंकी छावनी, और उनके संग पांच हजार अश्शूरी चले गए, और उन्होंने तराई में डेरे खड़े करके इस्राएलियोंके जल और सोतोंको ले लिया।

18 तब एसावियोंने अम्मोनियोंसमेत चढ़ाई करके दोतैम के साम्हने पहाड़ी देश में डेरे डाले; और उन में से कितनोंको दक्खिन और पूर्व की ओर एकरेबेल के साम्हने, जो कूसी अर्यात् कूसी के निकट है भेज दिया। मोचमुर नदी पर; और अश्शूरियों की बाकी सेना ने मैदान में डेरे डाले, और सारे देश को घेर लिया; और उनके तम्बू और गाड़ियाँ बहुत बड़ी भीड़ से खचाखच भरी हुई थीं।

19 तब इस्राएलियोंने अपने परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी, क्योंकि उनका मन उदास हो गया या, क्योंकि उनके सब शत्रुओं ने उन्हें घेर लिया था, और उनके बीच से निकलने का कोई मार्ग न था।

20 इस प्रकार अश्शूर की सारी मण्डली प्यादों, रथों, और सवारोंसमेत उनके चारों ओर चार तीस दिन तक पड़ी रही, यहां तक कि उनके सब जल पात्रों ने बेतूलिया के सब उपद्रवियोंको विफल कर दिया।

21 और हौद खाली हो गए, और उनमें एक दिन तक तृप्त होकर पीने को जल न मिला; क्योंकि उन्होंने उनको नाप तौल कर पिलाया।

22 इस कारण उनके जवान लड़के मुर्झा गए, और उनकी स्त्रियां और जवान प्यास से मूर्च्छित होकर नगर की सड़कों और फाटकोंके पास गिर पड़े, और उन में फिर कुछ बल न रहा।

23 तब सब लोग, क्या जवान, क्या स्त्रियां, और क्या बच्चे, सब लोग ओजियाह और नगर प्रधान के पास इकट्ठे हुए, और सब पुरनियोंके साम्हने ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहने लगे,

24 परमेश्वर हमारे और तुम्हारे बीच में न्याय करे; क्योंकि तुम ने हम से बड़ी हानि की है, और तुम ने अश्शूरियोंसे शान्ति न चाही।

25 क्योंकि अब हमारा कोई सहायक नहीं, परन्तु परमेश्वर ने हमें उनके हाथ में कर दिया है, कि हम प्यास और बड़े विनाश के कारण उनके साम्हने गिर पड़ें।

26 इसलिये अब उनको अपने पास बुला, और सारे नगर को होलोफेरनिस के लोगों और उसकी सारी सेना के वश में कर दे।

27 क्योंकि हमारे लिये प्यासा मरने से अच्छा है, कि हम उनके लिये लूटे जाएं; क्योंकि हम उसके दास बने रहेंगे, कि जीवित रहें, और अपने बच्चों, और अपनी स्त्रियों, को अपनी आंखों के साम्हने मरते न देख सकें। हमारे बच्चे मर जायेंगे.

28 हम तुम्हारे विरूद्ध आकाश और पृथ्वी, और अपने परमेश्वर, और अपने बापदादोंके प्रभु को साक्षी बनाते हैं, जो हमारे पापोंके अनुसार और हमारे बापदादोंके पापोंके अनुसार हमें दण्ड देता है, और जैसा हम ने आज कहा है वैसा नहीं करता।

29 तब मण्डली के बीच में एक मत से बड़ा रोना हुआ; और उन्होंने ऊंचे शब्द से प्रभु यहोवा की दोहाई दी।

30 तब ओजीयाह ने उन से कहा, हे भाइयों, ढाढ़स बान्धो, हमें पांच दिन तक और सहने दो, जिस से हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर करूणा कर सके; क्योंकि वह हमें पूरी तरह न त्यागेगा।

31 और यदि इतने दिन बीत जाएं, और हमारी कोई सहायता न हो, तो मैं तेरे वचन के अनुसार करूंगा।

32 और उस ने लोगों को अपने अपने अधिकार के अनुसार तितर-बितर कर दिया; और वे अपके नगर की शहरपनाह और गुम्मटोंपर चढ़ गए, और स्त्रियोंऔर बच्चोंको अपके घरोंमें भेज दिया; और वे नगर में बहुत उदास हुए।

अध्याय 8

1 उस समय यूदीत ने उसके विषय में सुना, वह मरारी की बेटी थी, वह बैल का पुत्र, वह यूसुफ का पुत्र, वह ओजेल का पुत्र, वह एल्किया का पुत्र, वह अनन्या का पुत्र, वह गिदोन का पुत्र, वह रपाईम का पुत्र था , अकिथो का पुत्र, एलीयू का पुत्र, एलीआब का पुत्र, नतनएल का पुत्र, सामेल का पुत्र, सलासादल का पुत्र, इस्राएल का पुत्र।
2 और उसका पति मनश्शे, उसके गोत्र और बन्धुबा में से था, जो जौ की कटनी के समय मर गया।
3 और जब वह मैदान में पूलियां बान्धनेवालोंकी ओर खड़ा हुआ या, तो लू उसके सिर पर लगी, और वह खाट पर गिर पड़ा, और बेतूलिया नगर में मर गया; और उन्होंने उसे दोतैम और बलमो के बीच के मैदान में उसके पुरखाओंके साय मिट्टी दी। .
4 सो यूदीत अपने घर में तीन वर्ष और चार महीने तक विधवा रही।
5 और उस ने अपके घर की छत पर तम्बू बनाया, और कमर में टाट पहिनाया, और विधवा का सा पहिरावा पहिनाया।
6 और वह अपके विधवापन के सब दिनोंमें उपवास करती रही, सब्तों, और विश्रामदिनों, और नये चांद की पूर्व संध्याओं, और नये चांद और इस्राएल के घराने के पर्वोंऔर पवित्र दिनोंको छोड़।
7 वह रूप सुन्दर और देखने में अति सुन्दर थी; और उसके पति मनश्शे ने उसके लिये सोना, चान्दी, दास-दासियाँ, पशु, और भूमि छोड़ दी थी; और वह उन पर बनी रही।
8 और कोई उसे बुरा भला कहनेवाला न था; क्योंकि वह परमेश्वर का बहुत भय मानती थी।
9 जब उस ने लोगोंकी हाकिम के विरूद्ध बुरी बातें सुनीं, तब वे जल न पाकर मूर्छित हो गए; क्योंकि जूडिथ ने वे सब बातें सुनी थीं जो ओजियास ने उनसे कही थीं, और उस ने पांच दिन के बाद नगर को अश्शूरियों के वश में कर देने की शपथ खाई थी;
10 तब उस ने अपक्की दासी को, जिसके पास उसकी सारी वस्तुओंपर अधिकार था, नगर के पुरनियोंओजीयास, चब्रिस, और चार्मिस को बुलाने के लिथे भेजा।
11 और वे उसके पास आए, और उस ने उन से कहा, हे बेतूलिया के निवासियोंके हाकिमों, अब मेरी सुनो; क्योंकि जो वचन तुम ने आज लोगोंके साम्हने कहा है, और इस शपय के विषय में जो तुम ने खाई और खाई है, वह ठीक नहीं है। परमेश्वर और आपके बीच, और हमने नगर को हमारे शत्रुओं के वश में करने का वचन दिया है, यदि इन दिनों के भीतर यहोवा आपकी सहायता करने के लिए न आए।
12 और अब तुम कौन हो जो आज परमेश्वर की परीक्षा करते हो, और मनुष्यों के बीच परमेश्वर के स्थान पर खड़े हो गए हो?
13 और अब सर्वशक्तिमान यहोवा का प्रयत्न करो, परन्तु तुम कुछ भी न जान पाओगे।
14 क्योंकि तुम मनुष्य के मन की गहराई को नहीं जान सकते, और न वह बातें जो वह सोचता है पहिचान सकते हो; तो तुम परमेश्वर को, जिस ने यह सब वस्तुएं बनाई हैं, किस रीति से ढूंढ़कर उसके मन को जान सकते हो, या उसकी युक्ति को समझ सकते हो? नहीं, हे मेरे भाइयों, हमारे परमेश्वर यहोवा को क्रोध न दिलाओ।
15 क्योंकि यदि वह इन पांच दिनों के भीतर हमारी सहाथता न करे, तो उसे जब चाहे तब प्रति दिन हमारी रक्षा करने, वा हमारे शत्रुओं के साम्हने से हमारा नाश करने का अधिकार है।
16 हमारे परमेश्वर यहोवा की युक्तियों को मत मानना; क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के समान नहीं है, कि उस पर घात लगाया जाए; न वह मनुष्य का पुत्र है, कि झिझके।
17 इसलिये आओ हम उसके उद्धार की बाट जोहें, और उसे हमारी सहायता के लिये पुकारें, और यदि वह चाहे तो हमारी सुनेगा।
18 क्योंकि हमारे समय में न तो कोई गोत्र, न कुल, न लोग, न नगर हमारे बीच में ऐसा कोई हुआ, जो पहिले के समान हाथ के बनाए हुए देवताओं को दण्डवत् करता हो।
19 इसी कारण हमारे पुरखा तलवार से और लूट लिये गए, और अपने शत्रुओं से भारी विनाश में पड़े।
20 परन्तु हम किसी दूसरे परमेश्वर को नहीं जानते, इसलिये हमें भरोसा है, कि वह हम से वा हमारी जाति में से किसी को तुच्छ न जानेगा।
21 क्योंकि यदि हम ऐसा कर लें, तो सारा यहूदिया उजाड़ हो जाएगा, और हमारा पवित्रस्थान नष्ट हो जाएगा; और वह हमारे मुंह पर उसके अपमान की मांग करेगा।
22 और वह हमारे भाइयोंको घात करेगा, और हमारे देश को बन्धुवाई में ले जाएगा, और हमारा निज भाग उजाड़ देगा, और अन्यजातियोंके बीच जहां कहीं हम दासत्व में होंगे, उसका फल वह हमारे सिर पर डालेगा; और हम उन सभों के लिये दोषी और कलंकित ठहरेंगे जो हमारे पास हैं।
23 क्योंकि हमारी दासता अनुग्रह की ओर न होगी, परन्तु हमारा परमेश्वर यहोवा उसे अनादर की ओर मोड़ देगा।
24 इसलिये अब हे भाइयो, आओ हम अपने भाइयोंके साम्हने आदर्श दिखाएँ, क्योंकि उनका मन हम पर भरोसा रखता है, और पवित्रस्यान और भवन और वेदी का अधिकार हम पर है।
25 फिर हम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करें, जो हमारे पुरखाओं की नाई हमारी भी परीक्षा करता है।
26 स्मरण करो, कि उस ने इब्राहीम के साथ क्या क्या किया, और इसहाक को किस प्रकार से परखा, और याकूब के साथ अराम के मेसोपोटामिया में क्या हुआ, जब वह अपने मामा लाबान की भेड़-बकरियां चराता था।
27 क्योंकि उस ने हमारे मनों को जांचने के लिये उन की नाईं हमें आग में परखा नहीं, और न हम से पलटा लिया; परन्तु जो लोग उसके पास आते हैं उनको चिताने के लिथे यहोवा उनको कोड़े मारता है।
28 तब ओजिय्याह ने उस से कहा, जो कुछ तू ने कहा है, वह भले मन से कहा है, और कोई तेरी बातों से झूठ नहीं बोल सकता।
29 क्योंकि यह पहिले दिन नहीं, जिस में तेरी बुद्धि प्रगट हुई है; परन्तु तेरे दिनों के आरम्भ से ही सब लोग तेरी समझ को जान गए हैं, क्योंकि तेरे मन का स्वभाव भला है।
30 परन्तु वे लोग बहुत प्यासे थे, और हम से जैसा हम ने कहा या, वैसा ही उन से करने को कहा, और हम ने अपके आप को शपय खिलाई, कि हम न तोड़ें।
31 इसलिये अब तू हमारे लिथे प्रार्थना कर, क्योंकि तू भक्तिमय स्त्री है, और यहोवा मेंह बरसाकर हमारे हौद भर देगा, और हम फिर थकेंगे नहीं।
32 तब यूदीत ने उन से कहा, मेरी सुनो, और मैं एक ऐसा काम करूंगा, जो हमारी जाति के लोगोंको पीढ़ी पीढ़ी तक मिलता रहेगा।
33 तुम आज रात को फाटक पर खड़े रहना, और मैं अपक्की सेवा करनेवाली को संग लेकर निकलूंगा; और जिन दिनोंमें तुम ने नगर को हमारे शत्रुओंके हाथ में कर देने की प्रतिज्ञा की है उन्हीं दिनोंके भीतर यहोवा मेरे हाथ से इस्राएल की सुधि लेगा।
34 परन्तु मेरे काम के विषय में न पूछो; क्योंकि मैं जो काम मैं करता हूं वह पूरा होने तक तुम्हें न बताऊंगा।
35 तब ओजियास और हाकिमोंने उस से कहा, कुशल से जाओ, और यहोवा परमेश्वर हमारे शत्रुओंसे पलटा लेने को तुम्हारे सम्मुख रहे।
36 तब वे तम्बू से लौट आए, और अपने अपने वार्डों को चले गए।

अध्याय 9

1 और यूदीत मुंह के बल गिर पड़ी, और अपने सिर पर राख डाली,
और जो टाट पहिना हुआ था उसे उघाड़ दिया; और उस समय जब
सांझ का धूप यरूशलेम में यहोवा के भवन में चढ़ाया जाता या, तब
यहूदीत ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहती थी,
2 हे मेरे पिता शिमोन के परमेश्वर यहोवा, जिस को तू ने परदेशियोंसे
पलटा लेने के लिथे तलवार दी, जिस ने दासी को अशुद्ध करने के
लिथे उसका कमर बान्धा, और उसकी लज्जा के लिथे जांघ खोली,
और निन्दा के लिथे उसका कौमार्य अशुद्ध किया; क्योंकि तू ने कहा,
ऐसा नहीं होगा; और फिर भी उन्होंने ऐसा किया:
3 इस कारण तू ने उनके हाकिमों को घात करने को दिया, यहां तक
कि उन्होंने धोखा खाकर अपना बिछौना लोहू से रंग डाला, और दासों
को उनके स्वामियों समेत, और स्वामियों को उनके सिंहासनों पर ही
मार डाला;
4 और उनकी स्त्रियोंको बन्धुवाई में कर दिया, और उनकी बेटियोंको
बन्धुवाई में कर दिया, और उनका सारा धन अपने प्यारे
लड़केबालोंको बांट दिया; जो तेरे उत्साह से द्रवित हो गए, और अपने
खून के प्रदूषण से घृणा करते थे, और तुझ से सहायता की याचना
करते थे: हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मेरी भी विधवा सुन।
5 क्योंकि तू ने न केवल वे काम किए, बरन जो पहिले और उसके
बाद भी घटे थे; तू ने उन बातों पर विचार किया है जो अभी हैं, और
जो आनेवाली हैं।
6 और जो बातें तू ने ठान ली थीं, वे सब तैयार थीं, और कहा, देख, हम
यहां हैं; क्योंकि तेरे सब मार्ग तैयार किए गए हैं, और तेरे निर्णय तेरी
बुद्धि में हैं।
7 क्योंकि देखो, अश्शूर की शक्ति बहुत बढ़ गई है; वे घोड़े और
मनुष्य से प्रतिष्ठित हैं; वे अपने प्यादों के बल पर घमण्ड करते हैं; वे
ढाल, और भाले, और धनुष, और गोफन पर भरोसा रखते हैं; और
यह न जान कि तू ही यहोवा है, जो लड़ाई लड़ता है; यहोवा ही तेरा
नाम है।
8 उनके बल को अपके वश में कर दो, और अपने क्रोध में उनकी
शक्ति को गिरा दो; क्योंकि उन्होंने तेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध करना,
और तम्बू को जहां तेरा महिमामय नाम विराजमान है, अपवित्र करना
और तेरी वेदी के सींग को तलवार से गिरा देना चाहा है।
9 उनके घमण्ड को देखो, और अपना क्रोध उनके सिर पर भेजो; जो
शक्ति मैं ने गर्भवती की है उसे मेरे हाथ में दे दो, जो यह विधवा हूं।
10 अपने मुंह के छल से दास को हाकिम के द्वारा, और हाकिम को
दास के द्वारा मार डालो; स्त्री के द्वारा उनके वैभव को नष्ट कर डालो।
11 क्योंकि तेरी शक्ति भीड़ में ठहरती नहीं, और न बलवन्त मनुष्योंमें
तेरी शक्ति ठहरती; क्योंकि तू दीनों का परमेश्वर, और उत्पीड़ितोंका
सहायक, निर्बलोंको सम्भालनेवाला, निराश्रयोंको बचानेवाला, और
आशाहीनोंका उद्धारकर्ता है। .
12 हे मेरे पिता के परमेश्वर, हे इस्राएल के निज भाग के परमेश्वर,
आकाश और पृथ्वी के प्रभु, जल के सृजनहार, हे सब प्राणियों के राजा,
तू मेरी प्रार्थना सुन।
13 और जिन्होंने तेरी वाचा और पवित्र भवन के विरूद्ध, और सिय्योन
की चोटी पर, और तेरे निज भाग के भवन के विरूद्ध क्रूर युक्तियां की
हैं, उन के लिये मेरी वाणी और छल को घाव और धारी बना दे।
14 और सब जाति और कुल के लोग यह मान लें, कि तू सारी शक्ति
और सामर्थ का परमेश्वर है, और तेरे सिवा इस्राएल की प्रजा की रक्षा
करनेवाला और कोई नहीं।

अध्याय 10

1 इसके बाद उस ने इस्राएल के परमेश्वर की दोहाई देना, और ये सब
बातें बन्द कर दीं।
2 और वह जहां गिरी थी उठी, और अपनी दासी को बुलाकर उस घर
में गई, जहां वह विश्रमदिन और अपके जेवनार के दिनोंमें रहती थी।
3 और उसने जो टाट ओढ़ रखा था उसे खींच लिया, और विधवापन
के वस्त्र उतार दिए, और उसके सारे शरीर को जल से धोया, और
बहुमूल्य इत्र से उसका अभिषेक किया, और उसके सिर के बाल गूंथे,
और उस पर टायर लगाया इसे, और अपने आनंद के वस्त्र पहने, जो
वह अपने पति मनश्शे के जीवन के दौरान पहने हुए थी।
4 और उस ने पांवोंमें जूतियां पहिनाई, और कंगन, जंजीरें, अंगूठियां,
बालियांऔर सब आभूषण पहिनाए, और अपने आप को वीरता से
सजाया, कि जो कोई उसे देखे उन पर मोहित हो जाए।
5 तब उस ने अपक्की दासी को एक कुप्पी दाखमधु, और एक कुप्पी
तेल दिया, और एक थैली में भूना हुआ अन्न, और अंजीर के टुकड़े,
और उत्तम रोटी भर दी; तब उस ने ये सब वस्तुएं एक करके मोड़कर
अपने ऊपर रख लीं।
6 तब वे बेतूलिया नगर के फाटक तक गए, और वहां ओजीयाह और
नगर के पुरनियों चब्रिस और चार्मिस को खड़े पाया।
7 और जब उन्होंने उसे देखा, कि उसका रूप बदल गया है, और
उसका वस्त्र बदल गया है, तो उन्होंने उसकी सुंदरता पर बहुत
आश्चर्य किया, और उससे कहा।
8 परमेश्वर हमारे पितरोंका परमेश्वर तुझे अनुग्रह दे, और तेरे कामोंको
इस्राएलियोंकी महिमा और यरूशलेम की महिमा के लिथे पूरा करे।
तब उन्होंने परमेश्वर की आराधना की।
9 और उस ने उन से कहा, नगर के फाटकों को मेरे लिये खोलने की
आज्ञा दे, कि जो बातें तुम ने मुझ से कही हैं उन्हें पूरा करने के लिये मैं
आगे जाऊं। इसलिये उन्होंने जवानों को उसके कहने के अनुसार
उसके लिये द्वार खोलने की आज्ञा दी।
10 और जब उन्होंने ऐसा किया, तब यूदीत अपनी दासी समेत बाहर
निकली; और जब तक वह पहाड़ से उतर न गई, और तराई पार न
हो गई, तब तक नगर के पुरूष उसकी देखभाल करते रहे, और फिर
उसे न देख सके।
11 यों वे सीधे तराई में चले गए, और अश्शूरियों का पहला पहरा उस
पर पड़ा,
12 और उसे ले जाकर पूछा, तू किस मनुष्य में से है? और तू कहां से
आता है? और तुम कहाँ जाओगे? और उस ने कहा, मैं इब्रियोंमें से हूं,
और उनके पास से भाग गई हूं: क्योंकि वे तुम्हें नष्ट करने के लिये दे
दिए जाएंगे।
13 और मैं सत्य की बातें सुनाने को तेरे सेना के प्रधान होलोफेरनिस
के साम्हने आ रहा हूं; और मैं उसे एक मार्ग दिखाऊंगा, जिस से वह
जाकर, अपने किसी भी जन का शरीर या प्राण खोए बिना, सारे
पहाड़ी प्रदेश को जीत लेगा।
14 जब पुरूषों ने उसकी बातें सुनीं, और उसका रूप देखा, तो
उसकी सुन्दरता से बहुत चकित होकर उस से कहा,
15 तू ने हमारे प्रभु के साम्हने आने में उतावली करके अपना प्राण
बचाया है; इसलिये अब उसके तम्बू के पास आ, और जब तक वे तुझे
उसके हाथ में न सौंप दें तब तक हम में से कुछ तेरी अगुवाई करेंगे।
16 और जब तू उसके साम्हने खड़ा हो, तो मन में न डरना, परन्तु
अपने वचन के अनुसार उसे बता देना; और वह तुझ से भला बिनती
करेगा।
17 तब उन्होंने उन में से उसके और उसकी दासी के साय एक सौ
पुरूष चुन लिए; और वे उसे होलोफेरनिस के तम्बू में ले आये।
18 तब सारी छावनी में मण्डली छा गई; क्योंकि उसके आने का शोर
तम्बुओं में हो गया, और वे उसके चारों ओर चढ़ गए, और वह
होलोफेरनिस के तम्बू के बाहर खड़ी रही, और जब तक उन्होंने
उसका समाचार न दिया।
19 और वे उसकी सुन्दरता से अचम्भा करने लगे, और इस्राएली
उसके कारण उसकी प्रशंसा करने लगे; और सब एक अपके पड़ोसी
से कहने लगे, इन लोगोंका जो ऐसी स्त्रियां हैं, उनका तिरस्कार कौन

करेगा? निःसन्देह यह अच्छा नहीं कि उन में से एक पुरूष भी छोड़ा जाए, जो छोड़े जाने पर सारी पृथ्वी को धोखा दे।
20 और होलोफेरनिस के पास के लोग निकलकर उसके सब सेवकोंसमेत निकल गए, और वे उसे तम्बू में ले आए।
21 अब होलोफेरनिस अपने बिछौने पर एक छत्र के नीचे विश्राम कर रहा था, जो बैंजनी, सोने, पन्ना, और बहुमूल्य पत्थरों से बुना हुआ था।
22 तब उन्होंने उसको उसके विषय में प्रगट किया; और वह अपने तम्बू के साम्हने से निकला, और उसके आगे चान्दी के दीपक जल रहे थे।
23 और जब यूदीत उसके और उसके कर्मचारियोंके साम्हने आई, तब सब उसके रूप की सुन्दरता से अचम्भित हुए; और वह मुंह के बल गिरकर उसे दण्डवत् करने लगी; और उसके सेवकों ने उसे उठाया।

अध्याय 11

1 तब होलोफेरनिस ने उस से कहा, हे नारी, ढाढ़स रख, अपने मन में मत डर; क्योंकि मैं ने पृथ्वी भर के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करने के इच्छुक किसी को कभी हानि नहीं पहुंचाई।
2 इसलिये अब यदि तेरी प्रजा के लोग जो पहाड़ोंपर रहते हैं मेरे साम्हने उजियाला न करते, तो मैं अपना भाला उन पर न उठाता; परन्तु उन्होंने यह काम आप ही से किया है।
3 परन्तु अब मुझे बताओ, कि तू उनके पास से भागकर हमारे पास क्यों आया? अच्छा आराम करो, तुम आज रात और उसके बाद भी जीओगे:
4 क्योंकि कोई तेरी हानि न करेगा, वरन मेरे प्रभु राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारियों की नाईं तुझ से भलाई की बिनती करेगा।
5 तब यूदीत ने उस से कहा, अपके दास की बातें मान, और अपनी दासी को अपने साम्हने बोलने दे, और मैं आज रात को अपके प्रभु से झूठ न बोलूंगी।
6 और यदि तू अपक्की दासी की बात मान ले, तो परमेश्वर तुझ से वह बात पूरी रीति से पूरा करेगा; और मेरा स्वामी अपने प्रयोजनों से असफल न होगा।
7 सारी पृथ्वी के राजा नबूकदनेस्सर के जीवन की शपथ, और उसके पराक्रम की शपथ, जिस ने तुझे सब प्राणियोंके पालने के लिथे भेजा है; क्योंकि तेरे द्वारा न केवल मनुष्य, वरन मैदान के पशु, और गाय-बैल भी उसके आधीन होंगे। और आकाश के पक्षी नबूकदोनोसर और उसके सारे घराने के अधीन तेरी शक्ति से जीवित रहेंगे।
8 क्योंकि हम ने तेरी बुद्धि और नीति का समाचार सुना है, और सारी पृथ्वी पर इसका समाचार फैल गया है, कि तू सारे राज्य में अद्वितीय है, और ज्ञान में पराक्रमी, और युद्ध के पराक्रम में अद्भुत है।
9 अब जो बात अहीओर ने तेरी महासभा में कही थी, उसकी बातें हम ने सुनी हैं; क्योंकि बैतूलिया के मनुष्योंने उसे बचाया, और उस ने जो कुछ तुझ से कहा या, वह सब उनको बता दिया।
10 इसलिये हे प्रभु और हाकिम, उसके वचन का आदर न कर; परन्तु इसे अपने हृदय में रखो, क्योंकि यह सत्य है; क्योंकि यदि वे अपने परमेश्वर के विरूद्ध पाप न करें, तो हमारी जाति को दण्ड न दिया जाएगा, और न उन पर तलवार चल सकेगी।
11 और अब, ऐसा न हो कि मेरा प्रभु हार जाए, और अपनी युक्ति से निराश न हो, यहां तक कि अब उन पर मृत्यु आ पड़ी है, और उनका पाप उन पर आ गया है, जिस से वे जो काम करने योग्य नहीं वह अपके परमेश्वर को क्रोध दिलाएंगे हो गया:
12 क्योंकि उनका भोजन समाप्त हो गया है, और उनका सारा पानी घट गया है, और उन्होंने उनके पशुओं पर हाथ चलाने का निश्चय किया है, और उन सब वस्तुओं को, जिन्हें परमेश्वर ने अपक्की विधि के अनुसार खाने से मना किया है, नाश कर डाला है।
13 और उन्होंने ठान लिया है, कि दाखमधु और तेल के दसवें अंश का पहिला भाग, जिसे उन्होंने पवित्र करके यरूशलेम में हमारे परमेश्वर के साम्हने सेवा करनेवाले याजकोंके लिये रख छोड़ा है, खर्च करेंगे; किन चीज़ों को हाथ से छूना भी लोगों में से किसी के लिए उचित नहीं है।
14 क्योंकि उन्होंने कुछ को यरूशलेम को भेजा है, क्योंकि वहां के रहनेवालोंने भी वैसा ही किया है, कि अपने लिये सीनेट से परवाना ले आएं।
15 और जब वे उन को समाचार देंगे, तब तुरन्त वैसा ही करेंगे, और वे उसी दिन तेरे हाथ में सौंप दिए जाएंगे, कि वे उसी दिन नाश हो जाएं।
16 इस कारण मैं तेरी दासी यह सब जानकर उनके साम्हने से भाग गई हूं; और परमेश्वर ने मुझे तेरे साथ काम करने को भेजा है, जिस से सारी पृथ्वी के लोग भी चकित होंगे, और जो कोई इसे सुनेगा।
17 क्योंकि तेरा दास भक्त है, और दिन रात स्वर्ग के परमेश्वर की सेवा करता है; इसलिये अब हे मेरे प्रभु, मैं तेरे संग रहूंगा, और तेरा दास रात को तराई में निकल जाएगा, और मैं परमेश्वर से प्रार्यना करूंगा, और वह वे मुझे बताएंगे कि उन्होंने कब पाप किए हैं:
18 और मैं आकर तुझे बताऊंगा; तब तू अपक्की सारी सेना समेत निकल जाएगा, और कोई तेरा साम्हना न करेगा।
19 और मैं तुझे यहूदिया के बीच में से होते हुए यरूशलेम के साम्हने तक ले चलूंगा; और मैं तेरे सिंहासन को उसके बीच में खड़ा करूंगा; और तू उन को बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों की नाई हांकना, और कुत्ता तुझ पर मुंह न खोलेगा; क्योंकि थे बातें मेरी पहिले से मुझे बता दी गई हैं, और मुझे बता दी गई हैं, और मैं बताने को भेजा गया हूं। तुम.
20 तब उसकी बातें होलोफेरनिस और उसके सब कर्मचारियोंको अच्छी लगीं; और उन्होंने उसकी बुद्धि पर आश्चर्य किया, और कहा,
21 पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक कोई ऐसी स्त्री नहीं है, जिसके मुख की सुन्दरता और वाणी की बुद्धि दोनों हो।
22 इसी प्रकार होलोफेरनिस ने उस से कहा। परमेश्वर ने तुझे लोगों के साम्हने भेजकर अच्छा किया, कि हमारे हाथ में बल हो, और जो मेरे प्रभु का अनादर करते हैं, वे नाश हो जाएं।
23 और अब तू देखने में सुन्दर, और बातें चतुर है; यदि तू अपने वचन के अनुसार करेगी, तो तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर ठहरेगा, और तू राजा नबूकदनेस्सर के भवन में निवास करेगा, और सारे देश में प्रसिद्ध होगा। धरती।

अध्याय 12

1 तब उस ने आज्ञा दी, कि उसे वहीं ले आओ जहां उसकी थाली रखी थी; और आज्ञा दी, कि उसके लिये उसी के भोजन में से कुछ तैयार करें, और वह उसी के दाखमधु में से पीए।
2 और यूदीत ने कहा, मैं उस में से कुछ न खाऊंगी, ऐसा न हो कि कोई अपराध हो; परन्तु जो कुछ मैं ले आई हूं उसी से मेरे लिथे भोजन किया जाएगा।
3 तब होलोफेर्निस ने उस से कहा, यदि तेरा भोजन व्यर्थ हो जाए, तो हम तुझे उसका बदला क्योंकर दें? क्योंकि तेरी जाति में से कोई हमारे संग न रहेगा।
4 तब यूदीत ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे प्राण की शपथ, तेरी दासी जो कुछ मेरा है उसे खर्च न करेगी, इस से पहिले कि यहोवा ने जो कुछ ठाना है वह मेरे हाथ से पूरा कराए।
5 तब होलोफेरनिस के सेवक उसे तम्बू में ले आए, और वह आधी रात तक सोती रही, और भोर के समय उठकर बोली,
6 और होलोफेरनिस के पास कहला भेजा, कि मेरा प्रभु अब आज्ञा दे, कि तेरी दासी प्रार्थना करने को जा सके।
7 तब होलोफेरनिस ने अपने पहरूओं को आज्ञा दी, कि वे उसे न रोकें; इस प्रकार वह तीन दिन तक छावनी में रही, और रात को बेतूलिया की तराई में निकल गई, और छावनी के पास जल के सोते में स्नान किया।

8 और जब वह बाहर आई, तब उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से बिनती की, कि वह अपक्की प्रजा के सन्तान को जिलाने का मार्ग दिखाए।
9तब वह शुद्ध होकर लौट आई, और सांझ को अपना मांस खाने तक तम्बू में रही।
10 और चौथे दिन होलोफेरनिस ने अपने ही कर्मचारियोंके लिथे जेवनार की, और किसी हाकिम को जेवनार में न बुलाया।
11 तब उस ने बगोआह खोजे से जो उसका सब कुछ अधिक्कारनी या, कहा, जाकर उस इब्री स्त्री को जो तेरे संग है, मना ले कि वह हमारे पास आए, और हमारे साथ खाए पिए।
12 क्योंकि देखो, यदि हम ऐसी स्त्री को बिना संग किए जाने दें, तो यह हमारे लिये लज्जा की बात होगी; क्योंकि यदि हम उसे अपनी ओर न खींचे, तो वह हमारी हंसी उड़ाएगी।
13 तब बगोआस होलोफेरनिस के साम्हने से निकलकर उसके पास आया, और उस ने कहा, यह सुन्दर कन्या मेरे प्रभु के पास आने, और उसके साम्हने आदर पाने, और दाखमधु पीने, और हमारे साथ आनन्द करने, और आनन्द करने से न डरे। इस दिन को अश्शूरियों की बेटियों में से एक के रूप में बनाया गया, जो नबूकदोनोसर के घर में सेवा करती थीं।
14 तब यूदीत ने उस से कहा, मैं कौन हूं जो अपके प्रभु से झूठ बोलूं? निःसन्देह जो कुछ उसे अच्छा लगेगा मैं तुरन्त करूंगा, और मेरी मृत्यु के दिन तक वही मेरे लिये आनन्द का कारण रहेगा।
15 तब वह उठी, और अपके वस्त्र और स्त्री के सारे पहिरावे पहिने, और उसकी दासी ने जाकर होलोफेरनिस के साम्हने के साम्हने भूमि पर, जो उसे बगोआस से प्रतिदिन के काम के लिथे मिला या, कोमल खालें बिछा दीं, कि वह बैठे और उन पर खाओ.
16 जब यूदीत होलोफेरनिस के पास आकर बैठ गई, तब उसका मन उस पर मोहित हो गया, और उसका मन उस से मोहित हो गया, और उस ने उसकी संगति को बहुत चाहा; क्योंकि जिस दिन से उस ने उसे देखा था उसी दिन से वह उसे धोखा देने के लिये बहुत दिनों तक बाट जोहता रहा।
17 तब होलोफेरनिस ने उस से कहा, अब पीकर हमारे साथ आनन्द कर।
18 तब यूदीत ने कहा, हे प्रभु, मैं अब पीऊंगी, क्योंकि आज के दिन मेरा जीवन मेरे जन्म के बाद के सब दिनों से अधिक बढ़ गया है।
19 तब उस ने जो कुछ अपक्की दासी ने तैयार किया या, वह लेकर उसके साम्हने खाया पिया।
20 और होलोफेरनिस उस से बहुत प्रसन्न हुआ, और जन्म के बाद से एक ही दिन में कभी न पिया था, उससे भी अधिक दाखमधु पी गया।

अध्याय 13

1 जब सांझ हुई, तो उसके सेवक झटपट चले गए, और बगोअस ने अपना तम्बू बाहर से बन्द कर दिया, और अपने स्वामी के साम्हने से पहरुओं को विदा कर दिया; और वे अपने-अपने बिस्तरों पर सो गए: क्योंकि भोज को बहुत दिन बीत चुके थे, वे सब थके हुए थे।
2 और यूदीत तम्बू में अकेली रह गई, और होलोफेरनिस अपने बिछौने पर अकेला पड़ा रहा; क्योंकि वह दाखमधु से तृप्त हो गया था।
3 और यूदीत ने अपनी दासी को शयनकक्ष से बाहर खड़े होकर उसकी प्रतीक्षा करने की आज्ञा दी थी। वह आगे आ रही थी, जैसे वह प्रतिदिन करती थी: क्योंकि उसने कहा था कि वह अपनी प्रार्थनाओं के लिए आगे जाएगी, और उसने उसी उद्देश्य के अनुसार बगोआस से बात की।
4 तब सब लोग निकल गए, और शयनकक्ष में कोई न रह गया, न छोटा, न बड़ा। तब जूडिथ ने उसके बिछौने के पास खड़ी होकर अपने मन में कहा, हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा, यरूशलेम की महिमा के लिथे मेरे हाथों के कामोंपर यह भेंट देख।
5 क्योंकि अब अपने निज भाग की सहाथता करने, और हमारे विरूद्ध उठे हुए शत्रुओं को नाश करने के लिये अपना काम करने का समय आ गया है।
6 तब वह खाट के खम्भे के पास आई, जो होलोफेरनिस के सिरहाने था, और वहां से उसका कपड़ा उतारकर कहा,
7 और उसके बिछौने के पास आकर उसके सिर के बाल पकड़कर कहा, हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, आज मुझे बल दे।
8 और उस ने अपनी पूरी शक्ति से उसकी गर्दन पर दो बार मारा, और उसका सिर उस पर से अलग कर दिया।
9 और उसके शरीर को खाट पर से नीचे गिरा दिया, और खम्भों पर से छत्र खींच लिया; और तुरन्त वह बाहर गई, और होलोफेरनिस का सिर अपनी दासी को दे दिया;
10 और उसने उसे अपने मांस की थैली में रख लिया; इस प्रकार वे दोनों अपनी रीति के अनुसार प्रार्थना करने के लिये एक साथ चले; और छावनी को पार करके तराई को पार करके बेतूलिया के पहाड़ पर चढ़कर उसके फाटकों पर पहुंचे।
11 तब यूदीत ने दूर से फाटक के पहरुओंसे कहा, फाटक खोलो, खोलो; परमेश्वर वरन हमारा परमेश्वर हमारे संग है, कि यरूशलेम में अपना पराक्रम और शत्रु पर अपना बल दिखाए, जैसा उस ने दिखाया है। इस दिन किया.
12 जब उसके नगर के पुरूषोंने उसका शब्द सुना, तो वे फुर्ती करके अपने नगर के फाटक पर गए, और नगर के पुरनियोंको बुलवाया।
13 तब क्या छोटे, क्या बड़े, सब इकट्ठे होकर दौड़े, क्योंकि उनको उस का आना अजीब लगा, और फाटक खोलकर उनके पास आए, और उजियाला करके आग जलाई, और उनके चारोंओर खड़े हो गए।
14 तब उस ने ऊंचे शब्द से उन से कहा, परमेश्वर की स्तुति करो, परमेश्वर की स्तुति करो, परमेश्वर की स्तुति करो, मैं कहती हूं, क्योंकि उस ने इस्राएल के घराने पर से अपनी करूणा दूर नहीं की, वरन आज ही रात को मेरे हाथ से हमारे शत्रुओं को नाश किया है।
15 तब उस ने थैले में से सिर निकालकर दिखाया, और उन से कहा, देखो, अश्शूर के प्रधान सेनापति होलोफेरनिस का सिर, और उस छत्र को देखो, जिस में वह मतवालेपन में पड़ा हुआ या; और यहोवा ने उसे स्त्री के हाथ से मारा है।
16 यहोवा के जीवन की शपय, जिस ने मेरे चलने में मेरी रक्षा की, और मेरे मुख से ऐसा धोखा खाया कि वह सत्यानाश हो गया, तौभी उस ने मेरे साथ ऐसा पाप नहीं किया, कि मुझे अशुद्ध करे, और लज्जित करे।
17 तब सब लोग चकित हो गए, और सिर झुकाकर परमेश्वर को दण्डवत् किया, और एक मन से कहा, हे हमारे परमेश्वर, तू धन्य है, जिस ने आज अपक्की प्रजा के शत्रुओंको नाश किया है।
18 तब ओजियास ने उस से कहा, हे बेटी, तू पृथ्वी की सब स्त्रियोंमें से परमप्रधान परमेश्वर की ओर से धन्य है; और धन्य है प्रभु परमेश्वर, जिस ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया, और जिस ने तुझे हमारे शत्रुओं के मुख्य पुरूषों का सिर काटने की आज्ञा दी है।
19 क्योंकि जो मनुष्य परमेश्वर की शक्ति को सदैव स्मरण रखते हैं, उनके मन से तेरा भरोसा कभी न उतरेगा।
20 और परमेश्वर इन बातोंको तेरे लिथे सदा की स्तुति के लिथे फेर दे, कि भलाई से तेरी सुधि ले, क्योंकि तू ने हमारी जाति के क्लेश के लिथे अपना प्राण भी न रख छोड़ा, परन्तु हमारे परमेश्वर के साम्हने सीधे मार्ग पर चलकर हमारी बरबादी का पलटा लिया है। और सब लोगों ने कहा; ऐसा ही हो, वैसा ही हो।

अध्याय 14

1 तब यूदीत ने उन से कहा, हे मेरे भाइयों, मेरी सुनो, और इस सिर को ले लो, और अपनी शहरपनाह के ऊंचे स्यान पर लटका दो।

2 और जैसे ही भोर होगी और सूर्य पृथ्वी पर निकलेगा, तुम सब अपने अपने हथियार ले लेना, और सब शूरवीर नगर से निकल जाओ, और उनके ऊपर एक प्रधान नियुक्त करो, मानो तुम चाहते हो अश्शूरियों की निगरानी के लिये मैदान में उतरो; लेकिन नीचे मत जाओ.
3 तब वे अपने हथियार लेकर अपनी छावनी में जाएंगे, और अश्शूर की सेना के प्रधानोंको इकट्ठा करेंगे, और होलोफेरनिस के तम्बू की ओर दौड़ेंगे, परन्तु उसे न पाएंगे; तेरे साम्हने से भाग जाऊंगा।
4 इसलिये तुम और इस्राएल के सिवाने के सब रहनेवाले उनका पीछा करो, और वे जाते ही उनको मार डालो।
5 परन्तु तुम ये काम करने से पहिले मेरे अम्मोनी अहीओर को बुलाओ, कि वह उसे देखे, और पहचाने कि किस ने इस्राएल के घराने का तिरस्कार किया, और उसे हमारे पास मरने के लिये भेज दिया।
6 तब उन्होंने ओजियाह के घराने में से अहीओर को बुलाया; और जब वह आया, और लोगों की सभा में एक मनुष्य के हाथ में होलोफेरनिस का सिर देखा, तो मुंह के बल गिर पड़ा, और उसका साहस टूट गया।
7 परन्तु जब उन्होंने उसे पकड़ लिया, तब उस ने यहूदीत के पांवोंपर गिरके उसे प्रणाम किया, और कहा, यहूदा के सारे तम्बुओंमें और सब जातियोंमें तू धन्य है, जो तेरा नाम सुनकर चकित होंगे।
8 इसलिये अब मुझे वह सब काम बता जो तू ने इन दिनोंमें किया है। तब जूडिथ ने लोगों के बीच में उसे अपना सब कुछ बता दिया, जिस दिन से वह निकली थी और उस समय तक उसने उन से बातें की।
9 और जब वह बोलना छोड़ चुकी, तो लोगों ने ऊंचे शब्द से जयजयकार किया, और अपने नगर में हर्ष का शोर मचाया।
10 और जब अहीओर ने इस्राएल के परमेश्वर ने जो कुछ किया था, उसे देखा, तब उस ने परमेश्वर पर बहुत विश्वास किया, और अपनी खलड़ी का खतना किया, और आज के दिन तक इस्राएल के घराने में मिल गया।
11 और भोर होते ही उन्होंने होलोफेरनिस का सिर शहरपनाह पर लटका दिया, और हर एक पुरूष अपने अपने हथियार ले कर पहाड़ की चोटी पर दल बान्धकर निकल गया।
12 परन्तु जब अश्शूरियों ने उन्हें देखा, तब अपके सरदारोंके पास भेजे, और वे अपके प्रधानोंऔर गोत्रोंके सब हाकिमोंके पास पहुंचे।
13 तब वे होलोफेरनिस के तम्बू के पास आए, और उस से जो उसकी सब वस्तुओं का अधिकारी था, कहा, अब हमारे प्रभु को जगा; क्योंकि दासों ने हम से लड़ने को हियाव बान्धा है, कि वे सत्यानाश हो जाएं।
14 तब बगोआस में जाकर तम्बू का द्वार खटखटाया; क्योंकि उसने सोचा कि वह जूडिथ के साथ सोया है।
15 परन्तु जब किसी ने उत्तर न दिया, तब उस ने उसे खोला, और शयनकक्ष में जाकर उसे भूमि पर पड़ा हुआ मरा हुआ पाया, और उसका सिर भी धड़ से अलग हो गया था।
16 इसलिये वह ऊंचे शब्द से चिल्लाया, और चिल्लाया, और आहें भरी, और ऊंचे शब्द से चिल्लाया, और अपने वस्त्र फाड़ डाले।
17 जब वह उस तम्बू में गया, जहां यूदीत रहती थी, और जब उसे न पाया, तो बाहर निकलकर लोगों के पास चिल्लाया, और कहा,
18 इन दासोंने विश्वासघात किया है; इब्रियों में से एक स्त्री ने राजा नबूकदोनोसर के घराने को लज्जित किया है; क्योंकि देखो, होलोफेरनिस बिना सिर के भूमि पर पड़ा है।
19 जब अश्शूर की सेना के प्रधानोंने ये बातें सुनीं, तब उन्होंने अपने कोट फाड़ दिए, और उनके मन बहुत घबरा गए, और सारी छावनी में चीख पुकार और बड़ा बड़ा कोलाहल होने लगा।

अध्याय 15

1 और जब डेरों में थे, तब उन्होंने सुना, और जो कुछ हुआ उस से चकित हुए।
2 और उन पर भय और थरथराहट छा गई, यहां तक कि किसी को अपने पड़ोसी के साम्हने टिकने का साहस न रहा; और सब एक संग निकलकर मैदान और पहाड़ी देश के हर मार्ग में भाग गए।
3 और जो बैतूलिया के आस पास के पहाड़ोंमें डेरे डाले हुए थे वे भी भाग गए। तब इस्राएलियोंमें से जितने योद्धा थे, उन पर टूट पड़े।
4 तब ओजीयाह को बेतोमासथेम, और बेबै, और चोबै, और कोला और इस्राएल के सब तटोंके पास भेज दिया, कि जो कुछ किया गया था उसका वर्णन करें, और सब अपने शत्रुओं पर टूट पड़ें और उन्हें नष्ट कर डालें।
5 जब इस्राएलियोंने यह सुना, तो सब एक मन होकर उन पर टूट पड़े, और चौबै तक उनको घात किया; वैसे ही यरूशलेम और सारे पहाड़ी देश से आए लोगोंको भी घात किया, (क्योंकि मनुष्योंने उनको बता दिया या, (उनके शत्रुओं की छावनी में) और जो गलाद और गलील में थे, उन्होंने जब तक वे दमिश्क और उसकी सीमाओं से आगे नहीं निकल गए, तब तक बड़ी मारकाट करते हुए उनका पीछा किया।
6 और बेतूलिया में जो बचे हुए थे, वे अश्शूर की छावनी पर टूट पड़े, और उनको लूट लिया, और बहुत धनवान हो गए।
7 और जो इस्राएली घात करके लौट आए, उनके पास जो कुछ रह गया या; और जो गांव और नगर पहाड़ोंऔर तराई में थे, वे बहुत लूट गए; क्योंकि भीड़ बहुत बड़ी थी।
8 तब योआकिम महायाजक और यरूशलेम में रहनेवाले इस्राएलियोंके पुरनिये, परमेश्वर ने इस्राएल को जो भलाई की बातें बतायीं थीं, उन्हें देखने को, और यूदीत को देखने, और उसको नमस्कार करने को आए।
9 और जब वे उसके पास आए, तो उन्होंने एक मन होकर उसे आशीर्वाद दिया, और उस से कहा, तू यरूशलेम की महिमा है, तू इस्राएल का बड़ा गौरव है, तू हमारी जाति का बड़ा आनन्द है।
10 ये सब काम तू ने अपके हाथ से किए; तू ने इस्राएल की बहुत भलाई की, और परमेश्वर इस से प्रसन्न हुआ; सर्वशक्तिमान यहोवा की ओर से तू सर्वदा धन्य रहे। और सब लोगों ने कहा, ऐसा ही होगा।
11 और लोगों ने तीस दिन तक छावनी को लूट लिया; और उन्होंने उसका तम्बू, और उसकी सारी थाली, और खाटें, और बर्तन, और सारा सामान यूदीत होलोफेरनिस को दे दिया; और उस ने उसे लेकर अपने खच्चर पर रख दिया; और उसकी गाड़ियाँ तैयार करके उन पर रख दीं।
12 तब सब इस्राएली स्त्रियां उसे देखने को इकट्ठे दौड़ीं, और उसे आशीर्वाद दिया, और उसके लिथे नाचने लगीं; और उस ने डालियां हाथ में लेकर अपके संग की स्त्रियोंको भी दीं।
13 और उन्होंने उसे और उसकी दासी को जो उसके संग थी जलपाई की माला पहनाई, और वह सब स्त्रियोंको आगे करके नाचती हुई सब लोगोंके आगे आगे चली; और सब इस्राएली पुरुष अपके अपके हथियार पहिने हुए फूलमालाएं और गीत गाते हुए उसके पीछे चले गए। उनके मुँह में.

अध्याय 16

1 तब यूदीत सारे इस्राएल में यह धन्यवाद गाने लगी, और सब लोग उसके पीछे स्तुति का यह गीत गाने लगे।
2 और जूडिथ ने कहा, मेरे परमेश्वर के लिये डफ बजाकर भजन करो, झांझ बजाकर मेरे परमेश्वर का भजन गाओ; उसके लिये नया भजन गाओ; उसकी स्तुति करो, और उस से प्रार्थना करो।
3 क्योंकि परमेश्वर लड़ाइयों को तोड़ता है, और उसने मुझे छावनी में लोगोंके बीच में से मेरे सतानेवालोंके हाथ से बचाया है।
4 अश्शूर उत्तर दिशा से पहाड़ों से निकलकर अपनी लाखों सेना समेत आया, और उसकी भीड़ ने मूसलाधार रोक दी, और उनके सवारों ने टीलों को घेर लिया।
5 और उस ने घमण्ड किया, कि वह मेरी सीमाएं जला देगा, और मेरे जवानोंको तलवार से घात करेगा, और दूध पीते बच्चोंको भूमि पर

पटक देगा, और मेरे बच्चोंको तो अपना शिकार करेगा, और मेरी कुंवारियोंको लूट लेगा।
6 परन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा ने एक स्त्री के द्वारा उन्हें निराश कर दिया है।
7 क्योंकि वह शूरवीर जवानोंके हाथ से न गिरा, और न टाइटन्स के बेटोंने उस पर वार किया, और न बड़े दिग्गज उस पर चढ़े; परन्तु मरारी की बेटी यूदीत ने अपने रूप के सौंदर्य से उसे कमजोर कर दिया।
8 क्योंकि उस ने इस्राएल के सताए हुओं को प्रसन्न करने के लिथे अपके वैधव्य का वस्त्र उतार दिया, और अपने मुंह पर इत्र लगाया, और अपके बालोंको टायर में बान्ध लिया, और उसको धोखा देने के लिथे सनी का वस्त्र ले लिया।
9 उसके जूतों ने उसकी आंखों को मोहित कर लिया, उसकी सुन्दरता ने उसके मन को बंदी बना लिया, और फाऊशियन उसकी गर्दन से पार हो गया।
10 फारस के लोग उसके साहस से कांप उठे, और मादी उसकी कठोरता से घबरा गए।
11 तब मेरे दीन लोग आनन्द से जयजयकार करने लगे, और मेरे निर्बल ऊंचे स्वर से चिल्लाने लगे; परन्तु वे चकित हो गए; उन्होंने ऊंचे स्वर से ऊंचे शब्द बोले, परन्तु वे परास्त कर दिए गए।
12 युवतियोंके बेटोंने उन्हें भगोड़ोंके बालकोंके समान छेदकर घायल किया है; वे यहोवा की लड़ाई में नाश हो गईं।
13 मैं यहोवा के लिये एक नया गीत गाऊंगा: हे प्रभु, तू महान और महिमामय, अद्‌भुत बल और अजेय है।
14 सब प्राणी तेरी सेवा करें; क्योंकि तू ही ने कहा, और वे रचे गए; तू ने अपना आत्मा भेजा, और उस ने उनको उत्पन्न किया; और कोई तेरा शब्द रोक नहीं सकता।
15 क्योंकि जल के कारण पहाड़ अपनी नेवों से उखड़ जाएंगे, और चट्टानें तेरे साम्हने मोम की नाईं पिघल जाएंगी; तौभी तू अपने डरवैयों पर दयालु है।
16 क्योंकि सारे बलिदान तेरे सुखदायक सुगन्ध के लिथे थोड़े हैं, और सारी चर्बी तेरे होमबलि के लिथे थोड़ी है; परन्तु जो यहोवा का भय मानता है वह सब समयोंमें बड़ा है।
17 उन राष्ट्रों पर हाय जो मेरे भाइयों के विरूद्ध उठ खड़े होते हैं! न्याय के दिन सर्वशक्तिमान यहोवा उन से पलटा लेगा, और उनके शरीर में आग और कीड़े डाल देगा; और वे उन्हें महसूस करेंगे, और सर्वदा रोते रहेंगे।
18 और यरूशलेम में प्रवेश करते ही उन्होंने यहोवा को दण्डवत् किया; और जैसे ही लोग शुद्ध हो गए, उन्होंने अपने होमबलि, और निःशुल्क भेंट, और अपने उपहार चढ़ाए।
19 जूडिथ ने होलोफेरनिस का सारा सामान भी, जो लोगों ने उसे दिया था, समर्पित किया, और वह छत्र जो उसने उसके शयनकक्ष में से निकाला था, यहोवा की भेंट के लिये दे दिया।
20 सो वे लोग यरूशलेम में पवित्रस्थान के साम्हने तीन महीने तक भोज करते रहे, और यूदीत उनके साय रही।
21 इस के बाद सब अपने अपने निज भाग को लौट गए, और यूदीत बेतूलिया को जाकर अपनी निज भूमि में बनी रही, और अपने समय में सारे देश में प्रतिष्ठित हो गई।
22 और बहुतों ने उसकी लालसा की, परन्तु उसके जीवन भर किसी ने उसे न पहचाना; जब उसका पति मनश्शे मर गया, और अपने लोगों में जा मिला।
23 परन्तु वह अपने पति के घर में बहुत ही प्रतिष्ठित होती गई, और एक सौ पांच वर्ष की होकर बूढ़ी हो गई, और अपनी दासी को स्वतंत्र कर दिया; सो वह बेतूलिया में मर गई: और उन्होंने उसे उसके पति मनश्शे की गुफा में मिट्टी दी।
24 और इस्राएल के घराने ने उसके लिथे सात दिन तक विलाप किया; और मरने से पहिले उस ने अपके पति मनश्शे के सब निकटतम कुटुम्बियोंको, और अपने सब कुटुम्बियोंको अपना धन बांट दिया।
25 और यूदीत के दिनों में और उसके मरने के बहुत समय बाद तक इस्राएलियोंको कोई डरानेवाला न रहा।



एस्तेर में परिवर्धन

एस्तेर में परिवर्धन

अध्याय 10

4 तब मरदुखे ने कहा, परमेश्वर ने ये काम किए हैं।
5 क्योंकि मुझे एक स्वप्न स्मरण आता है जो मैं ने इन बातों के विषय में देखा था, और उस में से कोई भी बात बिना पूरी हुए नहीं रही।
6 एक छोटा सा सोता नदी बन गया, और वहां उजियाला, और सूर्य, और बहुत जल था: यह नदी एस्तेर है, जिस से राजा ने विवाह करके उसे रानी बनाया था।
7 और वे दो अजगर मैं और अमन हैं।
8 और वे जातियां जो यहूदियों का नाम मिटाने के लिये इकट्ठी हुई थीं।
9 और मेरी जाति यह इस्राएल है, जो परमेश्वर की दोहाई देकर बचाई गई; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को बचाया है, और यहोवा ने हमें उन सब बुराइयों से छुड़ाया है, और परमेश्वर ने ऐसे चिन्ह और बड़े बड़े अद्भुत काम दिखाए हैं, जो अन्यजातियों में नहीं किए गए।
10 इसलिये उसने दो चिट्ठियाँ डालीं, एक परमेश्वर के लोगों के लिये, और दूसरी सब अन्यजातियों के लिये।
11 और ये दोनों चिट्ठियाँ परमेश्वर के न्याय के दिन, और समय पर, सब जातियों के लोगों के लिये निकलीं।
12 तब परमेश्वर ने अपनी प्रजा को स्मरण किया, और अपनी मीरास को धर्मी ठहराया।
13 इसलिये वे दिन अदार महीने के चौदहवें और पन्द्रहवें दिन को परमेश्वर के साम्हने सभा और आनन्द और आनन्द के साथ हुआ करेंगे, और उसकी प्रजा की पीढ़ी पीढ़ी में सदा की रीति पर ऐसा ही होगा।

अध्याय 11

1 टॉल्मी और क्लियोपेट्रा के राज्य के चौथे वर्ष में, डोसिथेउस, जो कहता था कि मैं याजक और लेवी हूं, और उसका पुत्र टॉल्मी, फूरीम का यह पत्र लेकर आए, और उन्होंने कहा कि यह वही है, और टॉल्मी के पुत्र लिसिमाकस ने, जो यरूशलेम में था, इसका अर्थ बताया है।
2 महान अर्तक्षत्र के राज्य के दूसरे वर्ष के निसान महीने के पहिले दिन को, बिन्यामीन के गोत्र वाले मरदोखेउस ने, जो सीसै का परपोता और शिमी का पोता और याईर का पुत्र था, एक स्वप्न देखा;
3 वह यहूदी था और शूशन नगर में रहता था। वह एक धनी मनुष्य था और राजा के दरबार में सेवक था।
4 वह भी उन बन्दियों में से था, जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यहूदिया के राजा यकुनियास के साथ यरूशलेम से ले गया था; और उसका स्वप्न यह था:
5 देखो, देश में गर्जन, भूकम्प और कोलाहल का शब्द हो रहा है।
6 और देखो, दो बड़े अजगर लड़ने को तैयार होकर निकले, और उनका चिल्लाना बड़ा था।
7 और उनकी ललकार सुनकर सब जातियां युद्ध करने को तैयार हो गईं, कि धर्मी लोगों से लड़ें।
8 और देखो, पृथ्वी पर अंधकार, अंधकार, क्लेश, संकट, क्लेश और बड़ी हलचल का दिन आएगा।
9 और सारी धर्मी जाति घबरा गई, और अपनी बुराई से डरकर नाश होने पर थी।
10 तब उन्होंने परमेश्वर को पुकारा, और उनकी पुकार से मानो एक छोटे से सोते से बड़ी बाढ़ और बहुत जल बह निकला।
11 ज्योति और सूर्य उदय हुए, और दीन लोग ऊंचे हो गए, और गौरवशाली लोगों को खा गए।
12 जब मरदुखेउस ने यह स्वप्न देखा था, और जो कुछ परमेश्वर ने करने को ठहराया था, वह जाग उठा, और यह स्वप्न उसके मन में रहा, और वह रात तक उसके विषय में जानने की इच्छा रखता रहा।

अध्याय 12

1 और मरदोखेउस ने राजा के दो खोजों और महल के रखवालों, गबाता और थर्रा के साथ आंगन में विश्राम किया।
2 तब उसने उनकी युक्तियां सुनीं, और उनके उद्देश्यों को जांचा, और जान लिया कि वे राजा अर्तक्षत्र पर हाथ डालने वाले हैं; और उसने राजा को उनके विषय में सचेत किया।
3 तब राजा ने उन दोनों खोजों की जांच की, और जब उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया, तब उनका गला घोंट दिया गया।
4 और राजा ने ये बातें लिख लीं, और मरदोखेयुस ने भी लिख दीं।
5 तब राजा ने मरदुखे को दरबार में सेवा करने की आज्ञा दी, और इसके बदले उसे इनाम भी दिया।
6 परन्तु अगागी अमादातुस का पुत्र अमान जो राजा का बड़ा सम्मान करता था, उसने राजा के दो खोजों के कारण मरदुखेउस और उसकी प्रजा को सताने की युक्ति की।

अध्याय 13

1 पत्रों की प्रतिलिपि यह थी: महान राजा अर्तक्षत्र ने ये बातें उन हाकिमों और राज्यपालों को लिखीं जो भारत से लेकर कूश तक एक सौ सत्ताईस प्रान्तों में उसके अधीन थे।
2 उसके बाद मैं बहुत सी जातियों का स्वामी हो गया और सारे संसार पर मेरा आधिपत्य हो गया। मैं अपने अधिकार के अहंकार से नहीं, अपितु सदैव न्याय और नम्रता से व्यवहार करता रहा। मैंने यह निश्चय किया कि मैं अपनी प्रजा को सदैव शान्त जीवन में बसाऊँगा, तथा अपने राज्य को शान्तिपूर्ण बनाऊँगा और उसके मार्ग को दूर-दूर तक खोलूँगा, ताकि शान्ति को पुनःस्थापित कर सकूँ, जो सभी मनुष्यों की इच्छा है।
3 अब जब मैंने अपने सलाहकारों से पूछा कि यह कैसे हो सकता है, तो अमन, जो हमारे बीच बुद्धिमान था, और अपनी निरंतर भलाई और दृढ़ निष्ठा के कारण प्रतिष्ठित था, और जिसे राज्य में दूसरे स्थान का सम्मान प्राप्त था,
4 हमें बताया गया है कि संसार के सभी देशों में एक दुष्ट जाति बिखरी हुई है, जिनके कानून सभी देशों के विपरीत हैं और जो राजाओं की आज्ञाओं को हमेशा तुच्छ समझते हैं। इसलिए हमारे द्वारा आदरपूर्वक किया गया हमारा राज्यों का एकीकरण आगे नहीं बढ़ सकता।
5 तो फिर हम समझ गए कि केवल यही लोग निरन्तर सब मनुष्यों के विरोध में हैं, उनके नियम विचित्र हैं, और वे हमारे राज्य के लिए बुरा करते हैं, और वे हर प्रकार की बुराई करते हैं, ताकि हमारा राज्य दृढ़ न हो सके।

6 इसलिये हम ने आज्ञा दी है, कि जितने लोगों के विषय में अमन ने, जो हमारे स्थान पर ठहराया गया है, तुम्हारे पास पत्र लिखकर भेजा है, वे सब अपनी-अपनी स्त्रियों और बच्चों समेत इसी वर्ष के अदार बारहवें महीने के चौदहवें दिन को, बिना किसी दया और दया के, अपने शत्रुओं की तलवार से पूरी रीति से नाश कर दिए जाएं।
7 ताकि वे जो पहले भी और अब भी द्वेषपूर्ण हैं, एक ही दिन में हिंसा के साथ कब्र में चले जाएं, और इसी प्रकार आगे को भी हमारे मामलों को बिना किसी परेशानी के अच्छी तरह से निपटाएं।
8 तब मरदोखेउस ने प्रभु के सब कामों पर विचार करके उस से प्रार्थना की।
9 हे प्रभु, हे प्रभु, हे सर्वशक्तिमान राजा! सारा संसार तेरे वश में है; और यदि तू ने इस्राएल को बचाने का काम ठहराया है, तो कोई भी तेरा विरोध नहीं कर सकेगा।
10 क्योंकि तू ही ने स्वर्ग और पृथ्वी और आकाश के नीचे की सब अद्भुत वस्तुएं बनाईं।
11 तू तो सब वस्तुओं का प्रभु है, और हे प्रभु, तेरा साम्हना करनेवाला कोई नहीं है।
12 हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है, और यह भी जानता है कि न तो अपमान, न गर्व, न ही महिमा की इच्छा से मैंने अभिमानी मनुष्य के आगे सिर नहीं झुकाया।
13 क्योंकि मैं इस्राएल के उद्धार के लिये उसके पांव चूमने तक से प्रसन्न हो सकता था।
14 परन्तु मैं ने यह इसलिये किया, कि मनुष्य की महिमा को परमेश्वर की महिमा से अधिक प्रिय न जानूं: हे परमेश्वर, मैं तुझे छोड़ किसी की उपासना न करूंगा, और न अभिमान से करूंगा।
15 और अब, हे प्रभु परमेश्वर और राजा, अपनी प्रजा पर दया कर; क्योंकि उनकी दृष्टि हम पर लगी है कि हम को नष्ट कर दें; और जो निज भाग आरम्भ से तुम्हारा है, उसे भी वे नष्ट करना चाहते हैं।
16 जो भाग तू ने मिस्र से अपने लिये छुड़ा लिया है, उसे तुच्छ न जान।
17 मेरी प्रार्थना सुन, और अपने निज भाग पर दया कर; हमारे शोक को आनन्द में बदल दे, तब हम जीवित रहेंगे, हे यहोवा, और तेरे नाम की स्तुति करेंगे; और हे यहोवा, जो तेरी स्तुति करते हैं, उनके मुंह को बन्द न कर।
18 इसी प्रकार समस्त इस्राएल ने यहोवा की दोहाई चिल्ला चिल्ला कर दी, क्योंकि उनकी मृत्यु उनकी आंखों के सामने थी।

अध्याय 14

1 रानी एस्तेर भी मृत्यु के भय से यहोवा की शरण गई।
2 और उसने अपने शानदार वस्त्र उतार दिए, और दुख और विलाप के वस्त्र पहन लिए; और उसने कीमती इत्र के बजाय राख और गोबर से अपना सिर ढक लिया, और उसने अपने शरीर को बहुत ही दीन कर लिया, और अपने सभी आनन्द के स्थानों को अपने फटे बालों से भर लिया।
3 और उसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की, कि हे मेरे प्रभु, तू ही हमारा राजा है; हे त्यागी हुई स्त्री, तेरे सिवा मेरा कोई सहायक नहीं, मेरी सहायता कर।
4 क्योंकि मेरा ख़तरा मेरे ही हाथ में है।
5 मैं बचपन से अपने कुल के गोत्र में सुनता आया हूँ कि हे यहोवा, तू ने इस्राएल को सब लोगों में से, और हमारे पूर्वजों को उनके सब पूर्वजों में से सदा की निज भूमि करके लिया है, और जो कुछ तू ने उन से कहा था, उसे तू ने पूरा भी किया है।
6 और अब हम ने तेरे साम्हने पाप किया है; इसलिये तू ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ में कर दिया है।
7 क्योंकि हमने उनके देवताओं की पूजा की है: हे प्रभु, तू धर्मी है।
8 तौभी वे इस बात से सन्तुष्ट नहीं होते कि हम कठिन बन्धुआई में पड़े हैं, परन्तु उन्होंने अपनी मूरतों से हाथ मिलाए हैं,
9 कि जो बात तू ने अपने मुंह से कही है, उसे वे मिटा देंगे, और तेरे निज भाग को नाश करेंगे, और तेरे स्तुति करनेवालों का मुंह बन्द करेंगे, और तेरे भवन और वेदी की महिमा को बुझा देंगे।
10 और अन्यजातियों के मुंह खोल दो, कि वे मूरतों की स्तुति करें, और एक शारीरिक राजा की सदा महिमा करें।
11 हे प्रभु, अपना राजदण्ड उन लोगों को न दे जो तुच्छ हैं, और वे हमारे पतन पर न हंसें; परन्तु अपनी युक्ति स्वयं अपने ऊपर फेर लें, और उसी को दृष्टान्त बनाएं, जिसने हमारे विरुद्ध यह काम आरम्भ किया है।
12 हे यहोवा, स्मरण कर, हमारे क्लेश के समय अपने आप को प्रगट कर; और हे जातियों के राजा, हे सर्वशक्तिमत्ता के प्रभु, मुझे हियाव दे।
13 सिंह के साम्हने मेरे मुंह में वाक्पटु बातें बोल, और जो हम से युद्ध करता है, उसके मन में घृणा उत्पन्न कर, तब उसका और उसके सब समान मन वालों का अन्त हो जाएगा।
14 परन्तु अपने हाथ से हम को छुड़ा, और मुझ बेसहारा को जो तेरे सिवा और कोई सहायक नहीं, सहायता कर।
15 हे यहोवा, तू तो सब कुछ जानता है; तू जानता है कि मैं अधर्मियों की महिमा से घृणा करता हूँ, और खतनारहित लोगों के बिछौने से, और सब अन्यजातियों से घृणा करता हूँ।
16 तू मेरी आवश्यकता को जानता है, क्योंकि मैं अपने उच्च पद के चिन्ह से घृणा करती हूँ, जो मेरे प्रकट होने के दिनों में मेरे सिर पर रहता है, और मैं उससे घृणा करती हूँ, जैसे मासिक धर्म का चिथड़ा, और जब मैं अकेली होती हूँ, तब मैं उसे नहीं पहनती।
17 और तेरी दासी ने न तो आदम की मेज पर खाना खाया है, और न मैंने राजा के भोज को बड़ा मूल्य दिया है, और न अर्घ का दाखमधु पिया है।
18 हे इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा, जिस दिन से मैं यहां पहुंचाई गई, उस दिन से लेकर अब तक तेरी दासी को तेरे सिवा और कोई आनन्द नहीं हुआ।
19 हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तू निराश लोगों की आवाज सुन, और हमें दुष्टों के हाथ से छुड़ा, और मुझे मेरे भय से छुड़ा।

अध्याय 15

1 तीसरे दिन जब वह अपनी प्रार्थना पूरी कर चुकी, तो उसने अपने शोक के वस्त्र उतार दिए, और अपने महिमामय वस्त्र पहन लिए।
2 और वह बहुत ही सुन्दर रूप से सज-धज कर परमेश्वर को, जो सब वस्तुओं का देखनेवाला और बचानेवाला है, पुकार कर अपने साथ दो दासियाँ ले गई।
3 और वह एक पर झुक गई, जैसे कि वह खुद को विनम्रता से ले जा रही हो;

4 और दूसरी भी उसके पीछे-पीछे चली, और उसके पीछे-पीछे चली।
5 और वह अपनी सुन्दरता के कारण लालिमा लिये हुए थी, और उसका मुख प्रसन्न और अति सुन्दर था; परन्तु उसका मन भय के मारे व्याकुल था।
6 तब वह सब द्वारों से होकर राजा के सम्मुख खड़ी हुई, जो अपने राजसिंहासन पर विराजमान था, और राजसी वस्त्र पहने हुए था, जो सोने और मणियों से चमक रहे थे; और वह बहुत ही भयानक था।
7 तब उसने अपना प्रताप से चमकता हुआ मुख ऊपर उठाकर उस पर बहुत ही भयंकर दृष्टि डाली; और रानी गिर पड़ी, और उसका रंग पीला पड़ गया, और वह मूर्छित हो गई, और उस दासी के सिर पर जो उसके आगे जा रही थी, दण्डवत् की।
8 तब परमेश्वर ने राजा के मन को नम्रता में बदल दिया, और वह डर के मारे अपने सिंहासन से उछल पड़ा, और उसे अपनी गोद में ले लिया, जब तक कि वह अपने होश में न आ गई, और प्रेम भरे शब्दों से उसे शान्ति दी, और उससे कहा,
9 हे एस्तेर, क्या बात है? मैं तेरा भाई हूं; ढाढ़स बान्ध।
10 यद्यपि हमारी आज्ञा सामान्य है, तौभी तू न मरेगा; निकट आ।
11 और उसने अपना स्वर्ण राजदण्ड उठाया, और उसे उसकी गर्दन पर रख दिया,
12 और उसको गले लगाकर कहा, मुझ से बातें कर।
13 तब उसने उससे कहा, हे मेरे प्रभु, मैं ने तुझे परमेश्वर के दूत के समान देखा, और तेरे प्रताप से डर के मारे मेरा मन व्याकुल हो गया।
14 क्योंकि हे प्रभु, तू अद्‌भुत है, और तेरा मुख अनुग्रह से भरा हुआ है।
15 और जब वह बोल रही थी, तो वह बेहोश होकर गिर पड़ी।
16 तब राजा बहुत परेशान हुआ और उसके सभी सेवकों ने उसे सांत्वना दी।

अध्याय 16

1 भारत से लेकर कूश तक के एक सौ सत्ताईस प्रान्तों के हाकिमों और राज्यपालों तथा हमारी सारी वफादार प्रजा को महान राजा अर्तक्षत्र का नमस्कार।
2 बहुत से लोग, जितना अधिक बार अपने दयालु राजकुमारों के महान उपहारों से सम्मानित होते हैं, उतना ही अधिक वे अभिमानी हो जाते हैं,
3 और न केवल अपनी प्रजा को हानि पहुंचाने का प्रयत्न करो, परन्तु यदि तुम बहुतायत से धन न सह सको, तो जो लोग उनका भला करते हैं, उनके विरुद्ध भी व्यवहार करो।
4 और मनुष्यों में से केवल धन्यवाद ही नहीं उठा लेते, वरन उन दुष्ट मनुष्यों की महिमामयी बातों से भी घमण्डित हो जाते हैं, जो कभी अच्छे नहीं रहे; क्योंकि वे समझते हैं कि हम परमेश्वर के न्याय से बच गए हैं, जो सब कुछ देखता है और बुराई से घृणा करता है।
5 और जो लोग अपने मित्रों के कामों के प्रबन्ध के लिये नियुक्त किए जाते हैं, उनकी चिकनी चुपड़ी बातें भी बहुत से अधिकारियों को निर्दोष के खून का भागी बनाती हैं, और उन्हें ऐसी विपत्तियों में फंसा देती हैं जिनका कोई उपाय नहीं।
6 वे अपने व्यभिचार के झूठ और छल से हाकिमों की निर्दोषता और भलाई को धोखा देते हैं।
7 अब जैसा कि हमने कहा है, तुम इसे प्राचीन इतिहास से नहीं, बल्कि उन लोगों के घातक आचरण के माध्यम से हाल ही में किए गए दुष्ट कार्यों की खोज करके देख सकते हो, जिन्हें अयोग्य रूप से अधिकार दिया गया है।
8 और हमें आने वाले समय का ध्यान रखना चाहिए, कि हमारा राज्य सब मनुष्यों के लिये शान्त और शान्तिपूर्ण हो।
9 अपने उद्देश्यों को बदलकर, और हमेशा उन बातों का न्याय करके जो अधिक समान कार्यवाही से स्पष्ट होती हैं।
10 क्योंकि अमादाता का पुत्र अमान जो मकिदुनी है, वह फारसी लहू से तो पराया है, और हमारी भलाई से दूर है, और हम ने उसे परदेशी के समान ग्रहण किया है।
11 अब तक वह अनुग्रह प्राप्त कर चुका था जो हम हर जाति के प्रति दिखाते हैं, यहां तक कि वह हमारा पिता कहलाया, और राजा के बाद सब लोगों में उसका आदर किया जाता था।
12 परन्तु उस ने अपनी बड़ी प्रतिष्ठा को हाथ में न लेकर, हमारे राज्य और प्राण दोनों को छीनने की कोशिश की।
13 उन्होंने नाना प्रकार के छल और कपट से हमारे नाश की इच्छा की है; अर्थात मरदोखेयुस के विषय में जो हमारे प्राण बचाता था और सदा हमारा भला चाहता था; और निर्दोष एस्तेर के विषय में भी जो हमारे राज्य की सहभागी थी, और उसके विषय में भी जो अपनी सारी जाति समेत हमारे ही राज्य की सहभागी थी।
14 क्योंकि उसने सोचा था कि इन्हीं तरीकों से उसने हमें मित्रहीन पाकर फारसियों का राज्य मकिदुनिया के लोगों को सौंप दिया है।
15 परन्तु हम देखते हैं कि यहूदी, जिन्हें इस दुष्ट दुष्ट ने सर्वनाश के लिये पहुंचा दिया है, कोई कुकर्मी नहीं हैं, परन्तु बहुत ही न्यायपूर्ण नियमों के अनुसार चलते हैं।
16 और वे परमप्रधान और पराक्रमी जीवते परमेश्वर की सन्तान बनें, जिस ने हमें और हमारे पूर्वजों को राज्य का दायित्व बहुत उत्तम रीति से दिया है।
17 इसलिये अच्छा यह होगा कि तुम उन पत्रों को पूरा न करो जो अमदाता के पुत्र अमान ने तुम्हारे पास भेजे हैं।
18 क्योंकि जो इन कामों का करनेवाला था, वह अपने सारे घराने समेत शूशन के फाटकों पर फाँसी पर लटका दिया गया है। परमेश्वर जो सब पर शासन करता है, वह उसके कामों के अनुसार तुरन्त बदला लेने वाला है।
19 इसलिये तुम इस पत्र की प्रतिलिपियाँ सब स्थानों में प्रकाशित करो, ताकि यहूदी अपने नियमों के अनुसार स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत कर सकें।
20 और तुम उनकी सहायता करना, कि उसी दिन, जो अदार बारहवें महीने का तेरहवां दिन होगा, उन लोगों से पलटा लिया जाए, जो उनके संकट के समय उन पर चढ़ाई करेंगे।
21 क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उस दिन को, जिस में चुने हुए लोग नाश होने वाले थे, उनके लिये आनन्द कर दिया है।
22 इसलिये तुम अपने पवित्र पर्वों में सब प्रकार के भोजों के साथ इसे भी एक मुख्य दिन मानना।
23 ताकि अब और भविष्य में भी हम और हमारे प्रिय फारसी सुरक्षित रहें; परन्तु जो लोग हमारे विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हैं, उन्हें विनाश का स्मरण हो।
24 इसलिये हर एक शहर और हर एक देश, जो इन बातों के अनुसार नहीं करेगा, आग और तलवार से बिना दया के नष्ट कर दिया जाएगा, और वह न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि जंगली

जानवरों और पक्षियों के लिए भी हमेशा के लिए घृणित बना दिया
जाएगा।

THE Wisdom OF Solomon

सुलैमान की बुद्धि

अध्याय 1

1 हे पृथ्वी के न्यायियों तुम धर्म से प्रेम रखो; अच्छे
मन से प्रभु का स्मरण करो, और सरलता से उसकी
खोज करो।
2 क्योंकि जो उसकी परीक्षा नहीं करते, वह उन में से
पाया जाएगा; और अपने आप को ऐसे लोगों के
सामने प्रगट करता है जो उस पर अविश्वास नहीं
करते।
3 क्योंकि व्यर्थ की कल्पनाएं परमेश्वर से अलग हो
जाती हैं, और उसकी शक्ति परखने पर मूर्खों को
डांटती है।
4 क्योंकि दुष्ट प्राणी में बुद्धि प्रवेश नहीं करती; न ही
उस शरीर में निवास करो जो पाप के अधीन है।
5 क्योंकि अनुशासन की पवित्र आत्मा छल से दूर
रहेगी, और निर्बुद्धि विचारों से दूर रहेगी, और
कुटिलता के आने पर ठहर न सकेगी।
6 क्योंकि बुद्धि प्रेमी आत्मा है; और उसकी निन्दा
करनेवाले को निर्दोष न ठहराएगा; क्योंकि परमेश्वर
उसकी लगाम का साक्षी, और उसके हृदय का सच्चा
देखनेवाला, और उसकी जीभ का सुननेवाला है।
7 क्योंकि प्रभु का आत्मा जगत में व्याप्त है, और
जिस में सब कुछ है, वह वाणी का ज्ञान रखता है।
8 इस कारण जो कुटिल बातें बोलता है, वह छिप
नहीं सकता; और पलटा लेनेवाला भी दण्ड देकर
उस से दूर नहीं होता।
9 क्योंकि दुष्टोंकी युक्ति का पता लगाया जाएगा, और
उसके वचन यहोवा के पास पहुंचेंगे, और उसके बुरे
काम प्रगट होंगे।
10 क्योंकि जलन का कान सब बातें सुनता है, और
बुड़बुड़ाने का शब्द छिप नहीं पाता।
11 इसलिये कुड़कुड़ाने से सावधान रहो, जो
लाभहीन है; और अपनी जीभ को निन्दा करने से
रोको; क्योंकि कोई गुप्त बात ऐसी नहीं, जो व्यर्थ
ठहरती हो; और जो मुंह विश्वास करता है, वह प्राण
को घात करता है।
12 अपने जीवन की भूल के कारण मृत्यु का यत्न न
करो; और अपने हाथों के कामों से अपने आप को
विनाश में न फंसाओ।
13 क्योंकि परमेश्वर ने मृत्यु नहीं बनाई, और न
जीवितोंके नाश से प्रसन्न होता है।
14 क्योंकि उस ने सब वस्तुएं इसलिये उत्पन्न कीं, कि
वे बनी रहें; और जगत की पीढ़ियां स्वस्थ रहें; और न
उनमें विनाश का विष है, और न पृथ्वी पर मृत्यु का
राज्य है;
15 (क्योंकि धर्म अमर है:)
16 परन्तु भक्तिहीन मनुष्योंने अपके कामोंऔर
वचनोंसे उसे अपने पास बुला लिया; क्योंकि जब
उन्हों ने उसे अपना मित्र समझा, तब उसे व्यर्थ कर
डाला, और उसके साथ वाचा बान्ध ली, क्योंकि वे ही
उसके सहभागी होने के योग्य हैं।

अध्याय 2

1 क्योंकि भक्तिहीन लोग आपस में वाद-विवाद
करके कहते थे, परन्तु सीधे नहीं, कि हमारा जीवन
छोटा और कठिन है, और मनुष्य की मृत्यु का कोई
उपाय नहीं, और न कोई मनुष्य कब्र में से लौट आया
हो।
2 क्योंकि हम सब साहस के समय जन्मे हैं; और
इसके बाद हम ऐसे होंगे मानो हम कभी हुए ही न हों;
क्योंकि हमारी सांसें हमारे नाकों में धुएँ के समान हैं,
और हमारे हृदय के हिलने-डुलने में एक छोटी सी
चिंगारी है।
3 और वह बुझते ही हमारा शरीर राख हो जाएगा,
और हमारी आत्मा शीतल वायु की नाईं लोप हो
जाएगी।
4 और हमारा नाम समय के साथ भुला दिया जाएगा,
और हमारे काम कोई स्मरण न रखेगा, और हमारा
प्राण बादल की नाईं मिट जाएगा, और कोहरे की
नाईं फैल जाएगा, जो बादलों की किरणों से उड़
जाता है। सूरज, और उसकी गर्मी से उबरना।
5 क्योंकि हमारा समय मिटती हुई छाया के समान है;
और हमारे अन्त के बाद फिर लौटना संभव नहीं;
क्योंकि उस पर ऐसी मुहर लगा दी गई है, कि कोई
फिर लौटकर न आए।
6 इसलिये आओ, हम उन अच्छी वस्तुओं का आनन्द
उठाएं जो वर्तमान में हैं: और हम जवानी की नाईं
शीघ्रता से प्राणियों का उपयोग करें।
7 हम अपने आप को महँगे दाखमधु और इत्र से तृप्त
करें, और बसंत का कोई भी फूल हमारे पास से न
जाने पाए।
8 आओ, हम अपने आप को गुलाब की कलियों का
मुकुट पहनाएं, इससे पहिले कि वे मुरझा जाएं;
9 हम में से कोई भी अपनी प्रसन्नता का भाग बिना न
जाने पाए; हम अपने आनन्द के चिन्ह हर जगह छोड़ें;
क्योंकि हमारा भाग यही है, और हमारा भाग यही है।

10 हम कंगाल धर्मी मनुष्य पर अन्धेर करें, विधवा को न छोड़ें, और बूढ़ोंके पके बालों का आदर न करें।
11 न्याय की व्यवस्था हमारी शक्ति ठहरे; क्योंकि जो निर्बल है, वह व्यर्थ ठहरता है।
12 इसलिये आओ हम धर्मी की घात में रहें; क्योंकि वह हमारी बारी के पक्ष में नहीं है, और वह हमारे कामों के विपरीत शुद्ध है: वह व्यवस्था का अपमान करने के कारण हमें डांटता है, और हमारी शिक्षा के उल्लंघनों पर हमारी बदनामी का विरोध करता है।
13 वह परमेश्वर का ज्ञान होने का दावा करता है: और अपने आप को प्रभु की सन्तान कहता है।
14 वह हमारे विचारों को धिक्कारने के लिये रचा गया है।
15 वह देखने में भी हमें दुख देता है; क्योंकि उसका जीवन और मनुष्योंका सा नहीं, उसकी चाल-चलन और ही प्रकार की है।
16 हम उसके साम्हने निकम्मे ठहरते हैं; वह हमारे चालचलन से ऐसा दूर रहता है मानो वह गंदगी से दूर रहता है; वह धर्मियों के अन्त का समाचार सुनाता है, कि वे धन्य हो जाएं, और घमण्ड करता है, कि परमेश्वर उसका पिता है।
17 आओ, हम देखें कि उसकी बातें सच हैं या नहीं; और हम परखें कि उसके अन्त में क्या होगा।
18 क्योंकि यदि धर्मी मनुष्य परमेश्वर का पुत्र हो, तो वह उसकी सहाथता करेगा, और उसे उसके शत्रुओं के हाथ से बचाएगा।
19 आओ, हम उसे द्वेष और यातना से जांचें, कि हम उसकी नम्रता को जानें, और उसके धैर्य को परखें।
20 आओ, हम उसे लज्जाजनक मृत्यु का दण्ड दें: क्योंकि वह अपने ही कहने से प्रतिष्ठित होगा।
21 उन्होंने ऐसी कल्पना की, और धोखा खा गए, क्योंकि उनकी दुष्टता ने उन्हें अन्धा कर दिया है।
22 और परमेश्वर के भेदोंको वे नहीं जानते थे, और न धर्म के पारिश्रमिक की आशा रखते थे, और न निर्दोष मनुष्योंके प्रतिफल की आशा रखते थे।
23 क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अमर होने के लिथे उत्पन्न किया, और उसे अपनी सनातनता का प्रतिरूप बनाया।
24 तौभी शैतान की डाह से मृत्यु जगत में आई; और जो उसका पक्ष लेते हैं वे उसे पाते हैं।

अध्याय 3

1 परन्तु धर्मियोंकी आत्मा परमेश्वर के हाथ में रहती है, और कोई पीड़ा उन्हें छू न सकेगी।
2 वे निर्बुद्धियों की दृष्टि में मर गए, और उनका चले जाना दु:ख समझा जाता है।
3 और उनका हमारे पास से जाना सत्यानाश होगा; परन्तु वे कुशल से हैं।
4 क्योंकि यद्यपि वे मनुष्योंके साम्हने दण्ड पाते हैं, तौभी उनकी आशा अमरता से भरी है।
5 और जब थोड़ी ताड़ना हुई, तो उनको बड़ा प्रतिफल मिलेगा; क्योंकि परमेश्वर ने उनको परखा, और अपने योग्य ठहराया।
6 उस ने उनको भट्ठी में सोने के समान जांचा, और होमबलि करके ग्रहण किया।
7 और दण्डवत करने के समय वे चमकेंगे, और खूंटी के बीच में चिंगारी की नाईं इधर उधर दौड़ेंगे।
8 वे जाति जाति का न्याय करेंगे, और प्रजा पर प्रभुता करेंगे, और उनका प्रभु सर्वदा राज्य करेगा।
9 जो उस पर भरोसा रखते हैं, वे सत्य को समझेंगे; और जो प्रेम में विश्वासयोग्य हैं, वे उसके साथ बने रहेंगे; क्योंकि अनुग्रह और दया उसके पवित्र लोगों पर है, और वह अपने चुने हुओं की चिन्ता करता है।
10 परन्तु दुष्ट लोग अपनी कल्पना के अनुसार दण्ड पाएँगे, क्योंकि उन्होंने धर्मियों की उपेक्षा करके यहोवा को त्याग दिया है।
11 क्योंकि जो बुद्धि और पालन-पोषण को तुच्छ जानता है, वह दुखी है, और उनकी आशा व्यर्थ है, उनका परिश्रम निष्फल और उनके काम निष्फल हैं।
12 उनकी स्त्रियां मूर्ख और उनके लड़के-बाले दुष्ट हैं;
13 उनकी सन्तान शापित है। इसलिए धन्य है वह बंजर जो निर्मल है, जिसने पापपूर्ण बिस्तर को नहीं जाना है: वह आत्माओं के दर्शन में फल प्राप्त करेगी।
14 और वह खोजा धन्य है, जिस ने अपने हाथों से कोई अधर्म का काम नहीं किया, और न परमेश्वर के विरूद्ध बुरी बातें सोची; क्योंकि उसे विश्वास का विशेष उपहार दिया जाएगा, और प्रभु के मन्दिर में उसके मन को अधिक भाने वाला भाग दिया जाएगा।
15 क्योंकि अच्छे परिश्रम का फल महिमामय होता है, और बुद्धि की जड़ कभी नष्ट नहीं होती।
16 और व्यभिचारी लोग सिद्ध न होंगे, और कुटिल वंश का वंश जड़ से उखाड़ दिया जाएगा।

17 क्योंकि चाहे वे बहुत दिन तक जीवित रहें, तौभी उनका कुछ आदर न किया जाएगा, और उनका अन्तकाल भी अनादर से भरा रहेगा।
18 या यदि वे शीघ्र मर जाएं, तो परीक्षा के दिन उन्हें न आशा रहेगी और न शान्ति।
19 क्योंकि अधर्मी पीढ़ी का अन्त भयानक है।

अध्याय 4

1 सन्तान न रखना और सद्‌गुण रखना उत्तम है; क्योंकि उसका स्मरण अमर है; क्योंकि परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही उस की चर्चा करते हैं।
2 जब वह उपस्थित होता है, तो मनुष्य उसका उदाहरण लेते हैं; और जब यह चला जाता है, तो वे इसकी इच्छा करते हैं: यह एक मुकुट पहनता है, और हमेशा के लिए विजयी होता है, जीत हासिल करने के बाद, बेदाग पुरस्कारों के लिए प्रयास करता है।
3 परन्तु दुष्टोंका वंश न पनपेगा, और न दुष्टोंके कारण गहरी जड़ पकड़ेगा, और न दृढ़ नेव डालेगा।
4 यद्यपि वे कुछ समय तक डालियोंमें फलते-फूलते हैं; तौभी टिके न रहेंगे, वे आँधी से हिल उठेंगे, और आँधी के झोंके से जड़ से उखाड़ दिए जाएँगे।
5 असिद्ध डालियां तोड़ दी जाएंगी, उनका फल निकम्मा हो जाएगा, खाने के योग्य न पकेगा, वरन व्यर्थ मिलेगा।
6 क्योंकि जो बालक अवैध बिछौने से उत्पन्न होते हैं, वे मुकदमे में अपने माता-पिता के विरुद्ध दुष्टता के गवाह होते हैं।
7 परन्तु धर्मी चाहे मृत्यु से रोका जाए, तौभी वह विश्राम पाएगा।
8 क्योंकि आदर की आयु वह नहीं है जो बहुत समय से मानी जाती है, और न वह वर्षों की गिनती से मापी जाती है।
9 परन्तु बुद्धि मनुष्योंके लिये पक्के बालके समान है, और निष्कलंक जीवन बुढ़ापेके समान है।
10 उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया, और वह उसे प्रिय था: यहां तक कि पापियों के बीच में रहकर वह प्रसन्न हो गया।
11 और वह तुरन्त उठा लिया गया, ऐसा न हो कि दुष्टता से उसकी समझ बदल जाए, या छल से उसका प्राण धोखा खा जाए।
12 क्योंकि कुटिलता का जादू सच्ची बातों को अस्पष्ट कर देता है; और वासना की भटकन सरल मन को कमज़ोर कर देती है।
13 वह थोड़े ही समय में सिद्ध हो गया, और बहुत समय पूरा किया।
14 क्योंकि यहोवा ने उसके मन को प्रसन्न किया, इस कारण उस ने उसे दुष्टोंके बीच में से निकालने के लिये फुर्ती की।
15 और लोगों ने यह देखा, और न समझा, और यह बात अपने मन में न रखी, कि उसका अनुग्रह और करूणा उसके पवित्र लोगों पर है, और वह अपने चुने हुओं का आदर करता है।
16 इस प्रकार जो धर्मी मर गया है, वह जीवित दुष्टोंको दोषी ठहराएगा; और युवावस्था जो अधर्मी के कई वर्षों और बुढ़ापे से शीघ्र ही पूर्ण हो जाती है।
17 क्योंकि वे बुद्धिमानों का अन्त देखेंगे, और न समझ सकेंगे कि परमेश्वर ने सम्मति करके उसके विषय में क्या ठहराया है, और यहोवा ने उसे किस प्रकार से सुरक्षित रखा है।
18 वे उसे देखकर उसका तिरस्कार करेंगे; परन्तु परमेश्वर उनका उपहास करेगा, और वे भविष्य में घृणित लोथ और सदा के लिये मरे हुओं के बीच निन्दा के पात्र बने रहेंगे।
19 क्योंकि वह उनको फाड़ डालेगा, और सिर के बल पटक देगा, और वे बोलने से रह जाएंगे; और वह उनको नेव से हिला देगा; और वे पूरी तरह से उजाड़ दिए जाएंगे, और दुख में रहेंगे; और उनका स्मरण नाश हो जाएगा।
20 और जब वे अपके अपके पापोंका लेखा लिखकर देंगे, तब वे डरते हुए आएंगे; और उनके अधर्म के कामोंके कारण उनको उनके साम्हने समझाया जाएगा।

अध्याय 5

1 तब धर्मी जन अपने दु:ख देनेवालोंके साम्हने बड़े हियाव से खड़ा होगा, और अपने परिश्रम का लेखा न लेगा।
2 जब वे इसे देखेंगे, तो भयानक भय से व्याकुल हो जाएंगे, और उसके उद्धार की विचित्रता से, यहां तक कि उनकी आशा से कहीं बढ़कर, चकित हो जाएंगे।
3 और वे मन फिराएंगे, और आत्मा के दुख से कराहते हुए अपने मन में कहेंगे, यह वही है, जिसे

हम कभी कभी ठट्ठों में उड़ाते थे, और नामधराई की कहावत कहते थे।
4 हम मूर्खों ने उसके प्राण को पागलपन, और उसके अन्त को निरादर समझा।
5 वह परमेश्वर की सन्तान में कैसे गिना गया, और पवित्र लोगोंके बीच उसका भाग कौन सा है!
6 इस कारण हम सच्चाई के मार्ग से भटक गए हैं, और धर्म का प्रकाश हम तक नहीं पहुंचा, और धर्म का सूर्य हम पर नहीं चमका।
7 हम ने दुष्टता और विनाश के मार्ग में चलते चलते थक गए हैं; हां, हम जंगल में से होकर चले हैं, जहां मार्ग नहीं; परन्तु प्रभु का मार्ग हम ने नहीं जाना।
8 घमण्ड से हमें क्या लाभ हुआ? या हमारे घमण्ड से भरे हुए धन से हमें क्या लाभ हुआ?
9 वे सब वस्तुएँ छाया की नाईं, और झट से खींचे हुए खम्भे की नाईं मिट जाती हैं;
10 और जल की लहरों पर चलनेवाली नाव के समान उसका पता नहीं चलता, और लहरोंमें उसका मार्ग नहीं मिलता;
11 या जैसे पक्षी आकाश में उड़ता है, तो उसके मार्ग का कोई चिन्ह नहीं मिलता, पर हल्की वायु उसके पंखों के फड़फड़ाने से और उनके तीव्र शब्द और हलचल से अलग होकर पार हो जाती है, और उसके बाद कोई चिन्ह नहीं मिलेगा कि वह कहाँ गयी थी;
12 या जैसे तीर किसी निशान पर चलाया जाता है, तो वह हवा को दो हिस्सों में बांट देता है, और हवा तुरंत एक साथ आ जाती है, यहां तक कि कोई नहीं जान सकता कि वह कहां से गुजरी।
13 इसी रीति से हम भी जन्म लेते ही अपने अन्त की ओर खीचने लगे, और दिखाने के लिये सद्गुण का कोई चिन्ह न रहा; परन्तु अपनी ही दुष्टता में भस्म हो गए।
14 क्योंकि भक्तिहीन की आशा हवा से उड़ती हुई धूल के समान है; एक पतले झाग की तरह जो आँधी के साथ उड़ जाता है; उस धुएँ के समान जो आँधी के साथ इधर उधर फैल जाता है, और एक दिन के अतिथि की स्मृति के समान मिट जाता है।
15 परन्तु धर्मी सर्वदा जीवित रहेगा; उनका प्रतिफल यहोवा के हाथ में है, और उनकी सुधि परमप्रधान के हाथ में है।
16 इस कारण वे यहोवा के हाथ से महिमा का राज्य, और सुन्दर मुकुट पाएंगे; क्योंकि वह अपने दाहिने हाथ से उन्हें ढांप लेगा, और अपनी भुजा से उनकी रक्षा करेगा।
17 वह अपक्की जलन को पूरा कवच बनाएगा, और अपके शत्रुओंका पलटा लेनेके लिथे प्राणी को अपना हथियार बनाएगा।
18 वह धर्म को झिलम की नाईं, और टोप के बदले सच्चा न्याय पहिनेगा।
19 वह पवित्रता को अजेय ढाल बनाएगा।
20 वह अपने भड़के हुए क्रोध को तलवार की नाईं तेज करेगा, और जगत उसके साम्हने मूर्खोंके विरूद्ध लड़ेगा।
21 तब सीधा निशाना साधनेवाले वज्र दूर तक चलेंगे; और वे बादलों से, जैसे खींचे हुए धनुष से, लक्ष्य की ओर उड़ेंगे।
22 और क्रोध से भरे हुए ओले पत्थर के धनुष की नाईं फेंके जाएंगे, और समुद्र का जल उन पर भड़क उठेगा, और बाढ़ उनको डुबा देगी।
23 हां, प्रचण्ड वायु उनके विरूद्ध उठेगी, और आँधी की नाईं उनको उड़ा ले जाएगी; इस प्रकार अधर्म से सारी पृथ्वी उजाड़ जाएगी, और बुराई से शूरवीरों की गद्दी उलट जाएगी।

अध्याय 6

1 इसलिये हे राजाओं, सुनो, और समझो; हे पृथ्वी की छोर के न्यायियों, सीखो।
2 हे प्रजा पर प्रभुता करनेवालों, कान लगाओ, और जाति जाति की भीड़ पर घमण्ड करो।
3 क्योंकि प्रभु की ओर से तुम्हें सामर्थ दी गई है, और प्रभुता परमप्रधान की ओर से दी गई है, वही तुम्हारे कामों को परखेगा, और तुम्हारी युक्तियों को जांचेगा।
4 क्योंकि तुम ने उसके राज्य में सेवक होकर न तो ठीक से न्याय किया, और न व्यवस्था को माना, और न परमेश्वर की सम्मति के अनुसार चले;
5 वह तुम पर भयंकर और वेग से आ पड़ेगा; क्योंकि ऊंचे स्थानों पर रहनेवालोंको कड़ा दण्ड दिया जाएगा।
6 क्योंकि करूणा शीघ्र ही दुष्टों को क्षमा कर देती है, परन्तु शूरवीरोंको बड़ी यातना मिलती है।
7 क्योंकि जो सब पर प्रभु है, वह किसी का भय न खाएगा, और न किसी के बड़े का भय देखेगा; क्योंकि उसी ने छोटे और बड़े को बनाया, और सब की एक समान चिन्ता करता है।
8 परन्तु शूरवीरोंपर बड़ी कठिन परीक्षा आ पड़ेगी।
9 इसलिये, हे राजाओं, मैं तुम से इसलिये कहता हूं, कि तुम बुद्धि सीखो, और धोखा न खाओ।

10 क्योंकि जो पवित्र बने रहते हैं, वे पवित्र समझे जाएंगे; और जो ऐसी बातें सीख चुके हैं, वे क्या उत्तर देंगे।
11 इसलिये अपना स्नेह मेरी बातों पर लगा; उनकी इच्छा करो, और तुम्हें शिक्षा दी जाएगी।
12 बुद्धि महिमामय है, और कभी मिटती नहीं; वरन जो उस से प्रेम रखते हैं वह उन पर प्रगट होती है, और जो उसके खोजी हैं उन पर वह प्रगट होती है।
13 वह अपने चाहनेवालों को पहिले अपने आप को प्रगट करने से रोकती है।
14 जो कोई उसे भोर से ढूंढ़े, उसे बड़ा कष्ट न होगा; क्योंकि वह उसे अपने द्वार पर बैठा हुआ पाएगा।
15 इसलिये उसके विषय में सोचना बुद्धि की सिद्धि है; और जो कोई उसकी बाट जोहता है, वह तुरन्त घबरा जाता है।
16 क्योंकि वह अपने योग्य लोगोंको ढूंढ़ती फिरती है, और चालचलन में उन पर कृपा दिखाती है, और हर विचार में उन से मिलती है।
17 क्योंकि उसकी असली शुरुआत अनुशासन की इच्छा है; और अनुशासन की परवाह प्रेम है;
18 और प्रेम उसकी व्यवस्थाओं का पालन करना है; और उसके नियमों पर ध्यान देना अविनाशीता का आश्वासन है;
19 और अविनाशीता हमें परमेश्वर के निकट पहुंचाती है;
20 इसलिये बुद्धि की अभिलाषा राज्य को पहुंचाती है।
21 हे प्रजा के राजाओं, यदि तुम सिंहासनोंऔर राजदण्डोंमें प्रसन्न हो, तो बुद्धि का आदर करो, जिस से तुम सर्वदा राज्य करते रहो।
22 और बुद्धि के विषय में वह क्या है, और किस रीति से उत्पन्न हुई, मैं तुम्हें बताऊंगा, और भेद न छिपाऊंगा; परन्तु जन्म के आरम्भ से ही उसे ढूंढूंगा, और उसका ज्ञान प्रकाश में लाऊंगा, और सत्य से पार नहीं पाओगे.
23 और मैं डाह भड़का कर न चलूंगा; क्योंकि ऐसे मनुष्य की बुद्धि से कोई संगति न होगी।
24 परन्तु बुद्धिमानों की बहुतायत से जगत का कल्याण होता है, और बुद्धिमान राजा से प्रजा का पालन होता है।
25 इसलिये तुम मेरे वचनोंके द्वारा शिक्षा ग्रहण करो, और उस से तुम्हारा भला होगा।

अध्याय 7

1 मैं आप भी सब के समान एक नाशवान मनुष्य हूं, और जो पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ उसी की सन्तान हूं।
2 और दस महीने के बीतने पर मेरी माता के गर्भ में मनुष्य के लहू में और उस सुख से जो नींद के साथ उत्पन्न हुआ, शरीर का रूप धारण किया गया।
3 और जब मैं उत्पन्न हुआ, तो मैं सामान्य वायु में खिंचा, और पृथ्वी पर, जो उसके समान स्वभाव की है, गिर पड़ा, और जो पहला स्वर मैं ने निकाला, वह और सब के समान रोने का था।
4 मुझे लपेटे हुए कपड़े पहनाए गए, और वह भी बड़ी देखभाल के साथ।
5 क्योंकि ऐसा कोई राजा नहीं, जिसका जन्म किसी और रीति से हुआ हो।
6 क्योंकि सब मनुष्योंके जीवन में प्रवेश एक ही और निकास भी एक ही है।
7 इसलिये मैं ने प्रार्थना की, और मुझे समझ दी गई; मैं ने परमेश्वर को पुकारा, और बुद्धि की आत्मा मेरे पास आई।
8 मैं ने उसको राजदंडोंऔर राजगद्दीओंसे अधिक प्रिय जाना, और धन को उसके साम्हने कुछ भी न जाना।
9 और मैं ने उसकी तुलना किसी मणि से नहीं की, क्योंकि उसके लिये सब सोना रेत के समान है, और चान्दी उसके साम्हने मिट्टी के समान ठहरेगी।
10 मैं ने उस से स्वास्थ्य और सौन्दर्य से अधिक प्रेम किया, और उजियाले के बदले उसे पाना चाहा; क्योंकि जो उजियाला उस से निकलता है, वह कभी बुझता नहीं।
11 उसके साथ सब प्रकार की अच्छी वस्तुएं मेरे पास आईं, और उसके हाथ में असंख्य धन थे।
12 और मैं उन सभोंके कारण आनन्दित हुआ, क्योंकि बुद्धि उनके आगे आगे चलती थी: और मैं न जानता था, कि वह उन की माता है।
13 मैं ने परिश्रम से सीखा, और उदारता से उसे बताता हूं: मैं उसका धन नहीं छिपाता।
14 क्योंकि वह मनुष्यों के लिये ऐसा खज़ाना है, जो कभी नष्ट नहीं होता; जिसका उपयोग करने वाले परमेश्वर के मित्र बन जाते हैं, और सीखने से मिलने वाले वरदानों के कारण उनकी प्रशंसा की जाती है।
15 परमेश्वर ने मुझे अपनी इच्छा के अनुसार बोलने, और जो कुछ मुझे दिया गया है उसके अनुसार गर्भ धारण करने की आज्ञा दी है; क्योंकि वही है जो बुद्धि

की ओर ले जाता है, और बुद्धिमानों को मार्ग दिखाता है।
16 क्योंकि हम और हमारी बातें उसके हाथ में हैं; सारी बुद्धि भी, और कारीगरी का ज्ञान भी।
17 क्योंकि उस ने मुझे वस्तुओं का कुछ ज्ञान दिया है, अर्थात् यह जान लिया है कि जगत् की रचना किस रीति से हुई, और तत्वों की क्या रीति है।
18 आदि, अन्त, और समयों का मध्य, अर्थात् सूर्य के घूमने का परिवर्तन, और ऋतुओं का परिवर्तन।
19 वर्षों की परिक्रमा, और तारों की स्थिति;
20 जीवित प्राणियों का स्वभाव, और बनपशुओं का क्रोध; वायु का उपद्रव, और मनुष्यों का तर्क; पौधों की विविधता, और जड़ों के गुण:
21 और जो कुछ गुप्त या प्रगट है, वह सब मैं जानता हूं।
22 क्योंकि बुद्धि ने जो सब वस्तुओं का कर्ता है, मुझे सिखाया; क्योंकि उस में समझनेवाली आत्मा है जो पवित्र, एक ही, अनेक गुना, सूक्ष्म, जीवंत, स्पष्ट, निष्कलंक, निष्कलंक, चोट पहुंचाने वाली नहीं, और जो अच्छी है उस से प्रेम रखती है। त्वरित, जिसे होने नहीं दिया जा सकता, अच्छा करने के लिए तैयार,
23 मनुष्य के प्रति दयालु, दृढ़, निश्चित, चिंता से मुक्त, सभी शक्ति रखने वाला, सभी चीजों की देखरेख करने वाला, और सभी समझ से गुजरने वाला, शुद्ध और सबसे सूक्ष्म, आत्मा।
24 क्योंकि बुद्धि सब गति से अधिक गतिमान है, वह अपनी पवित्रता के कारण सब वस्तुओं से होकर गुजरती है।
25 क्योंकि वह परमेश्वर की शक्ति की सांस है, और सर्वशक्तिमान की महिमा से बहने वाला शुद्ध प्रभाव है: इस कारण कोई अशुद्ध वस्तु उस में प्रवेश नहीं कर सकती।
26 क्योंकि वह अनन्त प्रकाश की चमक, परमेश्वर की शक्ति का बेदाग दर्पण, और उसकी भलाई की छवि है।
27 और वह एक होकर सब कुछ कर सकती है: और अपने आप में रहकर सब कुछ नया कर देती है: और सब युगों में पवित्र आत्माओं में प्रवेश करके उन्हें परमेश्वर का मित्र और भविष्यद्वक्ता बनाती है।
28 क्योंकि परमेश्वर बुद्धि से रहनेवाले को छोड़ और किसी से प्रेम नहीं रखता।
29 क्योंकि वह सूर्य से भी अधिक सुन्दर है, और सब प्रकार के तारागणों से भी अधिक सुन्दर है; वह प्रकाश से तुलना करके उसके भी पहले पाई जाती है।
30 क्योंकि इसके बाद रात आएगी, परन्तु बुराई बुद्धि पर प्रबल न होगी।

अध्याय 8

1 बुद्धि एक सिरे से दूसरे सिरे तक प्रबलता से पहुंचती है, और सब बातों को मधुरता से व्यवस्थित करती है।
2 मैं ने उस से प्रेम रखा, और बचपन ही से उसे ढूंढ़ता रहा, मैं ने उसे अपनी पत्नी बनाना चाहा, और मैं उसके सौन्दर्य का प्रेमी हो गया।
3 वह परमेश्वर से बातचीत करके अपना बड़प्पन बढ़ाती है; हां, सब वस्तुओं का प्रभु आप ही उस से प्रेम रखता है।
4 क्योंकि वह परमेश्वर के ज्ञान के भेदोंको जानती है, और उसके कामोंकी प्रेमी है।
5 यदि धन इस जीवन में चाहने योग्य वस्तु हो; बुद्धि से बढ़कर क्या है, जो सब बातों में काम आती है?
6 और यदि विवेक से काम किया जाए; उन सब में से कौन उससे अधिक चतुर काम करने वाला है?
7 और यदि कोई मनुष्य धर्म से प्रीति रखता है, तो उसके परिश्रम सद्गुण हैं: क्योंकि वह संयम और विवेक, न्याय और धैर्य सिखाती है: ये ऐसी बातें हैं, कि मनुष्यों के जीवन में इससे अधिक लाभदायक कोई वस्तु नहीं हो सकती।
8 यदि कोई बहुत अनुभव की अभिलाषा रखता है, तो वह प्राचीन बातों को जानती है, और आनेवाली बातों का ठीक अनुमान लगाती है; वह भाषणों की सूक्ष्मताएं जानती है, और गूढ़ वाक्यों को समझा सकती है; वह चिन्हों और चमत्कारों, और ऋतुओं और समयों की घटनाओं को पहले से जानती है।
9 इसलिये मैं ने यह जान कर उसे अपने पास ले जाना चाहा, कि वह मेरे साथ रहे। और यह जानकर कि वह अच्छी बातों की सलाह देगी, और चिन्ता और शोक में शान्ति देगी।
10 उसके कारण मैं जवान होकर भी भीड़ में मेरा मान, और पुरनियों में आदर पाऊंगा।
11 मैं न्याय करने में तत्पर पाया जाऊंगा, और महापुरुषों के साम्हने मेरी प्रशंसा की जाएगी।
12 जब मैं अपनी जीभ पर लगाम लगाता हूं, तब वे मेरी फुरसत का ध्यान रखते हैं, और जब मैं बोलता हूं,

तब वे मेरी ओर कान लगाते हैं; यदि मैं अधिक बोलता हूं, तो वे अपने मुंह पर हाथ रख लेते हैं।
13 और उसके द्वारा मैं अमरता प्राप्त करूंगा, और अपने पीछे आनेवालोंके लिये एक चिरस्थायी स्मृति छोड़ जाऊंगा।
14 मैं प्रजा को व्यवस्थित करूंगा, और जाति जाति के लोग मेरे आधीन हो जाएंगे।
15 भयानक अत्याचारी मेरा समाचार सुनकर थरथरा उठेंगे; मैं भीड़ में अच्छा और युद्ध में वीर ठहरूंगा।
16 जब मैं अपके घर में पहुंचूं, तब उस से मन फिराऊंगा; क्योंकि उसकी बातचीत में कोई कड़वाहट न होगी; और उसके साथ रहने में शोक नहीं, परन्तु आनन्द और आनन्द है।
17 अब जब मैं ने इन बातों पर विचार किया, और अपने मन में विचार किया, तो यह कैसे हुआ कि बुद्धि से जुड़ना ही अमरता है;
18 और उस से मित्रता करना बड़े आनन्द की बात है; और उसके हाथों के कामों में अनन्त धन है; और उसके साथ सम्मलेन के अभ्यास में विवेक; और उसके साथ बातचीत में, एक अच्छी रिपोर्ट; मैं उसे अपने पास कैसे ले जाऊं, इसकी तलाश में लग गया।
19 क्योंकि मैं बुद्धिमान बालक था, और मेरी आत्मा अच्छी थी।
20 वरन मैं भला होकर निष्कलंक शरीर में आया हूं।
21 तौभी जब मैं ने जान लिया, कि यदि परमेश्वर ने उसे मुझे न दिया, तो मैं उसे किसी अन्य रीति से प्राप्त नहीं कर सकता; और यह जानना भी बुद्धिमानी की बात थी कि वह किसका उपहार था; मैंने प्रभु से प्रार्थना की, और उससे प्रार्थना की, और अपने पूरे दिल से मैंने कहा,

अध्याय 9

1 हे मेरे पितरोंके परमेश्वर, और दयालु प्रभु, जिस ने तेरे वचन से सब कुछ बनाया,
2 और अपनी बुद्धि से मनुष्य को ठहराया, कि वह तेरी बनाई हुई सृष्ट वस्तुओं पर प्रभुता रखे,
3 और जगत की व्यवस्था सीधाई और धर्म के अनुसार करो, और खरे मन से न्याय करो।
4 जो तेरे सिंहासन पर बैठा है, मुझे बुद्धि दे; और मुझे अपनी सन्तान में से न निकालो;
5 क्योंकि मैं तेरा दास वा तेरी दासी का पुत्र हूं, मैं दुर्बल हूं, और अल्पकाल का हूं, और न्याय और व्यवस्था को समझने में बहुत छोटा हूं।
6 यद्यपि मनुष्यों में कोई मनुष्य कभी भी खरा नहीं ठहरता, तौभी यदि तेरी बुद्धि उसके साथ न रहे, तो उसका कुछ महत्व न होगा।
7 तू ने मुझे अपक्की प्रजा का राजा, और अपके बेटे-बेटियोंका न्यायी होने को चुन लिया है;
8 तू ने मुझे आज्ञा दी है, कि अपके पवित्र पर्वत पर एक मन्दिर, और जिस नगर में तू रहता है वहां उस पवित्र तम्बू के समान एक वेदी बनाए, जिसे तू ने आरम्भ से तैयार किया है।
9 और बुद्धि तेरे साय थी, जो तेरे कामोंको जानती है, और जब तू ने जगत बनाया, तब भी थी, और जो कुछ तुझे भाता है, और जो तेरी आज्ञाएं ठीक हैं, यह भी जानती थी।
10 हे उसको अपके पवित्र स्वर्ग में से, और अपके महिमा के सिंहासन पर से भेज, कि वह उपस्थित होकर मेरे साय परिश्रम करे, और मैं जानूं कि तुझे क्या भाता है।
11 क्योंकि वह सब बातें जानती और समझती है, और मेरे कामों में मेरी अगुवाई करेगी, और अपनी शक्ति से मुझे बचाए रखेगी।
12 इस प्रकार मेरे काम सुफल होंगे, और मैं तेरे लोगों का न्याय धर्म से करूंगा, और अपने पिता के सिंहासन पर बैठने के योग्य होऊंगा।
13 वह कौन मनुष्य है जो परमेश्वर की युक्ति जान सके? या कौन सोच सकता है कि प्रभु की इच्छा क्या है?
14 क्योंकि मनुष्य के विचार तो दुख के हैं, और हमारी युक्तियां अनिश्चित हैं।
15 क्योंकि नाशमान शरीर प्राण को दबा देता है, और मिट्टी का तम्बू मन को जो बहुत सी बातों पर विचार करता है, दबा देता है।
16 और जो वस्तुएं पृथ्वी पर हैं, उनका हम ठीक ठीक अनुमान नहीं लगाते, और जो वस्तुएं हमारे सामने हैं, वे परिश्रम से हम नहीं पाते, परन्तु जो वस्तुएं स्वर्ग में हैं, उनका किस ने पता लगाया?
17 और जब तक तू बुद्धि न दे, और अपके पवित्र आत्मा को ऊपर से न भेजे, तब तक तेरी युक्ति को कौन जान सकता है?
18 इस प्रकार पृथ्वी पर रहनेवालोंकी चाल सुधारी गई, और मनुष्योंको जो बातें तुझे भाती हैं वे सिखाई गईं, और बुद्धि के द्वारा उद्धार पाए गए।

अध्याय 10

1 उसने संसार के प्रथम पिता की, जो अकेले ही रचा गया था, रक्षा की, और उसे उसके पतन से बाहर निकाला,
2 और उसे सब वस्तुओं पर प्रभुता करने का अधिकार दिया।
3 परन्तु जब दुष्ट क्रोध करके उसके पास से चला गया, तब जिस जलजलाहट से उस ने अपने भाई को घात किया, उसी से वह भी नाश हो गया।
4 जिस के कारण पृथ्वी जलप्रलय से डूब गई, तौभी बुद्धि ने उसे फिर बचाया, और तुच्छ लकड़ी के टुकड़े में धर्मी की चाल को चलाया।
5 और जब जाति जाति के लोग अपने दुष्ट षड्यन्त्र को तोड़ते थे, तब उस ने धर्मी को पकड़ लिया, और उसे परमेश्वर के लिये निर्दोष ठहराया, और अपने पुत्र के प्रति उसकी कोमल करुणा के विरूद्ध उसे दृढ़ रखा।
6 जब दुष्ट लोग नाश हो गए, तब उस ने धर्मी को जो आग पांच नगरोंपर गिरी या, उस से भागकर बचाया।
7 जिस की दुष्टता का प्रमाण आज तक उजाड़ भूमि जिस से धुआं निकलता है वह है, और फल देनेवाले पौधे जो कभी पकते नहीं; और नमक का खड़ा हुआ खम्भा अविश्वासी प्राणी का चिन्ह है।
8 क्योंकि बुद्धि न होने के कारण उन्हें न केवल यह हानि हुई, कि वे अच्छी बातें न जानते थे; वरन जगत के साम्हने अपनी मूढ़ता का स्मरण भी छोड़ गए, यहां तक कि जो कुछ उन्होंने ठेस पहुंचाई, वह छिप न सके।
9 परन्तु बुद्धि ने उन को पीड़ा से बचाया जो उस पर ध्यान रखते थे।
10 जब धर्मी अपके भाई के क्रोध से भागा, तब उस ने उसको सीधा मार्ग दिखाया, और उसे परमेश्वर का राज्य दिखाया, और पवित्र वस्तुओंका ज्ञान दिया, और उसकी यात्राओंमें उसे धनी किया, और उसके परिश्रम का फल बहुत बढ़ाया।
11 वह उस पर अन्धेर करनेवालोंके लालच में आकर उसके साय खड़ी रही, और उसे धनी कर दिया।
12 और उस ने उसको शत्रुओंसे बचाया, और घात लगानेवालोंसे बचाकर रखा, और बड़े मुकद्दमे में उस ने उसको जय दिलाई; कि वह जान ले कि अच्छाई सब से अधिक बलवान है।
13 जब धर्मी बिक गया, तब उस ने उसे न त्यागा, वरन पाप से बचाया; वह उसके संग गड़हे में उतर गई।
14 और जब तक वह उसके पास राज्य का राजदण्ड और उसके अन्धेर करनेवालोंके विरूद्ध सामर्य न ले आई, तब तक उसे बन्धुए न छोड़ा; और उस ने उस पर दोष लगानेवालोंको झूठा ठहराया, और सदा उसकी महिमा की।
15 उस ने धर्मियोंको और निर्दोष वंश को उन पर अन्धेर करनेवाली जाति से छुड़ाया।
16 वह यहोवा के दास के प्राण में समा गई, और चमत्कारों और चिन्हों से भयानक राजाओं का सामना करती रही;
17 धर्मियों को उनके परिश्रम का प्रतिफल दिया, और उन्हें अद्‌भुत मार्ग दिखाया, और दिन को आड़ और रात को तारों की रोशनी का काम दिया;
18 और उनको लाल समुद्र में से पार ले आया, और बहुत जल में से बहा ले गया;
19 परन्तु उस ने उनके बैरियोंको डुबा दिया, और गहिरे तल में से निकाल निकाला।
20 इस कारण धर्मियों ने दुष्टोंको बिगाड़ा, और हे यहोवा, तेरे पवित्र नाम की स्तुति की, और एक मन होकर तेरे हाथ की बड़ाई की, जो उनकी ओर से लड़ा।
21 क्योंकि बुद्धि ने गूंगों का मुंह खोल दिया, और जो बोल नहीं सकते, उनकी जीभ खोल दी।

अध्याय 11

1 उस ने पवित्र भविष्यद्वक्ता के हाथ से उनके काम सुफलाए।
2 और वे निर्जन जंगल में चले गए, और जहां मार्ग न था वहां तम्बू खड़े किए।
3 वे अपके शत्रुओंके साम्हने खड़े हुए, और अपके द्रोहियोंसे पलटा लिया।
4 जब उन्हें प्यास लगी, तब उन्होंने तेरी दोहाई दी, और चकमक चट्टान में से उनको जल दिया गया, और कठोर पत्थर से उनकी प्यास बुझी।
5 क्योंकि जिस काम से उनके शत्रुओं को दण्ड मिलता था, उसी से उनको भी जो घटी होता था, लाभ होता था।
6 क्योंकि वह गंदे खून से पीड़ित सदा बहने वाली नदी की सन्ती है,

7 जिस आज्ञा के द्वारा बालक घात किए गए थे, उस
की प्रगट निन्दा करने के लिथे तू ने उनको उस रीति
से बहुत जल दिया, जिसकी उन्हें आशा न थी।
8 उस प्यास से तू ने यह प्रगट किया, कि तू ने उनके
द्रोहियोंको कैसा दण्ड दिया।
9 क्योंकि जब उन की परीक्षा हुई, यद्यपि परन्तु दया
की दण्ड दिया गया, तब उन्होंने जान लिया कि दुष्टों
का न्याय क्रोध के द्वारा कैसे किया जाता है, और
धर्मियों की अपेक्षा किसी और रीति से प्यासा करके
यातना दी जाती है।
10 इन को तो तू ने पिता की नाईं चिताया, और
परखा; परन्तु दूसरे को कठोर राजा की नाईं दोषी
ठहराया, और दण्ड दिया।
11 चाहे वे अनुपस्थित हों या उपस्थित, वे समान रूप
से चिढ़ते थे।
12 क्योंकि उन पर दोहरा दु:ख, और बीती बातों को
स्मरण करके कराहना पड़ा।
13 क्योंकि जब उन्होंने अपने दण्ड से दूसरे का भला
होना सुना, तो उन्हें प्रभु का कुछ एहसास हुआ।
14 जिस का लोग तिरस्कार करके आदर करते थे,
और बहुत पहिले उसे बालक जनने के समय निकाल
दिया जाता था, अन्त में जब उन्होंने उसका हाल देखा,
तो उसकी प्रशंसा की।
15 परन्तु उनकी दुष्टता की मूर्खतापूर्ण युक्तियों के
कारण, जिस से वे धोखा खाकर निर्बुद्धि सांपों और
घिनौने पशुओं की पूजा करते थे, तू ने बदला लेने के
लिथे उन पर बहुत से निर्बुद्धि पशु भेज दिए;
16 ताकि वे जान लें, कि मनुष्य जैसा पाप करता है,
वैसा ही दण्ड भी उसे मिलता है।
17 क्योंकि तेरे सर्वशक्तिमान हाथ ने, जिस ने जड़
जगत् को निराकार बनाया, न चाहा, कि उन में बहुत
से भालू वा खूंखार सिंह भेजे।
18 या अज्ञात जंगली जानवर, क्रोध से भरे हुए, नए
बनाए गए, या तो उग्र वाष्प, या बिखरे हुए धुएं की
गंदी गंध, या उनकी आंखों से भयानक चमक
निकाल रहे हैं:
19 जिस से न केवल विपत्ति उन पर तुरन्त भड़क
सकती है, वरन भयानक दृश्य भी उन्हें पूरी तरह नष्ट
कर सकता है।
20 हां, और इन शक्तियों के बिना वे एक ही झटके
में गिर पड़े, प्रतिशोध के कारण सताए गए, और तेरी
शक्ति के प्रभाव से इधर-उधर तितर-बितर हो गए:
परन्तु तू ने सब वस्तुओं को माप, और गिनती, और
तौल के अनुसार ठहराया है।
21 क्योंकि तू जब चाहे तब अपना बड़ा बल प्रगट
कर सकता है; और तेरे भुजबल का साम्हना कौन
कर सकता है?
22 क्योंकि तेरे साम्हने सारा जगत् तराजू के छोटे
दाने के समान है, वरन भोर की ओस की बूंद के
समान है जो भूमि पर गिरती है।
23 परन्तु तू सब पर दया करता है; क्योंकि तू सब
कुछ कर सकता है, और मनुष्यों के पापों पर आँख
मूँद सकता है, क्योंकि उन्हें संशोधन करना होगा।
24 क्योंकि जो कुछ है वह सब तुझे प्रिय है, और जो
कुछ तू ने बनाया है उस से तू घृणा नहीं करता;
क्योंकि यदि तू ने उस से बैर किया होता, तो तू कभी
कुछ न बनाता।
25 और यदि तेरी इच्छा न होती, तो कोई वस्तु कैसे
टिक पाती? या संरक्षित किया गया है, यदि आपके
द्वारा नहीं बुलाया गया?
26 परन्तु तू सब को बचा रखता है; क्योंकि हे प्रभु, हे
प्राणोंके प्रेमी, वे तेरे ही हैं।

अध्याय 12

1 क्योंकि तेरा अविनाशी आत्मा सब वस्तुओं में है।
2 इसलिथे तू उन को थोड़े-थोड़े करके ताड़ना देता
है, और जो कुछ उन्होंने अपराध किया है उसे स्मरण
करके उनको चिताता है, कि हे यहोवा, वे अपनी
दुष्टता छोड़कर तुझ पर विश्वास करें।
3 क्योंकि तेरी इच्छा यह हुई, कि अपके पवित्र देश
के उन प्राचीन निवासियोंको हमारे पुरखाओंके हाथ
से नाश कर डालो।
4 जिस से तू ने अत्यन्त घिनौने काम, जादू-टोने और
दुष्ट मेलबलि करने के कारण बैर किया;
5 और वे बालकोंके निर्दयी हत्यारे, और मनुष्य का
मांस खानेवाले, और खून की दावतें करनेवाले,
6 और उनके याजकोंको उनकी मूर्तिपूजक टोली में
से, और उनके माता-पिता को, जो अपके ही हाथ से
निराश्रित प्राणियोंको घात करते थे;
7 इसलिये कि जिस देश को तू ने सब से अधिक
महत्व दिया है, उस में परमेश्वर के सन्तान का योग्य
निवास हो।
8 तौभी तू ने उनको भी मनुष्योंकी नाई बचा लिया,
और अपक्की सेना के अगुवोंततैयाओंको इसलिये
भेजा, कि उनको धीरे-धीरे नाश करें।

9 यह नहीं कि तू युद्ध में दुष्टों को धर्मियों के वश में कर न सका, और न क्रूर पशुओं से, वा एक कठोर वचन से उनको तुरन्त नाश कर सका;
10 परन्तु तू ने उन पर अपना दण्ड धीरे-धीरे करके उनको मन फिराने का अवसर दिया, और इस से अनभिज्ञ न रहा, कि वे दुष्ट पीढ़ी के हैं, और उनका बैरभाव उन में उत्पन्न हुआ है, और उनका विचार कभी न बदला जाएगा।
11 क्योंकि वह आरम्भ से शापित वंश था; और न तू ने किसी के डर के मारे उनको उनके पाप क्षमा किए।
12 क्योंकि कौन कहेगा, तू ने क्या किया? या तेरे न्याय का सामना कौन करेगा? या जो जातियां तू ने बनाईं, उन नाशोंके लिथे तुझ पर दोष कौन लगाएगा? या अधर्मियों का पलटा लेने को तेरे साम्हने कौन खड़ा होगा?
13 क्योंकि तू ही है, जो सब की चिन्ता करता है, और कोई परमेश्वर नहीं, जिस पर तू प्रगट कर सके, कि तेरा निर्णय अनुचित नहीं।
14 जिस किसी को तू ने दण्ड दिया हो, उसके कारण कोई राजा वा अत्याचारी तेरे विरूद्ध मुंह न कर सकेगा।
15 सो तू आप ही धर्मी है, और सब बातें धर्म के अनुसार करता है, और जो दण्ड के योग्य न हो उस पर दोष लगाना अपनी शक्ति के अनुकूल नहीं समझता।
16 क्योंकि तेरी शक्ति धर्म का आरम्भ है, और तू सब का प्रभु है, इस कारण तू सब पर अनुग्रह करता है।
17 क्योंकि जब मनुष्य विश्वास न करते, कि तू सर्वशक्तिमान है, तब तू अपना बल प्रगट करता है, और जो यह जानते हैं उन पर अपना हियाव प्रगट करता है।
18 परन्तु तू अपके बल पर प्रभुता करके खराई से न्याय करता है, और बड़े अनुग्रह से हमें आज्ञा देता है; क्योंकि तू जब चाहे तब बल का उपयोग कर सकता है।
19 परन्तु ऐसे कामोंके द्वारा तू ने अपक्की प्रजा को सिखाया, कि धर्मी मनुष्य दयालु हो, और अपके लड़केबालोंको अच्छी आशावाला बनाया, कि तू पापोंके लिथे मन फिराए।
20 क्योंकि यदि तू अपके पुत्रोंके शत्रुओंको, और जो मृत्युदण्ड के योग्य हैं, उनको समय और स्थान देकर सोच-विचारकर दण्ड देता, कि वे अपने बैर से छुटकारा पा सकें,
21 तू ने अपने निज पुत्रोंका न्याय किस प्रकार बड़ी सावधानी से किया, जिनके बाप से तू ने शपय खाई, और अच्छी अच्छी वाचाएं बान्धी थीं?
22 इसलिथे जब तू हमें ताड़ना देता है, तो हमारे शत्रुओंको हजार गुणा अधिक कोड़े मारता है, इस मनसा से कि जब हम न्याय करें, तो तेरी भलाई का ध्यान करके सोचें, और जब हमारा न्याय हो, तो दया की बाट जोहें।
23 इसलिये जब मनुष्य लुचपन और कुटिलता से जीवन व्यतीत करते हैं, तो तू ने उनको उन्हीं के घृणित कामों से सताया है।
24 क्योंकि वे भटकते हुए बहुत दूर तक भटक गए, और उनको देवता समझकर अपना लिया, और उनके शत्रुओं के पशुओं के बीच में भी वे निर्बुद्धि बालकों के समान धोखा खाकर तुच्छ समझे जाते थे।
25 इसलिथे तू ने उन को जो निर्बुद्धि बालक समझे हैं, उनको ठट्ठों में उड़ाने के लिये दण्ड भेजा है।
26 परन्तु जो उस ताड़ना से नहीं सुधरे, जिस में उस ने उनके साथ खिलवाड़ किया, वे परमेश्वर के योग्य न्याय का अनुभव करेंगे।
27 क्योंकि देखो, जब उन्हें दण्ड दिया गया, तो उन्होंने किन बातों का कुढ़ना चाहा, अर्थात जिनको वे देवता समझते थे, उन पर क्रोध करते थे; अब उन में दण्ड पाया जा रहा था, और जब उन्होंने यह देखा, तो उसे सच्चा परमेश्वर मान लिया, जिसे पहिले उन्होंने जानने से इन्कार किया था: और इस कारण उन पर घोर दण्ड आया।

अध्याय 13

1 निस्सन्देह वे सब मनुष्य स्वभाव से व्यर्थ हैं, जो परमेश्वर से अनभिज्ञ हैं, और जो अच्छी वस्तुएं देखी हुई हैं, उन से उसे अर्थात् जो है, न पहचान सके; और न कामों पर ध्यान करके काम करनेवाले को पहिचान लिया;
2 परन्तु आग, या वायु, या तेज वायु, या तारों का घेरा, या प्रचण्ड जल, या स्वर्ग की ज्योतियों को जगत पर प्रभुता करनेवाले देवता माना।
3 जिसके सौन्दर्य से वे प्रसन्न होते थे, तो उसे देवता समझ लेते थे; वे जानें कि उनका प्रभु कितना अच्छा है: क्योंकि सौन्दर्य के प्रथम रचयिता ने उन्हें बनाया है।

4 परन्तु यदि वे उनकी शक्ति और सद्गुण से चकित हुए हों, तो उन से समझ लें, कि जिस ने उन्हें बनाया, वह कितना अधिक सामर्थी है।
5 क्योंकि प्राणियों की महानता और सुन्दरता से उनका रचयिता देखा जाता है।
6 तौभी इसके लिये वे कम दोषी हैं; क्योंकि वे परमेश्वर को ढूंढ़ते, और उसे पाने की अभिलाषा करते हुए कदाचित् भूल करते हैं।
7 क्योंकि वे उसके कामोंमें पारंगत होकर उसे भलीभांति ढूंढ़ते हैं, और उसके देखने की प्रतीति करते हैं; क्योंकि दिखाई देनेवाली वस्तुएं सुन्दर हैं।
8 तौभी वे क्षमा के योग्य नहीं।
9 क्योंकि यदि वे इतना जान सकें, कि जगत को लक्ष्य कर सकें; उन्होंने शीघ्र ही उसके प्रभु का पता कैसे नहीं लगा लिया?
10 परन्तु वे अभागे हैं, और उनकी आशा मरी हुई वस्तुओं पर है, जो उन्हें देवता कहते हैं, जो मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई, सोने और चान्दी की बनाई हुई हैं, जिस से कला प्रगट होती है, और पशुओं की सी प्रतीत होती है, या ऐसा पत्थर है जो निकम्मा है। एक प्राचीन हाथ का.
11 फिर एक बढ़ई जो लकड़ी काटता या, उस ने इस काम के लिथे एक वृक्ष को काट डाला, और चारोंओर की सारी छाल को कुशलतापूर्वक उतार लिया, और उसे सुन्दर ढंग से गढ़ा, और मनुष्य के जीवन के काम आने के लिथे उसका एक पात्र बनाया;
12 और अपके परिश्रम का माल अपके भोजन के लिथे खर्च करके अपना पेट तृप्त किया;
13 और जो कूड़ा काम में न आता था, उसे लेकर जो लकड़ी का टेढ़ा टुकड़ा और गांठों से भरा हुआ था, उस ने उसे जब और कुछ करने को न रहा, तब परिश्रम से खोदकर अपनी बुद्धि की कुशलता से बनाया, और इसे एक आदमी की छवि में ढाला;
14 या उसको किसी घृणित पशु के समान बना दिया, और उस पर सिन्दूर से और लाल रंग से रंग दिया, और उसके सब स्थानों को ढांप दिया;
15 और उस ने उसके लिथे सुख की कोठरी बनाकर उसे शहरपनाह में खड़ा किया, और उसको लोहे से दृढ़ किया;
16 क्योंकि उस ने यह जानकर, कि वह अपने आप को संभाल नहीं सकता, ऐसा प्रबन्ध किया, कि वह गिरे न; क्योंकि यह एक छवि है, और इसे सहायता की आवश्यकता है:
17 तब वह अपके धन के लिथे, और अपक्की पत्नी, और बालकोंके लिथे प्रार्यना करता है, और निर्जीव से बातें करने में नहीं लजाता।
18 वह चंगाई के लिथे निर्बलोंको प्रार्थना करता है; क्योंकि जीवन मरे हुओंके लिथे प्रार्थना करता है; सहायता के लिए वह नम्रतापूर्वक उस से प्रार्थना करता है जिसके पास सहायता करने का कम से कम साधन हो; और अच्छी यात्रा के लिए वह उससे प्रार्थना करता है जो आगे कदम नहीं बढ़ा सकता:
19 और पाने और पाने के लिये, और अपने हाथ की भलाई के लिथे उस से कुछ करने की सामर्थ मांगता है, जो कुछ भी करने में असमर्थ है।

अध्याय 14

1 फिर जब कोई नाव चलाने की तैयारी करता है, और प्रचण्ड लहरों में से गुजरने को होता है, तो उसे उस जहाज से भी अधिक सड़ा हुआ लकड़ी का एक टुकड़ा मिलता है, जो उसे ले जाता है।
2 क्योंकि उसने लाभ ही की अभिलाषा से उसका आविष्कार किया, और कारीगर ने अपनी कुशलता से उसे बनाया।
3 परन्तु हे पिता, तेरी इच्छा उस पर प्रभुता करती है; क्योंकि तू ने समुद्र में मार्ग और लहरोंमें सुरक्षित मार्ग बनाया है;
4 तू यह प्रगट करता है, कि तू हर विपत्ति से बचा सकता है; हां, चाहे कोई मनुष्य बिना कला के समुद्र में चला गया हो।
5 तौभी तू नहीं चाहता, कि तेरी बुद्धि के काम व्यर्थ जाएं, और इसी कारण मनुष्य अपने प्राण को लकड़ी के छोटे टुकड़े के लिये सौंपते हैं, और निर्बल जहाज में बड़े समुद्र में से होकर चलते हैं, और उद्धार पाते हैं।
6 क्योंकि पुराने समय में भी, जब अभिमानी दिग्गज नाश हो गए, तो तेरे हाथ से शासित होने वाले संसार की आशा एक कमजोर बर्तन में बच गई, और पीढ़ी-दर-पीढ़ी पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रह गई।
7 क्योंकि वह लकड़ी धन्य है जिस से धर्म आता है।
8 परन्तु जो हाथ से बनाया जाता है, वह शापित है, और उसके बनानेवाले की भाँति वह भी शापित है; और यह, क्योंकि, भ्रष्ट होने के कारण, इसे भगवान कहा जाता था।
9 क्योंकि भक्तिहीन और उसकी भक्ति दोनों परमेश्वर के लिये एक समान घृणित हैं।

10 क्योंकि जो बनाया गया है, वह उसके बनानेवाले समेत दण्ड पाएगा।
11 इसलिथे अन्यजातियोंकी मूरतोंपर भी दण्ड किया जाएगा; क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई वस्तु में वे घृणित वस्तु, और मनुष्योंके प्राणोंके लिथे ठोकर का कारण, और निर्बुद्धियोंके पांवोंके लिथे जाल बन गए हैं।
12 क्योंकि मूरतों की रचना से आत्मिक व्यभिचार का आरम्भ हुआ, और उनके आविष्कार से जीवन का विनाश हुआ।
13 क्योंकि न तो वे आदि से थे, और न युगानुयुग रहेंगे।
14 क्योंकि मनुष्य के व्यर्थ वैभव के द्वारा वे जगत में आए, और इस कारण शीघ्र ही उनका अन्त हो जाएगा।
15 क्योंकि उस पिता ने, जो असामयिक शोक से पीड़ित था, अपने बेटे की मूरत बनवाकर, जो उस समय मरा हुआ था, देवता जानकर उसका आदर किया, और अपने वश में किए हुओं को संस्कार करके और बलिदान करके सौंप दिया।
16 इस प्रकार समय के साथ एक अधर्मी रिवाज मजबूत हो गया और उसे कानून बनाकर रखा गया, और राजाओं की आज्ञा के अनुसार खुदी हुई मूरतों की पूजा की जाने लगी।
17 जिस का लोग साम्हने इस कारण आदर न कर सकते थे, कि वे दूर रहते थे, उन्हों ने दूर ही से उसके रूप की नकल करके उस राजा की मूरत बनाई, जिस का वे आदर करते थे, यहां तक कि अपनी आगे बढ़कर उसकी चापलूसी कर सकें। अनुपस्थित था, मानो वह उपस्थित हो।
18 इसके अलावा कारीगर की विलक्षण परिश्रम ने अज्ञानी लोगों को और अधिक अंधविश्वास की ओर अग्रसर करने में मदद की।
19 क्योंकि उस ने कदाचित किसी अधिकारी को प्रसन्न करने की इच्छा से, अपनी सारी कुशलता से सर्वोत्तम रीति का सादृश्य बनाने में लगाया।
20 और इस प्रकार भीड़ ने काम के अनुग्रह से मोहित होकर उसे अब देवता समझ लिया, जो कुछ समय पहले तक आदर पाता था।
21 और यह जगत को धोखा देने का अवसर हुआ; क्योंकि मनुष्यों ने विपत्ति वा अत्याचार करके पत्थरों और काठों को ऐसा नाम दिया, जो वर्णन से बाहर है।
22 और यह उन से न हुआ, कि उन्होंने परमेश्वर को जानने में भूल की; लेकिन जबकि वे अज्ञानता के महान युद्ध में रहते थे, उन बड़ी विपत्तियों को शांति कहा जाता था।
23 क्योंकि जब वे अपने बालकोंको बलि चढ़ाते, या गुप्त रीति से घात करते, या पराये रिवाजोंके अनुसार आनन्द करते थे;
24 उन्होंने न तो प्राण और न विवाह को निष्कलंक रखा; परन्तु एक ने दूसरे को विश्वासघात से घात किया, वा व्यभिचार के द्वारा उसे दुखी किया।
25 यहां तक कि सब मनुष्यों में खून, हत्या, चोरी, छल, भ्रष्टाचार, विश्वासघात, उपद्रव, झूठी गवाही, सब मनुष्यों का राज्य हो गया।
26 भले मनुष्यों की व्याकुलता, अच्छे कामों को भूल जाना, आत्माओं को अशुद्ध करना, प्रकार बदलना, विवाहों में गड़बड़ी, व्यभिचार, और निर्लज्ज अशुद्धता।
27 क्योंकि मूरतों की पूजा करना सब बुराई का आदि, कारण और अन्त है।
28 क्योंकि या तो वे आनन्द करके पागल हो जाते हैं, या झूठ भविष्यद्वाणी करते हैं, या अन्याय करते हैं, या हल्के से अपने आप को त्याग देते हैं।
29 क्योंकि उनका भरोसा मूरतोंपर है, जिन में प्राण नहीं; यद्यपि वे झूठी शपथ खाते हैं, फिर भी सोचते हैं कि उन्हें हानि नहीं होगी।
30 तौभी वे दोनों ही कारणोंसे उचित दण्ड पाएं; दोनों इसलिये कि उन्होंने परमेश्वर का भला नहीं सोचा, और मूरतोंपर ध्यान दिया, और पवित्रता का तिरस्कार करते हुए अनुचित रूप से छल की शपथ खाई।
31 क्योंकि जिस से वे शपय खाते हैं, वह उनका बल नहीं, परन्तु पापियों का न्यायपूर्ण पलटा है, जो भक्तिहीनों को सदा अपराध का दण्ड देता है।

अध्याय 15

1 परन्तु हे परमेश्वर, तू अनुग्रहकारी, सच्चा, सहनशील, और दया से सब बातों का प्रबन्ध करता है।
2 क्योंकि यदि हम पाप करते हैं, तो तेरे हैं, और जानते हैं कि तेरी शक्ति कैसी है; परन्तु यह जानकर पाप न करेंगे, कि हम तेरे ही गिने जाते हैं।
3 क्योंकि तुझे जानना पूर्ण धर्म है; हां, तेरी शक्ति को जानना अमरता का मूल है।
4 क्योंकि न तो मनुष्यों की दुष्ट कल्पना ने हमें धोखा दिया, और न भिन्न-भिन्न रंगों से सजी हुई किसी मूरत

ने, जो चित्रकार का निष्फल परिश्रम है, हमें धोखा दिया;
5 जिसका दर्शन मूर्खों को उसकी लालसा में प्रलोभित करता है, और वे मुर्दे मूरत की लालसा करते हैं, जिसमें सांस नहीं है।
6 जो उनके बनाते हैं, और जो उनकी अभिलाषा करते हैं, और जो उनकी आराधना करते हैं, वे बुरी वस्तुओं के प्रेमी हैं, और ऐसी वस्तुओं पर भरोसा करने के योग्य हैं।
7 क्योंकि कुम्हार हमारी सेवा के लिये कोमल मिट्टी को तपाकर हर एक बर्तन को बड़े परिश्रम से बनाता है; हां, वह एक ही मिट्टी से शुद्ध उपयोग के लिये काम आने वाले दोनों बर्तन, और वैसे ही सब विपरीत काम के बर्तन भी बनाता है: परन्तु क्या है? किसी भी प्रकार के उपयोग का निर्णय कुम्हार स्वयं करता है।
8 और वह अपके कामोंको घृणित काम करके उसी मिट्टी का एक व्यर्थ देवता बनाता है, अर्यात् वह जो थोड़े पहिले आप ही मिट्टी का बना या, और थोड़े ही समय के बाद फिर उसी में हो जाता है, और जब उसका प्राण जो उसे दिया गया हो जाएगा मांग की।
9 तौभी उसकी चिन्ता यह नहीं, कि उसे अधिक परिश्रम करना पड़ेगा, और न यह कि उसका जीवन छोटा है; परन्तु वह सुनारों और चाँदी बनानेवालोंमें से श्रेष्ठ बनने का यत्न करता है, और पीतल के कारीगरोंके समान काम करने का यत्न करता है, और नकली वस्तुएं बनाना अपनी महिमा समझता है।
10 उसका मन राख से भी अधिक तुच्छ है, उसकी आशा मिट्टी से भी अधिक तुच्छ है, और उसका प्राण मिट्टी से भी तुच्छ है।
11 क्योंकि वह अपने सृजनहार को नहीं जानता था, और उसे जिसने उस में सक्रिय आत्मा उत्पन्न की, और जीवित आत्मा में सांस ली।
12 परन्तु उन्हों ने हमारे जीवन को मनोरंजन का साधन, और हमारे यहां रहने को लाभ का साधन समझा; क्योंकि वे कहते हैं, हम को अवश्य ही हर मार्ग पर चलना है, चाहे वह बुरे तरीकों से ही क्यों न हो।
13 क्योंकि यह मनुष्य जो मिट्टी से नाजुक बर्तन और खुदी हुई मूरतें बनाता है, अपने आप को सब से अधिक ठेस पहुंचाना जानता है।
14 और तेरी प्रजा के सब बैरी जो उनको वश में रखते हैं, वे अत्यन्त मूर्ख हैं, और बालकों से भी अधिक दुखी हैं।
15 क्योंकि उन्होंने अन्यजातियों की सब मूरतोंको देवता गिन लिया; वे न तो देखने के लिये आंखें, न सांस खींचने के लिये नाक, न सुनने के लिये कान, और न सँभालने के लिये हाथ की अंगुलियोंसे काम करते थे; और उनके पांव धीमे हैं।
16 क्योंकि मनुष्य ने उनको बनाया, और अपके आत्मा उधार लेकर उस ने उनको बनाया; परन्तु कोई अपने तुल्य परमेश्वर नहीं बना सकता।
17 क्योंकि वह नाशवान होकर दुष्ट हाथों से मरी हुई वस्तु बनाता है; क्योंकि वह आप ही उन वस्तुओं से उत्तम है जिनकी वह पूजा करता है; यद्यपि वह एक बार जीवित हुआ, परन्तु वे कभी जीवित न हुए।
18 हां, उन्होंने उन जानवरों की भी पूजा की जो सबसे घृणित हैं: क्योंकि एक साथ तुलना करने पर, कुछ दूसरों से भी बदतर हैं।
19 और न वे सुन्दर हैं, यहां तक कि पशुओं में भी शोभा पाते हैं; परन्तु वे परमेश्वर की स्तुति और उसकी आशीष से रहित हो गए।

अध्याय 16

1 इस कारण उन को योग्य दण्ड दिया गया, और पशुओं की भीड़ से उनको यातना दी गई।
2 उस दण्ड के बदले तू ने अपक्की प्रजा पर अनुग्रह करके, उनके लिये पराये स्वाद का मांस, वरन उनकी भूख बढ़ाने के लिये बटेरों का भोजन तैयार किया;
3 यहां तक कि वे भोजन की अभिलाषा करके, अपने बीच भेजे गए पशुओं की कुरूप दृष्टि के कारण वह सब भी छीन लें, जिसकी उन्हें इच्छा होती है; लेकिन थोड़े से स्थान के लिए दरिद्रता झेलने वाले इन लोगों को एक अजीब स्वाद का भागीदार बनाया जा सकता है।
4 क्योंकि यह आवश्यक था, कि अत्याचार करने से उन पर कंगाली आए, जिसे वे टाल नहीं सकते थे: लेकिन उन्हें केवल यह दिखाया जाना चाहिए कि उनके दुश्मनों को कैसे पीड़ा दी गई थी।
5 क्योंकि जब पशुओं का भयानक प्रकोप उन पर भड़का, और वे टेढ़े सांपों के डंक से मर गए, तब तेरा क्रोध सदैव बना रहा;
6 परन्तु थोड़े समय तक वे कष्ट उठाते रहे, कि उद्धार का चिन्ह पाकर उन्हें चिताया जाए, कि वे तेरी व्यवस्था की आज्ञाओं को स्मरण रखें।

7 क्योंकि जो कोई उस की ओर फिरा, वह जो कुछ उस ने देखा उस से नहीं, परन्तु तेरे ही द्वारा, जो सब का उद्धारकर्ता है, बचाया गया।
8 और इस से तू ने अपके शत्रुओंको यह मान लिया, कि तू ही सब विपत्तियोंसे बचाता है।
9 और टिड्डियों और मक्खियों के काटने से वे मर गए, और उनके प्राण का कुछ भी उपाय न हुआ; क्योंकि वे इसी दण्ड के योग्य थे।
10 परन्तु तेरे पुत्र विषैले अजगरोंको दांत से भी नहीं जीत सके; क्योंकि तेरी करूणा सदा उन पर बनी रही, और उनको चंगा किया।
11 क्योंकि वे तेरे वचन स्मरण करने के लिथे चुभ गए; और शीघ्र ही उद्धार पा गए, कि भारी भूल में न पड़कर तेरी भलाई का स्मरण निरन्तर करते रहें।
12 क्योंकि न तो जड़ी-बूटी, और न सुखदायक लेप, जिस से वे चंगे हुए; परन्तु हे यहोवा, तेरा वचन ही सब कुछ चंगा करता है।
13 क्योंकि तू जीवन और मृत्यु का अधिकार रखता है; तू नरक के फाटकों तक ले जाता है, और फिर उठा लाता है।
14 मनुष्य अपने बैर से घात करता है, और आत्मा निकल जाता है, और फिर लौटकर नहीं आता; न तो आत्मा फिर उठती है।
15 परन्तु तेरे हाथ से बचना सम्भव नहीं।
16 क्योंकि दुष्ट लोग जो तुझे नहीं जानते थे, वे तेरे भुजबल के बल से मारे गए; और भारी वर्षा, और ओले, और मेंह से उनको ऐसा सताया गया, कि वे बच न सके, और आग में जलकर भस्म हो गए।
17 क्योंकि आश्चर्य की बात यह है, कि आग का जल से भी अधिक बल था, जो सब कुछ बुझा देता है; क्योंकि संसार धर्मियों के लिये लड़ता है।
18 कुछ समय तक आग धीमी कर दी गई, कि जो पशु दुष्टों के विरूद्ध भेजे गए थे, वे न जल जाएं; परन्तु आप स्वयं देख और समझ सकते हैं कि परमेश्वर के दण्ड से उन पर अत्याचार हुआ है।
19 और किसी समय वह जल के बीच आग की शक्ति से भी अधिक जलता है, कि अन्यायी देश की उपज को नाश कर डाले।
20 इसके बदले तू ने अपक्की प्रजा को स्वर्गदूतोंका सा भोजन खिलाया, और उनके लिये बिना परिश्रम के तैयार की हुई रोटी भेजी, जो हर एक मनुष्य को प्रसन्न करे, और हर एक के स्वाद के अनुकूल हो।
21 क्योंकि तेरे भोजन से तेरे लड़केबालोंपर तेरी मधुरता प्रगट होती है, और खानेवाले की भूख पूरी होती है, और सब मनुष्योंकी रुचि के अनुसार आप अपने आप को स्वादिष्ट बनाते हैं।
22 परन्तु हिम और बर्फ आग को सहते रहे, और पिघले नहीं, जिस से वे जान लें, कि ओलों में आग जलती और मेंह में चमककर शत्रुओं के फलों को नाश कर देती है।
23 परन्तु यह फिर अपके बल को भूल गया, कि धर्मी का पालन पोषण हो।
24 क्योंकि जो प्राणी तेरी सेवा करता है, जो सृजनहार है, वह अधर्मियों को दण्ड देने के लिये उनके विरूद्ध अपना बल बढ़ाता है, और जो तुझ पर भरोसा रखते हैं उनके लाभ के लिये अपना बल घटाता है।
25 इस कारण वह सब प्रकार का हो गया, और तेरे अनुग्रह के आधीन हो गया, जो दरिद्रों की इच्छा के अनुसार सब वस्तुओं का पोषण करता है।
26 इसलिये कि हे यहोवा जिस से तू प्रेम रखता है, तेरे लड़केबाले जान लें, कि फल के बढ़ने से मनुष्य का पोषण नहीं होता, परन्तु तेरे वचन से ही तेरे विश्वास करनेवालोंकी रक्षा होती है।
27 क्योंकि जो आग से नाश न हुआ, वह धूप की थोड़ी सी गरमी से तुरन्त पिघल गया;
28 इसलिये कि यह प्रगट हो, कि हम सूर्य को रोककर तेरा धन्यवाद करें, और भोर में तुझ से प्रार्थना करें।
29 क्योंकि कृतघ्नोंकी आशा जाड़े के पाले की नाईं पिघल जाएगी, और निकम्मे जल की नाईं बह जाएगी।

अध्याय 17

1 क्योंकि तेरे निर्णय बड़े हैं, और प्रगट नहीं हो सकते; इस कारण जो मनुष्य पोषणहीन हैं, वे भूल करते हैं।
2 क्योंकि जब दुष्ट मनुष्योंने पवित्र जाति पर अन्धेर करने की सोची; उन्हें उनके घरों में बंद कर दिया गया, अंधेरे के कैदी, और लंबी रात के बंधनों से जकड़ कर, शाश्वत विधान से निर्वासित कर दिया गया।
3 क्योंकि जब वे अपने गुप्त पापों में छिपे रहना चाहते थे, तो वे विस्मृति के अंधेरे परदे के नीचे तितर-बितर हो गए, और भयानक रूप से चकित हो गए, और अजीब भूतों से परेशान हो गए।
4 क्योंकि जिस कोने ने उन्हें पकड़ रखा था, वह उन्हें भय से बचा नहीं सका; परन्तु उनके चारों ओर पानी

गिरने का सा शब्द सुनाई देता था, और भारी मुखों के साथ उन्हें दु:खमय दर्शन दिखाई देते थे।
5 आग की कोई शक्ति उन्हें उजियाला नहीं दे सकी, और न तारों की तेज लपटें उस भयानक रात को उजियाला कर सकीं।
6 और उन्हें आग अपने आप जलती हुई बहुत भयानक दिखाई दी; क्योंकि वे बहुत भयभीत हो गए, और उन्होंने सोचा कि जो कुछ उन्होंने देखा वह उस दृश्य से भी बुरा है जो उन्होंने नहीं देखा था।
7 और जादूगरनी का भ्रम दूर किया गया, और उनकी बुद्धि का बड़ाई करने का अपमान हुआ।
8 क्योंकि वे, जिन्होंने बीमार आत्मा के भय और संकटों को दूर करने की प्रतिज्ञा की थी, आप ही भय से पीड़ित हो गए, और उपहास के योग्य हो गए।
9 क्योंकि उन से किसी भयानक वस्तु का भय न हुआ; तौभी मैं उन पशुओं से डरता हूं जो पास से गुजरते हैं, और सांपों का फुफकारना,
10 वे डर के मारे मर गए, और इस बात से इन्कार कर रहे थे कि उन्होंने हवा देखी है, जिसे किसी भी तरह टाला नहीं जा सकता था।
11 क्योंकि जो दुष्टता अपनी ही साक्षी से दोषी ठहराई गई है, वह बहुत डरपोक होती है, और विवेक के दबाव में आकर सदैव दुखदायी बातें बताती है।
12 क्योंकि भय और कुछ नहीं, बुद्धि से मिलनेवाली सहायता को धोखा देना है।
13 और भीतर से आशा कम होने के कारण, अज्ञान को पीड़ा पहुंचाने वाले कारण से अधिक समझती है।
14 परन्तु वे उस रात वही नींद सोए, जो सचमुच असहनीय थी, और जो अपरिहार्य नरक की तह से उन पर आई।
15 वे कुछ तो भयानक भूतों से घबराए हुए थे, और कुछ तो मूर्च्छित हो गए थे, और उनका हृदय क्षीण हो गया था; क्योंकि अचानक भय उन पर आ पड़ा, और उन्होंने किसी की खोज भी नहीं की थी।
16 सो जो कोई वहां गिर पड़ा, उसे बिना लोहे के बन्दीगृह में बन्द करके रखा गया।
17 क्योंकि चाहे वह किसान हो, चाहे चरवाहा हो, चाहे खेत में मजदूर हो, वह पकड़ लिया गया, और उस आवश्यकता को सहा, जिसे टाला नहीं जा सकता था: क्योंकि वे सभी अंधकार की एक जंजीर से बंधे थे।
18 चाहे वह सीटी की सी आँधी हो, या फैलती हुई डालियों के बीच पक्षियों का मधुर शब्द हो, या प्रचण्ड बहता हुआ जल का मनभावन झरना हो,
19 या पत्थरों के गिरने का भयानक शब्द, या उछलते हुए जानवरों की दौड़ जो दिखाई नहीं देती थी, या सबसे क्रूर जंगली जानवरों की गर्जना की आवाज, या खोखले पहाड़ों से आने वाली गूँज; इन चीज़ों ने उन्हें डर के मारे बेहोश कर दिया।
20 क्योंकि सारा जगत् निर्मल उजियाले से चमका, और किसी के परिश्रम में रुकावट न हुई;
21 उन पर केवल एक भारी रात फैली हुई थी, उस अंधकार की छवि जो बाद में उन्हें प्राप्त होगी: लेकिन फिर भी वे खुद के लिए अंधेरे से भी अधिक गंभीर थे।

अध्याय 18

1 तौभी तेरे पवित्र लोगोंके पास बड़ी बड़ी ज्योति थी, जिस की वाणी वे सुनते थे, और उनका रूप न देखते थे, क्योंकि उन्होंने भी वैसा ही दुख न उठाया या, इस कारण वे उन्हें सुखी समझते थे।
2 परन्तु इस कारण कि उन्होंने अब उनको हानि न पहुंचाई, जिन से उन पर पहिले अन्याय हुआ या, इस कारण उन्हों ने उनका धन्यवाद किया, और इस कारण उन से क्षमा मांगी, कि वे शत्रु थे।
3 उसके बदले तू ने उन्हें अज्ञात यात्रा में मार्ग दिखाने के लिये जलता हुआ आग का खम्भा दिया, और उनके आदर सत्कार के लिये हानिरहित सूर्य भी दिया।
4 क्योंकि वे उजियाले से वंचित और अन्धकार में बन्धे जाने के योग्य थे, जिन्होंने तेरे पुत्रों को बन्द कर रखा था, जिनके द्वारा व्यवस्था की निष्कलंक ज्योति जगत को दी जानी थी।
5 और जब उन्हों ने पवित्र लोगोंके बच्चोंको घात करने का निश्चय किया, और उनको डांटने के लिथे एक बालक को बाहर फेंककर बचा लिया, तब तू ने उनके बहुत से बालकोंको छीन लिया, और उनको बड़े जल में डालकर नाश कर डाला।
6 उस रात के बारे में हमारे पिताओं को पहले ही प्रमाणित कर दिया गया था, कि निश्चित रूप से यह जानकर कि उन्होंने किन शपथों को सच माना है, वे बाद में खुश हो सकते हैं ।
7 इस प्रकार तेरी प्रजा से धर्मियों का उद्धार और शत्रुओं का नाश दोनों ग्रहण किया गया।

8 क्योंकि जिस काम से तू ने हमारे द्रोहियोंको दण्ड दिया, उसी से तू ने हम को, जिन्हें तू ने बुलाया है, महिमा भी की।
9 क्योंकि भले मनुष्यों के धर्मी सन्तान ने गुप्त रीति से बलिदान किया, और एक सम्मति से पवित्र व्यवस्था बनाई, कि पवित्र लोग भी एक ही भलाई और बुराई के भागी हों, और पितर अब स्तुति के गीत गा रहे हैं।
10 परन्तु दूसरी ओर शत्रुओं का बुरा रोना सुनाई दिया, और जो बच्चे विलाप कर रहे थे, उनका शोक दूर दूर तक फैल गया।
11 स्वामी और सेवक को एक रीति से दण्ड दिया गया; और जैसा राजा, वैसा ही सामान्य व्यक्ति को कष्ट होता था।
12 इस प्रकार वे सब मिलकर एक ही प्रकार की मृत्यु से बहुत मरे; न ही जीवित लोग उन्हें दफनाने के लिए पर्याप्त थे: क्योंकि एक ही क्षण में उनकी सबसे कुलीन संतान नष्ट हो गई थी।
13 क्योंकि उन्होंने तंत्रमंत्रोंके कारण किसी बातकी प्रतीति न की; ज्येष्ठ पुत्र के नष्ट होने पर, उन्होंने स्वीकार किया कि ये लोग परमेश्वर के पुत्र हैं।
14 क्योंकि जब सब बातें शान्त थीं, और वह रात अपनी तीव्र गति के बीच में थी,
15 तेरा सर्वशक्तिमान वचन स्वर्ग से तेरे राज सिंहासन पर से, एक भयंकर योद्धा की नाईं विनाश के देश के बीच में उतर आया,
16 और तेरी निष्कलंक आज्ञा को तेज तलवार के समान लाया, और सब वस्तुओं को मृत्यु से भर दिया; और वह आकाश को छू गया, परन्तु पृथ्वी पर खड़ा रहा।
17 तब अचानक उन्हें भयानक स्वप्न दिखाई पड़े, और वे बहुत व्याकुल हो गए, और उन पर ऐसा भय छा गया, जो पहिचानता न था।
18 और एक ने यहां फेंका, और एक ने वहां अधमरा होकर अपके मरने का कारण बताया।
19 क्योंकि जो स्वप्न उनको घबराते थे, वे पहिले से यही बताते थे, कि ऐसा न हो कि वे नाश हो जाएं, और न जाने किस कारण से दु:ख भोगें।
20 हां, मृत्यु का स्वाद धर्मी को भी छू गया, और जंगल में भीड़ का विनाश हुआ: परन्तु क्रोध अधिक समय तक नहीं रहा।
21 तब वह निर्दोष मनुष्य फुर्ती करके उनका बचाव करने को खड़ा हुआ; और अपने उचित मंत्रालय की ढाल, यहां तक कि प्रार्थना, और धूप की प्रायश्चित्त लाते हुए, खुद को क्रोध के खिलाफ खड़ा किया, और इस तरह विपत्ति को समाप्त कर दिया, यह घोषणा करते हुए कि वह आपका सेवक था।
22 इसलिथे उस ने नाश करनेवाले को न तो शरीर के बल से, और न भुजाओं के बल से, परन्तु वचन से ही, जो दण्ड देनेवाले को वश में कर दिया या, जो शपय और पुरखाओं से बान्धी हुई थी उसको वश में कर लिया।
23 क्योंकि जब मरे हुए एक के ऊपर एक ढेर होकर गिर पड़े, और बीच में खड़ा हुआ, तब उस ने क्रोध को रोककर जीवितों के लिये मार्ग अलग कर दिया।
24 क्योंकि उस लम्बे वस्त्र में सारा जगत् या, और मणियोंकी चारोंपंक्तियोंमें पुरखाओंकी महिमा खोदी गई, और उसके सिर के मुकुट पर तेरा महामहिम अंकित है।
25 नाश करनेवाले ने उनको जगह दी, और उन से डरता था;

अध्याय 19

1 और भक्तिहीनोंपर क्रोध अन्त तक बिना दया के उन पर भड़का, क्योंकि वह पहिले से जानता था कि वे क्या करेंगे;
2 और उन्हें जाने की छुट्टी देकर झटपट भेज दिया, तो वे मन फिराते, और उनका पीछा करते।
3 क्योंकि जब वे मरे हुओं की कब्रों पर विलाप और विलाप कर ही रहे थे, तो उन्होंने एक और मूर्खतापूर्ण युक्ति निकाली, और भगोड़ों की नाईं उनका पीछा करने लगे, जिनको उन्होंने जाने का समाचार दिया था।
4 क्योंकि नियति ने, जिसके वे योग्य थे, उन्हें इस अंत तक खींच लिया, और उन्हें उन बातों को भुला दिया जो पहले ही घटित हो चुकी थीं, ताकि वे उस दण्ड को पूरा कर सकें जो उनकी पीड़ा के लिए अपेक्षित था:
5 और इसलिये कि तेरी प्रजा अद्‌भुत मार्ग से चले, परन्तु अनोखी मृत्यु पाए।
6 क्योंकि सारी सृष्टि अपनी अपनी जाति में फिर से रची गई, और उन विशेष आज्ञाओं का पालन करने लगी जो उन्हें दी गई थीं, कि तेरे बालकों को हानि न पहुंचे।
7 अर्थात, बादल छावनी पर छाया करता है; और जहां जल पहिले खड़ा था, वहां सूखी भूमि दिखाई दी; और लाल समुद्र से बिना किसी बाधा का मार्ग

निकालो; और तेज़ धारा से एक हरा-भरा मैदान निकला:
8 और जितने लोग तेरे हाथ की रक्षा करते थे वे सब तेरे अद्‌भुत आश्चर्यकर्मों को देखते हुए वहां से होकर चले जाते थे।
9 क्योंकि वे घोड़ों की नाईं उड़ते, और भेड़ के बच्चोंकी नाईं उछलते, और हे यहोवा, जिस ने उनको बचाया, तेरी स्तुति करते हैं।
10 क्योंकि जब वे पराये देश में रहते थे, तब जो काम वे करते थे, वे अब भी स्मरण करते थे, कि भूमि से मवेशियों की सन्ती मक्खियाँ, और नदी से मछलियों की सन्ती बहुत से मेंढ़क उत्पन्न होते थे।
11 परन्तु इसके बाद उन्होंने पक्षियों की एक नई पीढ़ी देखी, जो भूख के वशीभूत होकर स्वादिष्ट मांस मांगने लगे।
12 क्योंकि उनको प्रसन्न करने के लिथे समुद्र में से बटेर निकल आते थे।
13 और पापियों को बिना पूर्व चिन्हों के गड़गड़ाहट के दण्ड दिया गया; क्योंकि उन्होंने अपनी ही दुष्टता के अनुसार न्यायपूर्वक दु:ख उठाया, यहां तक कि उन्होंने अजनबियों के प्रति अधिक कठोर और घृणित व्यवहार किया।
14 क्योंकि सदोमियों ने जिनको उनके आने पर पहिचान न जाना, उनको ग्रहण न किया, परन्तु उन्हों ने ऐसे मित्रोंको जो उनके योग्य थे, दास बना लिया।
15 और केवल इतना ही नहीं, परन्तु कदाचित् उन का कुछ आदर भी हो, क्योंकि उन्होंने परायों से मित्रता न की;
16 परन्तु उन्हों ने उनको बहुत दु:ख दिया, जिनको उन्होंने जेवनार खिलाकर ग्रहण किया, और उनके साथ उसी व्यवस्था में भागी हो गए।
17 इस कारण वे ऐसे अन्धे हो गए, जैसे धर्मी मनुष्य के द्वार पर पड़े थे; और हर एक भयानक घोर अन्धकार से घिरकर अपने ही द्वार से बाहर निकलना चाहता था।
18 क्योंकि तत्त्व एक प्रकार के सामंजस्य के द्वारा अपने आप में बदल गए, जैसे भजन में स्वर धुन का नाम बदल देते हैं, और फिर भी ध्वनियां सदैव बनी रहती हैं; जो कि किए गए कार्यों को देखकर अच्छी तरह से समझा जा सकता है।
19 क्योंकि पार्थिव वस्तुएँ जल बन गईं, और जो वस्तुएं पहिले जल में तैरती थीं, वे भूमि पर मिल गईं।
20 आग को जल में शक्ति मिली, और वह अपना गुण भूल गया; और जल अपना बुझाने का स्वभाव भूल गया।
21 दूसरी ओर, नाशवान जीवित प्राणियों का मांस आग की लपटों से नहीं जला, यद्यपि वे उसमें चलते थे; न तो उन्होंने बर्फीले प्रकार के स्वर्गीय मांस को पिघलाया जो कि पिघलने के लिए उपयुक्त प्रकृति का था।
22 क्योंकि हे यहोवा, तू ने सब बातोंमें अपक्की प्रजा की बड़ाई और महिमा की, और न उनको तुच्छ समझा, वरन हर समय और स्थान में उनकी सहायता की।

ECCLESIASTICUS

सिराच के पुत्र यीशु की बुद्धि



अध्याय 1

1 सिराच के पुत्र यीशु की बुद्धि की प्रस्तावना। जबकि कानून और भविष्यवक्ताओं द्वारा, और उनके नक्शेकदम पर चलने वाले अन्य लोगों द्वारा हमें कई और महान चीजें सौंपी गई हैं, जिनके लिए इज़राइल को सीखने और ज्ञान के लिए सराहना की जानी चाहिए; और इसके लिए न केवल पाठकों को स्वयं कुशल बनने की आवश्यकता है, बल्कि सीखने की इच्छा रखने वालों को भी बोलकर और लिखकर, जो बाहर हैं, उन्हें लाभान्वित करने में सक्षम होना चाहिए: मेरे दादाजी यीशु, जब उन्होंने खुद को कानून पढ़ने के लिए बहुत कुछ दिया था , और भविष्यवक्ताओं, और हमारे पूर्वजों की अन्य पुस्तकें, और उसमें अच्छा निर्णय प्राप्त करने के बाद, वह स्वयं भी विद्या और बुद्धि से संबंधित कुछ लिखने के लिए प्रेरित हुआ; इस इरादे से कि जो लोग सीखने के इच्छुक हैं, और इन चीज़ों के आदी हैं, उन्हें कानून के अनुसार जीवन जीने में अधिक लाभ हो सकता है। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इसे कृपापूर्वक और ध्यान से पढ़ें, और हमें क्षमा करें, जिसमें हमें कुछ शब्दों की कमी महसूस हो सकती है, जिनकी व्याख्या करने में हमने मेहनत की है। क्योंकि जो बातें इब्रानी में बोली जाती हैं, और दूसरी भाषा में अनुवादित की जाती हैं, उन में एक सी शक्ति नहीं होती: और न केवल ये बातें, वरन व्यवस्था, और भविष्यद्वक्ताओं, और बाकी पुस्तकों में भी कोई छोटा अंतर नहीं होता, जब वे अपनी भाषा में बोले जाते हैं। मिस्र में आने के आठवें और तीसवें वर्ष में, जब यूरगेट्स राजा था, और कुछ समय तक वहां रहने के बाद, मुझे कोई छोटी सीख की किताब नहीं मिली: इसलिए मैंने सोचा कि इसकी व्याख्या करने के लिए कुछ परिश्रम और प्रयास करना मेरे लिए सबसे जरूरी है; उस स्थान पर बड़ी सतर्कता और कौशल का उपयोग करते हुए पुस्तक को समाप्त किया, और इसे उनके लिए भी रखा, जो एक अजीब देश में सीखने के इच्छुक हैं, कानून के अनुसार जीने के लिए पहले से तैयार हैं। सारा ज्ञान प्रभु से आता है, और सदैव उसके साथ रहता है।
2 समुद्र की रेत, और वर्षा की बूंदें, और अनन्त काल के दिन कौन गिन सकता है?
3 आकाश की ऊंचाई, और पृथ्वी की चौड़ाई, और गहिरे भाग, और बुद्धि का भेद कौन जान सकता है?
4 बुद्धि सब वस्तुओं से पहिले से उत्पन्न हुई है, और विवेक की समझ सर्वदा से उत्पन्न हुई है।
5 परमप्रधान का वचन बुद्धि का सोता है; और उसके मार्ग अनन्त आज्ञा हैं।
6 बुद्धि की जड़ किस पर प्रगट हुई है? या उसकी बुद्धिमान युक्तियों को कौन जानता है?
7 बुद्धि का ज्ञान किस पर प्रगट हुआ है? और उसके महान अनुभव को किसने समझा है?
8 वह बुद्धिमान और अत्यन्त भययोग्य है, अर्थात् यहोवा अपने सिंहासन पर विराजमान है।
9 और उस ने उसको उत्पन्न किया, और उसे देखा, और गिन लिया, और उसे अपने सब कामोंके लिथे उण्डेल दिया।
10 वह उसके वरदान के अनुसार सब प्राणियों के संग है, और उस ने उसे अपने प्रेम रखनेवालोंको दे दिया है।
11 यहोवा का भय मानना आदर, और महिमा, और आनन्द, और आनन्द का मुकुट है।
12 यहोवा का भय मानने से मन प्रसन्न होता है, और आनन्द, मगन, और दीर्घायु होता है।
13 जो यहोवा का भय मानता है, अन्त में उसका भला ही होता है, और मृत्यु के दिन उस पर अनुग्रह होता है।
14 यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है: और वह विश्वासयोग्य लोगोंके लिये गर्भ ही में उत्पन्न हुआ।
15 उस ने मनुष्योंके साय मिलकर सदा की नेव डाली है, और वह उनके वंश को बनाए रखेगी।
16 यहोवा का भय मानना बुद्धि की परिपूर्णता है, और उसके फल से मनुष्यों को तृप्त करती है।
17 वह उनके सारे घर को मनभावनी वस्तुओं से, और धन को अपनी उपज से भर देती है।
18 यहोवा का भय बुद्धि का मुकुट है, जो मेल और उत्तम स्वास्थ्य को फलने-फूलने देता है; दोनों परमेश्वर के उपहार हैं: और यह उनके प्रेम को आनन्दित करता है।
19 बुद्धि कौशल और समझ की समझ की वर्षा करती है, और जो उस पर स्थिर रहते हैं, उनका आदर करती है।
20 बुद्धि की जड़ यहोवा का भय मानना है, और उसकी शाखाएं दीर्घायु हैं।
21 यहोवा का भय मानने से पाप दूर होते हैं, और जहां वह रहता है वहां क्रोध भी दूर हो जाता है।
22 क्रोधित मनुष्य को निर्दोष नहीं ठहराया जा सकता; क्योंकि उसके क्रोध का प्रभाव उसका विनाश होगा।
23 धैर्यवान मनुष्य थोड़ी देर के लिये आंसू बहाता है, और इसके बाद वह आनन्द से भर जाता है।
24 वह अपनी बातें कुछ समय तक छिपा रखेगा, और बहुत लोग उसके मुंह से उसकी बुद्धि का प्रचार करेंगे।
25 ज्ञान के दृष्टान्त बुद्धि के भण्डार में हैं; परन्तु पापी को भक्ति से घृणा होती है।
26 यदि तू बुद्धि चाहता है, तो आज्ञाओं का पालन कर, और यहोवा उसे तुझे दे देगा।
27 क्योंकि यहोवा का भय मानना बुद्धि और शिक्षा है, और विश्वास और नम्रता से वह प्रसन्न होता है।
28 जब तू कंगाल हो, तब यहोवा का भय न मानना, और दोहरे मन से उसके पास न आना।
29 मनुष्यों के साम्हने कपटी न होना, और जो कुछ तू बोलता है, उस पर ध्यान देना।
30 अपने आप को बड़ा न करना, ऐसा न हो कि तू गिर पड़े, और अपके प्राण का अपमान करे; और परमेश्वर तेरे भेदों को खोलकर तुझे मण्डली के बीच में गिरा देगा; धोखे से भरा है.

अध्याय 2

1 हे मेरे पुत्र, यदि तू यहोवा की सेवा करने को आए, तो अपने प्राण को परीक्षा के लिये तैयार कर।
2 अपना मन सीधा करो, और लगातार धीरज रखो, और संकट के समय उतावली न करो।
3 उस से लिपटे रहो, और दूर न जाओ, जिस से तू अन्त में बड़ा हो जाए।

4 जो कुछ तुझ पर पड़े, उसे आनन्द से सह ले, और जब तू नीचा हो जाए, तब धीरज धर।
5 क्योंकि सोना आग में परखा जाता है, और मनोहर मनुष्य विपत्ति की भट्टी में परखा जाता है।
6 उस पर विश्वास करो, और वह तुम्हारी सहायता करेगा; अपना मार्ग ठीक करो, और उस पर भरोसा रखो।
7 हे यहोवा के डरवैयों, उसकी करूणा की बाट जोहते रहो; और अलग मत हो जाओ, ऐसा न हो कि तुम गिर जाओ।
8 हे यहोवा के डरवैयों, उस पर विश्वास करो; और तुम्हारा प्रतिफल असफल न होगा।
9 हे यहोवा के डरवैयों, भलाई, और अनन्त आनन्द, और करूणा की आशा रखो।
10 प्राचीनकाल की पीढ़ियों पर दृष्टि करके देखो; क्या कभी किसी ने प्रभु पर भरोसा किया और निराश हुआ? या क्या कोई उसके डर से बना रहा, और त्याग दिया गया? वा किसको उस ने कभी तुच्छ जाना, जो उस को पुकारा करता था?
11 क्योंकि प्रभु करुणा और दया से परिपूर्ण, सहनशील और अति दयालु है, और पापों को क्षमा करता है, और संकट के समय उद्धार करता है।
12 हाय डरपोक मनों, और थके हुए हाथों, और पापी पर जो दो मार्गों पर चलते हैं!
13 हाय उस पर जो उदास मन का है! क्योंकि वह विश्वास नहीं करता; इसलिए उसका बचाव नहीं किया जाएगा.
14 हाय तुम पर जो धीरज खो बैठे हो! और जब प्रभु तुम्हारी सुधि लेगा, तब तुम क्या करोगे?
15 जो यहोवा का भय मानते हैं, वे उसके वचन का उल्लंघन न करेंगे; और जो उस से प्रेम रखते हैं, वे उसके मार्ग पर बने रहेंगे।
16 जो यहोवा के डरवैये हैं, वे उस वस्तु की खोज करेंगे जो भला हो, और उसे भाती हो; और जो उस से प्रेम रखते हैं वे व्यवस्था से परिपूर्ण किए जाएंगे।
17 जो यहोवा के डरवैये हैं, वे अपने मन को तैयार करेंगे, और अपने मन को उसके साम्हने दीन करेंगे,
18 और कहा, हम मनुष्यों के नहीं परन्तु यहोवा के हाथ में पड़ेंगे; क्योंकि जैसा उसका प्रताप है, वैसी ही उसकी करूणा भी है।

अध्याय 3

1 हे बालकों, अपने पिता मेरी सुनो, और वैसा ही करो, कि तुम सुरक्षित रहोगे।
2 क्योंकि यहोवा ने पिता को पुत्रोंपर आदर दिया, और माता को पुत्रोंपर अधिकार दिया है।
3 जो अपने पिता का आदर करता है, वह अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है;
4 और जो अपनी माता का आदर करता है, वह धन बटोरनेवाले के समान है।
5 जो अपने पिता का आदर करेगा, वह अपने लड़केबालोंके कारण आनन्द करेगा; और जब वह प्रार्थना करे, तो उसकी सुनी जाएगी।
6 जो अपने पिता का आदर करता है, वह दीर्घायु होता है; और जो यहोवा का आज्ञाकारी होगा वह अपनी माता के लिये शान्ति ठहरेगा।
7 जो यहोवा का भय मानता है, वह अपने पिता का आदर करेगा, और अपने माता-पिता की अपने स्वामियों की नाईं सेवा करेगा।
8 अपने पिता और माता का मन और काम दोनों से आदर करना, कि उन से तुझे आशीष मिले।
9 क्योंकि पिता के आशीर्वाद से लड़के-बालों का घर स्थिर होता है; परन्तु माता का शाप नेव को उखाड़ देता है।
10 अपने पिता का अनादर करके घमण्ड न करना; क्योंकि तेरे पिता का अनादर तेरे लिये कोई महिमा नहीं।
11 क्योंकि मनुष्य की महिमा उसके पिता के सम्मान से होती है; और जो माता अनादर पाती है, वह बालकोंके लिथे निन्दा होती है।
12 हे मेरे पुत्र, तेरे पिता की आयु तक सहायता करना, और जब तक वह जीवित रहे तब तक उसे शोक न करना।
13 और यदि उसकी समझ असफल हो जाए, तो उस पर धीरज रखो; और जब तू अपनी पूरी शक्ति में हो तो उसका तिरस्कार न करना।
14 क्योंकि तेरे पिता का जो उद्धार हुआ वह भुला न रहेगा, और पाप के बदले वह तुझे बढ़ाने के लिथे जोड़ा जाएगा।
15 तेरे क्लेश के दिन इसका स्मरण किया जाएगा; तुम्हारे पाप भी गर्म मौसम में बर्फ की तरह पिघल जायेंगे।
16 जो अपने पिता को त्याग देता है, वह निन्दा करनेवाले के समान है; और जो अपनी माता को क्रोध दिलाता है, वह परमेश्वर की ओर से शापित है।
17 हे मेरे पुत्र, अपना काम नम्रता से करो; इसी रीति से तू उस का प्रिय ठहरेगा जो स्वीकृत है।
18 तू जितना बड़ा होगा, उतना ही अधिक नम्र होगा, और यहोवा की कृपा तुझ पर होगी।
19 बहुत से लोग ऊँचे स्थान पर और प्रसिद्ध हैं; परन्तु भेद नम्र लोगों पर प्रगट होते हैं।
20 क्योंकि यहोवा की शक्ति महान है, और वह कंगालों में आदर पाता है।
21 उन वस्तुओं की खोज में न रहो जो तुम्हारे लिये कठिन हैं, और न उन वस्तुओं की खोज में रहो जो तुम्हारी शक्ति से बाहर हैं।
22 परन्तु जो आज्ञा तुझे दी गई है उस पर श्रद्धा से विचार करना, क्योंकि गुप्त बातें अपनी आंखों से देखना तेरे लिये आवश्यक नहीं।
23 व्यर्थ बातों में कुतूहल न करना; क्योंकि मनुष्य जितना समझते हैं, उससे अधिक बातें तुझे बतायी जाती हैं।
24 क्योंकि बहुत से लोग अपने ही व्यर्थ विचार से धोखा खाते हैं; और एक बुरे संदेह ने उनके निर्णय को पलट दिया है।
25 तू बिना आंखों के उजियाला चाहेगा; इसलिये जो ज्ञान तेरे पास नहीं, उसका प्रचार न कर।
26 हठीले मन का अन्त अन्त में बुरा होता है; और जो कोई ख़तरे से प्रीति रखता है वह वहीं नष्ट हो जाएगा।
27 हठीले मन दु:ख से भरा रहेगा; और दुष्ट मनुष्य पाप पर पाप बढ़ाता जाएगा।

28 अभिमानियों को दण्ड देने का कुछ भी उपाय नहीं; क्योंकि दुष्टता का पौधा उस में जड़ पकड़ चुका है।
29 समझदार का मन एक दृष्टान्त को समझेगा; और बुद्धिमान की अभिलाषा चौकस कान से होती है।
30 जल से धधकती हुई आग बुझ जाएगी; और भिक्षा पापों का प्रायश्चित्त करती है।
31 और जो अच्छे बदले देता है वह उस बात का स्मरण रखता है जो इसके बाद आएगी; और जब वह गिर पड़े, तो उसे ठहरने का स्थान मिलेगा।

अध्याय 4

1 हे मेरे पुत्र, कंगाल को उसकी जीविका से वंचित न कर, और दरिद्र की आंखों को अधिक समय तक न रहने दे।
2 भूखे को उदास न कर; किसी मनुष्य को उसके संकट में न भड़काओ।
3 खीझवाले मन को और अधिक विपत्ति न देना; और जिसे आवश्यकता हो, उसे देने से विमुख रहो।
4 दीन जन की प्रार्थना न ठुकराओ; न किसी कंगाल से अपना मुंह फेर लेना।
5 दरिद्र की ओर से आंख न फेरना, और उसे तेरी निन्दा करने का अवसर न देना;
6 क्योंकि यदि वह अपने मन की कड़वाहट के कारण तुझे शाप दे, तो उसका रचयिता उसकी प्रार्थना सुनेगा।
7 मण्डली की प्रीति पाओ, और बड़े पुरूष के साम्हने सिर झुकाओ।
8 इस से तुझे दुख न हो, कि तू कंगाल के साम्हने कान झुकाकर, और नम्रता से उसे मित्रवत उत्तर दे।
9 जो अपराधी पर अन्धेर करता है उसे अन्धेर करनेवाले के हाथ से बचा; और जब तू न्याय करने बैठे, तो तेरा मन उदास न हो।
10 अनाथोंके लिये पिता और उनकी माता के लिथे पति बन जाओ; इस प्रकार तू परमप्रधान के पुत्र के समान ठहरेगा, और वह तुझ से तेरी माता से भी अधिक प्रेम रखेगा।
11 बुद्धि अपने लड़केबालोंको बढ़ाती है, और अपने खोजियोंको पकड़ लेती है।
12 जो उस से प्रीति रखता है, वह प्राण से प्रीति रखता है; और जो लोग उसे शीघ्र ढूंढ़ते हैं वे आनन्द से भर जाएंगे।
13 जो उसे पकड़ेगा, वह महिमा का भागी होगा; और जहां कहीं वह प्रवेश करेगी, वहां यहोवा आशीष देगा।
14 जो उसकी सेवा करते हैं, वे पवित्र की सेवा टहल करते हैं; और जो उस से प्रेम रखते हैं, प्रभु उस से प्रेम रखता है।
15 जो कोई उसकी सुनेगा वह जाति जाति को दोषी ठहराएगा; और जो कोई उसकी सुनेगा वह निडर बसा रहेगा।
16 यदि कोई अपने आप को उसके प्रति समर्पित कर दे, तो वह उसका वारिस होगा; और उसकी पीढ़ी उसे अपने अधिकार में रखेगी।
17 क्योंकि पहिले तो वह उसके साय टेढ़ी चाल से चलेगी, और उस पर भय और भय लाएगी, और अपनी ताड़ना से उसे सताती रहेगी, यहां तक कि वह उसके प्राण पर भरोसा करके अपके नियमोंके द्वारा उसे परखेगी।
18 तब वह सीधे मार्ग से उसके पास लौट आएगी, और उसे शान्ति देगी, और अपने भेद बताएगी।
19 परन्तु यदि वह कुटिल हो, तो वह उसे त्याग देगी, और उसे उसके नाश के लिये सौंप देगी।
20 अवसर का ध्यान रखो, और बुराई से सावधान रहो; और जब बात तेरे प्राण की हो तो लज्जित न होना।
21 क्योंकि लज्जा का कारण पाप है; और एक लज्जा की बात है जो महिमा और अनुग्रह है।
22 किसी को अपने मन के विरुद्ध न मानना, और न किसी का श्रद्धा करके तुझे गिराना।
23 और जब भलाई करने का अवसर आए, तो बोलना न छोड़ना, और अपनी बुद्धि उसकी सुन्दरता में छिपा न रखना।
24 क्योंकि बुद्धि वाणी से प्रगट होती है, और जीभ की वाणी से विद्या प्रगट होती है।
25 किसी भी प्रकार सत्य के विरोध में न बोलना; परन्तु अपनी अज्ञानता की भूल पर लज्जित हो।
26 अपने पापोंको मान लेने में लज्जित न होना; और नदी की धारा को बाध्य मत करो।
27 अपने आप को मूर्ख मनुष्य का दास न बनाना; न तो शक्तिशाली व्यक्ति को स्वीकार करो।
28 सत्य के लिये मरते दम तक प्रयत्न करो, और यहोवा तुम्हारे लिये लड़ेगा।
29 अपनी जीभ में उतावली न करना, और अपने कामों में ढिलाई और ढिलाई न करना।
30 तू अपने भवन में सिंह के समान न हो, और न अपने सेवकोंके बीच में क्रोधित हो।
31 तू लेने के लिथे अपना हाथ न बढ़ाना, और जब तुझे चुकाना पड़े तब बन्द न करना।

अध्याय 5

1 अपना मन अपके धन पर न लगाना; और यह मत कहो, कि मेरे पास जीवन भर के लिये बहुत कुछ है।
2 अपने मन और अपनी शक्ति के पीछे न चलना, और अपने मन के मार्ग पर चलना;
3 और यह न कहना, कौन मेरे कामोंके कारण मुझ पर नियंत्रण करेगा? क्योंकि यहोवा निश्चय तेरे घमण्ड का बदला लेगा।
4 यह न कहना, कि मैं ने पाप किया, और मेरी क्या हानि हुई? क्योंकि यहोवा सहनशील है, वह तुम्हें किसी रीति से जाने न देगा।
5 प्रायश्चित्त के विषय में पाप के साथ पाप जोड़ने से न डरो।
6 और यह न कहना कि उसकी करूणा बड़ी है; वह मेरे बहुत से पापों के कारण शान्त होगा; क्योंकि उस से दया और क्रोध निकलता है, और उसका क्रोध पापियोंपर भड़कता है।
7 यहोवा की ओर फिरने में विलम्ब न करना, और प्रति दिन विलम्ब न करना; क्योंकि यहोवा का क्रोध अचानक भड़क उठेगा, और तू जो निडर है, वह नष्ट हो जाएगा, और पलटा लेने के दिन नष्ट हो जाएगा।
8 अन्याय से प्राप्त माल पर अपना मन न लगाना, क्योंकि विपत्ति के दिन उस से तुझे कुछ लाभ न होगा।

9 हर हवा में न हिलो, और न हर मार्ग में जाओ; क्योंकि जो दोहरी जीभवाला पापी होता है, वह ऐसा ही करता है।
10 अपनी समझ में दृढ़ रह; और तेरा वचन भी वैसा ही हो।
11 सुनने में फुर्ती करो; और तेरा जीवन सच्चा हो; और धैर्य के साथ उत्तर दो.
12 यदि तू समझ सके, तो अपने पड़ोसी को उत्तर दे; यदि नहीं, तो अपना हाथ अपने मुँह पर रखो।
13 आदर और लज्जा का विषय बातें हैं, और मनुष्य की जीभ उसके पतन का कारण है।
14 तुम कानाफूसी करनेवाले न कहलाओ, और अपनी जीभ से घात में न रहो; क्योंकि चोर को बड़ी लज्जा, और दोगली जीभ से बुरी निन्दा होती है।
15 चाहे बड़े मामले में, चाहे छोटे में, किसी भी बात से अनभिज्ञ न रहो।

अध्याय 6

1 मित्र के बदले शत्रु न बनो; क्योंकि इस से तू बदनामी, लज्जा, और निन्दा का भाग होगा; वैसे ही पापी भी दोहरी जीभवाला होगा।
2 अपने मन की युक्ति में अपनी बड़ाई न करना; ऐसा न हो कि तेरा प्राण अकेले भटके हुए बैल की नाई टुकड़े टुकड़े हो जाए।
3 तू अपनी पत्तियाँ खा जाएगा, और अपना फल खो देगा, और अपने आप को सूखे वृक्ष के समान छोड़ देगा।
4 दुष्ट प्राणी उसके पास वाले को नाश करेगा, और उसके शत्रु उसकी हंसी उड़ाएंगे।
5 मीठी बोली से मित्र बढ़ जाते हैं, और अच्छी बोली बोलने से मित्र बढ़ जाते हैं।
6 बहुतों से मेल मिलाप रखो; तौभी हजार में एक ही समझाता है।
7 यदि तुझे कोई मित्र मिले, तो पहिले उसे परख ले, और उसका श्रेय देने में उतावली न कर।
8 क्योंकि कोई अपने ही अवसर के लिये मित्र होता है, और तेरे संकट के दिन में भी साथ न देगा।
9 और एक मित्र है, जो बैर और झगड़े में पड़कर तेरी निन्दा का कारण बनेगा।
10 फिर, मेज पर बैठनेवाला कोई मित्र है, और तेरे संकट के दिन में वह साथ न देगा।
11 परन्तु तेरे कल्याण के समय वह तेरे तुल्य हो जाएगा, और तेरे दासोंपर हियाव बान्धेगा।
12 यदि तू नीचा किया जाएगा, तो वह तेरे विरूद्ध होगा, और तेरे साम्हने से छिप जाएगा।
13 अपने शत्रुओं से अलग हो जाओ, और अपने मित्रों से सावधान रहो।
14 विश्वासयोग्य मित्र दृढ़ रक्षा है; और जिस को ऐसा मिला, उस ने धन पाया।
15 विश्वासयोग्य मित्र का कुछ भी विरोध नहीं कर सकता, और उसकी महिमा अमूल्य है।
16 विश्वासयोग्य मित्र जीवन की औषधि है; और जो यहोवा का भय मानते हैं वे उसे पाएंगे।
17 जो कोई यहोवा का भय मानता है, वह अपनी मित्रता ठीक रीति से करेगा; क्योंकि जैसा वह है, वैसा ही उसका पड़ोसी भी होगा।
18 हे मेरे पुत्र, तू बचपन से शिक्षा ग्रहण कर, इस प्रकार तू बुढ़ापे तक बुद्धि प्राप्त करता रहेगा।
19 जोतनेवाले और बोनेवाले के समान उसके पास आओ, और उसके अच्छे फल की आशा रखो; क्योंकि उसके लिये परिश्रम करने में तुझे अधिक परिश्रम न करना पड़ेगा, परन्तु तू तुरन्त उसका फल खाएगा।
20 वह अनपढ़ोंको अति अप्रिय लगती है; जो निर्बुद्धि है, वह उसके पास न रहेगा।
21 वह परखनेवाले बड़े पत्थर की नाईं उस पर पड़ी रहेगी; और बहुत देर होने पर वह उसे अपने पास से निकाल देगा।
22 क्योंकि बुद्धि उसके नाम के अनुसार है, और वह बहुतों पर प्रगट नहीं होती।
23 हे मेरे पुत्र कान लगाकर मेरी सम्मति ग्रहण कर, और मेरी सम्मति को न टाल;
24 और अपने पांव उसकी बेड़ियों में, और अपनी गर्दन उसकी जंजीर में डाल;
25 अपना कन्धा झुकाकर उसे सम्भाल, और उसके बन्धनोंके कारण उदास न हो।
26 तू अपने सम्पूर्ण मन से उसके पास आ, और अपनी सारी शक्ति से उसके मार्ग की रक्षा कर।
27 ढूंढ़ो, और ढूंढ़ो, तो वह तुम्हें प्रगट हो जाएगी; और जब तुम उसे पकड़ लो, तो जाने न देना।
28 क्योंकि अन्त में तू उसका विश्राम पाएगा, और वह तेरे आनन्द में बदल जाएगा।
29 तब उसकी बेड़ियाँ तेरे लिथे दृढ़ रक्षा ठहरेंगी, और उसकी जंजीरें शोभायमान वस्त्र ठहरेंगी।
30 क्योंकि उस पर सोने का आभूषण है, और उसकी पट्टियाँ बैंजनी फीते की हैं।
31 तू उसे महिमा के वस्त्र के समान पहिनाना, और आनन्द के मुकुट के समान अपने ऊपर रखना।
32 हे मेरे पुत्र, यदि तू चाहे तो सिखाएगा; और यदि तू सोचेगा, तो चतुराई से काम लेगा।
33 यदि तू सुनना चाहता है, तो समझ प्राप्त करेगा; और यदि तू कान लगाएगा, तो बुद्धिमान बनेगा।
34 पुरनियोंकी भीड़ में खड़े रहो; और जो बुद्धिमान है उस से लिपटे रहो।
35 हर एक भजन सुनने को तत्पर रहो; और समझ के दृष्टान्त तुझ से न छूटें।
36 और यदि तू किसी समझदार पुरूष को देखे, तो उसके पास कभी जाना, और उसके द्वार की डेवढ़ी को अपने पांव से घिसना।
37 तेरा मन यहोवा की विधियोंपर लगा रहे, और उसकी आज्ञाओं पर निरन्तर ध्यान करता रहे; वह तेरे मन को दृढ़ करेगा, और तेरी इच्छा के अनुसार तुझे बुद्धि देगा।

अध्याय 7

1 कोई बुराई न करो, इसलिये तुम्हारी कोई हानि न होगी।
2 कुटिल से दूर हो जाओ, और अधर्म तुझ से दूर हो जाएगा।

3 हे मेरे पुत्र, कुटिलता के खेतोंमें न बोओ, और उनका सात गुणा फल काटोगे।
4 न तो यहोवा की प्रधानता की खोज करो, और न राजा की महिमा की खोज करो।
5 यहोवा के साम्हने अपने आप को धर्मी न ठहराओ; और राजा के साम्हने अपनी बुद्धि का घमण्ड न करना।
6 जो अधर्म दूर न कर सके, उस से न्यायी बनने का प्रयत्न न करो; ऐसा न हो कि तू किसी भी समय पराक्रमी व्यक्ति से डरे, जो तेरे धर्म के मार्ग में ठोकर का कारण हो।
7 किसी नगर की मण्डली को अपमानित न करना, और न अपने आप को लोगों के बीच में गिरा देना।
8 एक पाप को दूसरे पाप पर न बांधो; क्योंकि तू किसी भी काम में दण्ड से रहित न होगा।
9 यह न कह, कि परमेश्वर मेरे बहुत से अन्नबलि पर दृष्टि करेगा, और जब मैं परमप्रधान परमेश्वर के साम्हने चढ़ाऊंगा, तब वह उसे ग्रहण करेगा।
10 जब तू प्रार्थना करे, तो उदास न हो, और दान देना न भूले।
11 अपने मन की कड़वाहट के कारण अपना अपमान न करना; क्योंकि नम्र और ऊंचा करनेवाला एक है।
12 अपने भाई के विरूद्ध झूठ की कल्पना न करना; न ही अपने दोस्त को पसंद करो.
13 किसी प्रकार का झूठ न बोलना, क्योंकि उसकी रीति अच्छी नहीं है।
14 पुरनियों के साम्हने बहुत बातें न कहना, और प्रार्थना करते समय बहुत बक-बक न करना।
15 न परिश्रम के काम से बैर रखो, और न उस खेती से, जो परमप्रधान ने ठहराया है।
16 अपने आप को पापियोंकी भीड़ में न गिनना, परन्तु स्मरण रखना, कि क्रोध बहुत देर तक न टिकेगा।
17 अपने आप को बहुत नम्र करो, क्योंकि भक्तिहीन का बदला आग और कीड़े हैं।
18 किसी भलाई के लिये मित्र को कभी न बदलना; न ओपीर के सोने के लिये कोई वफ़ादार भाई।
19 बुद्धिमान और भली स्त्री को न छोड़ना; क्योंकि उसका अनुग्रह सोने से भी बढ़कर है।
20 क्योंकि तेरा दास सच्चा काम करता है, तो उस से और उस मजदूर से जो अपना सब कुछ तेरे लिये दे देता है, बुराई न करना।
21 तू अच्छे दास से प्रेम रखना, और उसे स्वतंत्रता से वंचित न करना।
22 क्या तेरे पास गाय-बैल है? उन पर दृष्टि रखना: और यदि वे तेरे लाभ के लिये हों, तो उन्हें अपने पास रखना।
23क्या तुम्हारे सन्तान है? उन्हें शिक्षा दो, और युवावस्था से ही उनकी गर्दन झुकाओ।
24 क्या तेरी बेटियाँ हैं? उनके शरीर की सुधि रखो, और उनके प्रति प्रसन्नचित्त न दिखो।
25 अपनी बेटी का ब्याह कर, तो यह एक कठिन काम है; परन्तु उसे किसी समझदार पुरूष को सौंप देना।
26 क्या तेरे मन के अनुसार कोई स्त्री है? उसे न त्यागो; परन्तु अपने आप को किसी उजली स्त्री के हाथ में न सौंप दो।
27 अपने पिता का सम्पूर्ण मन से आदर करना, और अपनी माता का दुख न भूलना।
28 स्मरण रख, कि तू उन से उत्पन्न हुआ; और जो कुछ उन्होंने तेरे लिये किया है उसका बदला तू उन्हें कैसे दे सकता है?
29 तू अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा का भय मानना, और उसके याजकों का भय मानना।
30 जिस ने तुझे सारी शक्ति से बनाया, उस से प्रेम रख; और उसके सेवकोंको न त्याग।
31 यहोवा का भय मानो, और याजक का आदर करो; और जैसा तुझे आदेश दिया गया है, उसके अनुसार उसे उसका भाग देना; पहिला फल, और दोषबलि, और कन्धों का दान, और पवित्रीकरण का बलिदान, और पवित्र वस्तुओं का पहिला फल।
32 और अपना हाथ कंगालों की ओर बढ़ा, कि तेरा आशीर्वाद सिद्ध हो।
33 दान हर जीवित मनुष्य की दृष्टि में अनुग्रह का कारण होता है; और मरे हुओं के लिये इसे रोको मत।
34 और रोनेवालोंके साय न रहना, और जो शोक करते हैं उनके साय विलाप करना।
35 बीमारों की सुधि लेने में झिझक न करना; क्योंकि वह तुझे प्रिय बनाएगा।
36 जो कुछ तू हाथ में ले, उसका अन्त स्मरण रखना, और कभी भूल न करना।

अध्याय 8

1 किसी शूरवीर से युद्ध न करना, कहीं ऐसा न हो कि तू उसके हाथ में पड़ जाए।
2 धनवान से विवाद न करना, ऐसा न हो कि वह तुझ पर भारी पड़े; क्योंकि सोने ने बहुतों को नाश किया है, और राजाओं के मन को भ्रष्ट कर दिया है।
3 उस मनुष्य से झगड़ा न करना जो जीभ से भरा हो, और उसकी आग में लकड़ी न जलाओ।
4 असभ्य मनुष्य से न मिलना, ऐसा न हो कि तेरे पुरखा बदनाम हों।
5 जो मनुष्य पाप से फिर जाता है, उसे दोषी न ठहराओ, परन्तु स्मरण रखो, कि हम सब दण्ड के योग्य हैं।
6 बुढ़ापे में मनुष्य का अनादर न करना, क्योंकि हम में से कितने तो बूढ़े हो जाते हैं।
7 अपके सब से बड़े शत्रु के मरने से आनन्दित न हो, परन्तु यह स्मरण रख कि हम सब मरेंगे।
8 बुद्धिमानों की बात को तुच्छ न जानना, परन्तु उनकी नीतिवचनों से परिचित होना; क्योंकि उन से तू शिक्षा, और बड़े पुरूषों की सहजता से सेवा करना सीखेगा।
9 पुरनियों की बातचीत से न चूको; क्योंकि उन्होंने भी अपने बापदादों से सीखा है, और तू भी उन से समझना, और आवश्यकता के अनुसार उत्तर देना सीखेगा।
10 पापी के अंगारे न जलाना, ऐसा न हो कि तू उसकी आग की लौ से जल जाए।
11 किसी दुष्ट के साम्हने क्रोध न करना, ऐसा न हो कि वह तुझे अपनी बातों में फंसाने की घात में बैठे।
12 जो तुझ से अधिक शक्तिशाली है उसे उधार न दो; क्योंकि यदि तू उसे उधार दे, तो गिन ले, परन्तु खो जाएगा।

13 अपनी शक्ति से अधिक का जामिन न बनो; क्योंकि यदि तुम जामिन कर सको, तो उसका भुगतान करने का ध्यान रखना।
14 न्यायी के पास मुकद्दमा न लड़ो; क्योंकि वे उसके सम्मान के अनुसार उसका न्याय करेंगे।
15 निर्भीक के संग मार्ग में न जाना, ऐसा न हो कि वह तुझ को उदास कर दे; क्योंकि वह अपनी इच्छा के अनुसार काम करेगा, और तू भी उसकी मूर्खता के कारण उसके साथ नाश हो जाएगा।
16 क्रोधित मनुष्य से झगड़ा न करना, और उसके संग एकान्त स्थान में न जाना; क्योंकि खून उसकी दृष्टि में कुछ नहीं, और जहां सहाथता न मिलेगी, वहां वह तुझे उलट देगा।
17 मूर्ख से परामर्श न करना; क्योंकि वह सम्मति नहीं दे सकता।
18 परदेशी के साम्हने कोई गुप्त बात न करना; क्योंकि तू नहीं जानता, कि वह क्या उत्पन्न करेगा।
19 अपना मन हर एक के साम्हने न खोलना, ऐसा न हो कि वह तुझ से चतुराई से बदला ले।

अध्याय 9

1 अपनी प्रिय स्त्री पर डाह न करना, और उसे अपने विरूद्ध बुरी शिक्षा न देना।
2 अपना प्राण किसी स्त्री को न दे जो तेरी सम्पत्ति पर पांव रखे।
3 वेश्या से न मिलना, ऐसा न हो कि तू उसके फंदे में फंसे।
4 और गानेवाली स्त्री की संगति में अधिक न रहना, ऐसा न हो कि तू उसके कामोंमें फंस जाए।
5 दासी पर दृष्टि न कर, कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी अनमोल वस्तुओं के कारण धोखा खा जाए।
6 अपना प्राण वेश्याओं को न दो, ऐसा न हो कि तुम अपना निज भाग खो जाओ।
7 नगर के चौकों में इधर उधर न देखना, और न उसके एकान्त स्थान में फिरना।
8 सुन्दर स्त्री की ओर से आंख फेर लेना, और पराई सुन्दरता पर दृष्टि न करना; क्योंकि बहुतों ने स्त्री की सुन्दरता से धोखा खाया है; क्योंकि इस से प्रेम आग की नाईं प्रज्वलित होता है।
9 पराई स्त्री के साथ कभी न बैठना, और न उसे अपनी गोद में लेना, और न उसके साथ दाखमधु पीना; कहीं ऐसा न हो कि तेरा मन उसकी ओर लगे, और तू अपनी अभिलाषा के कारण विनाश में पड़ जाए।
10 किसी पुराने मित्र को मत त्यागो; क्योंकि नये की तुलना उस से नहीं की जा सकती; नया मित्र नये दाखमधु के समान है; जब वह पुराना हो जाए, तब तुम उसे आनन्द से पीना।
11 पापी की महिमा पर डाह न कर; क्योंकि तू नहीं जानता, कि उसका अन्त क्या होगा।
12 जिस वस्तु से भक्तिहीन लोग प्रसन्न होते हैं, उस से प्रसन्न न होना; परन्तु स्मरण रखो, वे अपनी कब्र तक दण्ड से बचाये बिना न जायेंगे।
13 उस मनुष्य से जो घात करने का सामर्थ रखता हो, अपने को दूर रख; इसी प्रकार तू मृत्यु के भय के विषय में सन्देह न करना; और यदि तू उसके पास आए, तो दोष न देना, ऐसा न हो कि वह अभी तेरा प्राण ले ले; स्मरण रख, कि तू जालों के बीच में है, और तू नगर के गढ़ोंपर चल रहा है।
14 जहां तक हो सके अपके पड़ोसी को पहिचान, और बुद्धिमानोंसे सम्मति ले।
15 तेरी बातचीत बुद्धिमानोंके साय हो, और तेरी सारी बातचीत परमप्रधान की व्यवस्था के अनुसार हो।
16 और धर्मी मनुष्य तेरे साय खाएं-पीएं; और तेरा घमण्ड यहोवा के भय के कारण हो।
17 काम करनेवाले के हाथ की सराहना की जाएगी; और उसकी वाणी के कारण बुद्धिमान प्रजा का प्रधान होगा।
18 जो मनुष्य बुरी जीभ बोलता है, वह अपने नगर में खतरनाक होता है; और जो अपनी बातों में उतावलापन करता है, उस से बैर किया जाएगा।

अध्याय 10

1 बुद्धिमान न्यायी अपक्की प्रजा को शिक्षा देगा; और विवेकी मनुष्य का शासन सुव्यवस्थित होता है।
2 जैसा प्रजा का न्यायी आप है, वैसे ही उसके हाकिम भी हैं; और उस नगर का हाकिम कैसा मनुष्य है, उसके सब निवासी ऐसे ही हैं।
3 निर्बुद्धि राजा अपनी प्रजा को नाश करता है; परन्तु जो अधिकारी हैं उनके विवेक से नगर बसा रहेगा।
4 पृथ्वी का अधिकार यहोवा के हाथ में है, और समय आने पर वह उस पर लाभदायक को अधिकारी ठहराएगा।
5 मनुष्य की समृद्धि परमेश्वर के हाथ में है, और वह अपनी प्रतिष्ठा का अधिकार शास्त्री पर रखता है।
6 हर एक बुराई के कारण अपने पड़ोसी से बैर न रखना; और हानिकारक आचरण से कुछ भी न करो।
7 परमेश्वर और मनुष्य की दृष्टि में घमण्ड घृणित है, और दोनों के द्वारा मनुष्य पाप करता है।
8 अधर्म के लेन-देन, हानि, और छल से प्राप्त धन के कारण राज्य एक देश से दूसरे देश में चला जाता है।
9 पृथ्वी और राख क्यों घमण्ड करती है? लोभी मनुष्य से अधिक दुष्ट कोई वस्तु नहीं; क्योंकि वह अपना प्राण ही बेच देता है; क्योंकि जब तक वह जीवित रहता है, तब तक वह अपनी आंतें त्याग देता है।
10 वैद्य लम्बे रोग को काट डालता है; और जो आज राजा है वह कल मर जाएगा।
11 क्योंकि मनुष्य के मरने पर रेंगनेवाले जन्तु, और पशु, और कीड़े उसे विरासत में मिलेंगे।
12 घमण्ड का आरम्भ तब होता है, जब कोई परमेश्वर से दूर हो जाता है, और उसका मन अपने सृजनहार से फिर जाता है।
13 क्योंकि घमण्ड पाप का आरम्भ है, और जिसके पास वह है वह घृणित काम उगलेगा; और इस कारण यहोवा ने उन पर अजीब विपत्तियां डालीं, और उन्हें सत्यानाश कर दिया।
14 यहोवा ने अभिमानियोंके सिंहासनोंको ढा दिया, और उनके स्थान पर नम्र लोगोंको खड़ा किया है।
15 यहोवा ने घमण्डी जातियोंकी जड़ उखाड़ दी, और उनके स्यान में दीन लोगोंको बसाया है।
16 यहोवा ने अन्यजातियोंके देशोंको उलट दिया, और उनको पृथ्वी की नेव तक नष्ट कर डाला।

17 उस ने उन में से कितनोंको उठाकर नाश किया, और उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा दिया।
18 न तो पुरूषोंके लिथे घमण्ड, और न स्त्री से उत्पन्न हुए पुरूषोंके लिथे भड़का हुआ क्रोध उत्पन्न हुआ।
19 जो यहोवा का भय मानते हैं, वे निश्चित वंश हैं, और जो उस से प्रेम रखते हैं, वे आदर का वंश हैं; जो आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं, वे धोखा देने योग्य वंश हैं।
20 भाइयोंमें जो प्रधान है वही आदर पाता है; वैसे ही वे हैं जो यहोवा की दृष्टि में उसका भय मानते हैं।
21 प्रभु का भय अधिकार प्राप्त करने से पहिले होता है, परन्तु कठोरता और घमण्ड से उसका नाश होता है।
22 चाहे वह धनी हो, चाहे कुलीन, चाहे दरिद्र, उनकी महिमा यहोवा के भय से होती है।
23 समझवाले कंगाल का तिरस्कार करना उचित नहीं; किसी पापी मनुष्य की बड़ाई करना सुविधाजनक नहीं है।
24 महापुरुषों, न्यायियों, और रसूखदारों का आदर किया जाएगा; तौभी उन में से जो यहोवा का भय मानता है, उस से बड़ा कोई नहीं।
25 जो दास बुद्धिमान है, वह स्वतन्त्र लोग उसकी सेवा किया करते हैं; और जो ज्ञानी है, वह सुधरने पर भी कुढ़ता नहीं।
26 अपना काम-काज करने में अति बुद्धिमानी न करना; और संकट के समय घमण्ड न करना।
27 जो परिश्रम करता है, और सब बातों में बढ़ जाता है, वह उस से जो घमण्ड करता और रोटी चाहता है, उत्तम है।
28 हे मेरे पुत्र, नम्रता से अपने प्राण की महिमा कर, और उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार उसका आदर कर।
29 जो अपने ही प्राण के विरूद्ध पाप करता है, उसे कौन निर्दोष ठहराएगा? और जो अपने प्राण का अनादर करता है उसका आदर कौन करेगा?
30 कंगाल का आदर उसकी कुशलता के कारण होता है, और धनी का आदर उसके धन के कारण होता है।
31 जो कंगाली में आदर पाता है, वह धन में कितना अधिक? और जो धन में अनादर पाता है, वह निर्धनता में क्योंकर अनादर करता है?

अध्याय 11

1 बुद्धि नीच मनुष्य का सिर ऊंचा कर देती है, और उसे बड़े मनुष्योंके बीच बैठा देती है।
2 किसी मनुष्य की सुन्दरता के कारण उसकी प्रशंसा न करो; न ही किसी मनुष्य से उसके बाहरी दिखावे के लिए घृणा करो।
3 मधुमक्खी मक्खी जैसी छोटी है; परन्तु उसका फल मीठे पदार्थों में प्रधान है।
4 अपने वस्त्र और वस्त्र पर घमण्ड न करना, और सम्मान के दिन अपने आप को बड़ाई न करना; क्योंकि यहोवा के काम अद्‌भुत हैं, और मनुष्यों के बीच में उसके काम गुप्त हैं।
5 बहुत से राजा भूमि पर बैठ गए हैं; और जिसके बारे में कभी नहीं सोचा गया था उसने ताज पहन लिया है।
6 बहुत से शूरवीरोंकी बड़ी निन्दा हुई है; और माननीय को दूसरे पुरूषों के हाथ में सौंप दिया गया।
7 जब तक तू सत्य को न परख ले, तब तक दोष न लगाना; पहिले समझ लेना, और फिर डांटना।
8 जब तक तू इसका कारण न सुन ले, तब तक उत्तर न देना; और मनुष्यों को बीच में न टोकना।
9 जो काम तुझ से संबंधित नहीं, उस में विवाद न करना; और पापियों के साथ न्याय न करना।
10 हे मेरे पुत्र, बहुत मामलों में दखल न दे; क्योंकि यदि तू बहुत ही दखलअंदाजी करेगा, तो निर्दोष न ठहरेगा; और यदि तू उसके पीछे लगे, तो कुछ न प्राप्त कर सकेगा, और न भागकर बच सकेगा।
11 एक है जो परिश्रम करता, और दुःख उठाता है, और उतावली करता है, और इतना पीछे हो जाता है।
12 फिर, एक और है जो धीमा है, और उसे सहायता की आवश्यकता है, और योग्यता की घटी है, और वह कंगाल है; तौभी यहोवा की दृष्टि उस पर अच्छी दृष्टि से पड़ी, और उसे उसकी नीची स्थिति से दूर कर दिया,
13 और अपना सिर दुख से ऊपर उठाया; यहां तक कि देखने वालों में से बहुतों को उस पर आश्चर्य हुआ।
14 समृद्धि और विपत्ति, जीवन और मृत्यु, दरिद्रता और धन, प्रभु ही से आते हैं।
15 बुद्धि, ज्ञान, और व्यवस्था की समझ यहोवा ही से है; प्रेम और भले कामों का मार्ग उसी से हैं।
16 पापियोंके साथ ही अधर्म और अन्धकार का आरम्भ हुआ, और जो उस पर घमण्ड करते हैं उनके साय बुराई पुरानी हो जाएगी।
17 यहोवा का दान भक्तों पर बना रहता है, और उसकी कृपा से सर्वदा कल्याण होता है।
18 जो अपनी चतुराई और चतुराई से धनवान होता है, और उसका प्रतिफल उसे यही मिलता है।
19 उस ने कहा, मुझे विश्रम मिला है, और अब अपके धन में से नित्य खाऊंगा; और फिर भी वह नहीं जानता कि उस पर कौन सा समय आएगा, और उसे उन चीजों को दूसरों पर छोड़ना होगा, और मरना होगा।
20 अपक्की वाचा पर दृढ़ रह, और उस में निपुण हो, और अपके काम में बूढ़ा हो।
21 पापियों के कामों पर आश्चर्य न करो; परन्तु यहोवा पर भरोसा रखो, और अपने परिश्रम में स्थिर रहो; क्योंकि किसी कंगाल को अचानक धनवान बनाना यहोवा की दृष्टि में आसान काम है।
22 यहोवा का आशीर्वाद भक्त के प्रतिफल में होता है, और वह अचानक अपना आशीर्वाद बढ़ाता है।
23 यह न कह, कि मेरी सेवा से क्या लाभ? और इसके बाद मुझे क्या अच्छी चीज़ें मिलेंगी?
24 फिर यह न कहना, कि मेरे पास तो बहुत है, और बहुत कुछ है; फिर अब मुझे क्या हानि होगी?
25 सुख के दिन में क्लेश भूल जाता है, और क्लेश के दिन में कल्याण का स्मरण फिर स्मरण न रहता।
26 क्योंकि मृत्यु के दिन मनुष्य को उसके चालचलन के अनुसार प्रतिफल देना यहोवा के लिये सहज बात है।
27 घड़ी भर का क्लेश मनुष्य को सुख भूला देता है, और अन्त में उसके काम प्रगट हो जाते हैं।
28 मृत्यु से पहिले किसी का न्याय न करना, क्योंकि मनुष्य अपके वंश के कारण प्रगट होगा।

29 हर एक मनुष्य को अपने घर में न लाओ; क्योंकि धोखेबाज मनुष्य के पास बहुत सी रेलियां होती हैं।
30 जैसे तीतर को पकड़कर बन्दी में रखा जाता है, वैसा ही अभिमानियों का मन भी होता है; और वह जासूस की नाईं तेरे पतन पर नजर रखता है;
31 क्योंकि वह घात में लगा रहता है, और भलाई को बुराई में बदल देता है, और प्रशंसा के योग्य बातों में तुझ पर दोष लगाएगा।
32 आग की चिंगारी से कोयले का ढेर जल उठता है, और पापी मनुष्य खून की आशा करता है।
33 शरारती मनुष्य से सावधान रहो, क्योंकि वह दुष्टता का काम करता है; कहीं ऐसा न हो कि वह तुझ पर सदा का कलंक लगा दे।
34 परदेशी को अपने घर में ले आओ, और वह तुम्हें घबराएगा, और तुम्हारे घर से निकाल देगा।

अध्याय 12

1 जब तू भलाई करना चाहे, तो जान ले कि किसकी भलाई करता है; तो क्या तू अपने लाभों के लिये धन्यवाद किया जाएगा।
2 भक्त जन का भला करो, तो तुम्हें उसका प्रतिफल मिलेगा; और यदि उसकी ओर से नहीं, तो भी परमप्रधान की ओर से।
3 जो सर्वदा बुराई में लगा रहता है, उसका भला नहीं हो सकता, और जो दान नहीं देता।
4 भक्त जन को दान दो, और पापी की सहाथता न करो।
5 जो कंगाल है उसका भला करो, परन्तु दुष्ट को न दो; अपनी रोटी रोककर रखो, और उसे न दो, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझ पर हावी हो जाए; नहीं तो जो कुछ तू ने किया है उस से दुगुनी बुराई तुझे मिलेगी। उसके साथ किया.
6 क्योंकि परमप्रधान पापियों से बैर रखता है, और दुष्टों से पलटा लेगा, और उनके दण्ड के कठिन दिन में उनकी रक्षा करता है।
7 भले को दान दो, और पापी की सहायता न करो।
8 भलाई में मित्र का पहिचान नहीं होता, और विपत्ति में शत्रु छिप नहीं सकता।
9 मनुष्य की भलाई के समय शत्रु उदास होते हैं, परन्तु विपत्ति के समय मित्र भी चला जाता है।
10 अपने शत्रु पर भरोसा न करना; क्योंकि जैसे लोहे को जंग लगती है, वैसे ही उसकी दुष्टता भी जंग खा जाती है।
11 चाहे वह दीन हो, और झुककर चले, तौभी चौकस रहना, और उस से सावधान रहना, और तू उसके लिये ऐसा ठहरेगा मानो तू ने शीशे को पोंछा हो, और तू जान लेगा कि उसका जंग अभी तक मिटा नहीं।
12 उसे अपने पास न रखना, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे पटककर तेरे स्थान पर खड़ा हो जाए; और न उसे अपनी दाहिनी ओर बैठने देना, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे आसन पर बैठने का यत्न करे, और अन्त में तुझे मेरी बातें स्मरण आएँ, और उसका फल तुझे भुगतना पड़े।
13 जिस सपेरे को सांप ने या किसी जंगली जानवर ने काटा हो उस पर कौन तरस खाएगा?
14 सो जो किसी पापी के पास जाए, और उसके साथ पाप करके अशुद्ध हो, उस पर दया कौन करेगा?
15 वह थोड़ी देर तक तेरे संग रहेगा, परन्तु यदि तू गिरने लगे, तो रुक न सकेगा।
16 शत्रु मुंह से मीठी बातें बोलता है, परन्तु अपने मन में सोचता है, कि तुझे गड़हे में कैसे डालेगा; वह आंखों से रोएगा, परन्तु अवसर पाकर खून से भी तृप्त न होगा।
17 यदि विपत्ति तुझ पर आ पड़े, तो तू उसे पहिले वहीं पाएगा; और यद्यपि वह तेरी सहायता करने का दिखावा करता है, तौभी वह तुझे हानि पहुंचाएगा।
18 वह सिर हिलाएगा, और ताली बजाएगा, और बहुत फुसफुसाएगा, और अपना मुंह बदल लेगा।

अध्याय 13

1 जो कोई राल छूए वह उसके द्वारा अशुद्ध ठहरेगा; और जो किसी घमण्डी पुरूष की संगति करता है, वह उसके समान हो जाएगा।
2 जब तक तू जीवित है, तब तक अपक्की शक्ति पर बोझ न डालना; और जो अपने से अधिक सामर्थी और धनवान है, उसके साथ मेलजोल न रखना; क्योंकि केतली और मिट्टी का बर्तन एक साथ कैसे मेल खाते हैं? क्योंकि यदि एक दूसरे पर वार किया जाए, तो वह टूट जाएगा।
3 धनवान ने कुटिल काम तो किया है, तौभी वह धमकी देता है; कंगाल पर अन्याय होता है, और उसे भी क्षमा मांगनी पड़ती है।
4 यदि तू उसके लाभ के लिये हो, तो वह तुझ से काम लेगा; परन्तु यदि तेरे पास कुछ न हो, तो वह तुझे त्याग देगा।
5 यदि तेरे पास कुछ भी हो, तो वह तेरे संग रहेगा; हां, वह तुझे उजाड़ देगा, और उसके लिये खेद न करेगा।
6 यदि उसे तेरी घटी हो, तो वह तुझे धोखा देगा, और तुझ पर मुस्कुराएगा, और तुझे आशा देगा; वह तुझ से सच्ची बातें कहेगा, और कहेगा, तू क्या चाहता है?
7 और वह अपने भोजन के द्वारा तुझे लज्जित करेगा, यहां तक कि वह तुझे दो या तीन बार खींचकर सुखा देगा, और उसके बाद वह तुझे देखकर ठट्ठों में उड़ाएगा, और तुझे त्यागकर तुझ पर सिर हिलाएगा।
8 सावधान रहो, ऐसा न हो, कि तुम अपने आनन्द में धोखा खा जाओ, और उदास न हो जाओ।
9 यदि कोई वीर तुझे बुलाए, तो उसके पास न आना, और वह तुझे और भी अधिक बुलाएगा।
10 उस पर दबाव न डालना, कहीं ऐसा न हो कि तुम पीछे हट जाओ; दूर मत खड़े रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम भूल जाओ।
11 और बातों में उसके तुल्य न ठहरना, और उसकी बहुत सी बातोंकी प्रतीति न करना; क्योंकि वह बड़ी बातचीत से तुझे परखेगा, और तुझ पर मुस्कुराकर तेरे भेद खोल देगा।
12 परन्तु वह क्रूरता से तेरी बातें टालेगा, और तुझे हानि पहुंचाना, और बन्दीगृह में डलवाना न छोड़ेगा।
13 देखो, और चौकस रहो, क्योंकि तुम अपके उलटने के संकट में पड़े हो; जब तू नींद में जागकर ये बातें सुनता है।
14 तू जीवन भर यहोवा से प्रेम रख, और अपने उद्धार के लिथे उस से प्रार्थना कर।

15 हर एक पशु अपने समान से प्रेम रखता है, और हर एक मनुष्य अपने पड़ोसी से प्रेम रखता है।
16 सब प्राणी अपनी जाति के अनुसार मेल रखते हैं, और मनुष्य अपनी जाति के अनुसार मेल मिलाप रखता है।
17 भेड़िये का मेम्ने से क्या मेल? तो पापी के साथ धर्मात्मा।
18 लकड़बग्घे और कुत्ते के बीच क्या समझौता है? और अमीर और गरीब के बीच कैसी शांति?
19 जैसे जंगली गदहा जंगल में सिंह का शिकार होता है, वैसे ही धनवान कंगालों को खा जाते हैं।
20 जैसे अभिमानी नम्रता से बैर रखते हैं, वैसे ही धनवान कंगाल से घृणा करते हैं।
21 धनवान जब गिरने लगता है, तो उसके मित्र उसे पकड़ लेते हैं, परन्तु कंगाल जब गिरने लगता है, तो उसके मित्र उसे फेंक देते हैं।
22 जब कोई धनी मनुष्य गिर जाता है, तो उसके बहुत से सहायक होते हैं; वह ऐसी बातें बोलता है जो बोलने के योग्य नहीं होती, तौभी लोग उसे धर्मी ठहराते हैं; कंगाल फिसल गया, तौभी उन्होंने उसे डांटा; वह बुद्धिमानी से बोलता था, और उसे कोई स्थान नहीं मिलता था।
23 जब कोई धनवान बोलता है, तो हर एक मनुष्य अपनी जीभ पकड़ लेता है, और देखो, वह जो कहता है, उसकी प्रशंसा बादलों से करते हैं; परन्तु यदि कंगाल बोलता है, तो कहते हैं, यह कैसा मनुष्य है? और यदि वह ठोकर खाए, तो वे उसे गिराने में सहायता करेंगे।
24 जो पाप रहित है, उसे धन भी अच्छा लगता है, और भक्तिहीन को दरिद्रता बुरी लगती है।
25 चाहे भले के लिये चाहे बुरे के लिये मनुष्य का मन उसके मुख को बदल देता है; और आनन्दित मन से उसके मुख पर जयजयकार होता है।
26 प्रसन्न मुख उस मन का चिन्ह है जो सुखी है; और दृष्टांतों का पता लगाना मन का थका देने वाला काम है।

अध्याय 14

1 क्या ही धन्य वह पुरूष है, जो मुंह से फिसला नहीं, और बहुत से पापों से दग्ध नहीं हुआ।
2 क्या ही धन्य वह है, जिसके विवेक ने उसे दोषी नहीं ठहराया, और जो प्रभु पर अपनी आशा से नहीं गिरा।
3 कंगाल को धन शोभा नहीं देता; और डाह करनेवाला धन से क्या करे?
4 जो अपना प्राण ठगकर दूसरों के लिये बटोरता है, वह अपना धन उपद्रव से उड़ाएगा।
5 जो अपने प्रति बुरा है, वह किस का भला करेगा? वह अपने माल से प्रसन्न नहीं होगा.
6 जो अपने आप से ईर्ष्या करता है, उस से बुरा कोई नहीं; और यह उसकी दुष्टता का प्रतिफल है।
7 और यदि वह भलाई करता है, तो अनिच्छा से करता है; और आख़िर में वह अपनी दुष्टता की घोषणा करेगा।
8 ईर्ष्यालु मनुष्य की दृष्टि बुरी होती है; वह अपना मुंह फेर लेता है, और मनुष्यों को तुच्छ जानता है।
9 लोभी की आंख अपने भाग से तृप्त नहीं होती; और दुष्ट का अधर्म उसके प्राण को सुखा देता है।
10 वह अपनी रोटी पर बुरी दृष्टि रखता है, और अपनी मेज पर कंगाल ठहरता है।
11 हे मेरे पुत्र, अपनी शक्ति के अनुसार अपना कल्याण कर, और यहोवा को उसका उचित प्रसाद दे।
12 और स्मरण रखो, कि मृत्यु को आने में देर न होगी, और कब्र की वाचा तुम्हें नहीं दिखाई जाएगी।
13 मरने से पहिले अपने मित्र की भलाई करना, और अपनी सामर्थ के अनुसार हाथ बढ़ाकर उसे देना।
14 अच्छे दिन का लाभ न उठाना, और शुभ अभिलाषा तुझ से दूर न हो।
15 क्या तू अपना दुख दूसरे पर न छोड़े? और तेरे परिश्रम का बँटवारा चिट्ठी डाल कर किया जाए?
16 दे, और ले, और अपना प्राण पवित्र कर; क्योंकि कब्र में सुस्वादु वस्तुओं की खोज नहीं होती।
17 सब प्राणी वस्त्र के समान पुराने हो गए, क्योंकि आदि से यही वाचा बान्धी गई है, कि तू मृत्यु ही मरेगा।
18 जैसे घने वृक्ष के हरे पत्तोंमें से कुछ गिरते, और कुछ बढ़ते हैं; इसी प्रकार मांस और रक्त की उत्पत्ति भी होती है, एक का अंत होता है, और दूसरे का जन्म होता है।
19 हर एक काम सड़ता और नाश होता है, और उसका कारीगर नाश हो जाता है।
20 क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो बुद्धि से अच्छी बातों पर विचार करता है, और पवित्र बातों पर बुद्धि से विचार करता है।
21 जो उसके चालचलन पर मन में विचार करता है, वह उसके भेदों को भी समझेगा।
22 और ढूंढ़नेवाले की नाईं उसके पीछे हो लो, और उसके मार्ग में घात में रहो।
23 जो उसकी खिड़कियों पर भजन करेगा, वह उसके द्वारों पर भी सुनेगा।
24 और जो उसके घर के पास टिके वह उसकी शहरपनाह में खूंटी भी लगाए।
25 वह उसके निकट अपना तम्बू खड़ा करेगा, और अच्छे अच्छे घरों में निवास करेगा।
26 वह अपके लड़केबालोंको उसकी आड़ में बैठाएगा, और उसकी डालियोंके तले बसेरा करेगा।
27 वह उसके द्वारा ताप से छिपा रहेगा, और उसकी महिमा में वास करेगा।

अध्याय 15

1 जो यहोवा का भय मानता है वह भलाई करेगा, और जो व्यवस्था जानता है वह उसे प्राप्त करेगा।
2 और वह माता की नाईं उस से भेंट करेगी, और कुंवारी स्त्री की नाईं उसे ग्रहण करेगी।
3 वह उसे समझ की रोटी से खिलाए, और बुद्धि का जल पिलाए।
4 वह उस पर टिका रहेगा, और न हटेगा; और उस पर भरोसा रखेंगे, और निराश न होंगे।
5 वह उसको उसके पड़ोसियों से अधिक ऊंचा करेगी, और मण्डली के बीच में उसका मुंह खोलेगी।
6 वह आनन्द और आनन्द का मुकुट पाएगा, और वह उसे सदा का नाम विरासत में देगी।

7 परन्तु मूर्ख उस तक न पहुंच सकेंगे, और पापी उसे न देख सकेंगे।
8 क्योंकि वह घमण्ड से दूर है, और झूठे मनुष्य उसे स्मरण नहीं रख सकते।
9 पापी के मुंह में स्तुति शोभा नहीं देती, क्योंकि वह प्रभु की ओर से उसके पास नहीं भेजी गई।
10 क्योंकि स्तुति बुद्धि से की जाएगी, और यहोवा उसे सुफल करेगा।
11 यह न कहना, कि यहोवा ही के द्वारा मैं भटक गया; क्योंकि जो काम उस ने बैर किया है वह काम तुझे न करना चाहिए।
12 यह न कहना, कि उस ने मुझ से भूल कराई है, क्योंकि उस को उस पापी मनुष्य का कुछ प्रयोजन नहीं।
13 यहोवा सब घृणित वस्तुओं से बैर रखता है; और जो परमेश्वर से डरते हैं वे इसे प्रेम नहीं करते।
14 उस ने आरम्भ से मनुष्य को आप ही बनाया, और उसे अपनी सम्मति के हाथ में छोड़ दिया;
15 यदि तू चाहे, तो आज्ञाओं का पालन कर, और ग्रहण योग्य सच्चाई का पालन कर।
16 उस ने तेरे साम्हने आग और जल भड़काया है; तू जो चाहे अपना हाथ बढ़ा।
17 मनुष्य के साम्हने जीवन और मृत्यु है; और चाहे वह उसके जैसा हो, उसे दिया जाएगा।
18 क्योंकि यहोवा की बुद्धि महान है, और वह पराक्रमी है, और सब कुछ देखता है;
19 और उसकी दृष्टि उसके डरवैयोंपर लगी रहती है, और वह मनुष्य का सब काम जानता है।
20 उस ने किसी को बुराई करने की आज्ञा नहीं दी, और न किसी को पाप करने की आज्ञा दी।

अध्याय 16

1 बहुत से निकम्मे बालकों की इच्छा न करो, और न दुष्ट पुत्रों से प्रसन्न रहो।
2 चाहे वे बहुत बढ़ें, तौभी उन से आनन्द न करना, यदि यहोवा का भय उन में न रहे।
3 उनके प्राण पर भरोसा न रखना, और न उनकी भीड़ का आदर करना; क्योंकि धर्मी हजार से उत्तम है; और बिना सन्तान के मरना उन दुष्टों के होने से भला है।
4 क्योंकि समझवाले से नगर बसाया जाएगा; परन्तु दुष्टोंके कुल शीघ्र उजाड़ हो जाएंगे।
5 ऐसी बहुत सी बातें मैं ने अपनी आंखों से देखी, और इन से भी बड़ी बातें अपने कानों से सुनी हैं।
6 भक्तिहीनों की मण्डली में आग जलाई जाएगी; और बलवा करनेवाली जाति में क्रोध भड़क उठता है।
7 वह उन बूढ़ों के प्रति शान्त न हुआ, जो अपनी मूर्खता के बल पर गिर गए।
8 और उस ने उस स्यान को भी न छोड़ा जहां लूत परदेश रहा करता था, वरन उनके घमण्ड के कारण उस ने उन से घृणा की।
9 और उस ने उन नाश लोगोंपर दया न की, जो अपके पापोंमें फंसे हुए थे;
10 और न वे छ: लाख प्यादे, जो अपने मन की कठोरता के कारण इकट्ठे हुए थे।
11 और यदि प्रजा में कोई हठीला हो, तो वह निर्दोष बच जाए, यह आश्चर्य की बात है; क्योंकि दया और क्रोध उस में हैं; वह क्षमा करने और अप्रसन्नता प्रकट करने में शक्तिशाली है।
12 जैसी उसकी करूणा बड़ी है, वैसी ही उसकी ताड़ना भी बड़ी है; वह मनुष्य का न्याय उसके कामों के अनुसार करता है
13 पापी अपना धन लूटकर न बचेगा; और भक्त का धीरज टूटेगा नहीं।
14 हर एक दया के काम के लिये मार्ग बनाओ, क्योंकि हर एक मनुष्य अपने अपने कामों के अनुसार फल पाएगा।
15 यहोवा ने फिरौन को ऐसा कठोर कर दिया, कि वह उसे न पहचान सके, और उसके पराक्रम के काम जगत पर प्रगट हो जाएं।
16 उसकी करूणा सब प्राणियों पर प्रगट है; और उस ने हठ करके अपना उजियाला अन्धियारे से अलग किया है।
17 तू यह न कहना, कि मैं यहोवा से छिपूंगा; क्या कोई ऊपर से मुझे स्मरण करेगा? इतने सारे लोगों के बीच मुझे याद नहीं किया जाएगा: क्योंकि इतने अनंत प्राणियों के बीच मेरी आत्मा क्या है?
18 देखो, जब वह सुधि लेगा, तो आकाश, और आकाश, और गहिरा देश, और पृथ्वी, वरन जो कुछ उस में है, सब हिल जाएंगे।
19 जब यहोवा उन पर दृष्टि करता है, तब पहाड़ और पृथ्वी की नेवें थरथरा उठती हैं।
20 कोई इन बातों पर मन से विचार नहीं कर सकता; और कौन उसके चालचलन का विचार कर सकता है?
21 वह आँधी है, जिसे कोई नहीं देख सकता; क्योंकि उसके अधिकांश काम गुप्त हैं।
22 कौन अपने न्याय के कामों का वर्णन कर सकता है? या उन्हें कौन सह सकता है? क्योंकि उसकी वाचा दूर है, और सब वस्तुओं के परखने का अन्त अन्त में है।
23 जो समझ नहीं चाहता, वह व्यर्थ बातों पर विचार करता है; और मूर्ख मनुष्य मूर्खता की कल्पना करता है।
24 हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और ज्ञान सीख, और मेरी बातें अपने मन में स्मरण रख।
25 मैं उपदेश ठीक-ठीक बताऊंगा, और उसका ज्ञान ठीक-ठीक बताऊंगा।
26 यहोवा के काम आरम्भ से ही न्याय की रीति से होते हैं; और जब से उस ने उनको बनाया, तब से उसी ने उनको अलग कर दिया।
27 उस ने अपके काम सदा के लिथे बनाए रखे, और पीढ़ी पीढ़ी के कामोंके मुख्य उसके हाथ में रहे; वे न परिश्र्म करते, न थकते, और न अपके कामोंसे हटते।
28 उन में से कोई दूसरे को नहीं रोकता, और वे उसके वचन का उल्लंघन कभी न करेंगे।
29 इसके बाद यहोवा ने पृथ्वी पर दृष्टि की, और उसे अपनी आशीषों से भर दिया।
30 उस ने सब प्रकार के जीवित प्राणियोंसे उसको ढांप दिया है; और वे फिर उसमें लौट आएंगे।

अध्याय 17

1 यहोवा ने मनुष्य को पृथ्वी पर उत्पन्न किया, और उसे फिर उसी में बदल दिया।
2 और उस ने उनको थोड़े दिन और थोड़े ही समय, और उस में की वस्तुओंपर अधिकार भी दिया।
3 उस ने उनको आप ही से सामर्थ देकर तैयार किया, और अपने स्वरूप के अनुसार बनाया।
4 और सब प्राणियों पर मनुष्य का भय उत्पन्न किया, और उसे पशुओं और पक्षियों पर प्रभुता दी।
5 उन्हें प्रभु के पांच कार्यों का उपयोग प्राप्त हुआ, और छठे स्थान पर उन्होंने उन्हें समझ प्रदान की, और सातवें भाषण में, उनके विचार का व्याख्याकार।
6 उस ने उनको युक्ति, और जीभ, और आंखें, और कान, और हृदय दिया, और वे समझ गए।
7 और उस ने उन्हें समझ की पहिचान से परिपूर्ण किया, और उन्हें भले और बुरे का ज्ञान दिया।
8 उस ने उनके मनोंपर दृष्टि की, कि उन्हें अपके कामोंकी बड़ाई प्रगट करे।
9 उस ने उनको अपने आश्चर्यकर्मोंके कारण सर्वदा के लिथे महिमा दी, कि वे उसके कामोंको समझ से प्रगट करें।
10 और चुने हुए लोग उसके पवित्र नाम की स्तुति करेंगे।
11 इसके अलावा उस ने उन्हें ज्ञान और जीवन की व्यवस्था भी विरासत में दी।
12 उस ने उन से सदा की वाचा बान्धी, और अपने नियम उन्हें दिखाए।
13 उनकी आंखों ने उसका तेज देखा, और उनके कानों ने उसका तेज शब्द सुना।
14 और उस ने उन से कहा, सब अधर्म से सावधान रहो; और उस ने हर एक मनुष्य को उसके पड़ोसी के विषय में आज्ञा दी।
15 उनकी गति उसके साम्हने सदैव बनी रहती है, और उस से छिपी न रहेगी।
16 हर एक मनुष्य बचपन से ही बुराई करने को दिया जाता है; न ही वे अपने लिए पत्थर के स्थान पर मांसल हृदय बना सके।
17 क्योंकि उस ने सारी पृथ्वी की जातियोंको बांटकर सब लोगोंके ऊपर एक सरदार ठहराया; परन्तु इस्राएल यहोवा का भाग है:
18 जिस को वह पहिलौठा होकर ताड़ना से पालता है, और अपके प्रेम की ज्योति देकर उसे न तजता है।
19 इस कारण उनके सब काम उसके साम्हने सूर्य के समान हैं, और उसकी दृष्टि उनके चालचलन पर निरन्तर लगी रहती है।
20 उन का कोई अधर्म का काम उस से छिपा नहीं, वरन उनके सब पाप यहोवा के साम्हने छिपे हैं
21 परन्तु यहोवा ने दयालु होकर और उसकी कारीगरी को जानकर न तो उन्हें छोड़ा, और न त्यागा, परन्तु उनको बचा लिया।
22 मनुष्य का दान उसके पास एक मुहर के समान है, और वह मनुष्य के अच्छे कामों को आंख की पुतली के समान रखेगा, और अपने बेटे-बेटियों को मन फिराव देगा।
23 इसके बाद वह उठकर उनको बदला देगा, और उनका बदला उन्हीं के सिर पर डालेगा।
24 परन्तु जो मन फिराते थे, उनको उस ने लौटा दिया, और जो धीरज से चूक गए, उनको शान्ति दी।
25 प्रभु के पास लौट आओ, और अपने पापों को त्याग दो, उसके साम्हने प्रार्थना करो, और कम अपमान करो।
26 फिर परमप्रधान की ओर फिरो, और अधर्म से दूर रहो; क्योंकि वह तुम्हें अन्धियारे से निकालकर चंगाई की ज्योति की ओर ले जाएगा, और घृणित काम से अत्यन्त बैर करेगा।
27 जो जीवित और धन्यवाद करते हैं, उन के बदले कब्र में परमप्रधान की स्तुति कौन करेगा?
28 धन्यवाद मरे हुओं में से वैसे ही नाश होता है, जैसे किसी गैर में से; जीवते और स्वस्थ मन में से यहोवा की स्तुति होगी।
29 हमारे परमेश्वर यहोवा की करूणा, और जो पवित्र होकर उसकी ओर फिरते हैं उन पर उसकी करूणा क्या ही महान है!
30 क्योंकि सब वस्तुएं मनुष्योंमें नहीं हो सकतीं, क्योंकि मनुष्य का पुत्र अमर नहीं।
31 सूर्य से अधिक चमकीला क्या है? तौभी उसकी ज्योति बुझ जाती है; और मांस और लोहू बुराई की कल्पना करेंगे।
32 वह आकाश की ऊंचाई की शक्ति को देखता है; और सभी मनुष्य मिट्टी और राख मात्र हैं।

अध्याय 18

1 वह जो सर्वदा जीवित है, उसी ने सामान्यतःसब वस्तुओं की सृष्टि की है।
2 यहोवा ही धर्मी है, उसके सिवा कोई दूसरा नहीं;
3 जो अपने हाथ से जगत पर प्रभुता करता है, और सब वस्तुएं उसकी इच्छा के अनुसार चलती हैं; क्योंकि वह सब का राजा है, और अपके सामर्य से पवित्र वस्तुओंको अपवित्र से अलग कर देता है।
4 उस ने अपने कामोंको प्रगट करने का अधिकार किसे दिया है? और उसके नेक कामों का पता कौन लगाएगा?
5 उसकी महिमा का बल कौन गिनेगा? और उसकी करूणा का वर्णन कौन करेगा?
6 यहोवा के आश्चर्यकर्मोंमें से कुछ भी छीना नहीं जा सकता, न कुछ लगाया जा सकता है, और न उनका कुछ पता लगाया जा सकता है।
7 जब मनुष्य काम कर चुका, तब आरम्भ करता है; और जब वह निकले, तब सन्देह करे।
8 मनुष्य क्या है, और वह किसकी सेवा करता है? उसकी अच्छाई क्या है और बुराई क्या है?
9 मनुष्य के दिनों की गिनती अधिक से अधिक सौ वर्ष की होती है।
10 समुद्र के जल की बूंद के समान, और बालू के तुल्य बजरी के समान है; अनंत काल के दिनों के समान एक हजार वर्ष भी हैं।
11 इसलिथे परमेश्वर उन पर धीरज रखता है, और उन पर अपनी करूणा करता है।
12 उस ने देखा, और जान लिया, कि उनका अन्त बुरा होगा; इसलिए उसने अपनी करुणा को कई गुना बढ़ा दिया।

13 मनुष्य की करूणा अपने पड़ोसी पर होती है; परन्तु यहोवा की करूणा सब प्राणियों पर है; वह चरवाहे के समान अपने झुण्ड को डाँटता, और पालता, और सिखाता, और लौटा लाता है।
14 वह उन पर दया करता है जो ताड़ना पाते हैं, और उसके नियमों के पालन में लगन से लगे रहते हैं।
15 हे मेरे पुत्र, अपने भले कामोंमें दोष न लगाना, और न कुछ देते समय अप्रिय बातें कहना।
16 क्या ओस गर्मी को कम न कर देगी? इसलिए एक शब्द उपहार से बेहतर है।
17 देखो, क्या वचन दान से उत्तम नहीं? लेकिन दोनों एक दयालु व्यक्ति के साथ हैं।
18 मूर्ख ढिठाई से उलाहना देता है, और ईर्ष्यालु का दान आंखों को बिगाड़ देता है।
19 बोलने से पहिले सीखो, और शारीरिक परिश्रम करो, नहीं तो कभी बीमार पड़ोगे।
20 न्याय से पहिले अपने आप को जांच, और दण्ड के दिन तुझ पर दया होगी।
21 बीमार होने से पहिले अपने आप को नम्र बनाओ, और पाप के समय मन फिराओ।
22 अपनी मन्नत को समय पर पूरा करने में कोई बाधा न डाले, और मृत्यु तक धर्मी ठहरना न टालें।
23 प्रार्थना करने से पहिले अपने आप को तैयार करो; और ऐसे न बनो जो प्रभु की परीक्षा करता हो।
24 अन्त में उस क्रोध और पलटा लेने के समय पर सोचो, जब वह अपना मुख फेर लेगा।
25 जब तेरे पास बहुत हो जाए, तो भूख के समय को स्मरण कर; और जब तू धनी हो जाए, तो कंगाली और कंगाली को स्मरण कर।
26 भोर से सांझ तक समय बदलता रहता है, और सब काम यहोवा के साम्हने शीघ्र हो जाते हैं।
27 बुद्धिमान मनुष्य हर बात में डरता रहेगा, और पाप करने के दिन अपराध करने से सावधान रहेगा; परन्तु मूर्ख समय का ध्यान नहीं रखता।
28 हर एक समझदार मनुष्य बुद्धि जानता है, और जिसने उसे पाया है उसकी प्रशंसा करेगा।
29 जो बातें समझने में निपुण थे, वे आप ही बुद्धिमान हो गए, और उत्तम दृष्टान्त कहने लगे।
30 अपनी अभिलाषाओं के पीछे न चलो, परन्तु अपनी लालसाओं से बचे रहो।
31 यदि तू अपके मन को वह अभिलाषाएं दे जिस से वह प्रसन्न होती है, तो वह तेरे शत्रुओंके साम्हने जो तुझे बदनाम करते हैं, तुझे हंसी का पात्र बनाएगी।
32 अधिक आनन्द से प्रसन्न न होना, और न उसके व्यय में बन्धे रहना।
33 और जब तेरे बटुए में कुछ न हो, तब भोज करके उधार लेकर कंगाल न बनो, क्योंकि तू अपके प्राण के लिथे घात में लगेगा, और व्यर्थ में तुझे धोखा मिलेगा।

अध्याय 19

1 जो परिश्रमी पुरूष नशे में चूर हो, वह धनी न हो सकेगा; और जो छोटी बातों का मन करता है, वह बहुत ही कम और बहुत ही कम गिरता है।
2 दाखमधु और स्त्रियां समझदार पुरूषोंको भ्रष्ट कर देंगी; और जो व्यभिचारी हो जाएगा, वह ढीठ हो जाएगा।
3. कीड़ोंऔर कीड़ोंसे उसका भाग हो जाएगा, और साहसी मनुष्य छीन लिया जाएगा।
4 जो श्रेय देने में उतावली करता है, वह हलका है; और जो पाप करेगा वह अपने ही प्राण का अपराध करेगा।
5 जो दुष्टता से प्रसन्न होता है, वह दोषी ठहरता है; परन्तु जो सुख से प्रसन्न होता है, वह अपने जीवन का ताज जीतता है।
6 जो अपनी जीभ पर प्रभुता कर सकता है, वह बिना झगड़े के जीवित रहेगा; और जो बक-बक से बैर रखता है उसकी बुराई कम होगी।
7 जो बात तुझ से कही गई है, उसे दूसरे को न सुनाना, नहीं तो तेरा कुछ बुरा न होगा।
8 चाहे वह मित्र से हो चाहे शत्रु से, पराये मनुष्यों के प्राणों की चर्चा न करना; और यदि तू बिना अपराध कर सके, तो उन्हें प्रगट न कर।
9 क्योंकि उस ने तेरी बात सुनी और मानी, और समय आने पर तुझ से बैर करेगा।
10 यदि तू ने कोई बात सुनी हो, तो वह तेरे साय ही मर जाए; और साहसी बनो, यह तुम्हें नहीं फटेगा।
11 मूढ़ बात के लिथे जच्चा की नाईं कष्ट सहता है।
12 जैसे तीर मनुष्य की जांघ में चुभता है, वैसे ही वचन मूर्ख के पेट में चुभता है।
13 मित्र को चिताना, सम्भव है उस ने ऐसा न किया हो, और यदि किया हो, तो फिर ऐसा न करे।
14 अपने मित्र को चिताना, कहीं ऐसा न हो कि उस ने यह न कहा हो, और यदि कह दिया हो, तो फिर ऐसा न कहना।
15 मित्र को चिताओ, क्योंकि बहुत बार तो वह निन्दा ही ठहरती है, और हर एक कथा की प्रतीति न करो।
16 ऐसा कोई है जो बोलने में तो फिसलता है, परन्तु मन में से नहीं; और कौन है जो अपनी जीभ से क्रोध न पहुँचाता हो?
17 अपने पड़ोसी को धमकाने से पहिले उसे समझा; और क्रोध न करके परमप्रधान की व्यवस्था को मानना।
18 यहोवा का भय मानना उसके ग्रहणयोग्य होने का पहिला कदम है, और बुद्धि से उसका प्रेम प्राप्त होता है।
19 यहोवा की आज्ञाओं का ज्ञान जीवन की शिक्षा है: और जो उसे प्रसन्न करने वाले काम करते हैं, वे अमरता के वृक्ष का फल पाएंगे।
20 यहोवा का भय मानना ही सारी बुद्धि है; और सारी बुद्धि में व्यवस्था का पालन, और उसकी सर्वशक्तिमत्ता का ज्ञान है।
21 यदि कोई दास अपने स्वामी से कहे, जो तुझे अच्छा लगे मैं न करूंगा; हालाँकि बाद में वह ऐसा करता है, वह उसे क्रोधित करता है जो उसका पोषण करता है।
22 दुष्टता का ज्ञान बुद्धि नहीं, और न पापियों की युक्ति बुद्धिमानी है।
23 वहां दुष्टता तो है, और घृणित काम भी है; और मूर्ख बुद्धि की चाह रखता है।

24 जो अल्प समझ रखता और परमेश्वर का भय मानता है, वह उस से जो बहुत बुद्धि रखता है और परमप्रधान की व्यवस्था का उल्लंघन करता है, उत्तम है।
25 वहां अति धूर्तता है, और अधर्म भी है; और एक है जो न्याय प्रगट करने के लिये मुड़ जाता है; और एक बुद्धिमान मनुष्य है जो न्याय में धर्मी ठहरता है।
26 एक दुष्ट मनुष्य है, जो उदास होकर सिर झुकाए रहता है; परन्तु भीतर वह छल से भरा है,
27 और अपना मुंह नीचे झुकाकर ऐसा करेगा, मानो उस ने कुछ सुना ही नहीं; जहां वह नहीं जानता, वहां वह तेरे जाने से पहिले तुझे हानि पहुंचाएगा।
28 और यदि वह बल की घटी के कारण पाप करने से रोके, तौभी अवसर पाकर बुराई करने लगे।
29 और जब तू किसी से मिले, तो उसके रूप से, और समझदार उसके मुख से पहिचान हो सकता है।
30 मनुष्य की वेशभूषा, और अति हंसी, और चाल-ढाल से प्रगट होता है, कि वह कैसा है।

अध्याय 20

1 एक डांट है जो शोभा नहीं देती; फिर कोई अपनी जीभ वश में रखता है, और वह बुद्धिमान है।
2 छिपकर क्रोध करने से उलाहना देना कहीं उत्तम है; और जो अपना अपराध मान लेता है, वह हानि से बचा रहता है।
3 जब तुझे डांटा जाए, तो मन फिराना क्या ही अच्छा है! क्योंकि इस प्रकार तू जानबूझकर किए गए पाप से बच जाएगा।
4 जैसे खोजे की इच्छा होती है कि वह कुंवारी कन्या का अनादर करे; वैसा ही वह है जो हिंसा से न्याय करता है।
5 जो चुप रहता है, वह बुद्धिमान पाया जाता है, और कोई बहुत बक-बक करके अप्रिय हो जाता है।
6 कोई अपनी जीभ को इसलिये बन्धक रखता है, कि उसे उत्तर देना नहीं बनता, और कोई अपना समय जानकर चुप रहता है।
7 बुद्धिमान अवसर देखने तक अपनी जीभ पर लगाम लगाता है, परन्तु बकवादी और मूर्ख समय की कुछ परवाह नहीं करता।
8 जो बहुत बातें बोलता है, उस से घृणा की जाएगी; और जो उस पर अधिकार अपनाएगा, उस से बैर किया जाएगा।
9 एक पापी है, जो बुरे कामों में भी सफल होता है; और ऐसा लाभ होता है जो हानि में बदल जाता है।
10 ऐसा दान है जिस से तुझे कुछ लाभ न होगा; और एक उपहार है जिसका बदला दोगुना है।
11 महिमा के कारण अपमान होता है; और वहाँ वह है जो नीची स्थिति से अपना सिर उठाता है।
12 कोई थोड़े से बहुत मोल मोल लेता, और सात गुणा पलट देता है।
13 बुद्धिमान अपनी बातों से अपना प्रिय बना लेता है, परन्तु मूढ़ोंपर अनुग्रह प्रगट होता है।
14 जब मूर्ख का दान तेरे पास हो, तब उस से तुझे कुछ लाभ न होगा; न तो ईर्ष्यालु को अपनी आवश्यकता के कारण, क्योंकि वह एक के बदले बहुत कुछ पाना चाहता है।
15 वह देता तो थोड़ा, और उलाहना बहुत देता है; वह चिल्लानेवाले की नाईं अपना मुंह खोलता है; आज तो वह उधार देता है, और कल फिर मांगेगा; ऐसे मनुष्य से परमेश्वर और मनुष्य दोनों बैर करते हैं।
16 मूर्ख कहता है, मेरा कोई मित्र नहीं, मैं अपने सब भले कामों के लिथे धन्यवाद नहीं करता, और जो मेरी रोटी खाते हैं, वे मेरी निन्दा करते हैं।
17 कितनी बार, और कितने लोग उसका उपहास करेंगे! क्योंकि वह ठीक से नहीं जानता कि उसके पास क्या है; और यह सब उसके लिए एक है जैसे कि उसके पास यह था ही नहीं।
18 फुटपाथ पर फिसलना जीभ से फिसलने से भला है; इस प्रकार दुष्टों का पतन शीघ्र हो जाता है।
19 निर्बुद्धि मनुष्य के मुंह में बेमौसमी कथा सदैव लगी रहती है।
20 बुद्धिमान वाक्य मूर्ख के मुंह से निकलने पर निकम्मा ठहरता है; क्योंकि वह उचित समय पर यह बात न कहेगा।
21 कोई है जो घटी के कारण पाप करने से रुकता है, और जब वह विश्राम करता है, तो घबराता नहीं।
22 वह लज्जित होकर अपना प्राण नाश करता है, और मनुष्यों का ग्रहण करके अपने आप को गिरा देता है।
23 वह लज्जित होकर अपने मित्र से प्रतिज्ञा करता, और सेंतमेंत उसे अपना शत्रु बना लेता है।
24 झूठ मनुष्य के लिये कलंक है, तौभी वह अनपढ़ लोगों के मुंह में निरन्तर बना रहता है।
25 चोर उस मनुष्य से उत्तम है जो झूठ बोलने का आदी है; परन्तु उन दोनों का भाग विनाश होगा।
26 झूठ बोलनेवाले का स्वभाव अनादर का होता है, और उसकी लज्जा सदा बनी रहती है।
27 बुद्धिमान मनुष्य अपनी बातों से अपना आदर बढ़ाता है, और जो समझ रखता है वह बड़े मनुष्यों को प्रसन्न करता है।
28 जो अपनी भूमि जोतता है, वह अपना ढेर बढ़ाएगा; और जो बड़े पुरूषोंको प्रसन्न करता है, उसका अधर्म झमा किया जाएगा।
29 और भेंटें बुद्धिमान की आंखें अन्धी कर देती हैं, और उसका मुंह ऐसा बन्द कर देती हैं, कि वह उसे डांट नहीं सकता।
30 बुद्धि जो छिपी रहती है, और धन जो छिपा रखा जाता है, उन दोनों से क्या लाभ?
31 जो अपनी मूर्खता छिपा रखता है, वह उस मनुष्य से जो अपनी बुद्धि छिपा रखता है, उत्तम है।
32 प्रभु की खोज में आवश्यक धैर्य उस व्यक्ति से बेहतर है जो बिना मार्गदर्शक के अपना जीवन व्यतीत करता है।

अध्याय 21

1 हे मेरे पुत्र, क्या तू ने पाप किया है? अब ऐसा न करो, परन्तु अपने पिछले पापों के लिये क्षमा मांगो।
2 सांप के साम्हने से पाप से भागो; क्योंकि यदि तू उसके निकट जाएगा, तो वह तुझे डसेगा; उसके दांत सिंह के दांत के समान हैं, जो मनुष्य के प्राणों को मार डालते हैं।

3 सब अधर्म दोधारी तलवार के समान है, जिसके घाव अच्छे नहीं होते।
4 भयभीत करने और कुकर्म करने से धन नष्ट हो जाएगा; इस प्रकार अभिमानियों का घर उजाड़ हो जाएगा।
5 कंगाल के मुंह से निकली हुई प्रार्थना परमेश्वर के कान तक पहुंचती है, और उसका न्याय तुरन्त होता है।
6 जो उलाहने से बैर रखता है, वह पापियों के मार्ग पर है; परन्तु जो यहोवा का भय मानता है, वह मन से मन फिराता है।
7 वाक्पटु मनुष्य दूर दूर तक जाना जाता है; परन्तु समझदार मनुष्य जानता है, कि कब फिसलता है।
8 जो पराये धन से अपना घर बनाता है, वह उस के समान है जो अपक्की कब्र के लिथे पत्थर बटोरता है।
9 दुष्टों की मण्डली बँधी हुई रस्सी के समान है; और उनका अन्त उनको नाश करने के लिये आग की ज्वाला के समान है।
10 पापियों का मार्ग पत्थरों से बना है, परन्तु उसके अन्त में नरक का गड़हा है।
11 जो यहोवा की व्यवस्था पर चलता है, वह उसकी समझ प्राप्त करता है; और यहोवा का भय सिद्धता से मानने से बुद्धि मिलती है।
12 जो बुद्धिमान नहीं है, वह सिखाया नहीं जाता; परन्तु बुद्धि तो ऐसी है, जो कड़वाहट बढ़ाती है।
13 बुद्धिमान मनुष्य का ज्ञान बाढ़ की नाईं बढ़ता है, और उसकी युक्ति जीवन के निर्मल सोते के समान होती है।
14 मूढ़ की अंतड़ियाँ टूटे हुए बर्तन के समान होती हैं, और जब तक वह जीवित रहे, तब तक उसे कुछ ज्ञान न होगा।
15 यदि कोई कुशल मनुष्य कोई बुद्धिमान बात सुनता है, तो उसे सराहता है, और उसे बढ़ा देता है; परन्तु जब कोई समझ नहीं रखता, तो वह उसे अप्रसन्न करता है, और उसे पीठ पीछे फेंक देता है।
16 मूर्ख की बातें मार्ग में बोझ के समान होती हैं, परन्तु बुद्धिमान के मुंह से अनुग्रह निकलता है।
17 वे मण्डली में बुद्धिमान मनुष्य से पूछते हैं, और उसके वचनों पर अपने मन में विचार करते हैं।
18 जैसे घर नाश हो जाता है, वैसा ही मूढ़ को बुद्धि मिलती है; और निर्बुद्धि का ज्ञान निर्बुद्धि बातें के समान होता है।
19 मूढ़ोंके लिथे शिक्षा पावोंकी बेड़ियाँ, और दहिने हाथ की हथकड़ी के समान है।
20 मूर्ख ऊंचे शब्द से हंसता है; परन्तु बुद्धिमान मनुष्य थोड़ा सा भी मुस्कुरा नहीं पाता।
21 बुद्धिमान मनुष्य के लिये विद्या सोने के आभूषण, और दाहिनी बांह के कंगन के समान है।
22 मूढ़ मनुष्य अपने पड़ोसी के घर में शीघ्र प्रवेश करता है, परन्तु अनुभवी मनुष्य उस से लज्जित होता है।
23 मूर्ख घर के द्वार पर से झाँकता है, परन्तु जो अच्छी रीति से पाला पोसा जाता है वह बाहर खड़ा रहेगा।
24 द्वार पर सुनना मनुष्य की अशिष्टता है; परन्तु बुद्धिमान अपमान से दुखी होता है।
25 बकवादी तो ऐसी बातें बोलते हैं जो उन से काम न लेतीं, परन्तु समझ वालों की बातें तराजू में तौली जाती हैं।
26 मूर्खों का मन उनके मुंह में रहता है, परन्तु बुद्धिमान का मुंह उनके मन में रहता है।
27 जब भक्तिहीन शैतान को शाप देता है, तो वह अपने प्राण को भी शाप देता है।
28 कानाफूसी करनेवाला अपके प्राण को अशुद्ध करता है, और जहां कहीं वह रहता है वहां उस से बैर किया जाता है।

अध्याय 22

1 आलसी मनुष्य घिनौने पत्थर के समान ठहरता है, और सब लोग उसकी निन्दा करते हैं।
2 आलसी मनुष्य की तुलना गोबर के कूड़ादान से की जाती है; जो कोई उसे उठाता है वह अपना हाथ कांपता है।
3 दुष्ट मनुष्य अपने जन्मदाता पिता का अनादर करता है, और उसके नाश में मूर्ख बेटी उत्पन्न होती है।
4 बुद्धिमान बेटी अपके पति के लिथे भाग ले आती है; परन्तु जो कपट से चलती है, वह अपने पिता के लिथे भारी होती है।
5 जो निर्भीक है, वह अपने पिता और पति दोनोंका अनादर करती है, वरन वे दोनों उसे तुच्छ जानते हैं।
6 बिना समय की कहानी शोक के समय के संगीत के समान है; परन्तु मार और बुद्धि की ताड़ना कभी भी समय से बाहर नहीं होती।
7 जो मूर्ख को शिक्षा देता है, वह ठीकरे में टुकड़े जोड़ने वाले के समान, और गहरी नींद से जगाने वाले के समान है।
8 जो मूर्ख से कथा कहता है, वह सोते हुए से बातें करता है; जब वह अपनी कथा सुना चुका, तो कहेगा, क्या बात है?
9 यदि बच्चे ईमानदारी से रहें, और उनके पास साधन हों, तो वे अपने माता-पिता की नीचता को छिपा लेंगे।
10 परन्तु बच्चे घमण्ड करके, तिरस्कार और पालन-पोषण की कमी के कारण अपने कुल की कुलीनता पर कलंक लगाते हैं।
11 मरे हुओं के लिथे रोओ, क्योंकि उस ने ज्योति खो दी है; और मूर्ख के लिथे रोओ, क्योंकि वह समझना चाहता है; मरे हुओं के लिथे थोड़ा रोओ, क्योंकि वह विश्राम पा गया है; परन्तु मूढ़ का जीवन तो मृत्यु से भी बदतर है।
12 मनुष्य उस मरे हुए के लिथे सात दिन तक विलाप करते हैं; परन्तु मूर्ख और भक्तिहीन मनुष्य के लिथे जीवन भर।
13 मूर्ख से अधिक बातें न करना, और नासमझ के पास जाना; पागलपन से व्याकुल.
14 सीसे से भारी क्या है? और उसका क्या नाम है, परन्तु मूर्ख?
15 रेत, और नमक, और लोहे का ढेर, निर्बुद्धि मनुष्य से सहना आसान है।
16 जैसे भवन में लकड़ी का घेरा हिलाने से नहीं छूटता, वैसे ही मन जो सम्मति से दृढ़ होता है, वह कभी नहीं डरता।
17 समझ के विचार पर स्थिर हुआ हृदय गैलरी की दीवार पर की गई चिकनी मिट्टी के समान है।
18 ऊँचे स्थान पर खड़े हुए लोग वायु के साम्हने टिक न सकेंगे; वैसे ही मूर्ख की कल्पना में भी भयभीत मन किसी भय के साम्हने टिक नहीं सकता।
19 जो आंख में चुभाता है, वह आंसू बहाता है; और जो हृदय में चुभाता है, वह ज्ञान प्रगट करता है।
20 जो पक्षियों को पत्थर मारता है, वह उन्हें उड़ा देता है; और जो अपने मित्र को डांटता है, वह मित्रता तोड़ देता है।
21 चाहे तू ने अपके मित्र पर तलवार खींची हो, तौभी निराश न हो, क्योंकि उपकार का बदला अवश्य मिलेगा।

22 यदि तू ने अपने मित्र के विरूद्ध मुंह खोला है, तो मत डर; क्योंकि मेल-मिलाप हो सकता है: केवल निंदा, या अभिमान, या भेद प्रकट करना, या विश्वासघाती घाव को छोड़कर: क्योंकि इन्हीं बातों के कारण हर एक मित्र विदा हो जाएगा।
23 अपने पड़ोसी के कंगालपन में उसके प्रति विश्वासयोग्य रहो, जिस से तू उसकी समृद्धि से आनन्दित हो; उसके संकट के समय उसके साथ स्थिर रहो, जिस से तू उसके निज भाग में उसके संग वारिस हो; क्योंकि तुच्छ सम्पत्ति का सदैव तिरस्कार नहीं किया जाता। : न ही वह अमीर जो प्रशंसा के लायक मूर्ख है।
24 जैसे भट्ठी का धुआं और धुआं आग के आगे आगे बढ़ता है; खून से पहले इतनी निन्दा.
25 मैं मित्र का बचाव करने में लज्जित न होऊंगा; न मैं अपने आप को उस से छिपाऊंगा।
26 और यदि उसके द्वारा मुझ पर कोई विपत्ति पड़े, तो सब सुननेवाले उस से सावधान हो जाएं।
27 कौन मेरे मुंह के साम्हने पहरा बैठाएगा, और मेरे होठों पर बुद्धि की मुहर लगाएगा, ऐसा न हो कि मैं उनके द्वारा अचानक गिर पड़ूं, और मेरी जीभ मुझे नष्ट न कर दे?

अध्याय 23

1 हे प्रभु, हे पिता, और मेरे सारे जीवन के हाकिम, मुझे उनकी युक्तियों के अनुसार न छोड़, और न मैं उन में फंस जाऊं।
2 कौन मेरे विचारों पर कोड़े डालेगा, और मेरे हृदय पर बुद्धि की ताड़ना डालेगा? कि वे मेरी अज्ञानता के कारण मुझे न छोड़ें, और यह मेरे पापों के कारण न हो।
3 ऐसा न हो कि मेरी अज्ञानता बढ़ती जाए, और मेरे पाप बढ़ते जाएं और मैं नाश हो जाऊं, और मैं अपने द्रोहियों के आगे गिर पड़ूं, और मेरा शत्रु मुझ पर आनन्द करे, और उसकी आशा तेरी करूणा से दूर रहे।
4 हे प्रभु, हे पिता, और मेरे प्राण के परमेश्वर, मुझ पर घमण्ड न कर, परन्तु अपने दासोंके मन से घमण्ड को सदा दूर रख।
5 व्यर्थ आशाएं और अभिलाषाएं मुझ से दूर कर दो, और जो तुम्हारी सेवा करना चाहता है, उसे थामे रहो।
6 पेट का लालच और शरीर की अभिलाषा मुझ पर हावी न हो; और अपने दास को मेरे वश में करके उसका अभिमान न कर।
7 हे बालको, मुंह की शिक्षा सुनो; जो कोई उसे मानता है, वह कभी मुंह में न लेगा।
8 पापी अपनी मूढ़ता में बचा रहेगा, और बुरा बोलनेवाला और घमण्डी दोनों गिरेंगे।
9 अपके मुंह को शपथ खाने का आदी न बना; न तो पवित्र का नाम लेने में अपने आप को लगाओ।
10 क्योंकि जो दास लगातार पीटा जाता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता; वैसे ही जो लगातार शपथ खाता और परमेश्वर का नाम लेता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता।
11 जो मनुष्य बहुत अधिक शपथ खाता है, वह अधर्म से भर जाता है, और उसके घर से व्याधि कभी दूर न होती; यदि वह व्यर्थ शपथ खाए, तो निर्दोष न ठहरेगा, परन्तु उसका घर विपत्ति से भर जाएगा।
12 एक वचन है जो मृत्यु से छिपा है; परमेश्वर करे, कि वह याकूब के निज भाग में न पाए; क्योंकि ऐसी सब बातें भक्ति से दूर रहेंगी, और वे अपने पापों में डूबे न रहेंगे।
13 अपके मुंह से शपथ न खाना, क्योंकि उस में पाप का वचन है।
14 जब तू बड़े पुरूषोंके बीच में बैठे, तो अपने पिता और अपनी माता को स्मरण रखना। उनके साम्हने भूल न जाना, और इस रीति से तू अपनी रीति के अनुसार मूर्ख बन जाएगा, और चाहता है कि तू जन्म ही न लेता, और वे तेरे जन्म के दिन को कोसते हैं।
15 जो मनुष्य निन्दा की बातों का आदी है, वह जीवन भर कभी न सुधरेगा।
16 दो प्रकार के मनुष्य पाप बढ़ाते हैं, और तीसरा क्रोध लाता है; क्रोधी मन जलती हुई आग के समान है, वह तब तक नहीं बुझती जब तक वह भस्म न हो जाए; व्यभिचारी अपने शरीर में तब तक नहीं रुकता जब तक वह आग न लगा दे। आग।
17 व्यभिचारी को सब रोटी मीठी लगती है, वह मरने तक नहीं छोड़ता।
18 जो पुरूष विवाह तोड़ता है, वह अपने मन में यों कहता है, कौन मुझे देखता है? मैं चारों ओर अन्धियारे से घिरा हुआ हूं, और दीवारें मुझे ढँक लेती हैं, और कोई मुझे नहीं देखता; मुझे डरने की क्या ज़रूरत है? परमप्रधान मेरे पापों को स्मरण न रखेगा;
19 ऐसा मनुष्य तो केवल मनुष्योंकी दृष्टि से डरता है, और नहीं जानता, कि यहोवा की आंखे सूर्य से दस हजार गुनी अधिक तेज हैं, जो मनुष्योंकी सब चाल-चलन पर दृष्टि रखती, और गूढ़ बातोंपर दृष्टि रखती हैं।
20 जब सब वस्तुएं सृजी गईं तब से वह उन्हें जानता था; इसी प्रकार उनके पूर्ण हो जाने के बाद भी उसने उन सब पर दृष्टि डाली।
21 उस मनुष्य को नगर के चौकोंमें दण्ड दिया जाएगा, और जहां वह न सोचे वहां ले जाया जाएगा।
22 जो पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से वारिस लाती हो, उसका भी यही हाल होगा।
23 क्योंकि पहिले तो उस ने परमप्रधान की व्यवस्था का उल्लंघन किया है; और दूसरी बात, उस ने अपने ही पति के विरुद्ध अपराध किया है; और तीसरी बात, उस ने व्यभिचार करके वेश्या का काम किया, और दूसरे पुरूष से बच्चे उत्पन्न किए।
24 वह मंडली में बाहर लाई जाएगी, और उसके लड़केबालों से पूछताछ की जाएगी।
25 उसके लड़के-बाले जड़ न पकड़ सकेंगे, और उसकी डालियां फल न उपजेंगी।
26 वह अपनी स्मृति को शापित होने के लिथे छोड़े रहेगी, और उसकी नामधराई मिट न जाएगी।
27 और जो बचे रहेंगे वे जान लेंगे कि प्रभु के भय से बढ़कर कुछ भी अच्छा नहीं है, और प्रभु की आज्ञाओं पर ध्यान देने से बढ़कर कुछ भी अच्छा नहीं है ।
28 प्रभु के पीछे चलना बड़ी महिमा है, और उस से ग्रहण करना दीर्घायु है।

अध्याय 24

1 बुद्धि अपनी प्रशंसा करेगी, और अपनी प्रजा के बीच में घमण्ड करेगी।
2 वह परमप्रधान की सभा में अपना मुंह खोलकर उसकी शक्ति के साम्हने जयजयकार करेगी।
3 मैं परमप्रधान के मुख से निकला, और बादल के समान पृथ्वी पर छा गया।
4 मैं ऊंचे स्थानों पर वास करता हूं, और मेरी राजगद्दी धुंधले खम्भे में है।
5 मैं अकेला ही आकाश की परिक्रमा करके गहिरे जल की तलहटी में चला गया।
6 समुद्र की लहरों में, और सारी पृथ्वी पर, और सब लोगोंऔर जाति में मैं ने अधिकार कर लिया।
7 इन सब से मैं ने विश्राम ढूंढ़ा, और किस के निज भाग में बना रहूं?
8 इसलिये सब वस्तुओंके सृजनहार ने मुझे आज्ञा दी, और मेरे रचयिता ने मेरे निवास को स्थिर करके कहा, तेरा निवास याकूब में और तेरा निज भाग इस्राएल में रहे।
9 उस ने मुझे आदि से जगत के साम्हने उत्पन्न किया, और मैं कभी असफल न होऊंगा।
10 मैं पवित्र तम्बू में उसके साम्हने सेवा करता था; और इस प्रकार मैं सायन में स्थापित हो गया।
11 इसी रीति से उस ने मुझे प्रिय नगर में विश्रम दिया, और यरूशलेम में मेरा अधिकार हुआ।
12 और मैं ने यहोवा के निज भाग के भाग में भी प्रतिष्ठित जाति में जड़ पकड़ ली।
13 मैं लिबानुस के देवदार के समान, और हेर्मोन के पहाड़ों पर के सनौवर के समान महान हुआ।
14 मैं एनगद्दी में खजूर के वृक्ष के समान, और यरीहो में गुलाब के पौधे के समान, वा मनभावन मैदान में सुन्दर जैतून के वृक्ष के समान, और जल के किनारे समतल वृक्ष के समान बड़ा हुआ।
15 मैं ने दालचीनी और अस्पालातुस का सा सुखदायक सुगन्ध पाया, और उत्तम गन्धरस का सा, और गलबानम का, और गोमेद का, और मीठे भण्डार का, और तम्बू में के लोबान के धूएं का सा मनभावन सुगन्ध पाया।
16 मैं ने अपनी डालियां तारपीन के वृक्ष की नाईं फैलाईं, और मेरी डालियां आदर और अनुग्रह की शाखाएं हैं।
17 जैसे दाखलता ने सुखदायक सुगन्ध उत्पन्न की, वैसे ही मेरे फूल महिमा और धन के फल हैं।
18 मैं निष्पक्ष प्रेम, और भय, और ज्ञान, और पवित्र आशा की जननी हूं: इसलिथे मैं अनन्त होकर अपके सब पुत्रोंको जो उसके नाम से बुलाए गए हैं, सौंप दी गई हूं।
19 हे सब मेरे चाहनेवालो, मेरे पास आओ, और मेरे फलों से तृप्त हो जाओ।
20 क्योंकि मेरा स्मरण मधु से, और मेरा निज भाग मधु के छत्ते से भी मीठा है।
21 जो मुझे खाते हैं वे फिर भी भूखे रहेंगे, और जो मुझे पीते हैं वे फिर भी प्यासे रहेंगे।
22 जो मेरी आज्ञा मानता है, वह कभी लज्जित न होगा, और जो मेरी ओर से काम करते हैं, उनका कुछ अनर्थ न होगा।
23 ये सब बातें परमप्रधान परमेश्वर की वाचा की पुस्तक हैं, अर्यात् वह व्यवस्था जो मूसा ने याकूब की मण्डली के लिये निज भाग होने के लिथे दी थी।
24 प्रभु में बलवन्त होने से घबराओ मत; कि वह तुम्हें दृढ़ कर सके, उस से लिपटे रहो; क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा ही एकमात्र परमेश्वर है, और उसके सिवा कोई दूसरा उद्धारकर्ता नहीं।
25 वह सब वस्तुओं को अपनी बुद्धि से भर देता है, जैसे फ़िसन, वा दजला, नये फल के समय।
26 उस ने परात के समान, और कटनी के समय यरदन के समान बढ़ने की समझ दी है।
27 वह ज्ञान की शिक्षा को ज्योति के समान, और प्राचीन काल में जियोन के समान प्रगट करता है।
28 पहिला पुरूष उसे भलीभांति न जानता था, और पिछला पुरूष उसे फिर न जान सकेगा।
29 क्योंकि उसके विचार समुद्र से भी अधिक गंभीर हैं, और उसकी युक्तियाँ गहिरे सागर से भी गहरी हैं।
30 मैं भी नदी से नाले की नाईं, और बारी की नाली की नाईं निकला हूं।
31 मैं ने कहा, मैं अपनी उत्तम बारी को सींचूंगा, और अपनी क्यारी को बहुतायत से सींचूंगा; और देखो, मेरी नदी नदी बन गई, और मेरी नदी समुद्र बन गई।
32 मैं फिर उपदेश को भोर के समान चमकाऊंगा, और उसका प्रकाश दूर तक फैलाऊंगा।
33 मैं फिर भी उपदेश को भविष्यद्वाणी की नाईं उंडेलूंगा, और सर्वदा के लिये सर्वदा के लिये छोड़ दूंगा।
34 देख, मैं ने केवल अपने लिये ही नहीं, परन्तु उन सब के लिये भी परिश्रम किया है जो बुद्धि के खोजी हैं।

अध्याय 25

1 तीन बातों से मैं सुशोभित हुआ, और परमेश्वर और मनुष्यों दोनों के साम्हने सुंदर होकर खड़ा हुआ: भाइयों की एकता, पड़ोसियों का प्रेम, एक पुरूष और एक पत्नी जो एक दूसरे से सहमत हों।
2 मेरा मन तीन प्रकार के मनुष्यों से बैर रखता है, और मैं उनके जीवन के कारण अत्यन्त घृणित हूं, एक कंगाल जो घमण्डी है, एक धनी मनुष्य जो झूठ बोलता है, और एक बूढ़ा व्यभिचारी जो व्यभिचारी है।
3 जब तू ने अपनी जवानी में कुछ भी न बटोरा, तो अपनी उम्र में क्योंकर कुछ पा सकेगा?
4 हे पके बालोंके लिये न्याय, और प्राचीन मनुष्योंके लिये युक्ति जानना क्या ही सुन्दर बात है!
5 पुरनियोंकी बुद्धि क्या ही शोभायमान है, और प्रतिष्ठित मनुष्योंकी समझ और युक्ति क्या ही शोभायमान है!
6 बहुत अनुभव बूढ़ों का मुकुट है, और परमेश्वर का भय मानना उनकी महिमा है।
7 नौ बातें हैं जो मैं ने अपने मन में ठान ली हैं, कि आनन्दित रहूं, और दसवीं मैं अपनी जीभ से कहूंगा, अर्थात जो पुरूष अपने लड़केबालोंके कारण आनन्द रखता है; और वह जो अपने शत्रु का पतन देखने के लिये जीवित है:

8 वह भला ही है, जो समझदार स्त्री के साथ रहता हो, और उसकी जीभ न फिसली हो, और न अपने से अधिक अयोग्य पुरूष की सेवा की हो।
9 भला वह है, जिसने विवेक पाया है, और जो सुननेवालोंको सुनाता है;
10 हे बुद्धि पानेवाला क्या ही महान है! तौभी जो यहोवा का भय मानता हो, उस से बढ़कर कोई नहीं।
11 परन्तु प्रभु का प्रेम सब वस्तुओं को प्रकाश देता है; जो उसे धारण करता है, उसकी तुलना किस से की जाएगी?
12 यहोवा का भय मानना उसके प्रेम का आरम्भ है; और विश्वास उस में लिपटे रहने का आरम्भ है।
13 मुझे मन की बुराई छोड़, सब प्रकार की विपत्ति दे; और स्त्री की बुराई छोड़, सब प्रकार की दुष्टता मुझे दे;
14 और हर प्रकार का क्लेश, परन्तु मेरे बैरियोंकी ओर से क्लेश, और हर प्रकार का पलटा, परन्तु शत्रुओं का पलटा।
15 सांप के सिर के ऊपर कोई सिर नहीं; और शत्रु के क्रोध से बढ़कर कोई क्रोध नहीं है।
16 मुझे दुष्ट स्त्री के साथ घर रखने की अपेक्षा सिंह और अजगर के साथ रहना अच्छा लगता है।
17 स्त्री की दुष्टता उसके चेहरे को बदल देती है, और उसका मुख टाट की नाईं अंधकारमय कर देती है।
18 उसका पति अपके पड़ोसियोंके बीच बैठा रहे; और जब वह सुनेगा तो बुरी तरह आह भरेगा।
19 स्त्री की दुष्टता के साम्हने सब दुष्टताएं छोटी हैं; पापी का भाग उसे भी मिले।
20 जैसे बूढ़ों के पांवोंके लिये रेतीली राह पर चढ़ना सुखदायक होता है, वैसे ही शान्त पुरूष के लिये बातें बोलनेवाली पत्नी भी सुखदायी होती है।
21 किसी स्त्री की सुन्दरता पर ठोकर न खाओ, और सुख के लिये उसका अभिलाषा न करो।
22 जो स्त्री अपने पति की सेवा करती है, वह क्रोध, निर्लज्जता, और बहुत निन्दा से भरी रहती है।
23 दुष्ट स्त्री का साहस घट जाता है, उसका मुख उदास हो जाता है, और उसका मन घायल हो जाता है; जो स्त्री संकट में अपने पति को शान्ति न देती, उसके हाथ ढीले और घुटने ढीले हो जाते हैं।
24 स्त्री से पाप का आरम्भ हुआ, और हम सब उसी के द्वारा मरते हैं।
25 जल को मार्ग न दे; न ही किसी दुष्ट स्त्री को विदेश में गाली देने की आजादी।
26 और यदि वह उस न चले जैसा तू चाहता था, तो उसे अपने शरीर से अलग कर देना, और त्यागपत्र देकर उसे छोड़ देना।

अध्याय 26

1 धन्य है वह पुरूष, जिसकी पत्नी गुणी हो, क्योंकि उसके दिन दूने होंगे।
2 पवित्र स्त्री अपने पति को आनन्दित करती है, और वह अपने जीवन के सभी वर्ष शान्ति से पूरे करेगा।
3 अच्छी पत्नी अच्छा भाग है, वह यहोवा के डरवैयों को दिया जाएगा।
4 चाहे मनुष्य धनी हो चाहे निर्धन, यदि उसका मन यहोवा की ओर भला हो, तो वह सर्वदा प्रसन्न मुख से प्रसन्न रहेगा।
5 तीन बातों से मेरा मन डरता है; और चौथे से मैं बहुत डर गया: नगर की निन्दा, उपद्रवी भीड़ का जमावड़ा, और झूठा दोषारोपण: ये सब मृत्यु से भी बदतर हैं।
6 परन्तु जो स्त्री पराई स्त्री के कारण डाह रखती है, वह मन और शोक के समान है, और जो जीभ सब से बोलती है, वह कोड़े का कारण है।
7 दुष्ट पत्नी इधर उधर हिलाए हुए जूए के समान होती है; जो उसे पकड़ लेता है वह मानो बिच्छू को पकड़ लेता है।
8 जो स्त्री पियक्कड़ और व्यभिचारिणी स्त्री है, वह बड़े क्रोध का कारण बनती है, और अपनी लज्जा को छिपा न पाती।
9 स्त्री का व्यभिचार उसके घमण्डी रूप और पलकों से प्रगट हो जाता है।
10 यदि तेरी बेटी निर्लज्ज हो, तो उसे रोककर रखना, ऐसा न हो कि वह अधिक स्वतंत्रता के कारण अपने आप को अपवित्र ठहराए।
11 निर्लज्ज आंख से सावधान रहो; और यदि वह तुझ से विश्वासघात करे, तो अचम्भा न करना।
12 वह प्यासे यात्री के समान अपना मुंह खोलकर सोता पाकर उसके पास का सब जल पी लेगी; वह सब बाड़ों के पास बैठ जाएगी, और सब तीरों के साम्हने अपना तरकश खोल देगी।
13 पत्नी के अनुग्रह से उसका पति प्रसन्न होता है, और उसके विवेक से उसकी हड्डियां मजबूत होती हैं।
14 चुप रहनेवाली और प्रेममयी स्त्री यहोवा का दान है; और अच्छी तरह से प्रशिक्षित दिमाग से अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं है।
15 लज्जित और विश्वासयोग्य स्त्री दोहरी कृपा है, और उसके दृढ़ मन का मूल्य नहीं आंका जा सकता।
16 जैसे सूर्य ऊंचे आकाश पर उदय होता है; एक अच्छी पत्नी की सुंदरता उसके घर की व्यवस्था में भी होती है।
17 जैसे पवित्र दीवट पर निर्मल उजियाला चमकता है; बढ़ती उम्र में चेहरे की खूबसूरती भी ऐसी ही होती है।
18 जैसे सोने के खम्भे चान्दी की कुर्सियों पर बने होते हैं; ऐसे ही स्थिर हृदय वाले गोरे पैर हैं।
19 हे मेरे पुत्र, अपके युग के फूल की रक्षा कर; और अपनी शक्ति परदेशियों को न दो।
20 जब तुझे सारे खेत में उपजाऊ भूमि मिल जाए, तो अपने खेत की उपज पर भरोसा रखते हुए उसे अपने ही बीज के साथ बोना।
21 इस प्रकार तेरा वंश, जिसे तू छोड़ेगा, अपने अच्छे वंश का निश्चय पाकर बड़ा होगा।
22 वेश्या तुच्छ समझी जाएगी; परन्तु विवाहित स्त्री अपने पति के लिये मृत्यु के विरूद्ध मीनार है।
23 दुष्ट स्त्री दुष्ट पुरूष को दी जाती है, परन्तु भक्त स्त्री यहोवा के भय माननेवाले को दी जाती है।
24 बेईमान स्त्री लज्जा की परवाह करती है, परन्तु सीधी स्त्री अपने पति का आदर करती है।
25 निर्लज्ज स्त्री कुत्ते के समान गिनी जाएगी; परन्तु जो लज्जित होगी वह यहोवा का भय मानेगी।

26 जो स्त्री अपने पति का आदर करेगी, वह सब में बुद्धिमान समझी जाएगी; परन्तु जो अपने अभिमान के कारण उसका अनादर करेगी, वह सब में से अभक्त समझी जाएगी।
27 और शत्रुओं को भगाने के लिये ऊंचे शब्द से रोनेवाली और डाँटनेवाली स्त्री ढूंढ़ी जाएगी।
28 दो बातें हैं जो मेरे मन को दुख पहुंचाती हैं; और तीसरा मुझे क्रोधित करता है: एक योद्धा जो गरीबी से पीड़ित है; और समझदार पुरूष जो किसी से बंधे हुए नहीं; और वह जो धर्म से पाप की ओर लौटता है; यहोवा ऐसे को तलवार के लिये तैयार करता है।
29 व्यापारी कुटिल काम करने से अपने आप को रोक नहीं पाता; और व्यभिचारी पाप से मुक्त न होगा।

अध्याय 27

1 बहुतों ने छोटी सी बात के लिये पाप किया है; और जो बहुतायत का अभिलाषी है वह अपनी आंखें फेर लेगा।
2 जैसे कील पत्थरों के जोड़ में दृढ़ता से चिपकती है; तो खरीदने और बेचने के बीच में पाप बना रहता है।
3 यदि कोई मनुष्य यहोवा का भय मानते हुए अपने आप को दृढ़ न रखे, तो उसका घर शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा।
4 जैसे कोई छलनी से छानने पर कूड़ा रह जाता है; तो उसकी बातों में आदमी की गंदगी.
5 भट्ठी कुम्हार के बर्तनों को परखती है; इसलिए मनुष्य का परीक्षण उसके तर्क में है।
6 फल प्रगट करता है, कि वृक्ष तैयार हो गया है; मनुष्य के हृदय में अहंकार का उच्चारण भी ऐसा ही है।
7 जब तक तू किसी की बातें न सुने, तब तक उसकी प्रशंसा न करना; क्योंकि यही मनुष्यों की परीक्षा है।
8 यदि तू धर्म पर चले, तो उसे प्राप्त करके, महिमामय लम्बे वस्त्र के समान पहिनाएगा।
9 पक्षी अपके तुल्य हो जाएंगे; तो क्या सत्य उन लोगों के पास लौट आएगा जो उसमें अभ्यास करते हैं।
10 जैसे सिंह अहेर की घात में बैठा रहता है; जो लोग अधर्म का काम करते हैं, वे पाप करते हैं।
11 भक्त जन की बातचीत सर्वदा बुद्धि से युक्त होती है; परन्तु मूर्ख चन्द्रमा के समान बदल जाता है।
12 यदि तू अविवेकियों में से हो, तो समय का ध्यान रखना; परन्तु सदैव समझदार मनुष्यों के बीच में रहो।
13 मूढ़ोंकी बातचीत घृणित होती है, और उनका खेल अधर्म की प्रचण्डता से होता है।
14 जो अधिक शपथ खाता है, उसकी बात से रोंगटे खड़े हो जाते हैं; और उनके झगड़ों से मनुष्य के कान बंद हो जाते हैं।
15 अभिमानियोंका झगड़ा खून-खराबा है, और उनकी निन्दा सुनने को दु:खदायी होती है।
16 जो भेद खोलता है, वह अपना श्रेय खो देता है; और उसे अपने मन का मित्र कभी नहीं मिलेगा।
17 अपने मित्र से प्रेम रख, और उसके प्रति विश्वासयोग्य रह; परन्तु यदि तू उसके भेदों को पकड़ ले, तो फिर उसके पीछे न हो।
18 क्योंकि जैसे मनुष्य ने अपने शत्रु को नाश किया हो; तो क्या तू ने अपने पड़ोसी का प्रेम खो दिया?
19 जैसे कोई पक्षी को अपने हाथ से छोड़ देता है, वैसा ही तू भी अपने पड़ोसी को जाने दे, और फिर उसे न पकड़ेगा।
20 फिर उसके पीछे न चलना, क्योंकि वह बहुत दूर है; वह जाल से छूटे हुए हिरन के समान है।
21 और घाव बन्धा हुआ हो; और गाली देने के बाद मेल हो सकता है; परन्तु जो भेद खोल देता है, वह आशाहीन हो जाता है।
22 जो आंखे दिखाता है, वह बुराई करता है; और जो उसे जानता है, वह उस से दूर हो जाता है।
23 जब तू उपस्थित होगा, तब वह मीठी बातें बोलेगा, और तेरी बातें सराहेगा; परन्तु अन्त में वह मुंह चिढ़ाएगा, और तेरी बातें निन्दा करेगा।
24 मैं ने बहुत सी वस्तुओं से बैर तो किया, परन्तु उसके तुल्य किसी से बैर नहीं किया; क्योंकि यहोवा उस से बैर रखेगा।
25 जो कोई ऊंचे पर पत्थर फेंकता है, वह उसे अपने ही सिर पर मारता है; और कपट का प्रहार घाव कर देगा।
26 जो गड़हा खोदे वह उस में गिरेगा; और जो जाल बिछाए वह उसमें फंस जाएगा।
27 जो उपद्रव करेगा, वह उसी पर गिरेगा, और वह न जान सकेगा कि वह कहां से आता है।
28 उपहास और निन्दा तो अभिमानियोंको होती है; परन्तु प्रतिशोध सिंह के समान उनकी घात में बैठा रहेगा।
29 जो धर्मी के गिरने से आनन्द करते हैं, वे फंदे में फंसेंगे; और मरने से पहले पीड़ा उन्हें ख़त्म कर देगी।
30 बैर और क्रोध ये भी घृणित काम हैं; और पापी मनुष्य उन दोनोंको पा लेगा।

अध्याय 28

1 जो पलटा लेगा वह यहोवा से पलटा पाएगा, और अपने पापों को निश्चय स्मरण रखेगा।
2 तू अपने पड़ोसी का अपराध क्षमा कर, और तू प्रार्थना करेगा, वैसे ही तेरे पाप भी क्षमा किए जाएंगे।
3 एक मनुष्य दूसरे से बैर रखता है, और क्या वह यहोवा से क्षमा चाहता है?
4 वह अपने तुल्य मनुष्य पर दया नहीं करता; और क्या वह अपने पापों की क्षमा मांगता है?
5 यदि वह जो शारीरिक है, बैर पालता है, तो कौन अपने पापों की क्षमा के लिये बिनती करेगा?
6 अपने अन्त की सुधि ले, और बैर छोड़ दे; भ्रष्टाचार और मृत्यु को स्मरण रखो, और आज्ञाओं में बने रहो।
7 आज्ञाओं को स्मरण रखो, और अपने पड़ोसी से द्वेष न करो; परमप्रधान की वाचा को स्मरण रखो, और अज्ञान पर आंख फेरो।
8 झगड़ने से बचे रहो, तो अपने पापोंको घटाओ; क्योंकि क्रोध करनेवाला मनुष्य कलह भड़काएगा,
9 पापी मनुष्य मित्रोंको व्याकुल कर देता है, और मेल रखनेवालोंके बीच विवाद कराता है।
10 जैसी आग होती है, वैसी ही वह जलाती है; और जैसा मनुष्य का बल होता है, वैसा ही उसका क्रोध भी होता है; और उसके धन के अनुसार उसका क्रोध भड़कता है; और जितने अधिक वे झगड़ते हैं, वे उतना ही अधिक भड़क उठेंगे।

11 उतावली के झगड़े से आग भड़कती है, और उतावली के झगड़े से खून बहता है।
12 यदि तू चिंगारी फूंके, तो वह जल जाएगी; यदि तू उस पर थूके, तो वह बुझ जाएगी; और ये दोनों बातें तेरे मुंह से निकलती हैं।
13 कानाफूसी करनेवाले और दोमुंही बोलनेवाले को शाप दो; क्योंकि ऐसे ने बहुतोंको जो मेल रखते थे नाश किया है।
14 चुगली करनेवाली जीभ ने बहुतोंको व्याकुल कर दिया है, और उन्हें एक जाति से दूसरी जाति में खदेड़ दिया है; उस ने दृढ़ नगरोंको ढा दिया, और बड़े मनुष्योंके घरोंको ढा दिया है।
15 चुगली करनेवाली जीभ ने भली स्त्रियोंको निकाल दिया, और उनका परिश्रम छीन लिया है।
16 जो कोई इसकी सुनेगा, वह कदापि चैन न पाएगा, और न चैन पाएगा।
17 कोड़े की मार से शरीर में घाव हो जाते हैं, परन्तु जीभ की मार से हड्डियां टूट जाती हैं।
18 बहुत से लोग तलवार से मारे गए, परन्तु जितने जीभ से मारे गए, उतने नहीं।
19 भला ही वह है जो उसके विष से बचाव करता है; जिस पर न तो जूआ खींचा गया है और न वह बंधनों में बंधा है।
20 क्योंकि उसका जूआ लोहे का बना है, और उसकी पट्टियां पीतल की पट्टियां हैं।
21 उसकी मृत्यु बुरी मृत्यु है, कब्र उस से अच्छी है।
22 वह परमेश्वर के डरवैयोंपर प्रभुता न करेगा, और वे उसकी आग में न जलाए जाएंगे।
23 जो यहोवा को त्याग देते हैं, वे उस में गिरेंगे; और वह उन में जलती रहेगी, और बुझेगी नहीं; वह सिंह के समान उन पर भेजा जाएगा, और चीते के समान उनको निगल जाएगा।
24 देख, तू अपक्की निज भूमि को कांटोंसे घेरता है, और अपके सोने चान्दी को बान्धता है;
25 और अपने वचन तराजू में तौलना, और अपने मुंह के लिथे द्वार और बेंड़ा बनाना।
26 सावधान रहो, उस से फिसलना नहीं, ऐसा न हो कि घात लगानेवाले के साम्हने गिर पड़ो।

अध्याय 29

1 जो दयालु है वह अपने पड़ोसी को उधार देगा; और जो अपने हाथ को दृढ़ करता है, वह आज्ञाओं को मानता है।
2 अपने पड़ोसी को उसकी आवश्यकता के समय उधार देना, और समय पर अपने पड़ोसी को फिर चुकाना।
3 अपना वचन मान, और उसके साथ सच्चाई से बर्ताव कर, और जो वस्तु तेरे लिये आवश्यक हो वह तुझे सर्वदा मिलती रहेगी।
4 और बहुतोंको जो वस्तु उधार दी गई, उस ने समझ लिया, कि वह मिल गई है, और जिस ने उन की सहायता की या, उसी को संकट में डाला।
5 जब तक वह ग्रहण न कर ले, तब तक वह पुरूष का हाथ चूमेगा; और अपने पड़ोसी के धन के लिये वह नम्रता से बातें करेगा; परन्तु जब उसे बदला चुकाना होगा, तब वह समय बढ़ा देगा, और दुख की बातें कहेगा, और समय के विषय में शिकायत करेगा।
6 यदि वह प्रबल हो, तो आधा भी उसे कठिनता से मिलेगा, और वह ऐसा समझेगा मानो उसे मिल गया; यदि नहीं, तो उसका धन छीन लिया गया, और अकारण उसका शत्रु हो गया; वह उसे शाप देता और शाप देता है। रेलिंग; और आदर के बदले वह उसे अपमान देगा।
7 इसलिये बहुतोंने ठगे जाने के भय से दूसरे मनुष्यों की बुराई के कारण उधार देने से इन्कार कर दिया है।
8 तौभी तू कंगाल पुरूष के विषय में धीरज रखना, और उस पर दया करने में विलम्ब न करना।
9 आज्ञा के निमित्त कंगाल की सहायता करो, और उसकी कंगाली के कारण उस से मुंह न मोड़ो।
10 अपने भाई वा मित्र के लिये अपना रूपया खो दो, और वह पत्थर के नीचे जंग खाकर नष्ट न हो जाए।
11 परमप्रधान की आज्ञा के अनुसार अपना धन इकट्ठा करो, और वह तुझे सोने से भी अधिक लाभ पहुंचाएगा।
12 भिक्षा को अपने भण्डारों में बन्द रखो, और वह तुम्हें सब प्रकार की विपत्तियों से छुड़ाएगा।
13 वह तेरी ओर से तेरे शत्रुओं से बलवन्त ढाल और बलवन्त भाले से भी उत्तम लड़ेगा।
14 ईमानदार मनुष्य अपने पड़ोसी का जमानतदार होता है, परन्तु जो निर्लज्ज होता है, वह उसे छोड़ देता है।
15 अपने जमानतदार की मित्रता न भूलना, क्योंकि उस ने तेरे लिये अपना प्राण दे दिया है।
16 पापी अपने जमानतदार की अच्छी संपत्ति को नष्ट कर देगा;
17 और जो कृतघ्न मन का है, वह अपने छुड़ानेवाले को संकट में छोड़ देगा।
18 निश्चय ने बहुतों की अच्छी सम्पत्ति नष्ट कर दी है, और उन्हें समुद्र की लहर की नाईं हिला दिया है; उस ने सामर्थियोंको उनके घरोंसे निकाल दिया है, और वे परदेशी जातियोंमें भटकते फिरते हैं।
19 जो दुष्ट मनुष्य यहोवा की आज्ञाओं का उल्लंघन करता है, वह जमानत के जाल में फंसता है; और जो लाभ के लिये दूसरे का व्यापार करता है, वह मुकद्दमे में फंसेगा।
20 अपनी शक्ति के अनुसार अपने पड़ोसी की सहायता करो, और सावधान रहो, कि तुम भी उसी में न पड़ो।
21 जीवन के लिये मुख्य वस्तु जल, और रोटी, और वस्त्र, और लज्जा को छिपाने के लिये मकान है।
22 कंगाल का जीवन पराई घर में रहने से, पराई झोपडी में सुख से उत्तम है।
23 चाहे थोड़ा हो, चाहे अधिक हो, सन्तुष्ट रहे, ऐसा न हो कि तू अपने घराने की नामधराई सुने।
24 क्योंकि घर घर फिरना दु:ख है; क्योंकि जहां तू परदेशी होता है वहां मुंह खोलने का साहस नहीं करता।
25 तू सत्कार और जेवनार तो करेगा, परन्तु धन्यवाद न करेगा, और कड़वी बातें सुनेगा।
26 हे परदेशी, आकर मेज सजा, और जो कुछ तू ने तैयार किया है उसमें से मुझे खिला।
27 हे परदेशी, किसी प्रतिष्ठित पुरूष को स्थान दे; मेरा भाई रहने के लिये आया है, और मुझे अपने घर की आवश्यकता है।
28 ये बातें समझवाले को दुखदायी होती हैं; गृहगृह की निन्दा, और ऋणदाता की निन्दा।

अध्याय 30

1 जो अपने बेटे से मुहब्बत रखता है, वह उसे बार-बार छड़ी का एहसास कराता है, ताकि आख़िर में वह उससे ख़ुश हो।
2 जो अपने बेटे को ताड़ना देगा, वह उस से आनन्द करेगा, और अपने जान-पहचानवालों के बीच उस से आनन्द करेगा।
3 जो अपने बेटे को शिक्षा देता है, वह शत्रु को दुखी करता है, और मित्रों के साम्हने उसके कारण आनन्दित होता है।
4 चाहे उसका पिता मर जाए, तौभी वह मानो नहीं मरा; क्योंकि वह अपने पीछे अपने तुल्य एक को छोड़ गया है।
5 जब तक वह जीवित रहा, तब तक उसे देखता रहा, और उस से आनन्द करता रहा; और जब वह मर गया, तो उसे शोक न हुआ।
6 और वह अपके शत्रुओंका पलटा लेनेवाला और मित्रोंपर दयालुता करनेवाला अपने पीछे छोड़ गया।
7 जो अपने बेटे से अधिक अन्याय करे वह उसके घावों पर पट्टियां बान्धे; और उसकी अन्तड़ियाँ हर पुकार पर व्याकुल हो उठेंगी।
8 जो घोड़ा न टूटा हो, वह हठी हो जाता है; और जो बच्चा छोड़ दिया जाए, वह हठीला हो जाता है।
9 अपने लड़के को काठ मारो, और वह तुम्हें डरा देगा; उसके साथ खेलो, और वह तुम्हें उदास कर देगा।
10 उसके साथ मत हंसो, ऐसा न हो कि तुम्हें उस से दुख हो, और अन्त में तुम दांत पीसना।
11 उसकी जवानी में उसे स्वतंत्रता न दो, और उसकी मूर्खताओं पर आंख न फेरो।
12 जब वह जवान हो, तब उसकी गर्दन झुका देना, और जब वह बालक हो, तब उसे पटकना, ऐसा न हो कि वह हठ करके तेरी आज्ञा न माने, और तेरे मन को दुख पहुंचाए।
13 अपने बेटे को ताड़ना दे, और उस से परिश्रम करा, ऐसा न हो कि उसके बुरे व्यवहार से तुझे ठेस लगे।
14 कंगाल शारीरिक रूप से दु:खी होनेवाले धनवान से, जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और बलवन्त हो, उत्तम है।
15 तंदुरुस्ती और शरीर की भलाई सब सोने से बढ़कर है, और बलवन्त शरीर अनन्त धन से बढ़कर है।
16 स्वस्थ शरीर से बढ़कर कोई धन नहीं, और मन के आनन्द से बढ़कर कोई आनन्द नहीं।
17 कड़वे जीवन या लगातार बीमारी से मृत्यु बेहतर है।
18 बन्द मुंह पर जो स्वादिष्ट भोजन डाला जाता है, वह कब्र पर रखे हुए मांस के लोथड़े के समान है।
19 मूरत पर चढ़ाए हुए चढ़ावे से क्या लाभ? क्योंकि वह न तो खा सकता है और न सूंघ सकता है: जो प्रभु से सताया जाता है, वही ऐसा है।
20 वह अपनी आंखों से देखता है और कराहता है, जैसे कोई खोजा किसी कुंवारी को गले लगाकर आह भरता है।
21 अपने मन को भारीपन पर न छोड़ो, और अपनी ही युक्ति में अपने आप को कष्ट न दो।
22 मन का आनन्द मनुष्य का जीवन है, और मनुष्य के आनन्द से उसकी आयु बढ़ती है।
23 अपने प्राण से प्रेम रख, और अपने मन को शान्ति दे; दु:ख को अपने से दूर कर; क्योंकि दु:ख ने बहुतोंको मार डाला है, और उस से कुछ लाभ नहीं।
24 डाह और क्रोध से जीवन छोटा होता है, और सावधानी समय से पहिले बुढ़ापा लाती है।
25 जो प्रसन्न और भला मनवाला है, वह अपने भोजन और आहार की चिन्ता करेगा।

अध्याय 31

1 धन की चिन्ता शरीर को भस्म कर देती है, और उसकी चिन्ता से नींद उड़ जाती है।
2 जागते रहने से मनुष्य को नींद नहीं आती, जैसे भयंकर रोग से नींद टूट जाती है।
3 धनवान को धन इकट्ठा करने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है; और जब वह विश्राम करता है, तो अपनी कोमल वस्तुओं से भर जाता है।
4 कंगाल अपनी कंगाली में परिश्रम करता है; और जब वह चला जाता है, तब भी वह दरिद्र होता है।
5 जो सोने से प्रीति रखता है, वह निर्दोष ठहरेगा; और जो सोने से प्रीति रखता है, वह बहुत पा चुका होगा।
6 सोना बहुतों का नाश हुआ है, और उनका नाश अवश्य हुआ है।
7 वह उसके बलिदान करनेवालोंके लिथे ठोकर का कारण है, और सब मूर्ख उसी से पकड़े जाएंगे।
8 क्या ही धन्य वह धनवान है जो निष्कलंक पाया जाता है, और सोने की खोज में न लगा हो।
9 वह कौन है? और हम उसे धन्य कहेंगे: क्योंकि उस ने अपनी प्रजा के बीच अद्भुत काम किए हैं।
10 इस से कौन परखा गया, और सिद्ध पाया गया? तो उसे महिमा करने दो। कौन नाराज हो सकता है, और किसने नाराज नहीं किया? या बुरा किया हो, और न किया हो?
11 उसका धन स्थिर किया जाएगा, और मण्डली उसके दान का वर्णन करेगी।
12 यदि तू किसी मेज पर बैठे, तो उस पर लोभ न करना, और न कहना, कि इस पर बहुत मांस है।
13 स्मरण रखो, कि बुरी आंख बुरी बात है: और आंख से अधिक बुरी आंख किसकी सृजी गई है? इसलिये वह हर अवसर पर रोता है।
14 जहां कहीं वह देखे वहां अपना हाथ न बढ़ाए, और न ही थाली में डाले।
15 अपने पड़ोसी पर आप ही दोष न लगाओ, और हर बात में बुद्धिमान बनो।
16 जो वस्तुएं तेरे साम्हने रखी जाएं, उन्हें मनुष्य की नाई खाओ; और नोट खाओ, ऐसा न हो कि तुम से बैर हो।
17 पहिले शिष्टाचार के लिये छोड़ दे; और तृप्त न होओ, ऐसा न हो कि तुम ठेस पहुंचाओ।
18 जब तू बहुतों के बीच में बैठे, तो पहिले अपना हाथ न बढ़ाना।
19 अच्छे से पाले हुए मनुष्य के लिये थोड़ा ही काफी है, और वह अपने बिछौने पर अपना पेट नहीं भरता।
20 संयमित भोजन करने से गहरी नींद आती है; वह सवेरे उठता है, और उसकी बुद्धि काम करती है; परन्तु जागते रहने का कष्ट, और पित्त, और पेट की पीड़ा तृप्त मनुष्य को होती है।

21 और यदि तुझे कुछ खाने को विवश किया जाए, तो उठ, और उगल कर, तब तुझे विश्राम मिलेगा।
22 हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और मुझे तुच्छ न जान; और अन्त में तू वैसा ही पाएगा जैसा मैं ने तुझ से कहा है; तू सब काम फुर्ती से करना, ऐसा न हो कि तुझे कोई रोग लगे।
23 जो अपने भोजन के विषय में उदार होता है, लोग उसकी प्रशंसा करते हैं; और उसकी अच्छी गृह व्यवस्था की रिपोर्ट पर विश्वास किया जाएगा।
24 परन्तु जो अपने भोजन की कंजूसी करता है, उस पर सारा नगर बुड़बुड़ाएगा; और उसकी कंजूसी की गवाही पर संदेह नहीं किया जाएगा।
25 दाखमधु में अपना पराक्रम न प्रगट करो; क्योंकि दाखमधु ने बहुतोंको नाश किया है।
26 भट्टी डुबाकर धार को परखती है, और मतवालेपन से अभिमानियों के मन को मदिरा बनाता है।
27 दाखमधु मनुष्य के लिये जीवन के तुल्य है, यदि वह संयम से पिया जाए; तो जो मनुष्य दाखमधु से रहित है, उसके लिये जीवन का क्या लाभ? क्योंकि यह मनुष्यों को आनन्दित करने के लिये बनाया गया है।
28 दाखमधु जब भी समय पर पिया जाता है, तो मन को आनन्दित और मन को प्रसन्न करता है।
29 परन्तु दाखमधु जो अधिक नशे में होता है, मन को कड़वाहट देता है, और लड़ाई-झगड़ा करता है।
30 पियक्कड़पन मूर्ख का क्रोध भड़काता है, यहां तक कि वह ठोकर खाता है; उस से उसका बल घट जाता है, और घाव बन जाता है।
31 दाखमधु पीते समय अपने पड़ोसी को न डाँटो, और आनन्द करते समय उसका तिरस्कार न करो; न उसे बुरा भला कहो, और न उस पर दबाव डालकर उसे पीने को उकसाओ।

अध्याय 32

1 यदि तू किसी जेवनार का स्वामी ठहराया जाए, तो घमंड न करना, परन्तु औरोंमें से एक होकर उनके बीच में हो जाना; उनकी पूरी लगन से देखभाल करो, इसलिए बैठ जाओ।
2 और जब तू अपना सब काम पूरा कर चुका, तो अपना स्थान ग्रहण करना, कि उनके साथ आनन्द कर, और जेवनार की अच्छी रीति से रीति करने के कारण तुझे मुकुट दिया जाए।
3 तू जो प्राचीन है, बोल, क्योंकि यह तुझे ही करना है, परन्तु विवेक से; और बाधा नहीं संगीत.
4 जहां बजनेवाला हो वहां बातें न कहना, और बिना समय के बुद्धि का प्रचार न करना।
5 दाखमधु के भोज में संगीत का संगीत सोने में जड़े हुए कार्बुनकल के चिन्ह के समान है।
6 जैसे सोने की जड़ी हुई पन्ना की मुहर, वैसा ही मनभावने दाखमधु के साथ संगीत का सुर भी है।
7 हे जवान, यदि तुझे आवश्यकता हो, तो बोल, परन्तु दो बार भी न पूछे।
8 तेरी बातें छोटी हों, और थोड़े से शब्दों में बहुत कुछ समझ जाए; उस व्यक्ति के समान बनो जो जानता है और फिर भी अपनी जीभ पर नियंत्रण रखता है।
9 यदि तू बड़े मनुष्योंमें से हो, तो अपने आप को उनके तुल्य न ठहरा; और जब प्राचीन पुरुष अपनी जगह पर हों तो अधिक शब्दों का प्रयोग न करें।
10 गरजने से पहिले बिजली चमकती है; और लज्जित मनुष्य के साम्हने अनुग्रह किया जाएगा।
11 बार बार उठो, और पीछे न रहो; लेकिन तुम्हें बिना देर किए घर ले आओ।
12 वहां अपनी मौज करो, और जो चाहो करो; परन्तु अभिमान करके पाप न करो।
13 और इन बातोंके कारण उस को धन्य कहो, जो तेरे रचनेवाला और तुझे अपनी अच्छी वस्तुओं से तृप्त करता है।
14 जो यहोवा का भय मानता है, वह उसकी ताड़ना पाएगा; और जो उसे शीघ्र ढूंढ़ेंगे, उन पर अनुग्रह किया जाएगा।
15 जो कोई व्यवस्था का खोजता है, वह उस से तृप्त हो जाता है; परन्तु कपटी उस से ठोकर खाता है।
16 जो यहोवा के भय मानते हैं, वे न्याय पाएंगे, और न्याय को ज्योति की नाईं प्रज्वलित करेंगे।
17 पापी को डांट नहीं मिलती, वरन वह अपनी इच्छा के अनुसार बहाना ढूंढ़ता है।
18 जो बुद्धिमान हो वह विचारशील होगा; परन्तु पराया और घमण्डी मनुष्य भय से नहीं डरता, भले ही उस ने बिना सम्मति के कुछ किया हो।
19 बिना सम्मति के कुछ न करो; और जब तुम ऐसा कर लो, तो पछताओ मत।
20 उस मार्ग में न जाना जिस से तू गिर पड़े, और न पत्थरोंके बीच ठोकर खाओ।
21 स्पष्ट रीति से विश्वास न रखो।
22 और अपके निज बालकोंसे सावधान रहो।
23 हर एक भले काम में अपने प्राण पर भरोसा रखो; क्योंकि यह आज्ञाओं का पालन करना है।
24 जो प्रभु पर विश्वास करता है वह आज्ञा पर ध्यान देता है; और जो उस पर विश्वास करेगा, उसका कभी बुरा हाल न होगा।

अध्याय 33

1 जो यहोवा का भय मानता है, उस पर कोई विपत्ति न पड़ेगी; परन्तु वह उसे फिर परीक्षा में भी बचाएगा।
2 बुद्धिमान मनुष्य व्यवस्था से बैर नहीं रखता; परन्तु जो कपटी है, वह तूफान में जहाज के समान है।
3 समझदार मनुष्य व्यवस्था पर भरोसा रखता है; और व्यवस्था उसके प्रति वफ़ादार है, आकाशवाणी की तरह।
4 क्या कहना है, इसकी तैयारी करो, कि तुम्हारी सुनी जाए; और शिक्षा को बान्धकर उत्तर दो।
5 मूर्ख का मन गाड़ी के पहिए के समान है; और उसके विचार एक घूमती हुई धुरी के पेड़ की तरह हैं।
6 घोड़े का घोड़ा ठट्ठा करनेवाले के समान होता है, वह जो कोई उस पर बैठता है, उसके नीचे हिनहिनाता है।
7 जब वर्ष के प्रत्येक दिन का सारा प्रकाश सूर्य ही से होता है, तो एक दिन दूसरे दिन से क्यों बढ़कर होता है?
8 यहोवा के ज्ञान के द्वारा वे अलग पहचाने गए, और उस ने ऋतुओं और पर्वोंको बदल डाला।

9 उन में से कितनों को उस ने ऊंचे दिन ठहराकर पवित्र किया, और कितनों को साधारण दिन ठहराया।
10 और सब मनुष्य पृथ्वी से उत्पन्न हुए, और आदम भी पृथ्वी से रचा गया;
11 यहोवा ने बड़े ज्ञान से उनको बांट दिया, और उनकी चालें भिन्न-भिन्न कर दीं।
12 उन में से कितनों को उस ने आशीष दिया और बड़ा किया, और कितनों को पवित्र करके अपने पास रखा; परन्तु कितनों को शाप दिया, और नीचा किया, और अपने स्थान से निकाल दिया।
13 जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में है, कि वह अपनी इच्छा के अनुसार उसे बनाए; वैसे ही मनुष्य अपने बनानेवाले के हाथ में है, कि वह जैसा चाहे वैसा उन्हें बनाए।
14 भलाई बुराई से और जीवन मृत्यु से मेल रखता है; इसी प्रकार भक्त पापी से और पापी भक्त से मेल रखता है।
15 इसलिये परमप्रधान के सब कामोंको देखो; और वहाँ दो और दो हैं, एक दूसरे के विरूद्ध।
16 मैं सब के पीछे अंगूर तोड़ने वालों के समान जाग उठा; यहोवा के आशीर्वाद से मैं ने लाभ पाया, और अपना रसकुण्ड अंगूर तोड़ने वालों के समान लताड़ा।
17 इस पर विचार करो, कि मैं ने केवल अपने लिये ही नहीं, परन्तु उन सब के लिये भी परिश्रम किया जो सीखना चाहते हैं।
18 हे प्रजा के मुख्य पुरूषों, मेरी सुनो, और हे मण्डली के प्रधानों, कान लगाकर मेरी सुनो।
19 जब तक तू जीवित रहे तब तक अपने बेटे वा स्त्री वा भाई वा मित्र को अपने ऊपर अधिक्कारने न देना, और न अपना धन दूसरे को देना, ऐसा न हो कि तुझे पछताना पड़े, और तू फिर वैसा ही दु:ख भोगे।
20 जब तक तू जीवित है, और तुझ में सांस है, तब तक अपने आप को किसी के वश में न कर।
21 क्योंकि यह भला है, कि तेरे लड़केबाल तेरे खोजी हों, इस से कि तू उनकी भलाई में खड़ा रहे।
22 अपने सब कामोंमें प्रधानता अपने ही लिथे रख; अपने सम्मान में कोई दाग मत छोड़ो।
23 जिस समय तू अपनी आयु पूरी करेगा, और अपना जीवन भी पूरा करेगा, उसी समय अपना निज भाग बांट लेना।
24 गदहे के लिये चारा, छड़ी, और बोझ हैं; और नौकर के लिये रोटी, सुधार, और काम।
25 यदि तू अपने दास से परिश्रम कराए, तो तू विश्राम पाएगा; परन्तु यदि तू उसे बेकार छोड़ दे, तो वह स्वतंत्रता ढूंढ़ेगा।
26 जूए और कॉलर से गर्दन झुकती है; वैसे ही दुष्ट दास को यातनाएं और यातनाएं मिलती हैं।
27 उसे परिश्रम करने को भेजो, ऐसा न हो कि वह आलसी हो; क्योंकि आलस्य बहुत बुराई सिखाता है।
28 जैसा उसके लिये उचित हो वैसा काम उस से करो; यदि वह आज्ञाकारी न हो, तो उस पर भारी बेड़ियाँ डालो।
29 परन्तु किसी के प्रति अति न हो; और बिना विवेक के कुछ मत करो।
30 यदि तेरे पास कोई दास हो, तो उसे अपने ही समान रहने दे, क्योंकि तू ने दाम देकर उसे मोल लिया है।
31 यदि तेरे पास कोई दास है, तो उस से भाई के समान व्यवहार कर; क्योंकि तू उसे अपने प्राण के समान चाहता है; यदि तू उस से बुराई करे, और वह तेरे पास से भाग जाए, तो तू उसे किस मार्ग से ढूंढ़ेगा?

अध्याय 34

1 निर्बुद्धि मनुष्य की आशा व्यर्थ और झूठी होती है, और स्वप्न मूढ़ों को उठा लेता है।
2 जो स्वप्न देखता है वह उस के समान है जो छाया को देखता और वायु के पीछे चलता है।
3 स्वप्न का दर्शन एक वस्तु का दूसरी वस्तु से, वरन चेहरे से चेहरे का सादृश्य है।
4 अशुद्ध वस्तु को क्या शुद्ध किया जा सकता है? और जो बात झूठी है, उससे सत्य क्या निकलेगा?
5 भावी कल्पनाएं, भविष्यवाणियां, और स्वप्न व्यर्थ हैं; और मन जच्चा स्त्री के मन की नाईं कल्पना करता है।
6 यदि वे तेरी ओर से परमप्रधान की ओर से न भेजे गए हों, तो उन पर अपना मन न लगाना।
7 क्योंकि स्वप्नोंने बहुतोंको धोखा दिया है, और जो उन पर भरोसा रखते थे, वे असफल हो गए।
8 व्यवस्था बिना झूठ के सिद्ध ठहरेगी; और विश्वासयोग्य मुंह के लिथे बुद्धि सिद्ध होती है।
9 जो मनुष्य यात्रा करता है, वह बहुत सी बातें जानता है; और जिसके पास बहुत अनुभव है वह बुद्धि की घोषणा करेगा।
10 जो अनुभव नहीं करता, वह थोड़ा जानता है; परन्तु जो यात्रा करता है, वह चतुराई से परिपूर्ण है।
11 जब मैं यात्रा करता था, तो मैं ने बहुत सी वस्तुएं देखीं; और जितना मैं व्यक्त कर सकता हूँ उससे अधिक मैं समझता हूँ।
12 मैं बार-बार मरने की धमकी देता था; तौभी इन बातोंके कारण मैं बचा लिया गया।
13 यहोवा के डरवैयोंका मन जीवित रहेगा; क्योंकि उनकी आशा उस पर है जो उनका उद्धार करता है।
14 जो यहोवा का भय मानता है, वह न डरेगा, और न डरेगा; क्योंकि वही उसकी आशा है।
15 जो यहोवा का भय मानता है उसका प्राण धन्य है; वह किस की ओर दृष्टि करता है? और उसकी ताकत कौन है?
16 क्योंकि यहोवा की दृष्टि उस पर बनी रहती है जो उस से प्रेम रखते हैं, वह उनकी प्रबल सुरक्षा और दृढ़ आश्रय है, वह धूप से रक्षा करता है, और दोपहर को धूप से रक्षा करता है, ठोकर खाने से बचाता है, और गिरने से बचाता है।
17 वह प्राण को जिलाता, और आंखों को ज्योति देता है; वह चंगाई, जीवन और आशीष देता है।
18 जो कोई अन्याय से प्राप्त हुई वस्तु का बलिदान करता है, उसका बलिदान हास्यास्पद है; और अन्यायी मनुष्यों का दान स्वीकार नहीं किया जाता।
19 परमप्रधान दुष्टों की भेंट से प्रसन्न नहीं होता; न तो वह बहुत से बलिदानों से पाप के लिये शान्त होता है।
20 जो कंगाल के धन में से भेंट लाता है, वह उस के समान करता है जो अपने पिता के साम्हने बेटे को मार डालता है।
21 दरिद्र की रोटी ही उसका प्राण है; जो उस से छीन लेता है, वह खूनी मनुष्य है।

22 जो अपने पड़ोसी का प्राण छीन लेता है, वह उसे घात करता है; और जो मज़दूर की मज़दूरी ठग लेता है, वह ख़ून करनेवाला है।
23 जब एक बनाता और दूसरा गिराता है, तो परिश्रम के सिवा उन्हें क्या लाभ?
24 जब एक प्रार्थना करे और दूसरा शाप दे, तब यहोवा किसकी सुनेगा?
25 जो लोय को छूने के बाद धोता है, यदि वह उसे फिर छूए, तो उसके धोने से क्या लाभ?
26 सो क्या वह मनुष्य जो अपके पापोंके कारण उपवास करे, और फिर जाकर वैसा ही करने लगे, उसकी प्रार्थना कौन सुनेगा? या उसकी नम्रता से उसे क्या लाभ हुआ?

अध्याय 35

1 जो व्यवस्था पर चलता है, वह बहुत से बलिदान लाता है; जो आज्ञा पर चलता है, वह मेलबलि चढ़ाता है।
2 जो भलाई का बदला लेता है, वह मैदा चढ़ाता है; और जो दान देता है, वह स्तुति करता है।
3 दुष्टता से दूर रहना यहोवा को भाता है; और अधर्म का त्याग करना ही प्रायश्चित है।
4 तू यहोवा के साम्हने खाली मुंह न दिखाई देना।
5 क्योंकि ये सब काम आज्ञा के कारण करने हैं।
6 धर्मी के बलिदान से वेदी पवित्र होती है, और उसका सुखदायक सुगन्ध परमप्रधान के साम्हने होता है।
7 धर्मी मनुष्य का बलिदान ग्रहणयोग्य है। और उसका स्मारक कभी नहीं भुलाया जाएगा।
8 अच्छी दृष्टि से यहोवा का आदर करना, और अपने हाथ की पहिली उपज को तुच्छ न समझना।
9 तू अपने सब दानोंमें प्रसन्न मुख दिखाना, और अपना दशमांश आनन्द के साथ देना।
10 परमप्रधान ने तुझे जो धन दिया है, उसके अनुसार उसे दे; और जैसा तू ने पाया है, प्रसन्न दृष्टि से दे।
11 क्योंकि यहोवा तुझे बदला देगा, और तुझे सातगुणा बदला देगा।
12 दान देकर भ्रष्ट करने की न सोचो; क्योंकि वह उन्हें ग्रहण न करेगा; और अधर्म के बलिदानों पर भरोसा न रखना; क्योंकि प्रभु न्यायी है, और वह किसी का कुछ आदर नहीं करता।
13 वह किसी कंगाल का विरोध न करेगा, वरन दीन जन की प्रार्थना सुनेगा।
14 वह अनाय की गिड़गिड़ाहट का तिरस्कार न करेगा; न ही विधवा, जब वह अपनी शिकायत प्रकट करती है।
15 क्या विधवा के गालोंपर आंसू नहीं बहते? और क्या उसकी दोहाई उस पर नहीं जो उन्हें गिरा देता है?
16 जो यहोवा की सेवा करता है, उस पर अनुग्रह किया जाता है, और उसकी प्रार्थना बादलों तक पहुंचती है।
17 दीन की प्रार्थना बादलों को भेदती है, और जब तक वह निकट न आए, तब तक उसे शान्ति न मिलेगी; और तब तक न हटूंगा, जब तक परमप्रधान धर्म से न्याय करने को न देखेगा, और न्याय न करेगा।
18 क्योंकि जब तक वह निर्दयी लोगोंकी कमर पर प्रहार न करे, और अन्यजातियोंसे पलटा न चुकाए, तब तक यहोवा न सुस्त पड़ेगा, और न पराक्रमी उनके प्रति धीरज धरेंगे; यहाँ तक कि उस ने अभिमानियों की भीड़ को दूर कर दिया, और अधर्मियों का राजदण्ड तोड़ डाला;
19 जब तक उस ने हर एक मनुष्य को उसके कामोंके अनुसार फल दिया, और मनुष्योंके कामोंको उनकी युक्तियोंके अनुसार फल दिया; जब तक वह अपनी प्रजा का न्याय न कर चुका, और उन्हें अपनी करूणा से आनन्दित न कर चुका।
20 विपत्ति के समय दया, सूखे के समय में वर्षा के बादल के समान होती है।

अध्याय 36

1 हे सब के परमेश्वर यहोवा, हम पर दया कर, और हमें देख;
2 और उन सब जातियोंपर अपना भय भेजो जो तेरी खोज नहीं करते।
3 परदेशी जातियोंके विरूद्ध अपना हाथ बढ़ा, और वे तेरी शक्ति देख सकें।
4 जैसा तू उनके साम्हने हमारे द्वारा पवित्र ठहराया गया, वैसे ही तू हमारे साम्हने उनके बीच महान् ठहरे।
5 और जैसा हम ने तुझे जाना, वैसा ही वे तुझे भी जानें, कि हे परमेश्वर, तू ही है, और कोई परमेश्वर नहीं।
6 नये चिन्ह दिखाओ, और दूसरे विचित्र काम करो; अपने हाथ और अपने दाहिने हाथ की महिमा करो, कि वे तेरे आश्चर्यकर्म प्रगट करें।
7 क्रोध भड़काओ, और क्रोध भड़काओ; द्रोही को दूर करो, और शत्रु को नाश करो।
8 कम समय की स्तुति करो, वाचा को स्मरण रखो, और वे तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करें।
9 जो बच निकले वह आग के प्रकोप से भस्म हो जाए; और वे नाश हों जो प्रजा पर अन्धेर करते हैं।
10 अन्यजातियोंके हाकिमोंके सिर पर प्रहार करो, जो कहते हैं, कि हम को छोड़ कोई दूसरा नहीं।
11 याकूब के सब गोत्रोंको एक साथ इकट्ठा करो, और आरम्भ की नाईं उनका अधिकारी हो जाओ।
12 हे यहोवा, अपनी प्रजा के जो तेरे कहलाते हैं, और इस्राएल पर, जिसका नाम तू ने अपना पहिलौठा रखा है, दया कर।
13 हे अपने पवित्र नगर यरूशलेम, और अपने विश्रामस्थान पर दया कर।
14 सिय्योन को अपके कहने योग्य वचनोंसे, और अपक्की प्रजा को अपके तेज से भर दे;
15 और जिनको तू आरम्भ से अपने पास रखता आया है, उन पर गवाही दे, और जो भविष्यद्वक्ता तेरे नाम से हुए हैं उनको खड़ा कर।
16 जो तेरी बाट जोहते हैं उनको प्रतिफल दे, और तेरे भविष्यद्वक्ता विश्वासयोग्य ठहरें।
17 हे यहोवा, अपके दासोंकी प्रार्थना सुन, हारून ने अपक्की प्रजा पर जो आशीष दी हो उस के अनुसार पृथ्वी के सब रहनेवाले जान लें कि तू यहोवा, सनातन परमेश्वर है।
18 पेट सब मांस को निगल जाता है, तौभी एक मांस दूसरे से उत्तम होता है।
19 जैसे तालू नाना प्रकार के हिरन का स्वाद चखता है, वैसे ही झूठी बातें समझनेवाला मन भी चखता है।

20 टेढ़ा मन भारीपन का कारण होता है, परन्तु अनुभवी मनुष्य उसका प्रतिफल देता है।
21 स्त्री एक एक पुरूष को ग्रहण करेगी, तौभी एक बेटी दूसरी बेटी से उत्तम है।
22 स्त्री की सुन्दरता से उसका मुख प्रसन्न होता है, और पुरूष को उस से बढ़कर कोई वस्तु प्रिय नहीं लगती।
23 यदि उसकी जीभ में कृपा, और नम्रता, और शान्ति हो, तो उसका पति और पुरूषोंके तुल्य नहीं।
24 जो स्त्री ब्याहता है, वह सम्पत्ति का अधिकारी होता है, वह अपने समान सहायता और विश्राम का खम्भा होता है।
25 जहां बाड़ा नहीं, वहां निज भूमि नाश हो जाती है; और जो स्त्री न हो वह विलाप करता फिरता है।
26 जो डाकू एक नगर से दूसरे नगर में घूमता रहता है, उस पर कौन भरोसा करेगा? सो उस मनुष्य पर कौन विश्वास करेगा जिसके पास घर न हो, और रात को जहां कहीं भी सोता हो?

अध्याय 37

1 हर एक मित्र कहता है, मैं भी उसका मित्र हूं: परन्तु एक मित्र ऐसा भी है, जो केवल नाम का मित्र है।
2 जब कोई साथी और मित्र शत्रु बन जाता है, तो क्या यह मृत्यु तक का दुख नहीं होता?
3 हे दुष्ट कल्पना, तू पृथ्वी को छल से ढकने के लिये कहां से आया?
4 एक साथी है, जो मित्र की समृद्धि से तो आनन्दित होता है, परन्तु संकट के समय उसके विरूद्ध हो जाता है।
5 एक साथी है, जो पेट के लिये अपने मित्र की सहायता करता है, और शत्रु के साम्हने झोंपड़ी उठा लेता है।
6 अपने मित्र को मन में न भूलना, और धन के विषय में भी उसकी सुधि न लेना।
7 हर एक मन्त्री युक्ति की बड़ाई करता है; परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो अपने लिये सलाह देते हैं।
8 युक्ति करनेवाले से सावधान रहना, और पहिले से जान लेना कि उसे क्या प्रयोजन है; क्योंकि वह अपने लिये सम्मति देगा; ऐसा न हो कि वह तुझ पर चिट्ठी डाले,
9 और तुझ से कह, तेरी चाल अच्छी है, और इसके बाद वह दूसरी ओर खड़ा हो, कि देखे कि तुझ पर क्या बीतेगी।
10 जो तुझ पर संदेह करता है, उस से सम्मति न करना; और जो तुझ से डाह करते हैं, उन से अपनी युक्ति छिपा रखना।
11 और जिस स्त्री के कारण वह जलती हो उस से सम्मति न करना; न ही युद्ध के मामले में कायर के साथ; न ही किसी व्यापारी के साथ विनिमय के संबंध में; न ही बेचने वाले खरीदार के साथ; न ही किसी ईर्ष्यालु कृतज्ञ व्यक्ति के साथ; न किसी निर्दयी मनुष्य पर दया करना; और न किसी काम के आलसियों से; न ही काम ख़त्म करने के एक साल के लिए किसी भाड़े पर रखा गया; और न किसी निकम्मे नौकर के साथ जो बहुत काम करता हो; किसी भी सम्मति के मामले में उन की न सुनो।
12 परन्तु उस भक्त पुरूष के साय सदा रहना, जो यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना जानता हो, और उसकी बुद्धि तेरे मन के अनुसार हो, और यदि तू गर्भपात करवाए, तो तुझे दुःख होगा।
13 और जो युक्ति तू अपने मन में कहे वह स्थिर रहे, क्योंकि उस से अधिक विश्वासयोग्य कोई मनुष्य नहीं।
14 क्योंकि मनुष्य का मन कभी-कभी यह सोचता है, कि सात पहरुए जो ऊपर ऊंचे गुम्मट पर बैठे हैं, वे उस से अधिक कहें।
15 और इन सब से बढ़कर परमप्रधान से प्रार्थना करो, कि वह तेरे लिये सच्चाई का मार्ग दिखाए।
16 हर काम से पहिले तर्क करो, और हर काम से पहिले युक्ति करो।
17 मुखमण्डल हृदय परिवर्तन का चिन्ह है।
18 चार प्रकार की वस्तुएं दिखाई देती हैं: अच्छी और बुरी, जीवन और मृत्यु: परन्तु जीभ उन पर लगातार प्रभुता करती है।
19 वह बुद्धिमान है, और बहुतोंको सिखाता है, तौभी अपके लिथे लाभ नहीं उठाता।
20 जो बातों में बुद्धि प्रगट करता है, वह अप्रिय है; वह सब प्रकार के भोजन से रहित हो जाएगा।
21 क्योंकि उस पर प्रभु की ओर से अनुग्रह नहीं हुआ, क्योंकि वह सारी बुद्धि से वंचित है।
22 दूसरा अपने आप में बुद्धिमान है; और समझ का फल उसके मुंह में प्रशंसनीय होता है।
23 बुद्धिमान मनुष्य अपक्की प्रजा को शिक्षा देता है; और उसकी समझ का फल व्यर्थ नहीं जाता।
24 बुद्धिमान मनुष्य आशीर्वाद से भर जाएगा; और जो कोई उसे देखेगा वह उसे धन्य समझेगा।
25 मनुष्य के जीवन के दिन तो गिनती के हैं, परन्तु इस्राएल के जीवन के दिन अनगिनित हैं।
26 बुद्धिमान पुरूष अपक्की प्रजा में महिमा पाएगा, और उसका नाम सदा बना रहेगा।
27 हे मेरे पुत्र, अपके जीवन में अपके प्राण को परख, और देख ले, कि उसके लिथे क्या बुरा है, और उसे वश में न कर।
28 क्योंकि सब वस्तुएं सब मनुष्यों के लिथे लाभदायक नहीं, और हर एक प्राणी हर एक वस्तु से प्रसन्न नहीं होता।
29 किसी स्वादिष्ट वस्तु का लालच न करना, और न भोजन का लालच करना।
30 क्योंकि बहुत मांस खाने से रोग होता है, और अधिक खाने से पित्त होता है।
31 बहुत लोग अधिक खाने से नाश हो गए; परन्तु जो सावधान रहता है वह जीवित रहता है।

अध्याय 38

1 वैद्य को उस आदर से आदर दो, जो उसके उपयोग के कारण उसे मिलना चाहिए; क्योंकि यहोवा ने उसे उत्पन्न किया है।
2 क्योंकि परमप्रधान चंगा होनेवाला है, और वह राजा का आदर करेगा।
3 वैद्य की कुशलता से उसका सिर ऊंचा हो जाएगा, और बड़े लोग उसकी प्रशंसा करेंगे।

4 यहोवा ने पृथ्वी से औषधियां उत्पन्न कीं; और जो बुद्धिमान है वह उन से घृणा न करेगा।
5 क्या जल को लकड़ी से मीठा नहीं किया गया, कि उसका गुण प्रगट हो?
6 और उस ने मनुष्योंको कुशलता दी, कि वे अपने आश्चर्यकर्मोंमें प्रतिष्ठित हों।
7 वह इसी से मनुष्यों को चंगा करता, और उनका दुख दूर करता है।
8 औषधालय उन से मिष्ठान्न बनाता है; और उसके कामों का अन्त नहीं; और उसी से सारी पृथ्वी पर शान्ति है,
9 हे मेरे पुत्र, अपनी बीमारी में लापरवाही न करना; परन्तु प्रभु से प्रार्थना करना, वह तुझे चंगा कर देगा।
10 पाप से दूर रह, और अपने हाथों को सीधा कर, और अपने हृदय को सब प्रकार की दुष्टता से शुद्ध कर।
11 सुखदायक सुगन्ध, और मैदे का स्मरण कराओ; और एक मोटी भेंट चढ़ाओ, जैसे कोई नहीं है।
12 तब वैद्य को स्थान दे, क्योंकि यहोवा ने उसे रचा है; वह तेरे पास से न जाने पाए, क्योंकि तुझे उसकी आवश्यकता है।
13 एक समय ऐसा आता है जब उनके हाथ अच्छी सफलता लगती है।
14 क्योंकि वे यहोवा से प्रार्थना भी करेंगे, कि वह उसे सफल करे, जिसे वे जीवन को बढ़ाने के लिए आसानी और उपाय के रूप में देते हैं ।
15 जो अपने सृजनहार के साम्हने पाप करे, वह वैद्य के हाथ में पड़े।
16 हे मेरे पुत्र, मरे हुओं के लिये आंसू बहाओ, और ऐसा विलाप करो, मानो तू ने बड़ी हानि उठाई हो; और रीति के अनुसार उसके शरीर को ढांप देना, और उसके गाड़ने में उपेक्षा न करना।
17 फूट-फूटकर रोओ, और बड़ा विलाप करो, और जितना योग्य हो सके विलाप करो, और एक या दो दिन के लिथे विलाप करो, ऐसा न हो कि तुम्हारी निन्दा हो; और तब अपने भारीपन के कारण अपने आप को तसल्ली देना।
18 क्योंकि भारीपन से मृत्यु आती है, और मन के भारी होने से शक्ति टूट जाती है।
19 क्लेश में भी दु:ख बना रहता है, और कंगाल का प्राण मन का शाप होता है।
20 मन में भारीपन न लो; उसे दूर भगाओ, और अंतिम छोर को जोड़ दो।
21 इसे मत भूलना, क्योंकि फिर कभी मुड़ना नहीं; तू उसका भला न करना, वरन अपने ही को हानि पहुंचाना।
22 मेरा न्याय स्मरण रख, क्योंकि तेरा भी वैसा ही होगा; कल मेरे लिए, और आज का दिन तुम्हारे लिए।
23 जब मृतक विश्राम करे, तब उसका स्मरण करना; और जब उसका आत्मा उस पर से उतर जाए, तब उसके लिये शान्ति पाओ।
24 विद्वान मनुष्य की बुद्धि फुरसत के अवसर से ही आती है, और जो थोड़ा व्यापार करता है, वह भी बुद्धिमान हो जाता है।
25 जो हल पकड़ता है, और तलवार चलाने का काम करता है, और बैलोंको हांकता, और उन्हीं से काम लेता है, और जो बैलोंकी चर्चा करता है, वह क्योंकर बुद्धि पा सकता है?
26 वह नाली बनाने में मन लगाता है; और गाय-बैलों को चारा देने में तत्पर रहता है।
27 इसलिये हर एक बढ़ई और कारीगर जो रात दिन परिश्रम करता है, और जो मुहरें काटते और खोदते हैं, और बड़ी भांति भांति की वस्तुएं बनाने का परिश्रम करते हैं, और कल्पित मूरतों का सहारा लेते हैं, और काम पूरा करने का यत्न करते हैं।
28 लोहार भी निहाई के पास बैठा हुआ लोहे का काम देखता या, और आग के धुएं से उसका शरीर सूख जाता है, और भट्ठी की तपन से वह लड़ता है; हथौड़े और निहाई की आवाज उसके कानों में सदा सुनाई देती रहती है। आँखें स्थिर होकर उस वस्तु के नमूने पर टिकी रहती हैं जिसे वह बनाता है; वह अपना काम पूरा करने का मन बनाता है, और उसे पूरी तरह से निखारने का प्रयास करता है:
29 वैसे ही कुम्हार भी अपना काम करता है, और अपने पांवों से चाक घुमाता है, और अपना काम हर समय सावधानी से करता है, और अपना सब काम गिनती के अनुसार बनाता है;
30 वह अपनी भुजा से मिट्टी गढ़ता है, और अपना बल उसके पांवोंके साम्हने दण्डवत करता है; वह इसका नेतृत्व करने के लिए स्वयं को नियुक्त करता है; और वह भट्टी को साफ करने का यत्न करता है;
31 ये सब अपने हाथ पर भरोसा रखते हैं: और हर एक अपने काम में बुद्धिमान है।
32 इनके बिना कोई नगर बस नहीं सकता; और वे जहां चाहें वहां न टिक सकेंगे, और न इधर उधर आ-जा सकेंगे।
33 वे लोक सम्मति में न पूछे जाएंगे, और न मण्डली में ऊंचे स्थान पर बैठेंगे; और जहां दृष्टान्त सुनाए जाते हैं वहां वे न पाए जाएंगे।
34 परन्तु वे जगत की स्थिति को बनाए रखेंगे, और उनकी सारी अभिलाषा उनके शिल्प के काम में है।

अध्याय 39

1 परन्तु जो अपना मन परमप्रधान की व्यवस्था पर लगाता है, और उसके ध्यान में लगा रहता है, वह सब प्राचीन ज्ञान की खोज करेगा, और भविष्यद्वक्ताओं में लगा रहेगा।
2 वह बड़े पुरूषोंकी बातें मानेगा, और जहां सूक्ष्म दृष्टान्त होते हैं, वहां भी वह उपस्थित रहेगा।
3 वह गम्भीर दण्ड का भेद ढूंढ़ लेगा, और अन्धेरे दृष्टान्तों से परिचित होगा।
4 वह बड़े मनुष्योंके बीच में काम करेगा, और हाकिमोंके साम्हने दिखाई देगा; वह परदेश में फिरेगा; क्योंकि उस ने मनुष्यों में भले और बुरे को परख लिया है।
5 वह अपना हृदय शीघ्रता से अपने रचे हुए यहोवा की ओर फिरेगा, और परमप्रधान के साम्हने प्रार्थना करेगा, और अपना मुंह खोलकर प्रार्थना करेगा, और अपने पापों के लिये गिड़गिड़ाएगा।
6 जब महान प्रभु चाहेगा, तब वह समझ की आत्मा से भर जाएगा; वह बुद्धिमान बातें कहेगा, और अपनी प्रार्थना में प्रभु का धन्यवाद करेगा।
7 वह अपनी युक्ति और ज्ञान को समझाएगा, और अपने भेदों में ध्यान लगाएगा।

8 जो कुछ उस ने सीखा है वह प्रगट करेगा, और यहोवा की वाचा की व्यवस्था पर घमण्ड करेगा।
9 बहुत लोग उसकी समझ की प्रशंसा करेंगे; और जब तक जगत् बना रहेगा, तब तक वह मिट न जाएगा; उसका स्मरण न मिटेगा, और उसका नाम पीढ़ी से पीढ़ी तक जीवित रहेगा।
10 जाति जाति के लोग उसकी बुद्धि प्रगट करेंगे, और मण्डली उसकी स्तुति करेगी।
11 यदि वह मर जाए, तो हजार से भी बड़ा नाम छोड़ जाएगा; और यदि जीवित रहे, तो उसे बढ़ाएगा।
12 फिर भी मुझे और भी कुछ कहना है, जिस पर मैं ने विचार किया है; क्योंकि मैं पूर्ण चन्द्रमा के समान तृप्त हो गया हूं।
13 हे पवित्र बालकों, मेरी सुनो, और मैदान के किनारे उगे हुए गुलाब के फूल के समान फूल उगाओ;
14 और लोबान के समान सुखदायक सुगन्ध दो, और सोसन के समान फूलो, सुगन्ध फैलाओ, और स्तुति का गीत गाओ, यहोवा को उसके सब कामों में धन्य कहो।
15 उसके नाम का गुणगान करो, और उसकी स्तुति अपने होठों से और वीणा बजाकर करो; और उसकी स्तुति करते समय तुम इस प्रकार कहना:
16 यहोवा के सब काम अति भले हैं, और जो कुछ वह आज्ञा देगा वह ठीक समय पर पूरा होगा।
17 और कोई न कह सके, यह क्या है? वह क्यों है? क्योंकि सुविधाजनक समय पर वे सब ढूंढ़ लिये जाएंगे; उसकी आज्ञा से जल ढेर बन गया, और उसके मुंह के वचन के अनुसार जल के पात्र खड़े हो गए।
18 जो कुछ उसे भाए वह उसकी आज्ञा से किया जाता है; और जब वह बचाएगा तो कोई रोक नहीं सकेगा।
19 सब प्राणियों के काम उसके साम्हने रहते हैं, और कुछ भी उस से छिप नहीं सकता।
20 वह अनन्तकाल से अनन्तकाल तक देखता है; और उसके सामने कुछ भी अद्‌भुत नहीं है।
21 मनुष्य को यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि यह क्या है? वह क्यों है? क्योंकि उस ने सब वस्तुएं उनके उपयोग के लिये बनाई हैं।
22 उसके आशीर्वाद से सूखी भूमि नदी की नाईं छा गई, और बाढ़ की नाईं सींच गई।
23 जैसे उस ने जल को खारा कर दिया, वैसे ही अन्यजातियां उसके क्रोध का भागी होंगी।
24 जैसे उसकी चाल पवित्र के लिये सीधी है; वैसे ही वे दुष्टों के लिये ठोकर का कारण बनते हैं।
25 क्योंकि अच्छी वस्तुएं आदि से सृजी गई हैं, और पापियोंके लिथे बुरी वस्तुएं।
26 मनुष्य के जीवन के लिये मुख्य वस्तुएं जल, आग, लोहा, नमक, गेहूं का आटा, मधु, दूध, दाख का लोहू, तेल और वस्त्र हैं।
27 ये सब बातें भक्तोंके लिथे भलाई के लिथे हैं, और पापियोंके लिथे बुराई में बदल जाती हैं।
28 ऐसी आत्माएं हैं जो पलटा लेने के लिये रची गई हैं, और अपने क्रोध में आकर दुख ही मारती हैं; विनाश के समय वे अपना बल प्रकट करते हैं, और अपने रचयिता के क्रोध को शांत करते हैं।
29 आग, और ओले, और महंगी, और मृत्यु, ये सब बदला लेने के लिये रचे गए;
30 जंगली पशुओं के दांत, और बिच्छू, और सांप, और दुष्टों को विनाश का दंड देने वाली तलवार।
31 वे उसकी आज्ञा से आनन्दित होंगे, और आवश्यकता पड़ने पर पृथ्वी पर तैयार रहेंगे; और जब उनका समय आ जाए, तब वे उसके वचन का उल्लंघन न करें।
32 इसलिये मैं ने आरम्भ से ही निश्चय कर लिया, और इन बातों पर विचार करके लिख छोड़ा है।
33 यहोवा के सब काम अच्छे हैं, और वह सब वस्तुओं को समय पर देगा।
34 यहां तक कि कोई यह न कह सके, कि यह उस से भी बुरा है, क्योंकि समय आने पर वे सब प्रसन्न हो जाएंगे।
35 और इसलिथे तुम सम्पूर्ण मन और मुंह से यहोवा की स्तुति करो, और यहोवा के नाम को धन्य कहो।

अध्याय 40

1 हर एक मनुष्य के लिये बड़ा क्लेश उत्पन्न किया गया है, और जिस दिन से वे अपनी मां के गर्भ से निकले उस दिन से ले कर उस दिन तक जब तक वे सब वस्तुओं की माता के पास न पहुंच जाएं, उस दिन से आदम की सन्तान पर भारी जूआ पड़ा रहेगा।
2 और वे आनेवाली घटनाओं और मृत्यु के दिन की कल्पना करके उनके मन में व्याकुलता और भय उत्पन्न करते हैं;
3 उस की ओर से जो महिमा के सिंहासन पर बैठा है, उस की ओर से जो मिट्टी और राख में गिरा हुआ है;
4 उस से जो बैंजनी और मुकुट पहिने हुए से, या उस से जो सनी के कपड़े का फ्राक पहिने हुए है।
5 क्रोध, और डाह, क्लेश, और अशांति, मृत्यु का भय, और क्रोध, और झगड़ा, और बिस्तर पर विश्राम के समय उसकी रात की नींद, उसके ज्ञान को बदल देती है।
6 उसे थोड़ा या कुछ भी विश्राम नहीं मिलता, और उसके बाद वह जागते हुए की नाई नींद में पड़ जाता है, और अपने दर्शन के कारण घबरा जाता है, मानो युद्ध से भाग निकला हो।
7 जब सब कुशल हो जाता है, तब वह जागता है, और आश्चर्य करता है, कि भय कुछ भी न रहा।
8 ऐसी बातें मनुष्य और पशु, सब मनुष्यों पर घटती हैं, और पापियों पर इसका प्रभाव सातगुणा अधिक होता है।
9 मृत्यु, और रक्तपात, झगड़ा, और तलवार, विपत्तियां, अकाल, क्लेश, और विपत्ति;
10 ये वस्तुएं दुष्टोंके लिथे रची गईं, और उन्हींके लिथे जलप्रलय आया।
11 जो कुछ पृथ्वी पर है वह सब फिर मिट्टी ही में मिल जाएगा, और जो कुछ जल है वह समुद्र में मिल जाएगा।
12 सब प्रकार की घूसखोरी और अन्याय मिट जाएगा, परन्तु सच्चा व्यवहार सर्वदा बना रहेगा।
13 दुष्टों का धन नदी की नाईं सूख जाएगा, और वर्षा के बड़े गर्जन की नाईं बड़े शब्द से लुप्त हो जाएगा।
14 वह अपना हाथ खोलकर आनन्द करेगा, और अपराधी नष्ट हो जाएंगे।

15 दुष्टोंकी सन्तान बहुत शाखाएं नहीं उगाती, परन्तु वे कड़ी चट्टान पर की अशुद्ध जड़ के समान हैं।
16 और नदी के सब जलाशयोंऔर तीरोंपर उगनेवाली जंगली घास सब घास से पहले उखाड़ी जाएगी।
17 उदारता अति फलदायी बारी के समान है, और करूणा सर्वदा बनी रहती है।
18 मनुष्य का परिश्रम करना, और जो कुछ उसके पास है उसी में सन्तुष्ट रहना, सुखमय जीवन है; परन्तु जो धन पाता है, वह इन दोनों से बढ़कर है।
19 सन्तान और नगर का भवन तो पुरूष का नाम रहता है, परन्तु निर्दोष पत्नी इन दोनों से अधिक मानी जाती है।
20 दाखमधु और संगीत से मन आनन्दित होता है, परन्तु बुद्धि का प्रेम उन दोनों से अधिक है।
21 बांसुरी और सारंगी तो मधुर राग गाते हैं, परन्तु मनभावनी जीभ उन दोनों से अधिक है।
22 तेरी आंख कृपा और सुन्दरता की अभिलाषा करती है, परन्तु अन्न के हरे होने से भी अधिक।
23 मित्र और साथी कभी एक दूसरे से मेल नहीं खाते; परन्तु पत्नी अपने पति के साथ दोनों से अधिक प्रधान है।
24 विपत्ति के समय भाई और सहाथता एक-दूसरे से मेल खाते हैं, परन्तु दान उन दोनों से अधिक फल देता है।
25 सोना और चान्दी पांव को दृढ़ करते हैं, परन्तु सम्मति उन दोनों से अधिक मानी जाती है।
26 धन और बल से मन प्रसन्न होता है, परन्तु यहोवा का भय उन दोनों से अधिक है; यहोवा के भय मानने से कुछ घटी नहीं होती, और न सहायता मांगने की आवश्यकता पड़ती है।
27 यहोवा का भय एक फलदायी बारी है, और उसे सब महिमा से अधिक छा लेता है।
28 हे मेरे पुत्र, तू कंगाल का सा न हो; क्योंकि भीख माँगने से मरना बेहतर है।
29 जो दूसरे की मेज पर निर्भर रहता है, उसका प्राण प्राण के बराबर न गिना जाए; क्योंकि वह पराये मनुष्यों का मांस खाकर अपने आप को अशुद्ध करता है; परन्तु जो बुद्धिमान मनुष्य अच्छी रीति से पला-बढ़ा हो, वह उस से सावधान रहता है।
30 निर्लज्ज के मुंह में भीख मांगना तो मीठा होता है, परन्तु उसके पेट में आग जलती रहती है।

अध्याय 41

1 हे मृत्यु, उस मनुष्य के लिये जो अपनी संपत्ति पर विश्राम करता है, और जिसके पास उसे तंग करने के लिये कुछ भी नहीं है, और जो सब बातों में समृद्ध है, उस मनुष्य के लिये तेरी स्मृति कितनी कड़वी है; मांस!
2 हे मृत्यु, तेरा दण्ड दरिद्रों को, और उन को भी ग्रहण योग्य है, जिनका बल क्षीण हो गया है, जो अब अन्तिम युग में है, और सब बातों से व्याकुल है, और जो निराश हो गया है, और धैर्य खो बैठा है!
3 मृत्युदण्ड से मत डरो; जो तुझ से पहिले और जो तेरे बाद हुए हैं, उनकी सुधि ले; क्योंकि यह सब प्राणियों के ऊपर प्रभु का दण्ड है।
4 और तू परमप्रधान की प्रसन्नता के विरूद्ध क्यों है? कब्र में कोई जिज्ञासा नहीं है, कि तुम दस, या सौ, या एक हजार वर्ष जी चुके हो।
5 पापियोंकी सन्तान तो घृणित सन्तान है, और वे दुष्टोंके निवास में भी कुशल रहते हैं।
6 पापियों की सन्तान का निज भाग नष्ट हो जाएगा, और उनके वंश की निन्दा सदा होती रहेगी।
7 बच्चे दुष्ट पिता के विषय में शिकायत करेंगे, क्योंकि उसके कारण उनकी निन्दा होगी।
8 हे दुष्ट मनुष्यों, तुम पर हाय, जिन्होंने परमप्रधान परमेश्वर की व्यवस्था को त्याग दिया है! क्योंकि यदि तुम बढ़ो, तो तुम्हारा नाश हो जाएगा;
9 और यदि तुम उत्पन्न हो, तो शाप के भागी ठहरोगे; और यदि मरोगे, तो शाप ही तुम्हारा भाग ठहरेगा।
10 जितने पृथ्वी के हैं वे सब फिर मिट्टी में मिल जाएंगे; इस प्रकार भक्तिहीन लोग शाप से विनाश की ओर जाएंगे।
11 मनुष्यों का शोक उनकी देहोंके लिये होता है, परन्तु पापियोंकी बदनामी मिट जाती है।
12 अपने नाम का ध्यान रख; क्योंकि वह सोने के हजारों बड़े खजानों से भी अधिक तेरे पास बना रहेगा।
13 अच्छे जीवन के थोड़े ही दिन होते हैं, परन्तु अच्छा नाम सर्वदा बना रहता है।
14 हे मेरे बालको, शान्ति से ताड़ना रखो; क्योंकि गुप्त बुद्धि, और अनदेखा धन, उन दोनों से क्या लाभ?
15 जो मनुष्य अपनी मूर्खता छिपा रखता है, वह उस मनुष्य से जो अपनी बुद्धि छिपा रखता है, उत्तम है।
16 इसलिये मेरे वचन के अनुसार लज्जित हो; क्योंकि सब प्रकार का लज्जा बनाए रखना अच्छा नहीं; न ही यह हर चीज़ में पूरी तरह से स्वीकृत है।
17 पिता और माता के साम्हने व्यभिचार से लज्जित होना, और हाकिम और वीर के साम्हने झूठ बोलना;
18 न्यायी और हाकिम के साम्हने अपराध का; मण्डली और लोगों के साम्हने अधर्म का; अपने साथी और मित्र के सामने अन्यायपूर्ण व्यवहार करना;
19 और जिस स्थान में तू रहता है उस में चोरी का, और परमेश्वर की सच्चाई और उसकी वाचा के विषय में चोरी करना; और मांस पर अपनी कोहनी टेकना; और देने और लेने में तिरस्कार करना;
20 और तेरे नमस्कार करनेवालोंके साम्हने चुप रहो; और वेश्या पर दृष्टि करना;
21 और अपके कुटुम्बियोंसे अपना मुख फेर लेना; या कोई भाग या उपहार छीन लेना; या किसी दूसरे आदमी की पत्नी पर नज़र डालना।
22 वा अपनी दासी के विषय में अधिक व्यस्त रहे, और उसके बिछौने के निकट न आए; या दोस्तों के सामने निंदा करने वाले भाषण देने का; और देने के बाद उलाहना न देना;
23 वा जो कुछ तू ने सुना है उसे दोहराकर दोबारा बोलना; और रहस्यों का खुलासा.
24 इस प्रकार तू सचमुच लज्जित होगा, और सब मनुष्योंके साम्हने प्रसन्न होगा।

अध्याय 42

1 इन बातोंके कारण तू लज्जित न होना, और किसी को भी पाप करने को स्वीकार न करना।
2 परमप्रधान की व्यवस्था और उसकी वाचा के विषय में; और दुष्टों को धर्मी ठहराने के लिये न्याय का;
3 अपने साझीदारोंऔर यात्रियोंसे हिसाब लेना; या मित्रों की विरासत के उपहार का;
4 तराजू और बाटों की शुद्धता; या अधिक या कम पाने का;
5 और व्यापारियों की उदासीन बिक्री; बच्चों का बहुत सुधार; और दुष्ट सेवक का पक्ष लहूलुहान करना।
6 निश्चय जहां दुष्ट स्त्री हो वहां रक्षा करना अच्छा है; और चुप रहो, जहां बहुत से हाथ हों।
7 सब वस्तुएं गिनती और तौल के अनुसार पहुंचा देना; और जो कुछ तू देता है, या प्राप्त करता है, वह सब लिखकर दे।
8 निर्बुद्धि, मूर्ख, और बुजुर्गों को, जो जवानों से झगड़ते हैं, समाचार देने में लज्जित न हो; इस प्रकार तू सचमुच विद्वान और सब प्राणियों में प्रिय ठहरेगा।
9 जब कोई नहीं जानता, तब भी पिता बेटी के लिथे जागता है; और उसकी चिन्ता से नींद छीन जाती है; और ब्याह कर रही हूं, ऐसा न हो कि उस से बैर किया जाए।
10 उसके कुँवारेपन में, कहीं ऐसा न हो कि वह अशुद्ध होकर अपने पिता के घर में गर्भवती हो जाए; और पति के होते हुए ऐसा न हो कि वह अपने आप से दुर्व्यवहार करे; और जब वह ब्याही जाए, तो ऐसा न हो कि वह बांझ हो जाए।
11 निर्लज्ज बेटी की पक्की चौकसी करना, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे शत्रुओं के बीच तेरी हंसी का कारण बने, और नगर में तेरी नामधराई हो, और लोगों में तेरी नामधराई हो, और भीड़ के साम्हने तुझे लज्जित करे।
12 हर एक की सुन्दरता पर ध्यान न करना, और स्त्रियों के बीच में न बैठना।
13 क्योंकि वस्त्र से कीड़ा, और स्त्रियों से दुष्टता निकलती है।
14 मैं कहता हूं, पुरूष की निर्लज्जता उस स्त्री से, जो लज्जा और निन्दा का कारण हो, उत्तम है।
15 अब मैं यहोवा के कामोंको स्मरण करूंगा, और जो कुछ मैं ने देखा है उसका वर्णन करूंगा; यहोवा के काम उसके वचनोंके अनुसार हैं।
16 सूर्य जो उजियाला देता है सब वस्तुओं पर दृष्टि करता है, और उसका काम यहोवा के तेज से परिपूर्ण है।
17 यहोवा ने पवित्र लोगों को अपने सब आश्चर्यकर्मोंका प्रचार करने का अधिकार नहीं दिया, जिन्हें सर्वशक्तिमान यहोवा ने दृढ़ किया है, कि जो कुछ है वह उसकी महिमा के लिथे स्थापित हो।
18 वह गूढ़ बातों और मन को जांचता है, और उनकी युक्तियों पर विचार करता है; क्योंकि यहोवा सब कुछ जानता है, और जगत के चिन्हों को भी देखता है।
19 वह बीती और आनेवाली बातें प्रगट करता है, और गुप्त बातें प्रगट करता है।
20 कोई विचार उस से छिपा नहीं रहता, और न कोई बात उस से छिपी रहती है।
21 उस ने अपक्की बुद्धि के उत्तम कामोंको संवारा है, और वह अनादि से अनन्त तक है; उस में न तो कुछ बढ़ाया जा सकता है, और न घटाया जा सकता है, और उसे किसी मंत्री की आवश्यकता नहीं।
22 उसके सब काम क्या ही मनभावने हैं! और मनुष्य एक चिंगारी तक देख सकता है।
23 ये सब वस्तुएं सर्वदा जीवित और सर्वदा बनी रहती हैं, और सब आज्ञाकारी हैं।
24 सब वस्तुएँ एक दूसरे से दोहरी हैं; और उस ने किसी वस्तु को असिद्ध नहीं बनाया।
25 कोई न कोई वस्तु भलाई को स्थिर करती है, और उसकी महिमा देखकर कौन तृप्त होगा?

अध्याय 43

1 ऊंचाई का गौरव, स्पष्ट आकाश, स्वर्ग की सुंदरता, उसके महिमामय प्रदर्शन के साथ;
2 सूर्य जब प्रकट होता है, तो अपने उदय के समय यह प्रगट करता है, कि वह एक अद्‌भुत यन्त्र है, अर्थात परमप्रधान का काम।
3 दोपहर को देश झुलस जाता है, और उसकी जलन को कौन सह सकता है?
4 जो मनुष्य भट्ठी फूंकता है, वह तपता है, परन्तु सूर्य पहाड़ोंको तिगुना अधिक जला देता है; उग्र वाष्पों को बाहर निकालना, और उज्ज्वल किरणें भेजना, यह आँखों को धुंधला कर देता है।
5 उसे बनानेवाला यहोवा महान्‌ है; और उसकी आज्ञा पर फुर्ती से दौड़ता है।
6 और उस ने चान्द को भी उसके समय के अनुसार समय बताने, और जगत का चिन्ह ठहराने के लिये ठहराया।
7 चन्द्रमा से पर्ब्बों का चिन्ह है, वह ज्योति जो अपनी पूर्णता में घटती जाती है।
8 उस महीने का नाम उसके नाम पर रखा गया है, और उसके परिवर्तन में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई है, वह ऊपर की सेनाओं का एक साधन बन गया है, और स्वर्ग के आकाश में चमक रहा है;
9 स्वर्ग की शोभा, तारागण की शोभा, यहोवा के ऊंचे स्थानों में प्रकाश देनेवाला आभूषण।
10 वे पवित्र की आज्ञा पर अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके लिथे खड़े रहेंगे, और जागते समय कभी हियाव न छोड़ेंगे।
11 मेघधनुष पर दृष्टि करके उसके बनानेवाले की स्तुति करो; इसकी चमक बहुत सुंदर है।
12 उस ने आकाश को एक तेजोमय घेरे से घेर रखा है, और परमप्रधान के हाथों ने उसे झुका दिया है।
13 वह अपनी आज्ञा से हिम गिराता है, और अपने न्याय की बिजलियां तेजी से चमकाता है।
14 इसी से भण्डार खुलता है, और पक्षी पक्षियों की नाईं बादल उड़ते हैं।
15 वह अपनी बड़ी शक्ति से बादलों को दृढ़ करता है, और ओले छोटे-छोटे टुकड़े टुकड़े कर देता है।
16 उसके देखते ही पहाड़ हिल जाते हैं, और उसकी इच्छा से दक्खिनी पवन बहती है।

17 गड़गड़ाहट के शब्द से पृथ्वी कांप उठती है, और उत्तर की आँधी और बवण्डर भी कांप उठते हैं; वह पक्षियों की नाईं उड़कर हिम को बिखेरता है, और घास घास के मैदानों की नाईं गिरती है।
18 आंख उसकी सुन्दरता से अचम्भित होती है, और उसका बरसना देखकर मन चकित होता है।
19 वह पाले को नमक की नाईं पृथ्वी पर उंडेलता है, और जम कर तेज डंडों पर पड़ा रहता है।
20 और जब उत्तर की ओर से ठंडी हवा चलती है, और जल बर्फ बन जाता है, तब वह इकट्ठे हुए जल के ऊपर ठहर जाता है, और जल को झिलम की नाईं ढक लेता है।
21 वह पहाड़ों को भस्म कर देता है, और जंगल को जला देता है, और घास को आग की नाईं भस्म कर देता है।
22 सब का हल तुरन्त आनेवाली कोहरे से, और गरमी के बाद पड़नेवाली ओस से ताज़ा होता है।
23 वह अपनी युक्ति से गहिरे सागर को प्रसन्न करता है, और उस में द्वीप बसाता है।
24 समुद्र के जहाज़ चलानेवाले उसका ख़तरा बताते हैं; और जब हम उसे कानों से सुनते हैं, तो आश्चर्य करते हैं।
25 क्योंकि उस में विचित्र और आश्चर्यकर्म, नाना प्रकार के पशु, और मछलियाँ उत्पन्न हुई हैं।
26 उसी के द्वारा उन का अन्त सफल होता है, और सब वस्तुएं उसी के वचन के द्वारा बनती हैं।
27 हम बहुत बोलें, तौभी कम बोलें; इस कारण कुल मिलाकर वह ही सब कुछ है।
28 हम उसकी महिमा कैसे कर सकेंगे? क्योंकि वह अपने सब कामों से अधिक महान है।
29 यहोवा भयानक और अति महान है, और उसकी शक्ति अद्‌भुत है।
30 जब तुम यहोवा की महिमा करो, तो जितना हो सके उसकी स्तुति करो; क्योंकि वह अब भी बहुत आगे बढ़ जाएगा: और जब तुम उसकी स्तुति करो, तो अपना सारा बल लगा देना, और हियाव न छोड़ना; क्योंकि तुम कभी भी बहुत दूर तक नहीं जा सकते।
31 उसे किस ने देखा है, कि वह हम से कहे? और जो वह है, उसे कौन बड़ा कर सकता है?
32 इन से भी बड़ी बातें अभी छिपी हुई हैं, क्योंकि हम ने उसके थोड़े से काम ही देखे हैं।
33 क्योंकि यहोवा ने सब कुछ बनाया है; और भक्तों को उस ने बुद्धि दी है।

अध्याय 44

1 आओ अब हम प्रसिद्ध पुरूषों और अपने पिताओं की स्तुति करें जिन्होंने हमें उत्पन्न किया।
2 यहोवा ने आरम्भ से ही अपनी बड़ी सामर्थ से उनके द्वारा बड़ी महिमा की है।
3 जो लोग अपने राज्य में प्रभुता करते थे, वे अपनी शक्ति के लिये प्रसिद्ध थे, और अपनी समझ से युक्ति देते, और भविष्यवाणियां करते थे।
4 और प्रजा के प्रधान अपनी सम्मति और ज्ञान के द्वारा प्रजा की सेवा करते हैं, और उनके उपदेश बुद्धिमान और कुशल हैं।
5 जैसे संगीत के सुर ढूंढ़े, और पद्य लिखकर सुनाए।
6 धनवान पुरूष, जो धनवान और कुशल थे, और अपने अपने घरों में सुख से रहते थे।
7 ये सब अपनी अपनी पीढ़ी में प्रतिष्ठित हुए, और अपने समय की महिमा ठहरे।
8 उन में से कुछ लोग अपने पीछे एक नाम छोड़ गए हैं, कि उनकी प्रशंसा का वर्णन किया जाए।
9 और कितने ऐसे हैं, जिनका स्मरण नहीं; जो नष्ट हो गए हैं, मानो वे कभी थे ही नहीं; और ऐसे हो गए हैं मानो उनका कभी जन्म ही न हुआ हो; और उनके बाद उनके बच्चे।
10 परन्तु ये दयालु मनुष्य थे, जिनका धर्म भूला नहीं गया।
11 उनके वंश का अच्छा निज भाग सदा बना रहेगा, और उनकी सन्तान वाचा के आधीन है।
12 उनका वंश स्थिर रहता है, और उनकी सन्तान उनके निमित्त स्थिर रहती है।
13 उनका वंश सर्वदा बना रहेगा, और उनकी महिमा न मिटेगी।
14 उनके शव शान्ति से गाड़े गए; परन्तु उनका नाम सर्वदा जीवित रहेगा।
15 लोग उनकी बुद्धि का वर्णन करेंगे, और मण्डली उनकी प्रशंसा करेगी।
16 हनोक ने यहोवा को प्रसन्न किया, और उसका अनुवाद किया गया, और वह पीढ़ी पीढ़ी के लिये मन फिराव का उदाहरण ठहरेगा।
17 नूह सिद्ध और धर्मी निकला; क्रोध के समय में वह संसार के बदले में ले लिया गया; इसलिए जब जलप्रलय आया तो वह पृथ्वी पर अवशेष बनकर रह गया ।
18 और उसके साथ सदा की वाचा बान्धी गई, कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नाश न हों।
19 इब्राहीम बहुत जाति का महान् पिता था; महिमा में उसके तुल्य कोई न था;
20 जिस ने परमप्रधान की व्यवस्था का पालन किया, और उस से वाचा बान्धी; उस ने वाचा को अपने शरीर में दृढ़ किया; और जब उसकी परीक्षा हुई, तो वह विश्वासयोग्य पाया गया।
21 इसलिथे उस ने उसको शपथ खिलाकर विश्वास दिलाया, कि वह जाति जाति के लोगोंको उसके वंश के द्वारा आशीष देगा, और उसे पृथ्वी की धूल के समान बढ़ाएगा, और तारागण के समान बढ़ाएगा, और समुद्र से समुद्र तक उनका अधिक्कारने करेगा। और नदी से लेकर भूमि के चरम भाग तक।
22 और उस ने इसहाक के साय भी उसके पिता इब्राहीम के लिथे सब मनुष्योंकी आशीष की वाचा बान्धी, और उसे याकूब के सिर पर ठहराया। और उस ने उसको आशीर्वाद देकर मान लिया, और उसे निज भाग दिया, और उसका भाग बांट दिया; उसने उन्हें बारह गोत्रों में बाँट दिया।

अध्याय 45

1 और उस ने उस में से एक दयालु पुरूष को निकाला, जिस पर सब प्राणियोंके अनुग्रह की दृष्टि हुई, अर्यात् मूसा भी परमेश्वर और मनुष्योंका प्रिय था, और उसका स्मरण करके धन्य होता है।
2 उस ने उसको पवित्र पवित्र लोगोंके तुल्य बनाया, और उसकी महिमा की, यहां तक कि उसके शत्रु उस से डर गए।
3 उस ने अपके वचनोंके द्वारा आश्चर्यकर्मोंको बन्द कर दिया, और उसको राजाओंके साम्हने महिमामय किया, और अपक्की प्रजा के लिथे उसे आज्ञा दी, और अपके तेज में से उसको प्रगट किया।
4 उस ने उसकी सच्चाई और नम्रता से उसको पवित्र किया, और सब मनुष्यों में से उसे चुन लिया।
5 और उस ने उसको अपना शब्द सुनाया, और उसे अन्धेरे बादल में ले गया, और उसके साम्हने आज्ञा दी, अर्थात जीवन और ज्ञान की व्यवस्था, कि वह याकूब को अपनी वाचाएं, और इस्राएल को अपने नियम सिखाए।
6 और उस ने लेवी के गोत्र में से हारून को जो अपके तुल्य पवित्र पुरूष या, अर्यात् उसके भाई को ऊंचा किया।
7 और उस ने उसके साथ सदा की वाचा बान्धी, और उसे लोगोंके बीच याजकपद दिया; उस ने उसे सुन्दर आभूषण पहनाए, और महिमा का वस्त्र पहिनाया।
8 उस ने उस पर सम्पूर्ण महिमा डाली; और उसे सुन्दर वस्त्र, जांघिया, लम्बा बागा और एपोद पहनाकर दृढ़ किया।
9 और उस ने उसके चारों ओर अनार और बहुत सी सुनहरी घंटियां बान्धी, कि उसके चलते ही एक शब्द और शब्द हो, जो मन्दिर में सुनाई दे, और उसकी प्रजा के वंश को स्मरण आए;
10 और सोने, और नीले रेशम, और बैंजनी, कढ़ाई का काम किया हुआ पवित्र वस्त्र, और न्याय की झिलम, और ऊरीम और तुम्मीम से पहिनाया हुआ;
11 और वह चतुर कारीगर की कारीगरी का काम किया हुआ बटी हुई लाल रंग की पोशाक से, और मुहरों के समान खोदे हुए, और सोने से जड़े हुए, जौहरी के काम का, और इस्राएल के गोत्रों की गिनती के अनुसार स्मरण दिलानेवाले के लिथे लेख खोदकर तैयार किया गया।
12 उस ने उस पर सोने का एक मुकुट रखा, जिस पर पवित्रता, आदर का आभूषण, बहुमूल्य काम, आंखों की अभिलाषाएं, अच्छी और सुन्दरता खुदी हुई थी।
13 उस से पहिले ऐसा कोई न हुआ, और न किसी परदेशी ने कभी उन्हें पहिनाया, परन्तु उसके लड़केबाले और उसके पोते ही सदा के लिये थे।
14 उनके बलिदान प्रति दिन लगातार दो बार पूरे किए जाएं।
15 मूसा ने उसका अभिषेक किया, और पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया; और उसके और उसके वंश के लिये यह सदा की वाचा बान्धी गई, कि जब तक आकाश बना रहे, तब तक वे उसकी सेवा टहल करते रहें, और याजकपद का काम करते रहें। और उसके नाम से लोगों को आशीर्वाद दो।
16 और उस ने सब जीवित मनुष्योंमें से उसे स्मरण के लिथे यहोवा के लिथे बलिदान, धूप, और सुखदायक सुगन्ध चढ़ाने के लिथे चुन लिया, कि अपक्की प्रजा के लिथे मेल मिलाप करे।
17 उस ने उसको अपनी आज्ञाएं, और न्याय की विधियों का अधिकार दिया, कि वह याकूब को चितौनियां सिखाए, और इस्राएल को अपनी व्यवस्था सिखाए।
18 और परदेशियों ने मिलकर उसके विरूद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की, और जंगल में दातान और अबीरोन के पक्ष के लोगोंऔर कोर की मण्डली के लोगोंने क्रोध और जलजलाहट से उसे बदनाम किया।
19 यह यहोवा ने देखा, और उसे अप्रसन्न हुआ, और वे अपने क्रोध की आग से भस्म हो गए; उस ने उन पर ऐसे अद्भुत काम किए, कि उन्हें आग की ज्वाला से भस्म कर दिया।
20 परन्तु उस ने हारून को अधिक प्रतिष्ठित किया, और उसे भाग दिया, और उपज की पहिली उपज उसको बांट दी; विशेषकर उस ने बहुतायत में रोटियां तैयार कीं:
21 क्योंकि वे यहोवा के बलिदानों में से खाते हैं, जो उस ने उसको और उसके वंश को दिया है।
22 तौभी प्रजा के देश में उसका कोई निज भाग न हुआ, और न प्रजा के बीच में उसका कुछ भाग हुआ; क्योंकि उसका निज भाग और निज भाग यहोवा ही है।
23 और तीसरा महामहिम एलीआजर का पुत्र पीनीस है; क्योंकि वह यहोवा के भय के कारण जोशीला था, और जब प्रजा के लोग लौट आए, और इस्राएल से मेल कर लिया, तब भी वह दृढ़ मन से खड़ा हुआ।
24 इसलिये उसके साथ मेल की वाचा बान्धी गई, कि वह पवित्रस्थान और अपनी प्रजा का प्रधान हो, और उसे और उसके वंश को सदा के लिये याजक पद की प्रतिष्ठा मिलती रहे।
25 यहूदा के गोत्र में से यिशै के पुत्र दाऊद के साथ जो वाचा बान्धी गई थी उसके अनुसार राजा का भाग उसके वंश को ही मिले; वैसे ही हारून का भाग भी उसके वंश को मिले।
26 परमेश्वर तुझे तेरे मन में बुद्धि दे, कि तू उसकी प्रजा का न्याय धर्म से कर सके, कि उनकी अच्छी वस्तुएं नष्ट न हो जाएं, और उनकी महिमा सर्वदा बनी रहे।

अध्याय 46

1 नेव का पुत्र यीशु युद्धों में वीर था, और भविष्यवाणियों में मूसा का उत्तराधिकारी था, जो अपने नाम के अनुसार परमेश्वर के चुने हुओं को बचाने, और उन शत्रुओं से बदला लेने के लिये महान बनाया गया था जो उनके विरूद्ध उठे थे, कि वह इस्राएल को उनका निज भाग कर दे।
2 जब उस ने अपने हाथ फैलाए, और नगरोंके विरूद्ध अपनी तलवार बढ़ाई, तो वह क्या ही बड़ा महिमावान हुआ!
3 उस से पहिले कौन इस पर ऐसा स्थिर रहा? क्योंकि यहोवा आप ही अपने शत्रुओं को उसके पास ले आया।
4 क्या सूर्य अपक्की चाल से लौट नहीं गया? और क्या एक दिन दो दिन जितना लम्बा नहीं था?
5 जब शत्रु चारों ओर से उस पर दबाव डालते थे, तब उस ने परमप्रधान यहोवा को पुकारा; और महान् यहोवा ने उसकी सुन ली।
6 और उस ने युद्ध में जाति जाति पर बड़े बल के ओले बरसाए, और बेथोरोन की चढ़ाई में उन को जो विरोध करते थे नाश किया, जिस से जाति जाति के लोग अपना सारा बल जान लें,

क्योंकि वह यहोवा के साम्हने लड़ता था। , और उसने ताकतवर का अनुसरण किया।
7 मूसा के समय में भी उस ने और यपुन्ने के पुत्र कालेब ने दया का काम किया, और मण्डली का साम्हना किया, और लोगों को पाप से रोका, और दुष्टों के बड़बड़ाहट को शान्त किया।
8 और छः लाख पैदल चलनेवालों में से उन दो को उस निज भाग में, अर्थात उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, ले जाने के लिथे बचाकर रखा गया।
9 और यहोवा ने कालेब को भी बल दिया, और वह बुढ़ापे तक उसके संग रहा; यहां तक कि वह देश के ऊंचे स्थानोंपर गया, और उसके वंश ने उसे निज भाग कर लिया।
10 इसलिये कि सब इस्राएली जान लें कि यहोवा के पीछे चलना अच्छा है।
11 और न्यायियोंके विषय में सब नाम लेकर, जिनका मन व्यभिचारी न हुआ हो, और न प्रभु से दूर हुए हों, उनकी स्मृति धन्य हो।
12 उनकी हड्डियां अपने स्यान पर फूलती रहें, और जो प्रतिष्ठित थे उनका नाम उनके वंश में बना रहे।
13 यहोवा के भविष्यद्वक्ता और उसके प्रिय शमूएल ने एक राज्य स्थापित किया, और अपनी प्रजा पर हाकिमों का अभिषेक किया।
14 वह यहोवा की व्यवस्था के अनुसार मण्डली का न्याय करता था, और यहोवा ने याकूब की ओर दृष्टि की।
15 उसकी सच्चाई से वह सच्चा भविष्यद्वक्ता ठहराया गया, और उसके वचन से वह दर्शन में विश्वासयोग्य मालूम हुआ।
16 जब उस ने अपना दूध पीता हुआ मेम्ना चढ़ाया, तब उस ने पराक्रमी यहोवा को पुकारा, और उसके शत्रु चारों ओर से उस पर दबाव डालते थे।
17 और यहोवा ने आकाश से गरजकर बड़े शब्द से अपना शब्द सुना दिया।
18 और उस ने सोरियोंके हाकिमोंको, और पलिश्तियोंके सब हाकिमोंको नाश किया।
19 और अपनी लम्बी नींद से पहिले उस ने यहोवा और उसके अभिषिक्त के साम्हने चिल्लाकर कहा, मैं ने जूते के समान किसी का धन नहीं लिया, और न किसी ने उस पर दोष लगाया।
20 और उसकी मृत्यु के बाद उस ने भविष्यद्वाणी करके राजा को अपना अन्त बताया, और प्रजा की दुष्टता को मिटाने के लिये पृथ्वी पर से ऊंचे स्वर से भविष्यद्वाणी करने लगा।

अध्याय 47

1 और उसके बाद नातान दाऊद के समय में भविष्यद्वाणी करने को उठा।
2 जैसे मेलबलि में से चर्बी उठाई जाती है, वैसे ही दाऊद इस्राएलियों में से चुन लिया गया।
3 वह सिंहोंके साथ बालकोंके समान, और भालुओंके साथ भेड़-बकरियोंके समान खेलता या।
4 क्या उस ने जवान ही में किसी राक्षस को मार डाला? और क्या उसने लोगों की नामधराई दूर नहीं की, जब उसने अपना हाथ गोफन में रखे हुए पत्थर के साथ उठाया, और गोलियत का घमण्ड तोड़ दिया?
5 क्योंकि उस ने परमप्रधान प्रभु को पुकारा; और उस ने उसके दाहिने हाथ में उस पराक्रमी योद्धा को घात करने, और अपनी प्रजा का सींग खड़ा करने की शक्ति दी।
6 सो लोगों ने लाखों की संख्या में उसका आदर किया, और यहोवा की आशीष से उसकी स्तुति की, और उस ने उसे महिमा का मुकुट दिया।
7 क्योंकि उस ने चारोंओर के शत्रुओंको नाश किया, और अपने द्रोहियोंको पलिश्तियोंसे नाश किया, और उनके सींग तोड़ डाले, और आज तक ऐसा ही है।
8 और अपके सब कामोंमें उस ने महिमा के वचनोंसे परमप्रधान पवित्र की स्तुति की; अपने पूरे दिल से उसने गाने गाए, और उससे प्यार किया जिसने उसे बनाया।
9 और उस ने वेदी के साम्हने गायकोंको भी बैठाया, कि वे उनके शब्द से मधुर गीत गाएं, और प्रतिदिन अपके गीतोंमें भजन गाएं।
10 और उस ने उनके पर्ब्बोंको सुशोभित किया, और अन्त तक पवित्र समयोंको ठहराया, कि वे उसके पवित्र नाम की स्तुति करें, और भोर से मन्दिर में जयजयकार होता रहे।
11 यहोवा ने उसके पाप दूर कर दिए, और उसका सींग सदा के लिये ऊंचा कर दिया; उस ने उसे राजाओं की वाचा, और इस्राएल में महिमा का सिंहासन दिया।
12 उसके बाद एक बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न हुआ, और वह उसके कारण सब से दूर रहने लगा।
13 सुलैमान शान्ति के समय राज्य करता रहा, और प्रतिष्ठित हुआ; क्योंकि परमेश्वर ने उसके चारोंओर सब को शान्त कर दिया, कि वह उसके नाम का भवन बनाए, और उसका पवित्रस्थान सर्वदा के लिये तैयार करे।
14 तू अपनी जवानी में कितना बुद्धिमान था, और तू बाढ़ की नाईं बहुत समझ से भरा हुआ था!
15 तेरे प्राण ने सारी पृथ्वी को छा लिया, और उसे घोर दृष्टान्तोंसे भर दिया।
16 तेरा नाम द्वीपों तक फैल गया; और तू अपनी शान्ति के लिये प्रिय है।
17 तेरे गीतों, और नीतिवचनों, दृष्टान्तों, और अर्थों से देश देश के लोग तुझ से अचम्भा करते थे।
18 यहोवा परमेश्वर के नाम से जो इस्राएल का परमेश्वर कहलाता है, तू ने सोने को टीन के समान और चान्दी को सीसे के समान बहुत कर दिया।
19 तू ने स्त्रियोंके साम्हने अपनी कमर झुकाई, और अपने शरीर के द्वारा तू वश में किया गया।
20 तू ने अपके सम्मान को कलंकित किया, और अपके वंश को अपवित्र किया; यहां तक कि तू ने अपके बालकोंपर क्रोध भड़काया, और अपक्की मूढ़ता के कारण उदास हुआ।
21 इस प्रकार राज्य बँट गया, और एप्रैम में से एक बलवा राज्य राज्य करने लगा।
22 परन्तु यहोवा अपनी करूणा कभी न छोड़ेगा, न उसका कोई काम नाश होगा, न वह अपने चुने हुओं के वंश को नष्ट करेगा, और जो उस से प्रेम रखता है उसका वंश वह न छीनेगा; इस कारण उस ने याकूब को कुछ बचा दिया , और उस में से दाऊद के लिये एक जड़ निकली।
23 इस प्रकार सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सो गया, और उस ने अपने वंश में से रोबोआम को छोड़ दिया, जो प्रजा में

मूर्ख और निर्बुद्धि था, और अपनी युक्ति से लोगों को बहका देता था। नबात का पुत्र यारोबाम भी था, जो इस्राएल से पाप कराता था, और एप्रैम को पाप का मार्ग बताता था।
24 और उनके पाप इतने बढ़ गए, कि वे देश से निकाले गए।
25 क्योंकि वे सब प्रकार की दुष्टता की खोज में रहते थे, यहां तक कि उन पर पलटा लेने का समय आ गया।

अध्याय 48

1 तब एलिय्याह भविष्यद्वक्ता आग की नाईं उठ खड़ा हुआ, और उसका वचन दीपक की नाईं जल उठा।
2 और उस ने उन पर बड़ा भारी अकाल डाला, और अपके जोश से उनकी गिनती घटा दी।
3 यहोवा के वचन के द्वारा उस ने आकाश को बन्द किया, और तीन बार आग बरसाई।
4 हे इलियास, तू अपने आश्चर्यकर्मोंके कारण कैसा प्रतिष्ठित हुआ! और तेरे तुल्य महिमा कौन कर सकता है!
5 जिस ने परमप्रधान के वचन के द्वारा मरे हुए को मृत्यु में से, और उसके प्राण को मरे हुए के स्यान में से जिलाया।
6 वह राजाओं को नाश कर देता है, और प्रतिष्ठित पुरूषोंको गद्दी से गिरा देता है;
7 जिस ने सीनै में यहोवा की डांट, और होरेब में पलटा लेने का न्याय सुना;
8 उस ने बदला लेने के लिथे राजाओं को, और अपने पीछे सफल होने के लिथे भविष्यद्वक्ताओं को नियुक्त किया;
9 वह आग की बवण्डर और तेज घोड़ों के रथ पर चढ़ाया गया;
10 जो अपने समय में डाँटने के लिथे नियुक्त किए गए, कि यहोवा के न्याय के क्रोध को भड़कने से पहिले ही शान्त करें, और पिता का मन पुत्र की ओर फेरें, और याकूब के गोत्रोंको पुनःस्थापित करें।
11 धन्य वे हैं, जो तुझे देखकर प्रेम से सो गए; क्योंकि हम निश्चय जीवित रहेंगे।
12 एलिय्याह वह था, जिस पर बवण्डर छाया हुआ था; और एलीयुस उसकी आत्मा से भर गया; जब तक वह जीवित रहा, तब तक वह किसी हाकिम से न हटा, और न कोई उसे वश में कर सका।
13 कोई शब्द उस पर प्रबल न हो सका; और उनकी मृत्यु के बाद उनके शरीर ने भविष्यवाणी की।
14 उस ने अपके जीवन में तो आश्चर्यकर्म किए, और मरने पर भी उसके काम अद्भुत हुए।
15 इस सब के कारण लोगों ने मन न फिराया, और अपने पापों से तब तक अलग न हुए, जब तक वे लूटे नहीं गए, और अपने देश से निकाले गए, और सारी पृथ्वी पर तितर-बितर हो गए; तौभी दाऊद के घराने में एक छोटी सी प्रजा और एक हाकिम रह गया :
16 उन में से कितनों ने वह किया जो परमेश्वर को भाता था, और कितनों ने पाप बढ़ा दिए।
17 यहेजकिय्याह ने अपके नगर को दृढ़ किया, और उसके बीच में जल पहुंचाया; उस ने कठोर चट्टान को लोहे से खोदा, और जल के लिये कुएं बनाए।
18 उसके समय में सन्हेरीब ने चढ़ाई करके रब्सास को भेजा, और सिय्योन के विरूद्ध हाथ बढ़ाकर घमण्ड किया।
19 तब उनके हृदय और हाथ कांपने लगे, और वे जच्चा स्त्रियों की नाईं पीड़ा करने लगे।
20 परन्तु उन्होंने दयालु यहोवा को पुकारा, और उसकी ओर हाथ फैलाए; और तुरन्त पवित्र ने स्वर्ग में से उनकी सुन ली, और एसे की सेवकाई के द्वारा उन्हें छुड़ाया।
21 उस ने अश्शूरियोंकी सेना को मारा, और उसके दूत ने उनको नाश किया।
22 क्योंकि यहेजकिय्याह ने वही किया जो यहोवा को प्रसन्न हुआ, और अपने पिता दाऊद की चाल पर दृढ़ रहा, जैसा भविष्यवक्ता एसे ने, जो अपने दर्शन में महान और विश्वासयोग्य था, आज्ञा दी थी।
23 उसके समय में सूर्य उलट गया, और उस ने राजा की आयु बढ़ा दी।
24 उस ने उत्तम आत्मा से देखा, कि अन्त में क्या होनेवाला है, और उस ने सिय्योन में शोक करनेवालोंको शान्ति दी।
25 उस ने जो बातें सदा घटित होनेवाली थीं, और गुप्त बातें वा वे कभी घटित होती थीं, प्रगट कीं।

अध्याय 49

1 योशिय्याह का स्मरण उस सुगन्ध के समान है जो औषधालय की कला से बनाया जाता है: वह सब के मुंह में मधु के समान मधुर, और भोज के समय दाखमधु के समान मधुर होता है।
2 उस ने प्रजा के मन फिराने में खराई से काम किया, और अधर्म के घृणित कामों को दूर किया।
3 उस ने अपना मन यहोवा की ओर लगाया, और दुष्टोंके समय में उस ने परमेश्वर की उपासना स्थिर की।
4 दाऊद, यहेजकिय्याह और योशिय्याह को छोड़ सब दोषी निकले; क्योंकि उन्होंने परमप्रधान की व्यवस्था को त्याग दिया, यहां तक कि यहूदा के राजा भी असफल हुए।
5 इसलिथे उस ने उनका अधिकार औरोंको, और उनका वैभव परदेशी जाति को दे दिया।
6 और यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी के अनुसार उन्होंने पवित्रस्थान के चुने हुए नगर को फूंक दिया, और सड़कों को उजाड़ दिया।
7 क्योंकि जो भविष्यद्वक्ता था, और अपनी मां के पेट में पवित्र ठहराया गया था, उन्हों ने उस से बुरी बिनती की, कि जड़ से उखाड़ डाले, और दु:ख दे, और नाश कर डाले; और वह निर्माण भी कर सके, और पौधे भी लगा सके।
8 यहेजकेल ही ने वह महिमामय दर्शन देखा, जो उसे करूबोंके रथ पर दिखाई दिया या।
9 क्योंकि उस ने मेंह की आड़ में शत्रुओं की चर्चा की, और जो लोग सीधे चलते थे उनको मार्ग दिखाया।
10 और बारह भविष्यद्वक्ताओं के स्मरण के लिये आशीष दी जाए, और उनकी हड्डियां अपने स्यान से फिर फूलने लगें; क्योंकि उन्होंने याकूब को शान्ति दी, और आशा के द्वारा उनको छुड़ाया।
11 हम जोरोबाबेल की महिमा कैसे करें? यहाँ तक कि वह दाहिनी ओर के हस्ताक्षरकर्ता के समान था:
12 योसेदेक का पुत्र यीशु भी वैसा ही था, जिस ने उन्हीं के समय में भवन बनाया, और यहोवा के लिये एक पवित्र मन्दिर बनाया, जो अनन्त महिमा के लिये तैयार किया गया।

13 और चुने हुओं में नीमियाह भी था, जिसकी ख्याति महान थी, जिस ने हमारे लिये गिरी हुई शहरपनाह को खड़ा किया, और फाटकों और बेड़ों को खड़ा किया, और हमारे खण्डहरों को फिर खड़ा किया।
14 परन्तु पृथ्वी पर हनोक के तुल्य कोई मनुष्य न उत्पन्न हुआ; क्योंकि वह पृथ्वी पर से उठा लिया गया।
15 और यूसुफ के तुल्य कोई जवान पुरूष उत्पन्न न हुआ, जो अपके भाइयोंपर हाकिम हो, और प्रजा का निज भाग हो, और जिसकी हड्डियां यहोवा का ध्यान हो।
16 सेम और शेत मनुष्यों में बड़े आदर में थे, और आदम सृष्टि के सब जीवित प्राणियों में श्रेष्ठ था।

अध्याय 50

1 शमौन महायाजक, ओनिय्याह का पुत्र, जिस ने अपने जीवन में उस भवन की फिर मरम्मत कराई, और अपने दिनों में मन्दिर को दृढ़ किया;
2 और उसी ने नेव से दूनी ऊंचाई का, और भवन के चारोंओर ऊंची किला बनाया;
3 उसके दिनों में पानी पाने का हौद समुद्र की सी चाल के अनुसार पीतल की पट्टियों से ढांपा जाता था;
4 और उस ने मन्दिर की चौकसी की, कि वह गिरे न, और नगर को घेरने से दृढ़ किया;
5 पवित्रस्थान से निकलते समय लोगों के बीच में उसका कैसा आदर हुआ!
6 वह बादल के बीच में भोर के तारे के समान, और पूर्ण चन्द्रमा के समान था;
7 जैसे सूर्य परमप्रधान के मन्दिर पर चमकता है, और मेघधनुष के समान उजियाले बादलों में प्रकाश देता है;
8 और जैसे वर्ष के वसन्त में गुलाब के फूल, और जल की नदियों के किनारे सोसन फूल, और धूपकाल के समय लोबान के वृक्ष की डालियां,
9 धूपदान में आग और धूप, और सब प्रकार के मणियों से जड़े हुए कूटकर बनाए हुए सोने के पात्र के समान;
10 और वह सुन्दर जलपाई के वृक्ष के समान है जो फल उगता है, वा सनोवर के वृक्ष के समान है जो बादल तक बढ़ता है।
11 जब वह महिमा का वस्त्र पहिनकर, और महिमा की उत्तम वस्तुएं पहिने हुए पवित्र वेदी के पास गया, तब उस ने पवित्र वस्त्र को महिमामय बनाया।
12 और उस ने याजकोंके हाथ से भाग ले लिया, और लिबानुस के जवान देवदार की नाईं वेदी के आगके पास चारों ओर घूमकर खड़ा हो गया; और जैसे खजूर के वृक्ष उसके चारों ओर घूमते थे।
13 इस प्रकार हारून के सब पुत्र अपके अपके महिमा में, और अपके हाथ में यहोवा के हव्य लिये हुए इस्राएल की सारी मण्डली के साम्हने थे।
14 और वेदी की सेवा पूरी करके परमप्रधान सर्वशक्तिमान के हव्य को सुशोभित करे,
15 और उस ने अपना हाथ कटोरे की ओर बढ़ाया, और दाख के लोहू में से सब के सब परमप्रधान राजा के लिये वेदी के पांव पर सुखदायक सुगन्ध उंडेल दिया।
16 तब हारून के पुत्रोंने जयजयकार की, और चान्दी की तुरहियां फूंकीं, और परमप्रधान के स्मरण के लिथे बड़ा शब्द किया।
17 तब सब लोग एक साथ फुर्ती करके अपने सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर परमप्रधान को दण्डवत् करने के लिथे मुंह के बल पृथ्वी पर गिरे।
18 और गवैयों ने भी अपने कंठ से स्तुति की, और नाना प्रकार की ध्वनियों से मधुर धुन निकाली।
19 और लोग परमप्रधान यहोवा से प्रार्थना करके उसके साम्हने तब तक प्रार्थना करते रहे, जब तक कि प्रभु की महिमा पूरी न हो गई, और उन्होंने उसकी सेवा पूरी न कर ली।
20 तब वह नीचे गया, और अपने हाथ इस्राएलियों की सारी मण्डली के ऊपर फैलाए, कि मुंह से यहोवा को आशीर्वाद दे, और उसके नाम से आनन्दित हो।
21 और वे दूसरी बार दण्डवत् करने को झुके, कि परमप्रधान से आशीष पाएं।
22 इसलिये अब तुम सब के परमेश्वर को धन्य कहो, जो हर जगह अद्भुत काम करता है, जो गर्भ से हमारी आयु को बढ़ाता है, और अपनी दया के अनुसार हम पर दया करता है।
23 वह हमें मन में आनन्द दे, और हमारे दिनों में इस्राएल में सर्वदा शान्ति बनी रहे।
24 कि वह हम पर अपनी करूणा प्रगट करे, और अपने समय पर हमारा उद्धार करे!
25 दो प्रकार की जातियां हैं जिन से मेरा मन घृणा करता है, और तीसरी कोई जाति नहीं;
26 शोमरोन पहाड़ पर बैठनेवाले, और पलिश्तियोंके बीच रहनेवाले, और सीकेम के रहनेवाले निर्बुद्धि लोग।
27 यरूशलेम के सिराख के पुत्र यीशु ने समझ और ज्ञान की शिक्षा इस पुस्तक में लिखी है, जिस ने बुद्धि को अपने हृदय से उंडेला।
28 धन्य वह है जो इन कामों में निपुण होगा; और जो उन्हें अपने हृदय में रखता है वह बुद्धिमान हो जाएगा।
29 क्योंकि यदि वह ऐसा करेगा, तो सब बातों में बलवन्त होगा; क्योंकि जो भक्त को बुद्धि देता है, उसे यहोवा का प्रकाश अगुवाई देता है। प्रभु का नाम सर्वदा धन्य रहे। आमीन, आमीन.

अध्याय 51

1 सिराच के पुत्र यीशु की प्रार्थना। हे प्रभु और राजा, मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरी स्तुति करूंगा, हे परमेश्वर मेरे उद्धारकर्ता; मैं तेरे नाम की स्तुति करता हूं:
2 क्योंकि तू मेरा रक्षक और सहायक है, और तू ने मेरे शरीर को सत्यानाश से, और बदनामी करने वाली जीभ के जाल से, और झूठ गढ़नेवाले होठों से बचाया है, और मेरे द्रोहियों के विरूद्ध मेरा सहायक हुआ है।
3 और उन की बहुतायत की करूणा और अपने नाम के प्रताप के अनुसार मुझे उन दांतों से जो मुझे खा जाने को तैयार थे, और मेरे प्राण के खोजियों के हाथ से, और नाना प्रकार के क्लेशों से बचाया। मेरे पास था;
4 चारोंओर आग के जलने से, वरन उस आग के बीच में से जो मैं ने नहीं भड़काई;

5 नरक की गहराइयों से, अशुद्ध जीभ से, और फूठी बातों से।
6 अधर्मी जीभ से राजा पर दोष लगाने से मेरा प्राण मरने के निकट पहुंच गया, मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंच गया।
7 उन्होंने मुझे चारोंओर से घेर लिया, और कोई मेरी सहाथता न कर सका; मैं ने मनुष्योंकी सहायता ढूंढ़ी, परन्तु कोई न मिला।
8 तब हे यहोवा, मैं ने तेरी करूणा पर, और तेरे प्राचीन कामोंके विषय में सोचा, कि तू अपने घात लगानेवालोंको किस प्रकार छुड़ाता है, और शत्रुओंके हाथ से बचाता है।
9 तब मैं ने पृथ्वी पर से प्रार्थना करके प्रार्थना की, और मृत्यु से छुटकारा पाने के लिथे प्रार्थना की।
10 मैं ने अपके प्रभु के पिता यहोवा की दोहाई दी, कि वह मेरे संकट के दिनोंमें, और घमण्ड के समय, जब कोई सहाथता न रह जाए, मुझे न छोड़े।
11 मैं तेरे नाम का लगातार धन्यवाद करूंगा, और धन्यवाद करते हुए भजन गाऊंगा; और इसलिए मेरी प्रार्थना सुनी गई:
12 क्योंकि तू ने मुझे विनाश से बचाया, और बुरे समय से बचाया है; इस कारण मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरी प्रशंसा करूंगा, और हे यहोवा, तेरे नाम से आशीष दूंगा।
13 जब मैं जवान था, वा कभी विदेश जाता था, तो मैं खुल कर प्रार्थना में बुद्धि चाहता था।
14 मैं ने मन्दिर में उसके लिथे प्रार्थना की, और अन्त तक उसे ढूंढ़ता रहूंगा।
15 फूल लगने से लेकर दाख पकने तक मेरा मन उसी से प्रसन्न रहा; मैं सीधी राह पर चलता रहा, और बचपन से मैं उसकी खोज में लगा रहा।
16 और मैं ने थोड़ा कान झुकाकर उसे ग्रहण किया, और बहुत कुछ सीखा।
17 उस से मुझे लाभ हुआ, इसलिये जो मुझे बुद्धि देता है, उसकी मैं बड़ाई करूंगा।
18 क्योंकि मैं ने उसके पीछे चलने की ठानी, और जो भला है उसके पीछे मैं लगन से लगा रहा; तो क्या मैं भ्रमित न होऊँ?
19 मेरे प्राण ने उस से मल्लयुद्ध किया, और अपने कामों में मैं खरा रहा हूं; मैं ने ऊपर आकाश की ओर हाथ फैलाकर उसके विषय में अपनी अज्ञानता पर विलाप किया।
20 मैं ने अपना मन उस की ओर लगाया, और मैं ने उसे निर्मलता से पाया; मैं ने आरम्भ से अपना मन उस में लगा रखा है, इस कारण मैं न त्यागा जाऊंगा।
21 मेरा मन उसके ढूंढ़ते-ढूंढते व्याकुल हो गया: इस कारण मुझे अच्छी सम्पत्ति मिल गई।
22 यहोवा ने मेरे प्रतिफल के लिथे मुझे जीभ दी है, और मैं उसके द्वारा उसकी स्तुति करूंगा।
23 हे अनपढ़ो, मेरे निकट आओ, और विद्या के घर में रहो।
24 तुम क्यों धीमे हो, और अपने मन के प्यासे हो कर ऐसी बातें क्यों कहते हो?
25 मैं ने मुंह खोलकर कहा, उसको बिना रूपया मोल ले लो।
26 अपनी गर्दन जूए के नीचे रखो, और अपनी आत्मा को शिक्षा दो; वह पाना कठिन है।
27 अपनी आंखों से देख, कि मैं ने तो थोड़ा परिश्रम किया, परन्तु मुझे बहुत विश्रम मिला है।
28 बहुत धन लेकर विद्या प्राप्त करो, और उसके द्वारा बहुत सा सोना प्राप्त करो।
29 तू उसकी करूणा से आनन्दित हो, और उसकी स्तुति से लज्जित न हो।
30 अपना काम समय पर करो, और वह अपने समय पर तुम्हें प्रतिफल देगा।

Book of Baruch

बारुक की किताब

अध्याय 1

1 और उस पुस्तक के शब्द ये हैं, जिसे बारूक ने, जो नेरिय्याह का पुत्र, और मासियाह का पोता, यह सेदकिय्याह का पोता, यह असदिया का परपोता, और चेल्कियाह का पोता था, बाबुल में लिखा,
2 पांचवें वर्ष के सातवें दिन को कसदियोंने यरूशलेम को ले लिया, और आग में फूंक दिया।
3 और बारूक ने इस पुस्तक के वचन यहूदा के राजा योआकीम के पुत्र यकोन्याह को, और उस पुस्तक को सुनने आए सब लोगों को सुनाए।
4 और रईसों, राजकुमारों, पुरनियों, और छोटे से ले कर ऊंचे तक सब लोगोंके कान में, अर्यात् सूद नदी के तीर पर बाबुल के रहनेवाले सब लोगोंके कान में।
5 तब वे रोए, उपवास किया, और यहोवा के साम्हने प्रार्थना की।
6 और उन्होंने हर एक मनुष्य की शक्ति के अनुसार धन भी इकट्ठा किया;
7 और उन्होंने उसे यरूशलेम में चेल्कियाह के पुत्र और सलोमी के पुत्र योआकीम महायाजक के पास, और याजकोंऔर उन सब लोगोंके पास भेज दिया, जो यरूशलेम में उसके संग पाए गए थे।
8 उसी समय सीवान महीने के दसवें दिन को उस ने यहोवा के भवन के पात्र, जो मन्दिर में से निकाले गए थे, यहूदा के देश में लौटाने के लिये ले लिए, अर्यात् चांदी के पात्र, जो सेदिकियास ने जादा के राजा योशिय्याह के पुत्र ने बनाया था,
9 उसके बाद बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यकोन्याह को, और हाकिमों, और बन्धुओं, और शूरवीरों, और साधारण लोगोंको यरूशलेम से बन्धुआ करके बाबुल को ले गया।
10 और उन्होंने कहा, देख, हम ने तेरे पास रूपया भेजा है, कि तू होमबलि, पापबलि, और धूप मोल ले, और मन्ना तैयार करके अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ाए;
11 और बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उसके पुत्र बल्थसार के प्राण के लिथे प्रार्थना करो, कि उनके दिन पृथ्वी पर स्वर्ग के समान हों।
12 और यहोवा हमें शक्ति देगा, और हमारी आंखों में ज्योति देगा, और हम बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की छाया में, और उसके पुत्र बल्थासर की छाया में रहेंगे, और हम बहुत दिन तक उनकी सेवा करते रहेंगे, और उनकी कृपादृष्टि पाएंगे। .
13 हमारे लिये भी अपके परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो, क्योंकि हम ने अपके परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध पाप किया है; और आज तक यहोवा का क्रोध और उसका क्रोध हम पर से शान्त नहीं हुआ है।
14 और तुम यह पुस्तक जो हम ने तुम्हारे पास इसलिये भेजी है, कि तुम पर्व्वोंऔर पवित्र दिनोंमें यहोवा के भवन में अंगीकार करो।
15 और तुम कहोगे, हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर से धर्म तो है, परन्तु हम को तो संकट का सामना करना पड़ता है, जैसा आज के दिन यहूदा और यरूशलेम के निवासियोंको होता है।
16 और हमारे राजाओं, और हाकिमों, और याजकों, और भविष्यद्वक्ताओं, और हमारे बाप-दादों को;
17 क्योंकि हम ने यहोवा के साम्हने पाप किया है,
18 और उसकी आज्ञा नहीं मानी, और जो आज्ञाएं उस ने हम को प्रगट करके दी हैं उन पर हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात नहीं मानते।
19 जिस दिन से यहोवा हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया, उस दिन से आज के दिन तक हम यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते, और उसकी बात न सुनकर लापरवाही करते आए हैं।
20 इस कारण वे विपत्तियां हम में आ गईं, और वह श्राप भी मिला, जो यहोवा ने अपने दास मूसा से उस समय ठहराया, कि वह हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल ले आया, और हमें ऐसा देश दे, जिस में उसके समान दूध और मधु की धाराएं बहती हैं। ये दिन देखना है.
21 तौभी हम ने अपने परमेश्वर यहोवा की बात उन भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों के अनुसार नहीं मानी जो उस ने हमारे पास भेजे थे।
22 परन्तु हर एक मनुष्य अपने बुरे मन के अनुसार पराये देवताओं की उपासना करने, और हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा करने लगा।

अध्याय दो

1 इसलिये यहोवा ने अपना वचन पूरा किया है, जो उस ने हमारे और हमारे न्यायियोंके विरूद्ध जो इस्राएल का न्याय करते थे, और हमारे राजाओं, हमारे हाकिमों, और इस्राएल और यहूदा के पुरूषोंके विरूद्ध कहा था।
2 कि हम पर ऐसी बड़ी विपत्तियां डालें, जैसी मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई बातों के अनुसार यरूशलेम में यरूशलेम में पड़ीं;
3 कि मनुष्य अपके बेटे का मांस, और अपक्की बेटी का मांस खाए।
4 और उस ने उनको हमारे चारोंओर के सब राज्योंके आधीन कर दिया, कि वे चारोंओर के सब राज्योंके बीच में नामधराई और उजाड़ हो जाएं, जहां यहोवा ने उन्हें तितर-बितर कर दिया है।
5 इस प्रकार हम गिराए गए, और ऊंचे न ठहरे, क्योंकि हम ने अपके परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध पाप किया, और उसकी बात नहीं मानी।
6 हमारे परमेश्वर यहोवा को तो धर्म मिलता है, परन्तु हमें और हमारे बापदादों को लज्जित होना पड़ता है, जैसा आज के दिन प्रगट होता है।
7 क्योंकि ये सब विपत्तियां हम पर आ पड़ी हैं, जिन्हें यहोवा ने हम पर प्रकट किया है
8 तौभी हम ने यहोवा से प्रार्यना नहीं की, कि हम हर एक को उसके दुष्ट मन की कल्पना से फेर दें।
9 इसलिथे यहोवा ने हम पर विपत्ति की दृष्टि की, और यहोवा ने उसे हम पर ला दिया; क्योंकि यहोवा अपके सब कामोंके विषय में जिसकी आज्ञा उस ने हमें दी है धर्मी है।

10 तौभी हम ने यहोवा की जो आज्ञाएं उस ने हमारे साम्हने रखी हैं उन पर चलने के लिथे उसकी बात नहीं सुनी।
11 और अब, हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तू ने अपनी प्रजा को बलवन्त हाथ, और ऊंचे हाथ, और चिन्हों, और चमत्कारों, और बड़े सामर्थ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है, और अपना नाम प्रसिद्ध किया है, जैसा कि इस दिन दिखाई देता है:
12 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हम ने पाप किया है, हम ने भक्तिहीन काम किया है, हम ने तेरे सब नियमोंके विषय में कुटिलता से काम किया है।
13 तेरा क्रोध हम पर से दूर हो जाए; क्योंकि अन्यजातियों में जहां तू ने हम को तितर-बितर कर दिया है, हम थोड़े ही बचे हैं।
14 हे यहोवा, हमारी प्रार्थना और विनती सुन, और अपने निमित्त हमें छुड़ा, और जो हमें निकाल ले गए हैं उन पर हम पर अनुग्रह कर।
15 जिस से सारी पृथ्वी जान ले कि तू हमारा परमेश्वर यहोवा है, इस कारण इस्राएल और उसका वंश तेरे ही नाम से पुकारे जाते हैं।
16 हे यहोवा, अपके पवित्र भवन में से दृष्टि करके हमारी ओर दृष्टि कर; हे यहोवा, अपना कान हमारी ओर झुकाकर सुन।
17 अपनी आंखें खोलकर देखो; क्योंकि जो मरे हुए कब्रों में हैं, और जिनके प्राण उनके शरीर से निकाले गए हैं, वे प्रभु की न तो स्तुति करेंगे और न धर्म।
18 परन्तु हे यहोवा, जो प्राणी अत्यन्त व्याकुल, झुके हुए और दुर्बल हो जाते हैं, और जिनकी आंखे सूख गई हैं, और जो भूखा है, वही तेरी स्तुति और धर्म करेगा।
19 इस कारण हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हम अपने पुरखाओं और राजाओं के धर्म के विषय में तेरे साम्हने दीनता से प्रार्थना नहीं करते।
20 क्योंकि तू ने हम पर अपना क्रोध और जलजलाहट भड़काई है, जैसा तू ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहलवाया है,
21 यहोवा यों कहता है, बाबुल के राजा के आधीन होने को अपने कन्धे झुकाओ; इस प्रकार तुम उस देश में बने रहोगे जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था।
22 परन्तु यदि तुम बाबुल के राजा की अधीनता करने के लिथे यहोवा की वाणी न सुनोगे,
23 मैं यहूदा के नगरोंमें और यरूशलेम के बाहर से हर्ष और आनन्द का शब्द, दूल्हे और दुल्हन का शब्द बन्द कर दूंगा; और सारा देश उजाड़ हो जाएगा। निवासी.
24 परन्तु हम ने बाबुल के राजा की अधीनता करने के लिथे तेरी बात न मानी; इसलिथे जो वचन तू ने अपके दास भविष्यद्वक्ताओंके द्वारा कहा या, कि हमारे राजाओं और हमारे बापदादोंकी हड्डियां मिलीं, उनको तू ने पूरा किया है। उनकी जगह से हटा दिया जाए.
25 और देखो, वे दिन की धूप और रात की शीत में फेंक दिए जाते हैं, और भूख, तलवार और मरी से बड़े दु:ख में मर जाते हैं।
26 और जो भवन तू कहलाता है, उसे तू ने इस्राएल और यहूदा के घराने की दुष्टता के कारण उजाड़ दिया, जैसा आज के दिन दिखाई पड़ता है।
27 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू ने अपनी सारी भलाई और अपनी बड़ी करूणा के अनुसार हम से व्यवहार किया है।
28 जैसा तू ने अपके दास मूसा के द्वारा उस दिन कहा या, कि तू ने उसको इस्राएलियोंके साम्हने व्यवस्या लिखने की आज्ञा दी या,
29 यदि तुम मेरा शब्द न सुनोगे, तो निश्चय यह बड़ी भीड़ जाति जाति में छोटी हो जाएगी, और मैं उनको तितर-बितर कर दूंगा।
30 क्योंकि मैं जानता था, कि वे मेरी न सुनेंगे, क्योंकि वे हठीले लोग हैं; परन्तु बन्धुवाई के देश में वे आप ही को स्मरण करेंगे।
31 और जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं; क्योंकि मैं उन्हें सुनने के लिये हृदय और कान दूंगा;
32 और वे अपने बन्धुवाई के देश में मेरी स्तुति करेंगे, और मेरे नाम पर ध्यान करेंगे,
33 और अपनी हठीली गर्दन से और अपने बुरे कामों से लौट आओ; क्योंकि वे अपने पुरखाओं की चाल को स्मरण करके यहोवा के साम्हने पाप करेंगे।
34 और मैं उनको उस देश में फिर पहुंचाऊंगा जिसके विषय मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, उनके पुरखाओं से शपथ खाकर कहा या, और वे उस पर प्रभुता करेंगे; और मैं उनको बढ़ाऊंगा, और वे घट न सकेंगे।
35 और मैं उनके साथ सदा की वाचा बान्धूंगा, कि मैं उनका परमेश्वर रहूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे; और मैं अपक्की इस्राएली प्रजा को उस देश से जो मैं ने उनको दिया है फिर कभी न निकालूंगा।

अध्याय 3

1 हे सर्वशक्तिमान यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर, प्राण, व्याकुल आत्मा, व्याकुल होकर तुझ से प्रार्थना करता है।
2 हे यहोवा, सुन, और दया कर; क्योंकि तू दयालु है: और हम पर दया कर, क्योंकि हम ने तेरे साम्हने पाप किया है।
3 क्योंकि तू सर्वदा बना रहेगा, और हम सत्यानाश हो जाएंगे।
4 हे सर्वशक्तिमान यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर, अब मरे हुए इस्राएलियोंऔर उनकी सन्तानोंकी प्रार्थना सुनो, जिन्होंने तेरे साम्हने पाप किया, और अपने परमेश्वर की बात नहीं सुनी; जिस कारण ये विपत्तियां हम पर पड़ी हैं .
5 हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामोंको स्मरण न करो; परन्तु इस समय अपके पराक्रम और अपने नाम का स्मरण करो।
6 क्योंकि तू हमारा परमेश्वर यहोवा है, और हे यहोवा, हम तेरी स्तुति करेंगे।
7 और इस कारण तू ने हमारे मन में अपना भय उत्पन्न किया है, कि हम बन्धुवाई में तेरा नाम पुकारें, और तेरी स्तुति करें; क्योंकि हम ने अपने पुरखाओं के सब अधर्म को स्मरण करके जो तेरे साम्हने पाप किए थे।
8 देख, हम आज तक बन्धुवाई में हैं, और तू ने हमें तितर-बितर कर दिया है, कि हमारी नामधराई और शाप हो, और

हमारे पुरखाओं के सब अधर्म के कामोंके अनुसार, जो हमारे परमेश्वर यहोवा से दूर हो गए थे, दण्ड भोगें।
9 हे इस्राएल, जीवन की आज्ञाओं को सुनो; बुद्धि की ओर कान लगाओ।
10 हे इस्राएल, ऐसा क्यों होता है, कि तू अपने शत्रुओं के देश में है, और पराए देश में बूढ़ा हो गया है, और मरे हुओं के समान अशुद्ध हो गया है?
11 क्या तू कब्र में उतरनेवालोंमें गिना जाता है?
12 तू ने बुद्धि के सोते को त्याग दिया है।
13 क्योंकि यदि तू परमेश्वर के मार्ग पर चलता, तो सर्वदा शान्ति से निवास करता।
14 जान लो कि बुद्धि कहां है, बल कहां है, समझ कहां है; इसलिये कि तू जान ले कि दीर्घायु और जीवन कहां है, और आंखों की ज्योति और शान्ति कहां है।
15 उसका स्थान किस ने जान लिया? या उसके भण्डारों में कौन आया है?
16 अन्यजातियों के हाकिम और पृथ्वी के पशुओं पर प्रभुता करनेवाले कहां गए;
17 वे जो आकाश के पक्षियोंके साथ विहार करते थे, और जो चान्दी और सोना जिस पर मनुष्य भरोसा रखते थे, उसका संचय करते थे, और उनको कुछ प्राप्त न होता था?
18 क्योंकि जो चान्दी का काम करते और बहुत सावधान रहते थे, और जिनके काम का पता नहीं चलता,
19 वे लुप्त हो गए और कब्र में चले गए, और उनके स्थान पर दूसरे लोग आ गए।
20 जवानों ने उजियाला देखा, और पृथ्वी पर बस गए; परन्तु ज्ञान का मार्ग न जाना;
21 और न उसके मार्ग को समझा, और न उसे पकड़ा; और उनके लड़केबाले उस मार्ग से दूर थे।
22 इसकी चर्चा कनान में कभी नहीं सुनी गई, और न तेमान में कभी ऐसा देखा गया।
23 जो पृथ्वी पर ज्ञान के खोजी हैं, और मेरान और थेमान के व्यापारी, और दंतकथाओंके लेखक, और अनबुद्धि के खोजी हैं; इनमें से किसी ने भी ज्ञान का मार्ग नहीं जाना, या उसके मार्ग को याद नहीं किया।
24 हे इस्राएल, परमेश्वर का भवन क्या ही महान है! और उसके अधिकार का स्थान कितना बड़ा है!
25 महान, और उसका अन्त नहीं; ऊँचा, और मापनीय नहीं।
26 वहां आरम्भ से ही प्रसिद्ध शूरवीर थे, जो बड़े कद के और युद्ध में निपुण थे।
27 उन को यहोवा ने नहीं चुना, और न उनको ज्ञान का मार्ग दिया;
28 परन्तु वे बुद्धि न रहने के कारण नाश हुए, और अपनी ही मूढ़ता के कारण नाश हुए।
29 कौन स्वर्ग पर चढ़ गया, और उसे ले आया, और बादलों पर से नीचे ले आया?
30 किस ने समुद्र पार जाकर उसे पाया, और चोखा सोना ढूंढ़कर ले आएगा?
31 कोई उसका मार्ग नहीं जानता, और न उसके मार्ग के विषय में सोचता है।
32 परन्तु जो सब कुछ जानता है, वह उसे जानता है, और उसने अपनी समझ से उसे जान लिया है; उसी ने पृथ्वी को सर्वदा के लिये तैयार किया, उसी ने उसे चौपायों से भर दिया है।
33 जो उजियाला भेजता है, और वह चला जाता है, वह उसे फिर बुलाता है, और वह भय के साथ उसकी आज्ञा मानता है।
34 उनके देखते-देखते तारे चमके, और आनन्दित हुए; जब वह उनको बुलाता, तब वे कहते, हम यहां हैं; और इस प्रकार प्रसन्नता के साथ उन्होंने उन्हें बनाने वाले को प्रकाश दिखाया ।
35 यही हमारा परमेश्वर है, और उसके तुल्य कोई दूसरा न गिना जाएगा
36 उस ने सब प्रकार का ज्ञान ढूंढ़कर अपने दास याकूब को, और अपने प्रिय इस्राएल को दिया है।
37 इसके बाद वह पृथ्वी पर प्रगट हुआ, और मनुष्योंसे बातें करने लगा।

अध्याय 4

1 यह परमेश्वर की आज्ञाओं की पुस्तक और व्यवस्था है, जो सदा कायम रहेगी; लेकिन जैसे ही इसे छोड़ दिया जाएगा यह मर जाएगा।
2 हे याकूब, मुड़कर उसे थाम ले; उसके उजियाले के साम्हने चलो, कि तू उजियाला हो जाए।
3 अपना आदर किसी दूसरे को न देना, और न पराई जाति को अपना लाभ देना।
4 हे इस्राएल, हम धन्य हैं; क्योंकि जो बातें परमेश्वर को भाती हैं वे हमें प्रगट की जाती हैं।
5 हे मेरी प्रजा, हे इस्राएल के स्मरणवाले, ढाढ़स बांधो।
6 तुम नाश होने के लिये अन्यजातियों के हाथ में नहीं बेचे गए, परन्तु परमेश्वर का क्रोध भड़काने के कारण तुम शत्रुओं के हाथ में सौंप दिए गए।
7 क्योंकि तुम ने परमेश्वर के लिये नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करके अपने सृजनहार को क्रोध दिलाया है।
8 तुम उस सनातन परमेश्वर को भूल गए हो, जिस ने तुम को पाला पोसा; और तुम ने यरूशलेम को, जो तुम्हें पाला, दु:ख किया है।
9 क्योंकि जब उस ने परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़कता हुआ देखा, तब कहा, हे सिय्योन के निवासियों, सुनो; परमेश्वर ने मुझ पर बड़ा शोक डाला है;
10 क्योंकि मैं ने अपने बेटे-बेटियोंको बन्धुवाई में जाते देखा, जो सनातन ने उन पर डाला है।
11 मैं ने आनन्द से उनका पालन पोषण किया; परन्तु उन्हें रोते और विलाप करते हुए विदा किया।
12 कोई मुझ विधवा और बहुतोंमें से त्यागी हुई स्त्री के कारण आनन्द न करे, जो मेरे बालकोंके पापोंके कारण त्यागी गई हूं; क्योंकि वे परमेश्वर की व्यवस्था से भटक गए।
13 वे न तो उसकी विधियां जानते थे, और न उसकी आज्ञाओं के मार्ग पर चलते थे, और न उसके धर्म की शिक्षा के मार्ग पर चलते थे।

14 सिय्योन के आस पास के रहनेवाले आएं, और मेरे बेटे-
बेटियोंको जो बन्धुवाई में ले आए हैं, उस की सुधि लें, जो
सनातन ने उन पर डाल दिया है।
15 क्योंकि वह उन पर दूर से एक निर्लज्ज और परदेशी भाषा
बोलनेवाली जाति को ले आया है, जो न बूढ़ों का आदर करते,
और न बालकों का आदर करते।
16 उन्होंने विधवा के प्यारे प्यारे बच्चोंको छीन लिया, और उसे
बेटियोंके बिना अकेली सूना छोड़ दिया है।
17 परन्तु मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूं?
18 क्योंकि जो तुझ पर ये विपत्तियां लाया वही तुझे तेरे शत्रुओं
के हाथ से बचाएगा।
19 हे मेरे बालको, अपके मार्ग जाओ; क्योंकि मैं उजाड़ हो
गया हूं।
20 मैं ने शान्ति का वस्त्र उतार दिया है, और अपनी प्रार्थना का
टाट अपने ऊपर डाल लिया है; मैं अपने दिनों में अनन्तकाल
तक दोहाई दूंगा।
21 हे मेरे बालकों, ढाढ़स बांधो, यहोवा की दोहाई दो, और
वह तुम्हें शत्रुओं की शक्ति और हाथ से बचाएगा।
22 क्योंकि मेरी आशा सनातन पर है, कि वह तुम्हारा उद्धार
करेगा; और पवित्र की ओर से मुझे आनन्द मिला है, उस दया
के कारण जो हमारे अनन्त उद्धारकर्ता की ओर से शीघ्र ही
तुम्हारे पास आएगी।
23 क्योंकि मैं ने तुम्हें विलाप करते और रोते हुए भेजा था;
परन्तु परमेश्वर तुम्हें आनन्द और आनन्द के साथ सदा के लिये
मुझे सौंप देगा।
24 जैसे सिय्योन के पड़ोसियों ने तुम्हारा बन्धुवाई देखा है, वैसे
ही वे हमारे परमेश्वर की ओर से तुम्हारा किया हुआ उद्धार
शीघ्र देखेंगे, जो बड़े ऐश्वर्य, और अनन्त तेज के साथ तुम पर
आनेवाला है।
25 हे मेरे बालको, परमेश्वर की ओर से जो क्रोध तुम पर
भड़का है उसे धीरज से सह लो; क्योंकि तुम्हारे शत्रु ने तुम्हें
सताया है; परन्तु शीघ्र ही तू उसका विनाश देखेगा, और
उसकी गर्दन पर चल पड़ेगा।
26 मेरे कोमल लोग घिनौने मार्ग से चले गए हैं, और शत्रुओं
के झुण्ड की नाईं पकड़े हुए छीन लिए गए हैं।
27 हे मेरे बालको, ढाढ़स रखो, और परमेश्वर की दोहाई दो;
क्योंकि जिस ने तुम पर ये विपत्तियां डालीं, उस का स्मरण तुम
करोगे।
28 क्योंकि जैसा तुम्हारा मन परमेश्वर से भटकने का हुआ या,
वैसा ही तुम लौटकर दसगुणा भी अधिक ढूंढ़ना।
29 क्योंकि जिस ने तुम पर ये विपत्तियां डालीं, वही तुम्हारे
उद्धार के द्वारा तुम्हें अनन्त आनन्द देगा।
30 हे यरूशलेम, अपना मन अच्छा कर; क्योंकि जिस ने तुझे
यह नाम दिया वही तुझे शान्ति देगा।
31 वे अभागे हैं, जिन्होंने तुझे दु:ख दिया, और तेरे गिरने से
आनन्द किया।
32 वे नगर जिनकी सेवा तेरे लड़केबालों ने किया, वे अभागे
हैं; जिस ने तेरे पुत्रोंको ग्रहण किया वह भी अभागा है।
33 क्योंकि जैसे वह तेरे नाश होने से आनन्दित हुई, और तेरे
गिरने से प्रसन्न हुई, वैसे ही वह अपनी उजड़ी हुई दशा से
उदास होगी।
34 क्योंकि मैं उसकी बड़ी भीड़ का आनन्द छीन लूंगा, और
उसका घमण्ड शोक में बदल जाएगा।
35 क्योंकि उस पर अनन्तकाल से आग भड़कती रहेगी जो
सदैव बनी रहेगी; और वह बहुत समय तक शैतानों का निवास
रहेगा।
36 हे यरूशलेम, अपनी दृष्टि पूर्व की ओर कर, और उस
आनन्द को देख जो परमेश्वर की ओर से तुझे मिलता है।
37 देख, तेरे पुत्र आते हैं, जिन्हें तू ने विदा कर दिया है, वे पवित्र
के वचन के द्वारा पूर्व से पच्छिम तक इकट्ठे होकर परमेश्वर
की महिमा में आनन्द करते हुए आते हैं।

अध्याय 5

1 हे यरूशलेम, शोक और क्लेश का वस्त्र उतार डालो, और
उस महिमा की मनोहरता पहिन लो जो परमेश्वर की ओर से
युगानुयुग आती रहेगी।
2 अपने ऊपर धर्म का दोहरा वस्त्र बान्ध, जो परमेश्वर की ओर
से आता है; और तेरे सिर पर अनन्त महिमा का मुकुट रखूंगा।
3 क्योंकि परमेश्वर तेरा तेज आकाश के नीचे के सब देशों पर
प्रगट करेगा।
4 क्योंकि परमेश्वर की ओर से तेरा नाम सदा धर्म की शान्ति,
और परमेश्वर की आराधना की महिमा कहा जाएगा।
5 हे यरूशलेम उठ, ऊंचे स्थान पर खड़ा हो, और पूर्व की
ओर दृष्टि करके देख, कि तेरे बालक पवित्र के वचन के द्वारा
पश्चिम से पूर्व तक इकट्ठे हुए हैं, और परमेश्वर का स्मरण करके
आनन्द कर रहे हैं।
6 क्योंकि वे पैदल ही तेरे पास से चले गए, और अपने शत्रुओं
से छीन लिए गए; परन्तु परमेश्वर उन्हें राज्य के सन्तानों के
समान महिमा सहित तेरे पास पहुंचाता है।
7 क्योंकि परमेश्वर ने यह ठहराया है, कि सब ऊंचे टीलोंको,
और लम्बे चौड़े किनारोंको गिरा दिया जाए, और नालोंमें भर
दिया जाए, कि भूमि पक्की हो जाए, कि इस्राएल परमेश्वर की
महिमा में निडर होकर आगे बढ़ सके।
8 और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार जंगल और सब
सुगन्धवाले वृक्ष इस्राएल पर छाया करेंगे।
9 क्योंकि परमेश्वर इस्राएल को अपनी महिमा के प्रकाश में,
उस करूणा और धर्म के द्वारा जो उस से उत्पन्न होती है,
आनन्द के साथ ले चलेगा।

Letter of Jeremiah

यिर्मयाह का पत्र

अध्याय 1

1 एक पत्र की प्रतिलिपि, जिसे जेरेमी ने उन लोगों के पास भेजा था जिन्हें बेबीलोन के राजा द्वारा बेबीलोन में बंदी बनाकर ले जाया जाना था, ताकि उन्हें प्रमाणित किया जा सके, जैसा कि उसे परमेश्वर की ओर से आदेश दिया गया था।
2 उन पापों के कारण जो तुम ने परमेश्वर के साम्हने किए हैं, तुम बेबीलोनियोंके राजा नबूकदनेस्सर द्वारा बंधुआ होकर बेबीलोन में पहुंचाए जाओगे।
3 इसलिथे जब तुम बेबीलोन में पहुंचो, तो कई वर्ष वरन बहुत समय तक, अर्यात् सात पीढ़ी तक वहीं रहोगे; और उसके बाद मैं तुम को वहां से कुशल क्षेम से निकाल दूंगा।
4 अब तुम बाबुल में चान्दी, सोने और काठ के देवताओं को कंधों पर उठाए हुए देखोगे, जो जाति जाति के लोगों को डराते हैं।
5 इसलिये सावधान रहो, कि जब तुम भीड़ को उनके आगे और पीछे उन्हें दण्डवत् करते देखो, तो किसी रीति से परदेशियों के समान न बनो, और न उनके समान बनो।
6 परन्तु तुम अपके मन में कहो, हे यहोवा, हमें तेरी आराधना करनी चाहिए।
7 क्योंकि मेरा दूत तुम्हारे संग है, और मैं तुम्हारे प्राणोंकी चिन्ता करता हूं।
8 और उनकी जीभ कारीगर के द्वारा चमकाई गई है, और वे सोने से मढ़े हुए, और चान्दी से मढ़े हुए हैं; तौभी वे झूठे हैं, और बोल नहीं सकते।
9 और उन्होंने कुँवारियों के समान सोना लेकर, जो समलैंगिक होना चाहती हो, अपने देवताओं के सिर के लिये मुकुट बनाए।
10 कभी-कभी याजक अपके देवताओं के पास से सोना चान्दी ले आकर अपके ही को दे देते हैं।
11 और वे उसका धन साधारण वेश्याओं को दे देंगे, और उन्हें चान्दी, सोने और काठ के देवताओं के समान वस्त्राभूषणों से अलंकृत करेंगे।
12 तौभी ये देवता बैंजनी वस्त्र से ढके होने पर भी अपने आप को जंग और कीड़ों से नहीं बचा सकते।
13 जब उन पर बहुत बोझ पड़ता है, तब वे मन्दिर की धूल से अपना मुंह पोंछते हैं।
14 और जो अपने अपराधी को घात नहीं कर सकता, वह मानो देश का न्यायी हो, राजदण्ड रखता है।
15 उसके दाहिने हाथ में खंजर और कुल्हाड़ी है, परन्तु वह युद्ध और डाकुओं से अपने आप को बचा नहीं पाता।
16 इस से यह मालूम होता है, कि वे ईश्वर नहीं; इसलिये उन से मत डरो।
17 क्योंकि जो बर्तन मनुष्य काम में लेता है वह टूट जाने पर किसी काम का नहीं रहता; उनके देवताओं के साथ भी ऐसा ही है: जब वे मन्दिर में स्थापित किए जाते हैं, तो भीतर आनेवालों के पांवों की धूलि उनकी आंखों में भर जाती है।
18 और जैसे राजा का अपमान करनेवाले के लिथे चारोंओर किवाडें पक्की की जाती हैं, मानो वह मृत्यु का भागी हो; वैसे ही याजक भी अपके मन्दिरोंमें किवाड़, ताले और बेंड़े लगवाते हैं, ऐसा न हो कि डाकुओंके हाथ से उनके देवता लूटे जाएं।
19 वे अपने लिये मोमबत्तियां जलाते हैं, हां, अपने लिये नहीं, परन्तु उन्हें एक भी दिखाई नहीं देता।
20 वे मन्दिर की कड़ियों में से एक हैं, तौभी वे कहते हैं कि उनके हृदयों को पृथ्वी से रेंगनेवाली वस्तुएं चबा जाती हैं; और जब वे उन्हें और उनके कपड़ों को खाते हैं, तो उन्हें इसका एहसास नहीं होता।
21 मन्दिर से निकलने वाले धुएँ से उनके चेहरे काले हो गए हैं।
22 उनके शरीरों और सिरों पर चमगादड़, और अबाबील, और पक्षी, और बिल्लियाँ भी बैठती हैं।
23 इसी से तुम जान लो कि वे ईश्वर नहीं, इसलिये उन से मत डरो।
24 और उनको सुन्दर बनाने के लिथे जितना सोना उनके पास है, जब तक वे जंग न पोंछें, तब तक वे चमक न सकेंगे;
25 जिन वस्तुओं में दम नहीं, वे बड़े दाम पर मोल ली जाती हैं।
26 वे कंधों पर उठाए गए हैं, और उनके पांव नहीं हैं, जिस के द्वारा वे मनुष्यों को बताते हैं, कि वे किसी योग्य नहीं हैं।
27 और जो उनकी सेवा करते हैं, वे लज्जित होते हैं; क्योंकि यदि वे भूमि पर गिरें, तो फिर उठ नहीं सकते; और यदि कोई उन्हें खड़ा भी करे, तो वे अपने आप से नहीं उठ सकते; क्या वे अपने आप को सीधा कर सकते हैं: परन्तु वे मरे हुओं के समान अपने आगे भेंट रखते हैं।
28 और जो वस्तुएं उनके लिये चढ़ाई जाती हैं, उनको याजक बेचकर अन्धेर करते हैं; इसी प्रकार उनकी स्त्रियाँ भी अपना कुछ भाग नमक में डाल देती हैं; परन्तु वे कंगालों और नपुंसकों को उस में से कुछ भी नहीं देते।
29 रजस्वला स्त्रियां और गर्भवती स्त्रियां उनका बलिदान खाती हैं; इस से तुम जान लो कि वे देवता नहीं; उन से मत डरो।
30 क्योंकि वे देवता कैसे कहलाए? क्योंकि स्त्रियाँ चाँदी, सोने और लकड़ी के देवताओं के आगे मांस चढ़ाती हैं।
31 और याजक अपके मन्दिरोंमें वस्त्र फाड़े, सिर और दाढ़ियां मुण्डाए हुए, और सिर पर कुछ भी न पहिने हुए बैठे रहते हैं।
32 वे अपने देवताओं के साम्हने दहाड़ते और चिल्लाते हैं, जैसा मनुष्य किसी के मरने पर जेवनार में करते हैं।
33 याजकों ने भी अपने वस्त्र उतारकर अपनी पत्नियों और बच्चों को पहिनाया।
34 चाहे कोई उन से बुराई करे, चाहे भलाई, वे उसका बदला नहीं दे सकते; वे न तो राजा को खड़ा कर सकते हैं और न राजा को गिरा सकते हैं।
35 इसी रीति से वे न तो धन दे सकते हैं और न रूपया; चाहे कोई उन से मन्नत माने, और न पूरी करे, तौभी वे उसकी मांग न करेंगे।
36 वे किसी को मृत्यु से नहीं बचा सकते, और न निर्बलों को वीरों से बचा सकते हैं।

37 वे किसी अन्धे की आंखें फिर नहीं लौटा सकते, और न
किसी को संकट में सहाथता दे सकते हैं।
38 वे विधवा पर दया नहीं कर सकते, और अनाय पर भलाई
नहीं कर सकते।
39 उनके लकड़ी के देवता, और सोने और चान्दी से मढ़े हुए,
पहाड़ पर से खोदे गए पत्थरों के समान हैं; जो उनको
दण्डवत् करते हैं, वे लज्जित हो जाएंगे।
40 तो कोई मनुष्य क्योंकर सोच कर कहे, कि वे देवता हैं,
और कसदी भी उनका अनादर करते हैं?
41 और यदि वे किसी गूंगे को देखें जो बोल न सके, तो उसे
लाकर बेल से बिनती करते हैं, कि वह मानो समझ सकता
है।
42 तौभी वे आप ही इस बात को समझ नहीं पाते, और उन्हें
छोड़ देते हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञान नहीं।
43 और स्त्रियां भी रस्सियां बान्धे हुए मार्गों पर बैठ कर
सुगन्ध के लिथे भूसी जलाती हैं; परन्तु यदि उन में से कोई
किसी राहगीर के द्वारा खींचकर उसके पास सोती है, तो वह
अपके पुरूष की निन्दा करती है, कि मैं अपके तुल्य नहीं
समझी। , न ही उसकी डोर टूटी।
44 जो कुछ उन में होता है वह झूठ है; फिर यह कैसे सोचा
या कहा जाए, कि वे देवता हैं?
45 वे बढ़इयों और सुनारों के बनाए हुए हैं; वे कारीगरों के
सिवा और कुछ नहीं हो सकते।
46 और उनके रचयिता आप ही बहुत दिन तक टिके न रह
सकेंगे; तो फिर जो चीज़ें उनसे बनी हैं वे देवता कैसे होनी
चाहिए?
47 क्योंकि उन्होंने अपने बाद आनेवालोंके लिये झूठ और
निन्दा छोड़ी।
48 क्योंकि जब उन पर युद्ध या विपत्ति आती है, तब याजक
आपस में सम्मति करते हैं, कि वे उनके पास कहां छिपे रहें।
49 तो फिर मनुष्य क्योंकर नहीं जान सकते, कि वे ईश्वर नहीं
हैं, जो न तो युद्ध से और न महामारी से अपने आप को बचा
सकते हैं?
50 क्योंकि जब वे लकड़ी के बने, और सोने चान्दी से मढ़े
हुए हैं, तो यह जान लिया जाएगा कि वे झूठे हैं।
51 और सब जातियों और राजाओं को यह प्रगट हो जाएगा,
कि वे ईश्वर नहीं, परन्तु मनुष्यों के हाथ के बनाए हुए काम हैं,
और उन में परमेश्वर का कोई काम नहीं।
52 तो फिर कौन नहीं जानता, कि वे देवता नहीं हैं?
53 क्योंकि न तो वे देश में राजा खड़ा कर सकते, और न
मनुष्योंके लिये वर्षा कर सकते।
54 वे न तो अपना मुकद्दमा लड़ सकते हैं, और न दोष का
निवारण कर सकते हैं; क्योंकि वे कौवों के समान आकाश
और पृथ्वी के बीच में हैं।
55 और जब लकड़ी के वा सोने वा चान्दी के देवताओं के
भवन पर आग गिरेगी, तब उनके याजक भागकर बच
निकलेंगे; परन्तु वे आप ही कड़ियों की नाईं जलकर भस्म हो
जाएंगे।
56 फिर वे किसी राजा वा शत्रु का साम्हना नहीं कर सकते;
फिर यह कैसे सोचा या कहा जा सकता है, कि वे देवता हैं?
57 और जो काठ के बने वा सोने चान्दी से बने हुए देवता हैं,
वे चोरों वा डाकुओं से बच नहीं सकते।
58 जो सोना, चान्दी, और वस्त्र पहिनाते हैं, उनको बलवन्त
लोग छीन लेते हैं, और लूटकर चले जाते हैं, और अपनी
सहाथता नहीं कर सकते।
59 इसलिये ऐसे झूठे देवताओं की अपेक्षा राजा होना, जो
अपना पराक्रम दिखाता हो, वा घर में लाभ का पात्र ठहरना
उत्तम है, जिसका स्वामी उपयोग करे; वा किसी घर का द्वार
हो, और उस में ऐसी वस्तुएं रखें, जो ऐसे झूठे देवताओं से
बढ़कर हैं। या महल में लकड़ी का खम्भा, ऐसे झूठे देवताओं
से भी अच्छा है।
60 क्योंकि सूर्य, चान्द, और तारागण उजियाले होकर, और
अपना अपना काम करने के लिये भेजे गए होकर आज्ञाकारी
हैं।
61 इसी रीति से बिजली जब चमकती है, तब दिखाई देती है;
और प्रत्येक देश में इसी रीति से वायु चलती है।
62 और जब परमेश्वर बादलों को सारे जगत पर छा जाने की
आज्ञा देता है, तो वे जैसा कहा जाता है वैसा ही करते हैं।
63 और जो आग ऊपर से पहाड़ोंऔर लकड़ियोंको भस्म
करने को भेजी गई, वह तो जैसी आज्ञा दी गई है वैसा ही
करती है; परन्तु वे न दिखाने में, और न शक्ति में उन के
समान हैं।
64 इसलिए न तो यह माना जा सकता है और न ही कहा जा
सकता है कि वे देवता हैं, क्योंकि वे न तो न्याय कर सकते हैं,
न ही मनुष्यों का भला कर सकते हैं ।
65 इसलिये यह जानकर कि वे ईश्वर नहीं, उन से मत डरो।
66 क्योंकि वे राजाओं को न तो शाप दे सकते हैं और न
आशीर्वाद।
67 न तो वे अन्यजातियों के बीच आकाश में चिन्ह दिखा
सकते, और न सूर्य के समान चमक सकते, और न चन्द्रमा
के समान प्रकाश दे सकते।
68 पशु उन से अच्छे हैं, क्योंकि वे आड़ में घुसकर अपना
बचाव कर सकते हैं।
69 सो हम पर कभी प्रगट न हुआ, कि वे देवता हैं; इसलिये
उन से मत डरो।
70 क्योंकि जैसे ककड़ी की बारी में बिजूका कुछ नहीं रखता,
वैसे ही उनके देवता लकड़ी के बने और सोने चान्दी से मढ़े
हुए हैं।
71 और इसी प्रकार उनके लकड़ी के और सोने चान्दी से
जड़े हुए देवता बाटिका के श्वेत काँटे के समान हैं, जिस पर
सब पक्षी बैठते हैं; जैसा कि एक मृत शरीर के लिए भी है, जो
अंधेरे में पूर्व की ओर है।
72 और जो चमकीला बैंजनी रंग उन पर सड़ता है, उस से
तुम जान लोगे कि वे कोई देवता नहीं; और इसके बाद वे
आप ही खा लिए जाएंगे, और देश भर में उनकी नामधराई
होगी।
73 इसलिये वह धर्मी मनुष्य ही उत्तम है, जिसके पास मूरतें
न हों; क्योंकि वह निन्दा से दूर रहेगा।



अजर्याह की प्रार्थना

अध्याय 1

1 और वे आग के बीच में परमेश्वर की स्तुति करते, और
यहोवा को धन्यवाद देते हुए चले।
2 तब अजर्याह खड़ा हुआ, और इस रीति से प्रार्थना की;
और आग के बीच में अपना मुंह खोलकर कहा,
3 हे हमारे पितरोंके परमेश्वर यहोवा, तू धन्य है; तेरा
नाम सर्वदा स्तुति और महिमा के योग्य है;
4 क्योंकि जो कुछ तू ने हम से किया उन सब में तू धर्मी
है; तेरे सब काम सच्चे हैं, तेरी चाल सीधी है, और तेरे
सब निर्णय सच्चे हैं।
5 जो कुछ तू ने हम पर और हमारे पुरखाओंके पवित्र
नगर यरूशलेम पर किया है उन सब में तू ने सच्चा
न्याय किया है; क्योंकि हमारे पापोंके कारण तू ने ये सब
विपत्तियां हम पर सत्य और न्याय के अनुसार डाली हैं।
6 क्योंकि हम ने तेरे पास से हटकर पाप और अधर्म
किया है।
7 हम ने सब बातोंमें विश्वासघात किया है, और तेरी
आज्ञाएं नहीं मानी, और न उनका पालन किया, और
जैसा तू ने हम को आज्ञा दी है वैसा नहीं किया, जिस से
हमारा भला हो।
8 इसलिये जो कुछ तू ने हम पर डाला है, और जो कुछ
तू ने हम से किया है, वह सब सच्चे मन से किया है।
9 और तू ने हम को अधर्मी शत्रुओं, और परमेश्वर के
अत्यन्त घृणित त्यागनेवालों, और अन्यायी राजा, और
सारे जगत के सबसे दुष्ट राजा के हाथ में कर दिया।
10 और अब हम अपना मुंह नहीं खोल सकते, हम तेरे
दासोंके साम्हने लज्जित और निन्दा के कारण ठहरे हैं;
और उनके लिये जो तेरी आराधना करते हैं।
11 तौभी अपके नाम के निमित्त हम को पूरी रीति से
पकड़ न ले, और न अपक्की वाचा को तोड़;
12 और अपने प्रिय इब्राहीम के कारण, अपने दास
इस्सहाक के कारण, और अपने पवित्र इस्राएल के
कारण अपनी करूणा हम पर से न हटा;
13 तू ने उन से बातें करके यह प्रतिज्ञा की है, कि तुम
उनके वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर
के बालू के किनकोंके तुल्य बहुत बढ़ाओगे।
14 क्योंकि हे यहोवा, हम सब जाति से छोटे हो गए हैं,
और अपने पापों के कारण आज तक सारे जगत में दास
बने हुए हैं।
15 इस समय तुम्हारे साम्हने कोई हाकिम, वा
भविष्यद्वक्ता, वा प्रधान, वा होमबलि, वा मेलबलि, वा
लोबान, वा यज्ञ करने का स्थान, और दया करनेवाला
नहीं है।
16 तौभी हम खेदित मन और नम्र आत्मा से ग्रहण किए
जाएं।
17 जैसा मेढ़ों और बैलों के होमबलि, वा लाखों मोटे
भेड़ के बच्चों के होमबलि के समान होता है, वैसे ही
आज हमारा बलिदान तेरे साम्हने रहे, और यह दे कि
हम तेरे पीछे हो लें; क्योंकि उस से वे तुच्छ न ठहरेंगे।
उनका भरोसा तुम पर रखो.
18 और अब हम सम्पूर्ण मन से तेरे पीछे हो लेते हैं,
और तेरा भय मानते हैं, और तेरे दर्शन के खोजी हैं।
19 हमें लज्जित न करो, परन्तु अपनी करूणा और बड़ी
करूणा के अनुसार हम से व्यवहार करो।
20 हे यहोवा, अपके आश्चर्यकर्मोंके अनुसार हमारा भी
उद्धार कर, और अपके नाम की महिमा कर; और जो
तेरे दासोंको हानि पहुंचाते हैं वे सब लज्जित हों;
21 और वे अपनी सारी शक्ति और पराक्रम में निराश
हो जाएं, और उनका बल टूट जाए;
22 और वे जान लें, कि तू ही परमेश्वर है, और एकमात्र
परमेश्वर है, और सारे जगत के ऊपर महिमामय है।
23 और राजा के जो कर्मचारी उनको भीतर रखते थे,
उन्होंने तन्दूर को रसिन, राल, रस्सा और लकड़ी से
गरम करना न छोड़ा;
24 यहां तक कि आग भट्टी से उनतालीस हाथ ऊपर
तक भड़क उठी।
25 और वह पार हो गई, और जो कसदी उसे भट्टी के
आस पास मिले उनको जला डाला।
26 परन्तु यहोवा का दूत अजर्याह और उसके साथियों
समेत भट्ठी में उतर आया, और आग की लौ को
जलाकर भट्ठी से बाहर निकाला;
27 और भट्ठी के बीच में ऐसा बनाया, मानो नम सीटी
बजाती हो, कि आग उन को कुछ भी न छूए, और न
उन्हें कुछ हानि पहुंचे, और न उन्हें कष्ट मिले।
28 तब उन तीनों ने भट्ठे में से एक मुंह से परमेश्वर की
स्तुति, महिमा और धन्यवाद करके कहा,
29 हे हमारे पितरोंके परमेश्वर यहोवा, तू धन्य है, और
सर्वदा सब से अधिक स्तुति और महिमा योग्य है।
30 और तेरा महिमामय और पवित्र नाम धन्य है, और
सर्वदा सब से अधिक स्तुति और महिमा के योग्य है।
31 तू अपने पवित्र तेज के मन्दिर में धन्य है, और सर्वदा
सब से अधिक स्तुति और महिमा पाता रहेगा।
32 तू धन्य है, जो गहिरे स्थानों को देखता है, और
करूबों पर बैठा है; और सर्वदा सब से अधिक स्तुति
और महिमा पाता रहेगा।
33 तू अपने राज्य के महिमामय सिंहासन पर धन्य है,
और सर्वदा सब से अधिक स्तुति और महिमा पाता
रहेगा।

34 तू स्वर्ग के अन्तर में धन्य है, और सर्वदा सर्वदा स्तुति और महिमा के योग्य है।
35 हे प्रभु के सब कामों, तुम प्रभु को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो,
36 हे स्वर्गो, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
37 हे प्रभु के दूतों, प्रभु को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
38 हे आकाश के ऊपर के सब जल, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
39 हे प्रभु की सब शक्तियों, प्रभु को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से ऊपर बढ़ाओ।
40 हे सूर्य और चन्द्रमा, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक महान करो।
41 हे आकाश के तारों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
42 हे सब वर्षा और ओस, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
43 हे सब पवनों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो,
44 हे आग और तपन, यहोवा को धन्य कहो, उसकी स्तुति करो, और उसकी बड़ाई करो हम सब हमेशा के लिए हैं।
45 हे शीत ऋतु और ग्रीष्म ऋतु, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक महान करो।
46 हे ओस और हिम के तूफ़ानों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
47 हे रातो और दिनो, यहोवा को धन्य कहो; उसे सदा आशीष दो, और सब से अधिक महान करो।
48 हे उजियाले और अन्धकार, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
49 हे बर्फ और ठण्डे लोगों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
50 हे पाले और हिम, तुम यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
51 हे बिजलियोंऔर बादलों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
52 हे पृथ्वी यहोवा का धन्यवाद करे; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक महान करो।
53 हे पहाड़ोंऔर छोटी पहाड़ियों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
54 हे पृथ्वी पर उगनेवाले सब प्राणियों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक बड़ा करो।
55 हे पर्वतो, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
56 हे समुद्रोंऔर नदियों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
57 हे व्हेलो, हे जल में रेंगनेवालो, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
58 हे आकाश के सब पक्षियों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक बड़ा करो।
59 हे सब पशुओ, और गाय-बैल, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
60 हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
61 हे इस्राएल, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक महान करो।
62 हे यहोवा के याजकों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
63 हे यहोवा के दासों, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
64 हे धर्मियों, हे आत्माओं, तुम यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
65 हे पवित्र और दीन मनवालों, यहोवा का धन्यवाद करो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो।
66 हे हनन्याह, अजर्याह, और मीसाएल, यहोवा को धन्य कहो; उसकी स्तुति करो, और उसे सर्वदा सब से अधिक ऊंचा करो; क्योंकि उस ने हम को अधोलोक से बचाया, और मृत्यु के हाथ से बचाया, और भट्ठी के बीच से छुड़ाया। और जलती हुई ज्वाला से उस ने हम को आग के बीच से भी निकाला।
67 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह दयालु है, उसकी करूणा सदा की है।
68 हे यहोवा के भजन करनेवालो, देवताओं के परमेश्वर को धन्य कहो, उसकी स्तुति करो, और उसका धन्यवाद करो; क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।



सुज़ाना

अध्याय 1

1 बाबुल में योआसिम नाम एक पुरूष रहता था;
2 और उस ने सुसन्ना नाम एक स्त्री ब्याह ली, जो चेल्कियास की बेटी, और बहुत सुन्दर और यहोवा का भय माननेवाली स्त्री थी।
3 उसके माता-पिता भी धर्मी थे, और अपनी बेटी को मूसा की व्यवस्था के अनुसार शिक्षा देते थे।
4 योआकिम बड़ा धनवान पुरूष या, और उसके घर के पास एक सुन्दर बारी थी; और यहूदी उस में शरण लेते थे; क्योंकि वह सब से अधिक प्रतिष्ठित था।
5 उसी वर्ष प्रजा के पुरनियों में से दो को न्यायी नियुक्त किया गया, जैसा कि यहोवा ने कहा था, दुष्टता बाबुल से प्राचीन न्यायियों से आई, जो लोगों पर शासन करते प्रतीत होते थे।
6 और उन्होंने योआकिम के घर में बहुत कुछ रखा; और जितनों का कोई मुकद्दमा था, वे सब उनके पास आए।
7 दोपहर को जब लोग चले गए, तो सुसन्ना अपके पति की बारी में टहलने को गई।
8 और दोनों बुजुर्गों ने उसे प्रति दिन भीतर आते-जाते देखा; जिससे उनकी वासना उसके प्रति भड़क उठी।
9 और उन्होंने अपना मन टेढ़ा कर लिया, और अपनी आंखें फेर लीं, कि वे स्वर्ग की ओर न देखें, और न्याय की बातें स्मरण न रखें।
10 और यद्यपि वे दोनों उसके प्रेम से घायल हुए, तौभी किसी को अपना दुःख दूसरे को दिखाने का साहस न हुआ।
11 क्योंकि वे अपनी अभिलाषा प्रगट करने में लज्जित हुए, कि उन्होंने उस से कुकर्म करना चाहा।
12 तौभी वे प्रति दिन उसके देखने की यत्न से चौकसी करते रहे।
13 और एक ने दूसरे से कहा, आओ, हम घर चलें: क्योंकि भोजन का समय हो गया है।
14 सो वे निकलकर एक दूसरे से अलग हो गए, और फिर उसी स्यान पर लौट आए; और इसके बाद उन्होंने एक दूसरे से कारण पूछा, और उन्होंने अपनी वासना को स्वीकार किया: फिर उन दोनों ने एक साथ एक समय निर्धारित किया, जब वे उसे अकेले पा सकें।
15 और वह निकल गई, और उन्होंने ठीक समय देखा, और वह पहिले की नाई केवल दो दासियोंके साथ भीतर गई, और बारी में अपने आप को धोना चाहा; क्योंकि धूप बहुत थी।
16 और उन दोनों बुजुर्गों को छोड़ और कोई न था, जो छिपकर उसकी देखभाल करते थे।
17 तब उस ने अपक्की सहेलियोंसे कहा, मेरे लिथे तेल और धोवन की वस्तुएं ले आओ, और बारी के द्वार बन्द करो, कि मैं अपना मुंह धोऊं।
18 और उन्होंने उस की आज्ञा के अनुसार ही किया, और बारी के द्वार बन्द किए, और जो कुछ उस ने उनको देने की आज्ञा दी थी उनको लाने के लिये आप ही गुप्त द्वारों से निकल गए; परन्तु उन्होंने पुरनियों को न देखा, क्योंकि वे छिपे हुए थे।
19 जब दासियां चली गईं, तो दोनों बुजुर्ग उठे, और उसके पास दौड़कर कहने लगे,
20 देख, बारी के द्वार बन्द हैं, कि कोई हमें देख नहीं सकता, और हम तुझ से प्रेम रखते हैं; इसलिथे हम से सम्मति लो, और हमारे साय सोओ।
21 यदि तू न चाहे, तो हम तेरे विरूद्ध गवाही देंगे, कि एक जवान तेरे साय या, और इस कारण तू ने अपक्की दासियोंको अपने पास से निकाल दिया।
22 तब सुसन्ना ने आह भर कर कहा, मैं तो चारों ओर से संकट में हूं; क्योंकि यदि मैं यह काम करूं, तो मेरे लिये मृत्यु है; और यदि ऐसा न करूं, तो तेरे हाथ से बच नहीं सकूंगा।
23 मेरे लिये तेरे हाथ में पड़ना और ऐसा न करना इस से भला है, कि मैं यहोवा के साम्हने पाप करूं।
24 इस पर सुसन्ना ऊंचे शब्द से चिल्लाई: और दोनों पुरनियों ने उसके विरूद्ध चिल्लाकर कहा।
25 तब वह दौड़ा, और बारी का द्वार खोला।
26 जब घर के सेवकों ने बारी में चिल्लाना सुना, तो वे गुप्त द्वार पर दौड़ पड़े, यह देखने के लिए कि उसके साथ क्या किया गया है।
27 परन्तु जब पुरनियों ने अपनी बात बतायी, तो सेवक बहुत लज्जित हुए, क्योंकि सुसन्ना के विषय में कभी ऐसी चर्चा न हुई थी।
28 और दूसरे दिन ऐसा हुआ, कि जब लोग उसके पति योआसिम के पास इकट्ठे हुए, तो दोनों पुरनिया भी दुष्ट कल्पना करके सुसन्ना को मार डालने की इच्छा से उसके पास आए;
29 और लोगों के साम्हने कहा, चेल्किय्याह की बेटी और योआकिम की पत्नी सुसन्ना को बुलवा भेजो। और इसलिए उन्होंने भेजा.
30 सो वह अपके माता-पिता, और बालकोंऔर अपके सब भाइयोंसमेत आई।
31 सुसन्ना बहुत कोमल स्त्री थी, और देखने में सुन्दर थी।
32 और उन दुष्टोंने उसका मुंह उघाड़ने की आज्ञा दी, (क्योंकि वह ढांपे हुए थी) कि वे उसकी सुन्दरता से तृप्त हो जाएं।

33 इस कारण उसके मित्र और जितनों ने उसे देखा, वे सब रोने लगे।
34 तब दोनों प्राचीन लोगों के बीच में खड़े हुए, और उसके सिर पर हाथ रखे।
35 और वह रोती हुई स्वर्ग की ओर देखने लगी; क्योंकि उसका मन यहोवा पर भरोसा रखता या।
36 और पुरनियों ने कहा, जब हम बारी में अकेले घूम रहे थे, तो वह स्त्री दो दासियोंके साथ भीतर आई, और बारी का द्वार बन्द करके दासियोंको विदा कर दिया।
37 तब एक जवान पुरूष जो वहां छिपा या, उसके पास आकर उसके साय सो गया।
38 तब हम जो बारी के कोने में खड़े थे, यह दुष्टता देखकर उन के पास दौड़े।
39 और जब हम ने उन को इकट्ठे देखा, तो उस पुरूष को हम रोक न सके; क्योंकि वह हम से अधिक बलवन्त था, और द्वार खोलकर बाहर निकल गया।
40 परन्तु हम ने उस स्त्री को पकड़ कर पूछा, कि वह जवान कौन है, परन्तु उस ने हम से न कहा; हम इन बातोंकी गवाही देते हैं।
41 तब मण्डली ने उन पर विश्वास किया, जो लोगों के पुरनिये और न्यायी थे: इसलिये उन्होंने उसे मार डालने की सज़ा दी।
42 तब सुसन्ना ने ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे सनातन परमेश्वर, जो भेदोंको जानता है, और सब कुछ होने से पहिले भी जानता है;
43 तू जानता है, कि उन्होंने मेरे विरूद्ध झूठी गवाही दी है, और देख, मैं मरूंगा; जबकि मैंने कभी ऐसे काम नहीं किये जो इन लोगों ने मेरे विरुद्ध दुर्भावनापूर्वक गढ़े हैं।
44 और यहोवा ने उसकी सुन ली।
45 इसलिथे जब वह मार डालने के लिथे पहुंचाई गई, तब यहोवा ने दानिय्येल नाम एक जवान लड़के में पवित्र आत्मा जगाया;
46 और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, मैं इस स्त्री के खून से शुद्ध हो गया हूं।
47 तब सब लोगोंने उन्हें उसकी ओर घुमाकर कहा, ये बातें जो तू ने कही हैं उनका क्या मतलब है?
48 तब उस ने उनके बीच में खड़े होकर कहा, हे इस्राएल के बेटों, क्या तुम ऐसे मूर्ख हो, कि बिना जांचे और सच्चाई को जाने बिना इस्राएल की बेटी को दोषी ठहराते हो?
49 न्याय के स्यान पर फिर लौट आओ; क्योंकि उन्होंने उसके विरूद्ध झूठी गवाही दी है।
50 तब सब लोग झटपट लौट आए, और पुरनियोंने उस से कहा, आ, हमारे बीच बैठ, और हमें दिखा, क्योंकि परमेश्वर ने तुझे प्राचीन का आदर दिया है।
51 तब दानिय्येल ने उन से कहा, इन दोनोंको एक दूसरे से अलग कर दो, और मैं उन्हें जांचूंगा।
52 सो जब वे एक दूसरे से अलग हो गए, तो उस ने उन में से एक को बुलाकर उस से कहा, हे दुष्ट दुष्टता में बूढ़े हो गए हो, अब तेरे पाप जो तू ने पहिले से किए थे प्रगट हो गए हैं।
53 क्योंकि तू ने झूठा न्याय सुनाया, और निर्दोष को दोषी ठहराया, और दोषी को स्वतंत्र कर दिया; यद्यपि यहोवा कहता है, निर्दोष और धर्मी को घात न करना।
54 सो यदि तू ने उसे देखा हो, तो मुझे बता, कि तू ने उन्हें किस वृक्ष के तले इकट्ठे होते देखा है? किसने उत्तर दिया, मस्तूल के पेड़ के नीचे।
55 और दानिय्येल ने कहा, बहुत अच्छा; तू ने अपने ही सिर के विरूद्ध झूठ बोला है; क्योंकि अब भी परमेश्वर के दूत को तुम्हें दो टुकड़े करने का दण्ड मिल चुका है।
56 तब उस ने उसे अलग करके दूसरे को लाने की आज्ञा दी, और उस से कहा, हे यहूदा के नहीं परन्तु कनान के वंश, सुन्दरता ने तुझे धोखा दिया है, और अभिलाषा ने तेरे मन को भ्रष्ट कर दिया है।
57 तुम ने इस्राएल की स्त्रियोंसे ऐसा ही व्यवहार किया है, और वे डर के मारे तुम्हारे संग हो गईं; परन्तु यहूदा की बेटी ने तुम्हारी बुराई करना न चाहा।
58 इसलिये अब मुझे बताओ, तू ने उन को किस वृक्ष के नीचे इकट्ठे किया? किसने उत्तर दिया, एक होम वृक्ष के नीचे।
59 तब दानिय्येल ने उस से कहा, अच्छा; तू ने भी अपने सिर के विरूद्ध झूठ बोला है; क्योंकि परमेश्वर का दूत तलवार लिये हुए तुझे टुकड़े टुकड़े करने की बाट जोह रहा है, कि तुझे सत्यानाश कर डाले।
60 तब सारी मण्डली ने ऊंचे शब्द से चिल्लाकर परमेश्वर की स्तुति की, जो अपने भरोसा रखनेवालों का उद्धार करता है।
61 और वे दोनों पुरनियों के विरूद्ध उठ खड़े हुए, क्योंकि दानिय्येल ने उन्हीं के मुंह से उनको झूठी गवाही देने का दोषी ठहराया था।
62 और उन्होंने मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा उन्होंने अपने पड़ोसियों के साथ करना चाहा था; और उन्होंने उन्हें मार डाला। इस प्रकार उसी दिन निर्दोष का खून बचाया गया।
63 इसलिये चेल्कियास और उसकी पत्नी ने और उसके पति योआकिम और सब कुटुम्बियों ने अपनी बेटी सुसन्ना के लिये परमेश्वर की स्तुति की, क्योंकि उस में कुछ भी कपट न पाया गया।
64 उस दिन से दानिय्येल लोगों की दृष्टि में बहुत प्रतिष्ठित हो गया।

Bel and the Dragon



बेल और ड्रैगन

अध्याय 1

1 और अस्तियागेस राजा अपके पुरखाओंमें जा मिला, और फारस के कुस्रू को उसका राज्य मिला।
2 और दानिय्येल राजा से बातें करता रहा, और उसका सम्मान उसके सब मित्रों से अधिक हुआ।
3 बाबुल के पास बेल नामक एक मूरत थी, और उस पर प्रति दिन बारह मन मैदा, और चालीस भेड़-बकरियां, और छ: प्याले दाखमधु व्यय किया जाता था।
4 और राजा तो उसको दण्डवत् करता और प्रति दिन उसकी दण्डवत करता या, परन्तु दानिय्येल अपके परमेश्वर को दण्डवत् करता या। और राजा ने उस से कहा, तू बेल की पूजा क्यों नहीं करता?
5 उस ने उत्तर दिया, क्योंकि मैं हाथ की बनाई हुई मूरतोंको नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर को दण्डवत करूंगा, जिस ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया, और सब प्राणियोंपर प्रभुता करता है।
6 तब राजा ने उस से कहा, क्या तू नहीं समझता, कि बेल जीवित परमेश्वर है? क्या तुम नहीं देखते कि वह प्रति दिन कितना खाता-पीता है?
7 तब दानिय्येल ने मुस्कुराकर कहा, हे राजा, धोखा न खाओ; क्योंकि यह भीतर तो मिट्टी और बाहर पीतल है, और इसने कभी कुछ खाया-पिया नहीं।
8 तब राजा क्रोधित हुआ, और उसने अपने याजकों को बुलाकर उन से कहा, यदि तुम मुझे न बताओ, कि यह खर्चा उठाने वाला कौन है, तो तुम मर जाओगे।
9 परन्तु यदि तुम मुझे प्रगट कर सको, कि बेल उनको निगल जाता है, तो दानिय्येल मार डाला जाए; क्योंकि उस ने बेल के विषय में निन्दा की बात कही है। और दानिय्येल ने राजा से कहा, तेरे वचन के अनुसार ही हो।
10 बेल के याजक अपनी पत्नियोंऔर बच्चोंको छोड़ सत्तर पुरूष थे। और राजा दानिय्येल के साथ बेल के मन्दिर में गया।
11 बेल के याजकोंने कहा, लो, हम तो बाहर जाते हैं; परन्तु हे राजा, तू मांस पर रखकर दाखमधु तैयार कर, और द्वार को बन्द करके अपनी ही मुहर से बन्द कर;
12 और कल जब तू भीतर आए, और न पाए, कि बेल ने सब कुछ खा लिया है, तो हम मार डाले जाएंगे; नहीं तो दानिय्येल, जो हम से झूठ बोलता है।
13 और उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया; क्योंकि मेज़ के नीचे उन्होंने गुप्त प्रवेश द्वार बना रखा था, जिस से वे निरन्तर भीतर प्रवेश करते और उन वस्तुओं को खा जाते थे।
14 सो जब वे चले गए, तो राजा ने बेल के साम्हने भोजनवस्तु रख दी। दानिय्येल ने अपने सेवकों को राख लाने की आज्ञा दी थी, और उन्होंने उसे अकेले राजा के साम्हने सारे मन्दिर में बिखेर दिया; तब उन्होंने बाहर जाकर द्वार बन्द किया, और उस पर राजा की मुहर लगा दी, और चले गए।
15 रात को याजक अपनी पत्नियोंऔर बच्चोंसमेत, जैसा वे चाहते थे, आए, और सब खाया पिया।
16 बिहान को राजा उठा, और दानिय्येल उसके संग था।
17 और राजा ने पूछा, हे दानिय्येल, क्या मोहरें पूरी हैं? और उस ने कहा, हां, हे राजा, वे पूरे हो जाएं।
18 और जैसे ही उस ने द्वार खोला, राजा ने मेज पर दृष्टि करके ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे बेल, तू महान है, और तुझ से कुछ भी छल नहीं हुआ।
19 तब दानिय्येल हंसा, और राजा को समझाया, कि वह भीतर न जाए, और कहा, फुटपाथ को देख, और अच्छी तरह पहचान ले कि ये किसके पदचिन्ह हैं।
20 और राजा ने कहा, मैं पुरूष, स्त्री, और बालकोंके पदचिह्न देखता हूं। और तब राजा क्रोधित हुआ,
21 और याजकोंको उनकी स्त्रियोंऔर बालकोंसमेत ले लिया, और उस को वे गुप्त द्वार बता दिए, जहां से वे आया करते थे, और जो कुछ मेज़ पर रखा या, उसे खाया करते थे।
22 इसलिये राजा ने उनको घात किया, और बेल को दानिय्येल के वश में कर दिया, और उस ने उसे और उसके मन्दिर को भी नाश कर दिया।
23 और उसी स्थान में एक बड़ा अजगर या, जिसे बाबुल के लोग दण्डवत् करते थे।
24 और राजा ने दानिय्येल से कहा, क्या तू भी कहेगा, कि यह पीतल का है? देखो, वह जीवित है, वह खाता-पीता है; तुम यह नहीं कह सकते कि वह जीवित ईश्वर नहीं है: इसलिये उसकी पूजा करो।
25 तब दानिय्येल ने राजा से कहा, मैं अपके परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूंगा; क्योंकि वह जीवता परमेश्वर है।
26 परन्तु हे राजा, मुझे आज्ञा दे, और मैं इस अजगर को बिना तलवार वा लाठी के मार डालूंगा। राजा ने कहा, मैं तुम्हें छुट्टी देता हूं।
27 तब दानिय्येल ने राल, चर्बी, और बाल लेकर उन्हें एक साथ इकट्ठा किया, और उनके लोथड़े बनाए; यह उस ने अजगर के मुंह में डाला, और अजगर टुकड़े टुकड़े हो गया; और दानिय्येल ने कहा, देख, ये ही देवता हैं पूजा करना।
28 यह सुनकर बाबुल के लोग बहुत क्रोधित हुए, और राजा के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके कहने लगे, कि राजा यहूदी बन गया है, और उस ने बेल को नाश किया, और अजगर को घात किया, और याजकों को मार डाला।
29 तब वे राजा के पास आकर कहने लगे, दानिय्येल को हमें सौंप दे, नहीं तो हम तुझे तेरे घराने समेत नाश कर डालेंगे।
30 जब राजा ने देखा, कि वे उसे बहुत दबा रहे हैं, तब उसने विवश होकर दानिय्येल को उनके हाथ में सौंप दिया।
31 जिस ने उसे सिंहों की मांद में डाल दिया, वहां वह छ: दिन तक रहा।
32 और मांद में सात सिंह थे, और वे उनको दो लोय और दो भेड़-बकरियां प्रति दिन दिया करते थे; परन्तु वे उन्हें इस मनसा से न देते थे, कि दानिय्येल को खा जाएं।
33 यहूदिया में हब्बाकूक नाम एक भविष्यद्वक्ता था, जो रोटी बनाकर कटोरे में तोड़ता या, और काटनेवालोंके पास ले आने को खेत में जाता या।
34 परन्तु यहोवा के दूत ने हब्बाकूक से कहा, जा, जो भोजन तू करेगा उसे बाबुल में दानिय्येल के पास जो सिंहों की मांद में है ले जा।
35 और हब्बाकूक ने कहा, हे प्रभु, मैं ने कभी बेबीलोन नहीं देखा; न ही मैं जानता हूं कि मांद कहां है.
36 तब यहोवा के दूत ने उसका मुकुट पकड़कर उसके सिर के बालोंको पकड़कर उसे उठाया, और उसकी आत्मा के तेज के कारण उसे बाबुल में मांद के ऊपर खड़ा कर दिया।
37 और हब्बाकूक ने चिल्लाकर कहा, हे दानिय्येल, हे दानिय्येल, जो भोजन परमेश्वर ने तुझे भेजा है उसे ले ले।
38 और दानिय्येल ने कहा, हे परमेश्वर, तू ने मुझे स्मरण किया है; और जो तेरे खोजी और तुझ से प्रेम रखते हैं, उन्हें तू ने नहीं त्यागा।
39 तब दानिय्येल ने उठकर भोजन किया; और यहोवा के दूत ने हब्बाकूक को तुरन्त उसके स्थान में खड़ा कर दिया।
40 सातवें दिन राजा दानिय्येल के लिये विलाप करने को गया; और गड़हे के पास पहुंचकर उस ने दृष्टि करके क्या देखा, कि दानिय्येल बैठा है।
41 तब राजा ने ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे दानिय्येल के परमेश्वर यहोवा, तेरे सिवा कोई दूसरा नहीं।
42 और उस ने उसे बाहर निकाला, और जो उसके नाश का कारण थे उनको गड़हे में डाल दिया, और वे उसके साम्हने से पल भर में भस्म हो गए।



Prayer of Manasseh

मनश्शे की प्रार्थना

मनश्शे की प्रार्थना

हे प्रभु, हमारे पितरों इब्राहीम, इसहाक, और याकूब और उनके धर्मी वंश के सर्वशक्तिमान परमेश्वर; जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी को उसकी सारी सजावट समेत बनाया; जिस ने तेरी आज्ञा के द्वारा समुद्र को बान्धा है; जिस ने गहिरे जल को बन्द कर दिया, और अपने भयानक और महिमामय नाम के द्वारा उस पर मुहर कर दी, जिससे सब मनुष्य डरते हैं, और तेरे बल के सामने कांपते हैं; क्योंकि तेरी महिमा का तेज सहा नहीं जा सकता, और पापियों के प्रति तेरी क्रोध की धमकी भीषण है: परन्तु तेरी प्रतिज्ञिक करुणाएँ अथाह और अप्राप्य हैं; क्योंकि तू परमप्रधान, हे प्रभु, कृपालु, सहनशील, बहुत दयालु और मनुष्यों की बुराइयों पर पश्चाताप करने वाला है। हे प्रभु, तूने अपनी कोमल कृपा के अनुसार उन लोगों जो अपने पापों पर पश्चाताप करते हैं, क्षमा का वादा किया, जिन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है: और अपनी बड़ी दया से पापियों से लौट आने की छूट दी, ताकि वे उद्धार पा सकें। अतःहे प्रभु, तू जो धर्मियों का परमेश्वर है, तूने इब्राहीम, और इसहाक, और याकूब के समान धर्मियोंको मन फिराने की आज्ञा नहीं दी, जिन्होंने तेरे विरूद्ध पाप नहीं किया; परन्तु तूने मुझ पापी के लिये मन फिराव का काम ठहराया है; क्योंकि मैं ने समुद्र की बालू की गिनती से भी अधिक पाप किया है। प्रभु, मेरे अपराध बहुत बढ़ गए हैं; मेरे अपराध बहुत बढ़ गए हैं, और मैं अपने बहुत पापों के कारण स्वर्ग की ऊंचाई को देखने के योग्य नहीं हूँ। मैं लोहे की बहुत सी बेड़ियों से दबा दिया गया हूँ, यहाँ तक कि अपना सिर उठा नहीं पाता, और न छूट पाता हूँ; क्योंकि मैं ने तेरा क्रोध भड़काया है, तेरे सामने बुराई की, पराए देवताओं प्रतिष्ठित की; और बहुत से अपराध किए हैं। इसलिये अब मैं अपने गहरे हृदय के घुटने टेककर तुझ से अनुग्रह की याचना करता हूं। मैंने पाप किया है, हे प्रभु, मैंने पाप किया है। मैं अपना उल्लंघन जानता हूँ और मेरे पाप तेरी सम्मुख स्वीकार करता हूँ: इसलिए, मैं तुझसे विनती करता हूँ। मैं तुझसे याचना करता हूँ: मुझे क्षमा कर, हे प्रभु, मुझे क्षमा कर। मेरे अधर्म के साथ मुझे नष्ट मत कर। मेरे बुराई कामों सदा सर्वदा स्मरण न कर, और न ही मुझे पृथ्वी के निचले भागों में दोषी ठहरा; क्योंकि तू ही परमेश्वर है, उन अपने पापों से मन फिरानेवालों का भी परमेश्वर। अपनी विशाल करुणा के अद्भुत मुझ में प्रगट कर। यद्यपि मैं अयोग्य हूँ, अपनी बड़ी दया के अनुसार मुझे उद्धार ले। और मैं जीवन भर तेरी स्तुति करता रहूंगा; क्योंकि स्वर्ग की सभी शक्तियां तेरी स्तुति करती हैं, और तेरी महिमा युग-युग तक। आमीन।



पहला मैकाबीज़

अध्याय 1

1 और ऐसा हुआ, कि फिलिप्पुस के पुत्र मैसेडोनियावासी सिकन्दर ने, जो चेत्तीम देश से आया था, फारसियों और मादियों के राजा दारा को परास्त किया, और उसके स्थान पर यूनान पर प्रथम राज्य करने लगा,
2 और बहुत सी लड़ाइयां लड़ीं, और बहुत से गढ़ोंको जीत लिया, और पृथ्वी के राजाओंको घात किया,
3 और पृथ्वी की छोर तक जाकर बहुत सी जातियोंको लूट लिया, यहां तक कि पृथ्वी उसके साम्हने शान्त हो गई; जिससे वह ऊँचा हो गया और उसका हृदय ऊँचा हो गया।
4 और उस ने एक बड़ी सामर्थी सेना इकट्ठी की, और देशों, और जातियों, और राजाओं पर प्रभुता करने लगा, जो उसके सहायक बन गए।
5 और इन बातों के बाद वह बीमार पड़ गया, और जान लिया कि मैं मर जाऊंगा।
6 इसलिथे उस ने अपके दासोंको जो प्रतिष्ठित थे, और उसके बचपन से उसके साय पाले हुए थे, बुलवाया, और जब तक वह जीवित रहा तब तक अपना राज्य उनको बांट दिया।
7 इस प्रकार सिकन्दर बारह वर्ष तक राज्य करता रहा, और फिर मर गया।
8 और उसके सेवक अपके स्यान पर प्रभुता करने लगे।
9 और उसकी मृत्यु के बाद उन सब ने अपने ऊपर राजमुकुट धारण किए; उनके पीछे उनके बेटे भी बहुत वर्ष तक वैसा ही करते रहे; और पृथ्वी पर विपत्तियां बहुत बढ़ गईं।
10 और उन में से एपिफेनेस नाम एक दुष्ट अन्ताकिया निकला, जो अन्ताकिया राजा का पुत्र था, जो रोम में बन्धक था, और यूनानियों के राज्य के एक सौ सैंतीसवें वर्ष में राज्य करता था।
11 उन दिनोंमें दुष्ट लोग इस्राएल में से निकलकर वहां आते थे, और बहुतोंको यह कहकर फुसलाते थे, कि आओ, हम अपने चारोंओर के अन्यजातियोंके साथ वाचा बान्धें; क्योंकि जब से हम उन से अलग हुए हैं, तब से हमें बहुत ही दु:ख हुआ है।
12 इसलिये इस युक्ति ने उन्हें बहुत प्रसन्न किया।
13 तब प्रजा में से कुछ लोग यहां तक आगे बढ़े, कि राजा के पास गए, और उस ने उन्हें अन्यजातियोंकी विधियोंके अनुसार करने की आज्ञा दी।
14 तब उन्होंने यरूशलेम में अन्यजातियों की रीति के अनुसार व्यायाम का एक स्थान बनाया;
15 और अपने आप को खतनाहीन बना लिया, और पवित्र वाचा को त्याग दिया, और अन्यजातियों में मिल गए, और बुराई करने के लिये बेच दिए गए।
16 अब जब अन्ताकिया के साम्हने राज्य स्थापित हुआ, तो उस ने मिस्र पर राज्य करने की सोची, कि उसे दो प्रदेशों का अधिकार हो जाए।
17 इस कारण वह बड़ी भीड़, और रथ, और हाथी, और सवार, और बड़ी नौसेना ले कर मिस्र में दाखिल हुआ।
18 और मिस्र के राजा पतोलेमी से युद्ध किया; परन्तु पतोलेमी उससे डरकर भाग गया; और कई लोग घायल होकर मर गये।
19 इस प्रकार उन्हें मिस्र देश में दृढ़ नगर मिल गए, और उस ने उनकी लूट भी ले ली।
20 और जब अन्ताकिया ने मिस्र को जीत लिया, उसके बाद एक सौ तैंतालीसवें वर्ष में वह फिर लौट आया, और बड़ी भीड़ लेकर इस्राएल और यरूशलेम पर चढ़ाई की।
21 और घमण्ड से पवित्रस्थान में घुस गए, और सोने की वेदी, और दीवट और सारा सामान उठा ले गए।
22 और भेंट की रोटी की मेज़, और उण्डेलने के पात्र, और कटोरे। और सोने के धूपदान, और पर्दा, और मुकुट, और सोने के आभूषण जो मन्दिर के साम्हने थे, सब को उस ने उखाड़ लिया।
23 और उस ने चान्दी, सोना, और बहुमोल पात्र भी ले लिया; और जो छिपा हुआ खज़ाना उसे मिला, वह भी उसने ले लिया।
24 और सब कुछ छीनकर वह अपने निज देश में गया, और बड़ा घात किया, और बड़े घमण्ड से बोलने लगा।
25 इस कारण इस्राएल में जहां जहां वे थे वहां बड़ा शोक हुआ;
26 यहां तक कि हाकिमों और पुरनियों ने शोक किया, कुंवारियां और जवान पुरूष निर्बल हो गए, और स्त्रियोंकी शोभा बदल गई।
27 और सब दूल्हे ने विलाप किया, और जो ब्याह के घर में बैठी थी, वह उदास हो गई।
28 और भूमि उसके निवासियोंके लिथे उजड़ गई, और याकूब का सारा घराना घबरा गया।
29 और दो वर्ष के पूरे होने पर राजा ने यहूदा के नगरोंमें कर वसूलनेवालोंके प्रधान को भेजा, और वह बड़ी भीड़ समेत यरूशलेम को आया।
30 और उन से मेल की बातें कही, परन्तु सब धोखा निकला; क्योंकि जब उन्होंने उस पर विश्वास किया, तब उस ने अचानक नगर पर धावा बोल दिया, और उसे बहुत बुरी तरह से मार डाला, और इस्राएल के बहुत से लोगों को नष्ट कर दिया।
31 और जब उस ने नगर की लूट ले ली, तब उस में आग लगा दी, और चारों ओर के घरोंऔर दीवारोंको ढा दिया।
32 परन्तु स्त्रियोंऔर बालकोंको बन्धुवाई में ले गए, और पशुओंको अपने अधिकार में कर लिया।
33 फिर उन्होंने दाऊद का नगर बड़ा और दृढ़ शहरपनाह, और ऊंचे गुम्मटोंके साथ बनाया, और उसे अपने लिथे दृढ़ गढ़ बनाया।
34 और उन्होंने उस में एक पापी जाति अर्यात् दुष्ट मनुष्य बसाए, और उस में अपने आप को दृढ़ किया।
35 और उन्होंने उसको हथियार और भोजनवस्तु समेत रखा, और यरूशलेम की लूट को इकट्ठा करके वहीं रख दिया, और वे गले का फन्दा बन गए।
36 क्योंकि वह पवित्रस्थान के साम्हने घात करने का स्थान, और इस्राएल का दुष्ट बैरी था।
37 इस प्रकार उन्होंने पवित्रस्थान के चारोंओर निर्दोष का खून बहाया, और उसे अशुद्ध किया;
38 यहां तक कि यरूशलेम के निवासी उनके डर से भाग गए, और वह नगर परदेशियों का निवासस्थान बन गया, और उस में उत्पन्न होनेवालोंके लिथे पराया हो गया; और उसके अपने बच्चों ने उसे छोड़ दिया।
39 उसका पवित्रस्थान जंगल के समान उजाड़ हो गया, उसके उत्सव शोक में बदल गए, उसके विश्रामदिन उसकी महिमा की निन्दा में बदल गए।
40 जैसी उसकी महिमा थी, वैसे ही उसका अनादर भी बढ़ता गया, और उसकी महिमा शोक में बदल गई।
41 फिर राजा अन्ताकिया ने अपने सारे राज्य को यह लिख भेजा, कि सब एक ही लोग हों।
42 और सब लोग अपना अपना नियम छोड़ दें: इस प्रकार राजा की आज्ञा के अनुसार सब अन्यजातियां एक मन हो गईं।
43 हां, इस्राएलियों में से भी बहुत से लोग उसके धर्म पर सहमत हुए, और मूर्तियों के आगे बलि चढ़ाए, और विश्रामदिन को अपवित्र किया।
44 क्योंकि राजा ने यरूशलेम और यहूदा के नगरोंको दूतोंके द्वारा चिट्ठियां भेजी थीं, कि वे देश की अनोखी विधियोंका पालन करें।
45 और मन्दिर में होमबलि, और मेलबलि, और अर्घ देना मना करो; और वे विश्रामदिनों और पर्व के दिनोंको अपवित्र करें;
46 और पवित्रस्थान और पवित्र लोगोंको अशुद्ध करो;
47 वेदियां, अशेरा, और मूरतें बनवाना, और सूअर और अशुद्ध पशुओं का मांस बलि करना;
48 कि वे अपने लड़केबालोंको भी खतनारहित छोड़ दें, और उनके मन को सब प्रकार की अशुद्धता और अपवित्रता करके घृणित करें।
49 अन्त में वे व्यवस्था को भूल जाएंगे, और सब नियमों को बदल देंगे।
50 और उस ने कहा, जो कोई राजा की आज्ञा के अनुसार न करे, वह मार डाला जाए।
51 इसी रीति से उस ने अपके सारे राज्य के लिथे लिखा, और सारी प्रजा पर अध्यक्ष ठहराए, और यहूदा के नगरोंको नगर नगर बलिदान करने की आज्ञा दी।
52 तब बहुत लोग व्यवस्या को त्यागनेवालोंके पास इकट्ठे हो गए; और इस प्रकार उन्होंने देश में बुराइयां कीं;
53 और इस्राएलियों को गुप्त स्थानों में, यहां तक कि जहां कहीं वे सहायता के लिये भाग सकें, वहां खदेड़ दिया।

54 अब एक सौ पैंतालीसवें वर्ष के महलू महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्होंने उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को वेदी पर स्थापित किया, और यहूदा के नगरोंमें चारोंओर मूरतें वेदियां बनाईं;
55 और अपने अपने घरोंके द्वारोंऔर सड़कोंपर धूप जलाया।
56 और जो व्यवस्था की पुस्तकें उन्हें मिलीं, उनको उन्होंने टुकड़े-टुकड़े करके आग में जला दिया।
57 और जिस किसी के पास वसीयत की कोई पुस्तक पाई जाए, वा व्यवस्था का पालन करनेवाला हो, तो राजा की आज्ञा हुई, कि उसे मार डाला जाए।
58 और वे अपके अधिकार के अनुसार इस्राएलियोंसे, जितने नगरोंमें पाए जाते थे, उन से प्रति माह ऐसा ही किया करते थे।
59 और उस महीने के पचीसवें दिन को उन्होंने उस मूरतवेदी पर जो परमेश्वर की वेदी पर या, बलिदान किया।
60 उस समय उन्होंने आज्ञा के अनुसार कुछ स्त्रियोंको मार डाला, जो अपने बालकोंका खतना कराती थीं।
61 और उन्होंने बच्चोंके गले में फाँसी दी, और उनके घरोंमें तोड़फोड़ की, और उनका खतना करनेवालोंको घात किया।
62 तौभी इस्राएल में बहुतोंने ठान लिया, और अपने आप में ठान लिया, कि कोई अशुद्ध वस्तु न खाएंगे।
63 इस कारण वे मरना ही चाहते हैं, कि वे भोजन करके अशुद्ध न हो जाएं, और पवित्र वाचा को अपवित्र न करें: इसलिथे वे मर गए।
64 और इस्राएल पर बहुत बड़ा क्रोध भड़का।

अध्याय दो

1 उन दिनोंमें मत्तत्याह जो यूहन्ना का पुत्र और शिमोन का पोता या, जो योआरीबियोंका याजक था, यरूशलेम से उठा, और मोदीन में रहने लगा।
2 और उसके पांच बेटे, जोआनन, कैडिस कहलाते थे:
3 शमौन; थस्सी कहा जाता है:
4 यहूदा, जो मैकाबेयुस कहलाता था:
5 एलीआजर जो अवारन कहलाता या, और योनातान जिसका उपनाम अप्पुस या।
6 और जब उस ने यहूदा और यरूशलेम में निन्दा के काम होते देखे,
7 उस ने कहा, हाय मुझ पर! मैं अपनी प्रजा और पवित्र नगर की यह दुर्दशा देखने और उस में रहने के लिये क्यों उत्पन्न हुआ, जब वह शत्रु के वश में और पवित्रस्थान परदेशियों के वश में कर दिया गया था?
8 उसका मन्दिर महिमाहीन मनुष्य के समान हो गया है।
9 उसके शोभायमान पात्र बन्धुवाई में ले जाए गए, उसके बच्चे सड़कों पर घात किए गए, और उसके जवान शत्रु की तलवार से घात किए गए।
10 कौन सी जाति है, जो उसके राज्य में भाग न ले, और उसकी लूट में से कुछ न पाए हो?
11 उसके सब गहने छीन लिये गए; वह स्वतंत्र स्त्री से दास बन गई है।
12 और देखो, हमारा पवित्रस्थान, अर्थात् हमारी शोभा और महिमा, उजाड़ हो गई है, और अन्यजातियों ने उसे अपवित्र कर दिया है।
13 इसलिये हम अब किस प्रयोजन के लिये जीवित रहेंगे?
14 तब मत्तत्याह और उसके पुत्रों ने अपने वस्त्र फाड़े, और टाट ओढ़ लिया, और बहुत बड़ा शोक करने लगे।
15 इतने में राजा के हाकिम जो प्रजा को बलवा करने को विवश करते थे, उनको बलि चढ़ाने के लिये मोदीन नगर में आए।
16 और जब इस्राएल में से बहुतेरे उनके पास आए, तब मत्तत्याह और उसके पुत्र भी इकट्ठे हुए।
17 तब राजा के हाकिमों ने मत्तत्याह को इस प्रकार उत्तर दिया, कि तू इस नगर में हाकिम और प्रतिष्ठित और बड़ा पुरूष है, और बेटोंऔर भाइयोंके साय बलवन्त है।
18 इसलिये अब तू पहिले आकर राजा की आज्ञा पूरी कर, जैसा सब अन्यजातियों ने किया, वरन यहूदा के पुरूषों ने भी किया, और जो यरूशलेम में रह गए हैं, उसी प्रकार तू और तेरा घराना राजा के गिनती में हो। मित्रों, और तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को चाँदी और सोने और बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा।
19 तब मत्तत्याह ने ऊंचे शब्द से उत्तर दिया, यद्यपि जितनी जातियां राजा के अधीन हैं, वे सब उसकी आज्ञा मानते हैं, और अपने-अपने पुरखाओं के धर्म से भटक जाते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं।
20 तौभी मैं और मेरे बेटे और मेरे भाई अपने पुरखाओं की वाचा पर चलेंगे।
21 परमेश्वर न करे, कि हम व्यवस्था और नियमों को त्याग दें।
22 हम राजा की बात न मानेंगे, कि अपने धर्म से न तो दाहिनी ओर चलें, और न बाईं ओर।
23 जब वह ये बातें कह चुका, तो यहूदियों में से एक राजा की आज्ञा के अनुसार सब लोगोंके देखते मोदीन की वेदी पर बलि चढ़ाने को आया।
24 यह देखकर मत्तिय्याह जोश से जल उठा, और उसकी लगाम कांप उठी, और न्याय के अनुसार अपना क्रोध प्रकट करना न छोड़ सका; इस कारण उस ने दौड़कर उसे वेदी पर मार डाला।
25 और राजा के हाकिम को भी, जो मनुष्योंको बलि चढ़ाने को विवश करता या, उस ने उसी समय मार डाला, और वेदी को ढा दिया।
26 और उस ने परमेश्वर की व्यवस्था के लिथे वैसा ही उत्साह से काम किया, जैसा पीनियोंने सलोमी के पुत्र जाम्बरी के साय किया या।
27 और मत्तत्याह ने नगर भर में ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, जो कोई व्यवस्था पर सरगर्म हो, और वाचा को माने, वह मेरे पीछे हो ले।
28 सो वह और उसके बेटे पहाड़ों पर भाग गए, और अपना सब कुछ नगर में छोड़ दिया।
29 तब बहुत से न्याय और न्याय के चाहनेवाले जंगल में जाकर रहने लगे;
30 वे दोनों, और उनके लड़केबाले, और उनकी स्त्रियां; और उनके मवेशी; क्योंकि उन पर क्लेश बढ़ता ही गया।
31 जब राजा के कर्मचारियोंको और दाऊद के नगर यरूशलेम में रहनेवाली सेना को यह समाचार मिला, कि कुछ मनुष्य राजा की आज्ञा को तोड़ कर जंगल के गुप्त स्थानों में चले गए हैं,
32 और उन्होंने बड़ी संख्या में उनका पीछा किया, और उन्हें पकड़कर उनके विरुद्ध डेरे खड़े किए, और विश्राम के दिन उन से युद्ध किया।
33 और उन्होंने उन से कहा, जो कुछ तुम ने अब तक किया है, वह पूरा हो जाए; आगे आओ, और राजा की आज्ञा के अनुसार करो, और तुम जीवित रहोगे।
34 परन्तु उन्होंने कहा, हम विश्रामदिन को अपवित्र करने के लिये न निकलेंगे, और न राजा की आज्ञा के अनुसार चलेंगे।
35 तब उन्हों ने वेग से उन से युद्ध किया।
36 तौभी उन्होंने उनको उत्तर न दिया, न उन पर पत्थर फेंके, और न उन स्यानों को रोका जहां वे छिपते थे;
37 परन्तु कहा, आओ हम सब निर्दोष होकर मरें; आकाश और पृथ्वी हमारे लिये गवाही देंगे, कि तुम ने हम को अन्याय से मार डाला।
38 सो उन्होंने विश्राम के दिन उन पर युद्ध करके चढ़ाई की, और उनको उनकी स्त्रियों, बच्चों, और पशुओंसमेत एक हजार तक मार डाला।
39 अब जब मत्तिय्याह और उसके मित्रों को यह बात समझ में आई, तो वे उनके लिये बहुत शोक करने लगे।
40 और उन में से एक ने दूसरे से कहा, यदि हम सब अपने भाइयों के समान करें, और अन्यजातियों के विरुद्ध अपने प्राण और व्यवस्था के लिये न लड़ें, तो वे हमें तुरन्त पृथ्वी पर से उखाड़ डालेंगे।
41 इसलिथे उस समय उन्होंने यह आज्ञा दी, कि जो कोई विश्राम के दिन हम से लड़ने को आए, हम उस से लड़ेंगे; न ही हम सब अपने भाइयों की तरह मरेंगे जो गुप्त स्थानों में मारे गए थे।
42 तब अस्सीदियों का एक दल जो इस्राएल के शूरवीर थे, और सब स्वेच्छा से व्यवस्था के प्रति समर्पित थे, उसके पास आए।
43 और जितने उपद्रव के मारे भागे थे वे सब उनके साथ मिल गए, और उनका आश्रय बन गए।
44 इसलिये उन्होंने अपनी अपनी सेनाएं इकट्ठी कीं, और क्रोध से पापियों को, और क्रोध से दुष्टों को मारा; परन्तु जो बचे थे वे सहायता पाने के लिये अन्यजातियों की ओर भाग गए।
45 तब मत्तत्याह और उसके मित्रों ने घूमकर वेदियां गिरा दीं;
46 और उनको इस्राएल के सिवाने में जो लड़के खतनारहित मिले, उनका उन्होंने वीरता से खतना किया।

47 और उन्होंने घमण्डियोंका पीछा किया, और काम उनके हाथ से सफल हुआ।
48 सो उन्होंने अन्यजातियों और राजाओं के हाथ से व्यवस्था छीन ली, और पापी को जयवन्त न होने दिया।
49 जब मत्तिय्याह के मरने का समय निकट आया, तब उस ने अपने पुत्रोंसे कहा, अब अभिमान और डांट बलवन्त हो गए हैं, और विनाश का समय, और क्रोध का प्रकोप बढ़ गया है।
50 इसलिये अब हे मेरे पुत्रों, तुम व्यवस्था के लिये जोशीले बनो, और अपने पुरखाओं की वाचा के लिये अपना प्राण दे दो।
51 स्मरण करो कि हमारे बाप दादों ने अपने समय में क्या क्या काम किए थे; इस प्रकार तुम महान् सम्मान और सदाबहार नाम पाओगे।
52 क्या इब्राहीम परीक्षा में विश्वासयोग्य नहीं निकला, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया?
53 यूसुफ ने संकट के समय में आज्ञा मानी, और मिस्र का स्वामी ठहराया गया।
54 हमारे पिता पीनीस ने जोशीले और उत्साही होने के कारण चिरस्थायी याजकपद की वाचा प्राप्त की।
55 यीशु वचन को पूरा करने के लिये इस्राएल में न्यायी ठहराया गया।
56 कालेब को मण्डली के साम्हने गवाही देने के कारण उस देश का भाग मिला।
57 दाऊद ने दयालु होने के कारण अनन्त राज्य का सिंहासन प्राप्त किया।
58 एलिय्याह व्यवस्था के प्रति उत्साही और उत्साही होने के कारण स्वर्ग पर उठा लिया गया।
59 हनन्याह, अजर्याह और मीसाएल विश्वास करके आग से बच गए।
60 दानिय्येल अपनी निर्दोषता के कारण सिंहों के मुंह से छुड़ाया गया।
61 और युग युग में तुम इसी प्रकार विचार करते रहो, कि जो कोई उस पर भरोसा रखता है, वह प्रबल न हो।
62 तो पापी मनुष्य की बातों से मत डरो; क्योंकि उसकी महिमा गोबर और कीड़ों से होगी।
63 वह आज तो ऊंचे पर उठाया जाएगा, और कल उसका पता न मिलेगा, क्योंकि वह मिट्टी में मिल जाएगा, और उसका विचार व्यर्थ जाएगा।
64 इसलिये, हे मेरे पुत्रों, शूरवीर बनो और व्यवस्था के पक्ष में अपने आप को पुरूष दिखाओ; क्योंकि इसके द्वारा तुम महिमा प्राप्त करोगे।
65 और सुन, मैं जानता हूं, कि तेरा भाई शमौन बुद्धिमान मनुष्य है, उसकी कान हमेशा कान लगाया करो; वह तुम्हारा पिता ठहरेगा।
66 और यहूदा मकाबियुस बचपन से ही पराक्रमी और बलवन्त रहा है; वह तेरा प्रधान हो, और प्रजा की लड़ाई में लड़े।
67 और उन सभोंको जो व्यवस्था पर चलते हैं, अपके पास ले लो, और अपक्की प्रजा के अधर्म का पलटा लो।
68 अन्यजातियों को पूरा बदला दो, और व्यवस्था की आज्ञाओं पर ध्यान दो।
69 तब उस ने उनको आशीर्वाद दिया, और अपने पुरखाओं में जा मिला।
70 और वह एक सौ छियालीसवें वर्ष में मर गया, और उसके पुत्रों ने उसे मोदीन में उसके पुरखाओं की कब्रों में मिट्टी दी, और सारे इस्राएल ने उसके लिये बड़ा विलाप किया।

अध्याय 3

1 तब उसका पुत्र यहूदा जो मैकाबेयुस कहलाता था, उसके स्यान पर उठा।
2 और उसके सब भाइयोंऔर जितनोंने उसके पिता का साथ दिया, उन सब ने उसकी सहायता की, और इस्राएल की लड़ाई में वे हर्ष से लड़े।
3 इसलिथे उस ने अपक्की प्रजा का बड़ा आदर किया, और दैत्य के समान झिलम पहिनाया, और अपने चारोंओर युद्ध के समान कमर बान्धा, और अपनी तलवार से सेना की रक्षा करते हुए लड़ने लगा।
4 उसके काम में वह सिंह के समान था, और अहेर के लिये गरजनेवाले सिंह के बच्चे के समान था।
5 क्योंकि उस ने दुष्टों का पीछा करके उनको ढूंढ़ लिया, और जो उसकी प्रजा को सताते थे उनको भस्म कर डाला।
6 इस कारण दुष्ट लोग उसके भय से सिकुड़ गए, और सब कुकर्म करनेवाले व्याकुल हो गए, क्योंकि उसके हाथ से उद्धार का काम पूरा हुआ।
7 उस ने बहुत से राजाओं को भी उदास किया, और याकूब को अपने कामों से आनन्दित किया, और उसका स्मरण सदा के लिये धन्य है।
8 फिर वह यहूदा के नगरोंमें घूमकर उन में से दुष्टोंको नाश करता, और इस्राएल का क्रोध दूर करता गया।
9 यहां तक कि वह पृथ्वी की छोर तक प्रसिद्ध हो गया, और जो नाश होने पर थे, उनको उस ने अपने पास पा लिया।
10 तब अपोलोनियुस ने इस्राएल से लड़ने के लिथे अन्यजातियोंको, और सामरिया से एक बड़ी सेना को इकट्ठा किया।
11 यह बात जब यहूदा को मालूम हुई, तब वह उसका साम्हना करने को आगे बढ़ा, और उस ने उसे मारकर घात किया; और बहुत से लोग मारे गए, परन्तु और भाग गए।
12 इस कारण यहूदा ने उनका लूट लिया, और अपोलोनियुस की तलवार भी ले ली, और उसी से वह जीवन भर लड़ता रहा।
13 जब सेरोन नाम अराम की सेना के हाकिम ने यह सुना, कि यहूदा ने युद्ध करने के लिथे विश्वासियोंकी बड़ी भीड़ और मण्डली अपने पास इकट्ठी की है;
14 उस ने कहा, मैं राज्य में अपना नाम और आदर करूंगा; क्योंकि मैं यहूदा और उसके साथियों से लड़ने जाऊंगा, जो राजा की आज्ञा का तिरस्कार करते हैं।
15 तब उस ने उसको चढ़ाई करने को तैयार किया, और दुष्टोंकी एक बड़ी सेना उस की सहायता करने और इस्राएलियोंसे पलटा लेने को उसके संग चली।
16 और जब वह बेथोरोन की चढ़ाई के निकट पहुंचा, तो यहूदा एक छोटी सी टोली लेकर उसका साम्हना करने को निकला।
17 जब उन्होंने सेना को अपना साम्हना करने को आते देखा, तब यहूदा से कहा, हम इतने थोड़े होकर, और इतने बलवन्त होकर, इतनी बड़ी भीड़ से कैसे लड़ सकेंगे, कि हम इतने दिन उपवास करके थक गए हैं?
18 यहूदा ने उस को उत्तर दिया, कि बहुतों का थोड़े के हाथ में बन्द होना कठिन बात है; और स्वर्ग का परमेश्वर सब एक ही है, कि बड़ी भीड़ वा थोड़े दल की सहायता से उद्धार करे।
19 क्योंकि युद्ध की जय सेना की बहुतायत से नहीं टिकती; परन्तु शक्ति स्वर्ग से आती है।
20 वे बड़े घमण्ड और कुकर्म में हम पर चढ़ाई करते हैं, कि हम को और हमारी स्त्रियोंऔर बच्चोंको भी नाश करें, और हमें लूटें।
21 परन्तु हम अपने जीवन और अपने नियमों के लिये लड़ते हैं।
22 इस कारण यहोवा आप ही उनको हमारे साम्हने से नाश करेगा; और तुम उन से मत डरना।
23 जैसे ही उस ने बोलना छोड़ा, वह उन पर अचानक झपटा, और सेरोन और उसकी सेना उसके साम्हने से परास्त हो गई।
24 और उन्होंने बेथोरोन की उतराई से लेकर मैदान तक उनका पीछा किया, और वहां कोई आठ सौ पुरूष मारे गए; और जो बचे हुए थे वे पलिश्तियोंके देश में भाग गए।
25 तब यहूदा और उसके भाइयोंका भय और उनके चारोंओर की जातियोंपर बहुत बड़ा भय छाने लगा।
26 यहां तक कि उसकी कीर्ति राजा तक फैल गई, और सब जातियोंमें यहूदा के युद्धोंकी चर्चा होने लगी।
27 जब राजा अन्ताकिया ने ये बातें सुनीं, तो वह क्रोध से भर गया; इसलिये उस ने अपने राज्य की सारी सेना, यहां तक कि एक बहुत ही दृढ़ सेना, भेज कर इकट्ठे कर ली।
28 और उस ने अपना भण्डार भी खोला, और अपने सिपाहियोंको एक वर्ष के लिये वेतन दिया, और आज्ञा दी, कि जब कभी उसे उनकी आवश्यकता हो, तब वे तैयार रहें।
29 फिर भी, जब उस ने देखा, कि उस फूट और विपत्ति के कारण, जो उस ने पुराने समय के नियमोंको छीनकर देश में फैलाई है, उसके धन का धन कम हो गया है, और देश में कर भी कम रह गया है;

30 उसे भय हुआ कि अब वह दोष सह न सकेगा, और न पहिले के समान उदारता से दान दे सकेगा; क्योंकि वह अपने से पहिले के राजाओं से बहुत बढ़ गया था।
31 इस कारण उस ने मन में बहुत घबराकर फारस जाने का निश्चय किया, कि वहां से देश देश का कर ले, और बहुत सा धन इकट्ठा करे।
32 इसलिये उस ने लुसियाह नाम एक रईस और राजकुल के लोगोंमें से एक को परात महानद से मिस्र की सीमा तक राजा का काम देखने के लिथे छोड़ दिया।
33 और उसके बेटे अन्ताकिया का उसके लौटने तक पालन-पोषण करना।
34 और उस ने अपक्की आधी सेना और हाथियोंको भी उसके हाथ में सौंप दिया, और जो कुछ वह करना चाहता या, उसका भी, और यहूदा और यरूशलेम के निवासियोंके विषय में भी उसे अधिकार दे दिया।
35 इसलिये कि वह उनके विरूद्ध एक सेना भेजे, कि इस्राएल की सेनाओं को और यरूशलेम के बचे हुओं को नाश और जड़ से उखाड़ फेंके, और उस स्यान में उनका स्मरण करा दे;
36 और वह उनके सब स्थानोंमें परदेशियोंको बसा दे, और उनके देश को चिट्ठी डालकर बांट दे।
37 तब राजा ने बची हुई आधी सेना को लेकर एक सौ सैंतालीसवें वर्ष अपने राजनगर अन्ताकिया से प्रस्थान किया; और परात नदी पार करके ऊंचे देशों में चला गया।
38 तब लूसियास ने डोरिमेनस के पुत्र टॉलेमी, निकानोर और गोर्गियास को, जो राजा के मित्रों में से शूरवीर थे, चुन लिया।
39 और उनके साथ उस ने चालीस हजार प्यादे, और सात हजार सवार भेजे, कि राजा की आज्ञा के अनुसार यहूदा के देश में जाकर उसे नाश कर डालें।
40 तब वे अपक्की सारी शक्ति समेत निकले, और इम्माऊस के पास चौरस देश में डेरे खड़े किए।
41 और उस देश के व्यापारी उनकी कीर्ति सुनकर बहुत चान्दी और सोना लेकर दास-दासियों समेत छावनी में आए, कि इस्राएलियोंको दास करके मोल लें; और अराम और पलिश्तियोंके देश का भी एक अधिकार हो। अपने आप को उनसे मिला लिया।
42 अब जब यहूदा और उसके भाइयों ने देखा, कि दु:ख बहुत बढ़ गया है, और सेनाओं ने अपने अपने सिवानों में डेरे डाल दिए हैं;
43 और उन्होंने आपस में कहा, आओ, हम अपनी प्रजा का बिगड़ा हुआ भाग्य फेर दें, और अपनी प्रजा और पवित्रस्थान के लिये लड़ें।
44 तब मण्डली इसलिये इकट्ठी हुई, कि युद्ध के लिये तैयार हों, और प्रार्थना करें, और दया और करुणा की प्रार्थना करें।
45 यरूशलेम जंगल के समान सूना पड़ा था, उसके सन्तानों में से कोई न तो वहां आता जाता था और न बाहर जाता था; उस स्थान पर अन्यजातियों का निवास था; और याकूब का आनन्द दूर हो गया, और वीणा का बाजा बन्द हो गया।
46 इस कारण इस्राएली इकट्ठे होकर यरूशलेम के साम्हने मस्पा तक आए; क्योंकि मास्फ़ा में वह स्थान था जहाँ उन्होंने पहले इज़राइल में प्रार्थना की थी।
47 तब उन्होंने उस दिन उपवास किया, और टाट बान्ध लिया, और अपने सिरों पर राख डाली, और अपने वस्त्र फाड़े।
48 और व्यवस्था की पुस्तक खोल दी, जिस में अन्यजातियों ने अपनी मूरतों के समान चित्र बनाना चाहा था।
49 और वे याजकोंके वस्त्र, और पहिली उपज, और दशमांश भी ले आए; और नासरीयोंको जो अपनी आयु पूरी कर चुके थे, उभारा।
50 तब उन्होंने आकाश की ओर ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हम इनसे क्या करें, और इन्हें कहां ले जाएं?
51 क्योंकि तेरा पवित्रस्थान रौंदा और अपवित्र किया गया है, और तेरे याजक बोझ से दब गए हैं, और गिराए गए हैं।
52 और देखो, अन्यजातियां हमें नाश करने के लिये हमारे विरूद्ध इकट्ठी हो गई हैं; वे हमारे विरूद्ध कैसी कैसी कल्पनाएं करते हैं, तू जानता है।
53 हे परमेश्वर, तू हमारा सहायक न हो, तो हम उनके साम्हने क्योंकर खड़े रह सकेंगे?
54 तब उन्होंने नरसिंगे फूंके, और ऊंचे शब्द से चिल्लाए।
55 और इसके बाद यहूदा ने प्रजा पर प्रधान ठहराए, अर्यात् हजारों, सैकड़ों, पचासों, और दसियोंपर प्रधान।
56 परन्तु जो घर बनाते थे, या स्त्रियां ब्याह लेते थे, या दाख की बारियां लगाते थे, या डरते थे, उनको उस ने आज्ञा दी, कि वे व्यवस्था के अनुसार अपने अपने घर लौट जाएं।
57 सो छावनी हट गई, और इम्माऊस की दक्खिन ओर डेरे खड़े किए।
58 और यहूदा ने कहा, हथियार बान्धकर वीर बनो, और भोर के लिये तैयार रहो, कि उन जातियों से लड़ो, जो हमें और हमारे पवित्रस्थान को नाश करने के लिये हमारे विरूद्ध इकट्ठे हुए हैं।
59 क्योंकि अपनी प्रजा और अपने पवित्रस्थान की विपत्ति देखने से हमारे लिथे युद्ध में मरना भला है।
60 तौभी जैसी परमेश्वर की इच्छा स्वर्ग में है, वैसा ही वह करे।

अध्याय 4

1 तब गोर्गियास ने पांच हजार प्यादों, और एक हजार अच्छे घुड़सवारों को लिया, और रात को छावनी से बाहर निकल गया;
2 यहां तक कि वह यहूदियों की छावनी पर धावा बोलकर उन्हें अचानक मार डाले। और क़िले के लोग उसके मार्गदर्शक थे।
3 जब यहूदा ने यह सुना, तब वह आप और उसके संग के शूरवीर चले गए, कि इम्माऊस में रहनेवाली राजा की सेना को मार डालें।
4 जबकि सेना छावनी से तितर-बितर हो चुकी थी।
5 इसी समय गोर्गियास रात के समय यहूदा की छावनी में आया; और जब उस ने वहां कोई न पाया, तब उस ने उनको पहाड़ोंमें ढूंढ़ा; क्योंकि उस ने कहा, कि थे लोग हमारे पास से भाग जाते हैं।
6 परन्तु जैसे ही दिन हुआ, यहूदा तीन हजार पुरूषोंके साथ मैदान में प्रगट हुआ, और उनके पास न तो हथियार थे और न तलवारें।
7 और उन्होंने अन्यजातियों की छावनी देखी, कि वह दृढ़ और अच्छी तरह से सुसज्जित थी, और चारों ओर घुड़सवारों से घिरी हुई थी; और ये युद्ध के विशेषज्ञ थे.
8 तब यहूदा ने अपने सायोंसे कहा, तुम उनकी भीड़ से मत डरो, और न उनके घात से डरो।
9 स्मरण करो, कि हमारे पुरखा लाल समुद्र में किस प्रकार पकड़े गए थे, जब फिरौन ने सेना लेकर उनका पीछा किया था।
10 इसलिये अब हम स्वर्ग की दोहाई दें, यदि कदाचित् यहोवा हम पर दया करे, और हमारे पुरखाओं की वाचा को स्मरण करके इस सेना को आज हमारे साम्हने से नाश कर दे।
11 जिससे सब अन्यजातियां जान लें कि इस्राएल का छुड़ानेवाला और उद्धार करनेवाला कोई है।
12 तब परदेशियोंने आंख उठाकर उनको अपके साम्हने आते देखा।
13 इस कारण वे युद्ध करने को छावनी से बाहर निकले; परन्तु यहूदा के साथियों ने तुरही बजाई।
14 सो वे आपस में लड़ने लगे, और अन्यजातियां घबराकर मैदान में भाग गईं।
15 तौभी उन में से सब के सब तलवार से मारे गए; क्योंकि उन्होंने गजेरा, और इदुमिया, और अज़ोतुस, और जम्निया के अराबा तक उनका पीछा किया, यहां तक कि उन में से तीन हजार पुरूष मारे गए।
16 ऐसा करने पर यहूदा अपक्की सेना समेत उनका पीछा करके फिर लौट आया।
17 और लोगों से कहा, लूट का लालच न करो, क्योंकि हमारे साम्हने लड़ाई हो रही है।
18 और गोर्गियास और उसकी सेना यहां पहाड़ पर हमारे पास है: परन्तु अब तुम हमारे शत्रुओं के साम्हने खड़े होकर उन पर जय पाओ, और इसके बाद तुम निडर होकर लूट ले सकते हो।
19 यहूदा ये बातें कह ही रहा या, कि उन में से एक दल पहाड़ की ओर से झांकता हुआ दिखाई दिया।
20 और जब उन्होंने जान लिया, कि यहूदी हमारी सेना को भगा ले गए, और तम्बू जला रहे हैं; जो धुआँ देखा गया था, उसके लिए घोषित किया गया कि क्या किया गया था:
21 सो जब उन्होंने ये बातें जान लीं, तो बहुत डर गए, और यहूदा की सेना को मैदान में लड़ने को तैयार देखकर भी घबरा गए।

22 और वे परदेश में भाग गए।
23 तब यहूदा तम्बुओं को लूटने को लौटा, और वहां उन्हें बहुत सा सोना,
चान्दी, नीला रेशम, और समुद्र का बैंजनी रेशम, और बहुत धन मिला।
24 इसके बाद वे घर गए, और धन्यवाद का गीत गाया, और स्वर्ग में प्रभु
की स्तुति की: क्योंकि यह अच्छा है, क्योंकि उसकी दया सदा की है।
25 इस प्रकार उस दिन इस्राएल को बड़ा छुटकारा मिला।
26 और जितने परदेशी बच गए थे, उन सभों ने आकर लूसियास को यह
समाचार दिया;
27 जब उस ने यह सुना, तो वह लज्जित और निराश हुआ, क्योंकि न तो
इस्राएल के साथ वैसा कुछ हुआ, जैसा वह चाहता था, और न जैसी राजा
ने उसे आज्ञा दी थी, वैसा हुआ।
28 सो अगले वर्ष लूसियास ने उसके पीछे अस्सी हजार अच्छे प्यादे, और
पांच हजार सवार इकट्ठे किए, कि उन्हें अपने वश में कर ले।
29 तब उन्होंने इदुमिया में आकर बेतसूरा में अपने तम्बू खड़े किए, और
यहूदा दस हजार पुरूष ले कर उन से मिला।
30 और जब उस ने उस बलवन्त सेना को देखा, तब प्रार्थना करके कहा,
हे इस्राएल के उद्धारकर्ता, तू धन्य है, जिस ने अपके दास दाऊद के द्वारा
उस शूरवीर के उपद्रव को दबा दिया, और परदेशियोंकी सेना को उसके
वश में कर दिया। शाऊल का पुत्र योनातान और उसका हथियार
ढोनेवाला;
31 इस सेना को अपक्की प्रजा इस्राएल के हाथ में बन्द कर, और वे
अपने बल और सवारोंके विषय में निराश हो जाएं;
32 उन्हें हियाव विहीन कर, और उनका साहस नष्ट कर दे, और वे अपने
विनाश से कांप उठें।
33 जो तुझ से प्रेम रखते हैं उनको तलवार से मार डालो, और जितने तेरे
नाम के जाननेवाले धन्यवाद करते हुए तेरी स्तुति करें।
34 सो वे युद्ध में सम्मिलित हो गए; और उनके मारे जाने से पहिले ही
लूसियास की सेना में से कोई पांच हजार पुरूष मारे गए।
35 जब लूसियास ने देखा कि उसकी सेना भाग गई है, और यहूदा के
सैनिकों का साहस, और वे किस प्रकार वीरता से जीने या मरने को तैयार
हैं, तब वह अन्ताकिया में गया, और परदेशियों की एक टोली इकट्ठी की,
और अपनी सेना को और भी बड़ा कर लिया इससे पहले, उसने यहूदिया
में फिर से आने का इरादा किया।
36 तब यहूदा और उसके भाइयोंने कहा, देखो, हमारे शत्रु घबरा गए हैं;
आओ, हम पवित्रस्थान को शुद्ध करने, और पवित्र करने को चलें।
37 इस पर सारी सेना इकट्ठी होकर सिय्योन पहाड़ पर चढ़ गई।
38 और जब उन्होंने पवित्रस्थान को उजाड़, और वेदी को अपवित्र देखा,
और फाटक जले हुए, और आंगनों में जंगल वा पहाड़ों के समान झाड़ियां
उगी हुई देखीं, और याजकों की कोठरियां गिरी हुई देखीं;
39 और उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े, और बड़ा विलाप किया, और अपने
सिरों पर राख डाली,
40 और भूमि पर मुंह के बल गिर पड़े, और तुरहियां फूंककर स्वर्ग की
ओर चिल्लाकर चिल्लाए।
41 तब यहूदा ने कुछ पुरूष नियुक्त किए, कि जब तक वह पवित्रस्थान
को शुद्ध न कर ले, तब तक गढ़ में रहने वालों से लड़ते रहें।
42 इसलिये उस ने निष्कपट बातचीत करनेवाले याजकोंको चुन लिया,
जो व्यवस्था से प्रसन्न थे।
43 उस ने पवित्रस्थान को शुद्ध किया, और अशुद्ध पत्थरों को निकालकर
अशुद्ध स्थान में रख दिया।
44 और उन्होंने यह सम्मति की, कि होमबलि की वेदी जो अपवित्र हो गई
है, उसका क्या किया जाए;
45 उन्होंने उसे गिराना ही उचित समझा, ऐसा न हो कि इस से उनकी
निन्दा हो, क्योंकि अन्यजातियों ने उसे अशुद्ध किया था; इसी कारण
उन्होंने उसे गिरा दिया।
46 और पत्थरों को मन्दिर के पहाड़ पर एक सुविधाजनक स्थान में रख
दिया, जब तक कोई भविष्यद्वक्ता न आए, जो बताए कि उन से क्या
किया जाना चाहिए।
47 तब उन्होंने विधि के अनुसार पूरे पत्थर लिये, और पहिली के अनुसार
एक नई वेदी बनाई;
48 और पवित्रस्थान और मन्दिर के भीतर की वस्तुएं बनाईं, और
आंगनोंको पवित्र किया।
49 और उन्होंने नये पवित्र पात्र भी बनाए, और दीवट, होमवेदी, धूप, और
मेज़ को मन्दिर में ले आए।
50 और वेदी पर उन्होंने धूप जलाया, और दीवट पर के दीपक जलाए,
कि उन से मन्दिर में उजियाला हो।
51 फिर उन्होंने रोटियां मेज पर रखीं, और पर्दे फैलाए, और जो काम वे
बनाने लगे थे, उसे पूरा किया।
52 अब एक सौ अड़तालीसवें वर्ष के नौवें महीने के पचीसवें दिन को, जो
महलेऊ कहलाता है, वे भोर को समय-समय पर उठे।
53 और उस नई होमबलि की वेदी पर जो उन्होंने बनाई थी, विधि के
अनुसार बलिदान चढ़ाया।
54 देखो, किस समय और किस दिन अन्यजातियों ने उसे अपवित्र किया,
यहां तक कि गीत, सारंगी, वीणा, झांझ बजाकर उसका अभिषेक किया
गया।
55 तब सब लोगों ने मुंह के बल गिरकर स्वर्ग के परमेश्वर की स्तुति की,
जिस ने उन्हें अच्छा काम दिया था।
56 और इस प्रकार उन्होंने आठ दिन तक वेदी की प्रतिष्ठा रखी, और
आनन्द के साथ होमबलि चढ़ाया, और उद्धार और स्तुति का बलिदान
चढ़ाया।
57 और उन्होंने मन्दिर के साम्हने को सोने के मुकुटों और ढालों से
सजाया; और फाटकोंऔर कोठरियोंको उन्होंने नया बनाया, और उन पर
किवाड़ लगवाए।
58 इस प्रकार लोगों में बहुत आनन्द हुआ, क्योंकि अन्यजातियों की
नामधराई दूर हो गई।
59 फिर यहूदा और उसके भाइयोंऔर इस्राएल की सारी मण्डली ने यह
ठहराया, कि वेदी की प्रतिष्ठा के दिन महलू महीने के पचीसवें दिन से
लेकर आठ दिन के अन्तर तक प्रति वर्ष अपने समय के अनुसार माने
जाएं। , हर्ष और उल्लास के साथ।
60 उस समय भी उन्होंने सिय्योन पर्वत के चारोंओर ऊंची ऊंची
शहरपनाह और दृढ़ गुम्मट बनाए, ऐसा न हो कि अन्यजाति आकर उसे
रौंद डालें, जैसा उन्होंने पहिले किया था।
61 और उन्होंने उसकी रक्षा के लिये वहां एक चौकी बैठाई, और उसकी
रक्षा के लिये बेतसूरा की किलेबंदी की; ताकि लोगों को इडुमिया के
विरुद्ध बचाव मिल सके।

अध्याय 5

1 जब आस-पास की जातियों ने सुना कि वेदी बन गई, और पवित्रस्थान
पहिले के समान नया हो गया, तो वे बहुत अप्रसन्न हुए।
2 इसलिये उन्होंने याकूब की पीढ़ी को, जो उनके बीच में थी, नाश करने
की सोची, और उसके बाद उन्होंने लोगों को मारना और नष्ट करना
आरम्भ कर दिया।
3 तब यहूदा ने इदुमिया में अरबत्तीन में एसाव की सन्तान से युद्ध किया,
क्योंकि उन्होंने गेल को घेर लिया था; और उस ने उनको भारी परास्त
किया, और उनका साहस ठंडा कर दिया, और उनकी लूट ले ली।
4 और उसे बीन के बच्चों की चोट भी याद आई, जो लोगों के लिए जाल
और अपमान थे, क्योंकि वे मार्गों में उनकी घात में रहते थे।
5 तब उस ने उनको गुम्मटोंमें बन्द कर दिया, और उनके विरूद्ध डेरे
खड़े किए, और उनको सत्यानाश कर डाला, और उस स्थान के
गुम्मटोंको और जो कुछ उन में था सब आग से जला दिया।
6 इसके बाद वह अम्मोनियों के पास गया, और वहां उसे एक बड़ी शक्ति
और बहुत सी प्रजा मिली, और उनका प्रधान तीमुथियुस भी मिला।
7 इसलिथे वह उन से बहुत लड़ाइयां लड़ता रहा, यहां तक कि वे उसके
साम्हने व्याकुल हो गए; और उसने उन्हें मार डाला।
8 और उस ने याज़ार को उसके नगरोंसमेत ले लिया, और यहूदिया को
लौट गया।
9 तब गलाद की अन्यजातियां उन इस्राएलियोंके विरूद्ध जो अपके
अपके डेरोंमें थे, उनको नाश करने के लिथे इकट्ठे हुए; परन्तु वे दथेमा के
गढ़ में भाग गए।

10 और यहूदा और उसके भाइयोंके पास चिट्ठियां भेजीं, कि हमारे चारोंओर की अन्यजातियां हमें नाश करने के लिये हमारे विरूद्ध इकट्ठी हुई हैं।
11 और वे आकर उस गढ़ को ले लेने की तैयारी करते हैं, जिस में हम भागकर आए हैं, और तीमुथियुस उनका सेनापति है।
12 इसलिये अब आकर हम को उनके हाथ से बचा, क्योंकि हम में से बहुतेरे मारे गए हैं।
13 और हमारे सब भाई जो टोबी के स्थानोंमें थे, वे मार डाले गए हैं; और उनकी स्त्रियोंऔर बच्चोंको भी वे बन्धुआई में ले गए, और उनका सामान उठा ले गए; और उन्होंने वहां कोई एक हजार पुरूषोंको नाश किया।
14 अभी ये पत्र पढ़ ही रहे थे, कि गलील से और भी दूत कपड़े फाड़े हुए आ गए, और यह समाचार दिया,
15 और कहा, पतोलेमाइस, और सोरस, और सीदोन, और अन्यजातियोंमें से सारे गलील के लोग हमें नष्ट करने के लिये हमारे विरूद्ध इकट्ठे हुए हैं।
16 जब यहूदा और लोगोंने ये बातें सुनीं, तो बड़ी मण्डली यह सलाह करने के लिथे इकट्ठी हुई, कि अपके भाइयोंके लिथे जो संकट में थे, और उन पर घात लगाए थे, क्या करें।
17 तब यहूदा ने अपके भाई शमौन से कहा, अपके पुरूष चुन ले, और जाकर गलील में रहनेवाले अपने भाइयोंको छुड़ा ले; क्योंकि मैं और मेरा भाई योनातान गलाद के देश में जाएंगे।
18 इसलिये उस ने जकरयाह के पुत्र यूसुफ और प्रजा के प्रधान अजर्याह को सेना के बचे हुओं के पास यहूदिया में रखवाली करने के लिथे छोड़ दिया।
19 और उस ने उस को यह आज्ञा दी, कि इस प्रजा का अधिकारी हो जाओ, और जब तक हम फिर न आएं तब तक अन्यजातियों से युद्ध न करना।
20 शमौन को गलील में जाने के लिथे तीन हजार पुरूष, और गलाद के देश में यहूदा को आठ हजार पुरूष दिए गए।
21 तब शमौन गलील में गया, और वहां उसने अन्यजातियों से बहुत लड़ाई की, यहां तक कि अन्यजातियां उससे घबरा गईं।
22 और उस ने पतोलेमाइस के फाटक तक उनका पीछा किया; और अन्यजातियों में से लगभग तीन हजार पुरूष मारे गए, और उनका लूट लिया।
23 और गलील और अर्बत्तिस में जो लोग थे, वे अपनी स्त्रियोंऔर बच्चोंसमेत और अपना सब कुछ जो कुछ उनका या, उस सब को वह अपने साथ ले गया, और बड़े आनन्द के साथ यहूदिया में ले आया।
24 यहूदा मकाबी और उसका भाई योनातान भी यरदन पार गए, और जंगल में तीन दिन की यात्रा की।
25 वहां वे नबातियोंसे मिले, और उन्होंने मेल करके उनके पास आकर, जो कुछ गलाद देश में उनके भाइयोंके साय हुआ या, वह सब उनको बता दिया।
26 और उन में से कितने लोग बोसोरा, और बोसोर, और अलेमा, और कास्फोर, और माके, और कारनैम में बन्धुए रहे; ये सभी नगर सुदृढ़ और महान हैं:
27 और वे गलाद देश के और नगरोंमें बन्धुए रहे, और कल उन्होंने यह ठहराया, कि किलोंपर अपनी सेना ले आएं, और उनको ले लें, और सब को एक ही दिन में नाश कर डालें।
28 तब यहूदा और उसकी सेना जंगल के मार्ग से अचानक बोसोरा की ओर मुड़ गई; और जब उस ने नगर को जीत लिया, तब उस ने सब पुरूषोंको तलवार से घात किया, और उनका सब लूट लिया, और नगर को आग में जला दिया,
29 जहां से वह रात को निकला, और गढ़ तक पहुंचा।
30 और बिहान को कभी-कभी उन्होंने आंख उठाकर क्या देखा, कि गढ़ पर कब्ज़ा करने के लिये सीढ़ियां और अन्य यन्त्र लिये हुए असंख्य लोग खड़े हैं; और उन्होंने उन पर आक्रमण किया।
31 जब यहूदा ने देखा, कि लड़ाई छिड़ गई है, और नगर का चिल्लाना तुरहियों और बड़े बड़े शब्द के साथ आकाश तक पहुंच गया है,
32 उस ने अपके सेना से कहा, आज अपके भाइयोंके लिये लड़ो।
33 तब वह उनके पीछे तीन दल बान्धकर निकला, और तुरहियां फूंककर प्रार्थना करके चिल्लाने लगे।
34 तब तीमुथियुस की सेना यह जानकर, कि यह मकाबी है, उसके साम्हने से भाग गई; इस कारण उस ने उनको बड़ा संहार किया; यहां तक कि उस दिन उनमें से लगभग आठ हजार पुरूष मार डाले गये।
35 ऐसा करने पर यहूदा मास्पा की ओर मुड़ गया; और उस पर आक्रमण करने के बाद उस ने उसके सब पुरूषों को पकड़कर मार डाला, और उसका लूट लिया, और उसे आग में जला दिया।
36 वहां से जाकर उस ने कस्फोन, मागेद, बोसोर, और गलाद देश के दूसरे नगरोंको ले लिया।
37 इन बातों के बाद तीमुथियुस ने एक और सेना इकट्ठी की, और नाले के पार रपोन के साम्हने डेरे खड़े किए।
38 तब यहूदा ने सेना का भेद लेने को मनुष्य भेजे, और उन्होंने उसके पास यह समाचार पहुंचाया, कि हमारे चारोंओर की सब जातियां, अर्यात् बहुत बड़ी सेना उनके पास इकट्ठी हुई हैं।
39 और उस ने अरबियोंको भी उनकी सहायता के लिथे मजदूरी पर रखा है, और उन्होंने नाले के पार अपके तम्बू खड़े किए हैं, और आकर तुझ से लड़ने को तैयार हैं। इस पर यहूदा उनसे मिलने गया।
40 तब तीमुथियुस ने अपनी सेना के प्रधानोंसे कहा, जब यहूदा और उसकी सेना नाले के निकट आएं, तब यदि वह हमारे पास पहिले चले, तो हम उसका साम्हना न कर सकेंगे; क्योंकि वह हम पर प्रबल रूप से प्रबल होगा:
41 परन्तु यदि वह डरकर महानद के पार डेरा करे, तो हम उसके पास जाकर उस पर प्रबल होंगे।
42 और जब यहूदा नाले के निकट पहुंचा, तब उस ने प्रजा के शास्त्रियोंको नाले के पास ही रहने दिया, और उनको आज्ञा दी, कि किसी को छावनी में न रहने दो, परन्तु सब युद्ध करने को आ जाएं।
43 तब वह पहिले उनके पास गया, और सब लोग उसके पीछे हो लिए; तब सब अन्यजातियां उसके साम्हने घबराकर अपने अपने हथियार छोड़कर कारनैम के मन्दिर में भाग गईं।
44 परन्तु उन्होंने नगर ले लिया, और मन्दिर और जो कुछ उसमें था सब जला दिया। इस प्रकार कार्नैम को वश में कर लिया गया, और न ही वे यहूदा के सामने टिक सके।
45 तब यहूदा ने गलाद के देश में छोटे से लेकर बड़े तक सब इस्राएलियोंको, उनकी स्त्रियों, बालकोंऔर धन-सम्पत्ति समेत एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठी की, कि वे उस देश में आ सकें। यहूदिया।
46 जब वे एप्रोन के पास पहुंचे, (उनके जाने के मार्ग में यह एक बड़ा नगर था, और बहुत अच्छी तरह से दृढ़ था) तो वे उससे न तो दाहिनी ओर मुड़ सकते थे और न बाईं ओर, परन्तु उन्हें बीच में से होकर जाना पड़ता था। यह।
47 तब नगर के लोगोंने उनको बन्द कर दिया, और फाटकोंको पत्यर डालकर बन्द कर दिया।
48 तब यहूदा ने मेल करके उनके पास कहला भेजा, कि हमें अपने देश में होकर अपने देश को जाने दो, और कोई तुम्हारी कुछ हानि न करेगा; हम केवल पैदल ही वहां से होकर निकलेंगे; तौभी वे उसके लिये द्वार न खोलेंगे।
49 इस कारण यहूदा ने सारी सेना में यह प्रचार करने की आज्ञा दी, कि हर एक पुरूष अपना तम्बू उसी स्थान पर खड़ा करे जहां वह है।
50 तब सिपाहियोंने पड़ाव डाला, और दिन भर और रात भर नगर पर आक्रमण करते रहे, यहां तक कि नगर उसके हाथ में आ गया।
51 तब उस ने सब पुरूषोंको तलवार से घात किया, और नगर पर धावा बोलकर उसका लूट लिया, और मारे हुओंके साय नगर में से होकर चला।
52 इसके बाद वे यरदन पार होकर बेतसान के साम्हने के बड़े मैदान में गए।
53 और यहूदा ने पीछे आनेवालोंको इकट्ठा किया, और जब तक वे यहूदिया देश में न पहुंचे, तब तक उनको समझाता रहा।
54 इसलिये वे आनन्द और आनन्द के साथ सिय्योन पर्वत पर गए, और वहां होमबलि चढ़ाए, क्योंकि जब तक वे कुशल से न लौट आए, तब तक उन में से एक भी न मारा गया।

55 जिस समय यहूदा और योनातान गलाद देश में, और उसका भाई
शमौन तोलेमाइस के साम्हने गलील में थे,
56 जकरयाह के पुत्र यूसुफ और सिपाहियोंके प्रधान अजर्याह ने उन
वीरता और युद्ध के कामोंका समाचार सुना जो उन्होंने किए थे।
57 इसलिथे उन्होंने कहा, हम भी अपना नाम ले लें, और अपने चारोंओर
के अन्यजातियोंसे लड़ें।
58 सो उन्होंने अपने संग के पहरे को आज्ञा देकर जमनिया की ओर चले।
59 तब गोर्गियास और उसके लोग उनसे लड़ने के लिये नगर से बाहर
आये।
60 और ऐसा हुआ, कि यूसुफ और अजरस को भगाया गया, और
यहूदिया की सीमा तक उनका पीछा किया गया: और उस दिन इस्राएल
के लोगों में से लगभग दो हजार पुरुष मारे गए।
61 इस प्रकार इस्राएलियों का बड़ा विनाश हुआ, क्योंकि उन्होंने यहूदा
और उसके भाइयों की आज्ञा न मानी, परन्तु वीरता का काम करने की
सोची।
62 और ये पुरूष उन लोगोंकी सन्तान में से न थे जिनके हाथ से इस्राएल
को छुटकारा मिला या।
63 तौभी वह पुरूष यहूदा और उसके भाई सारे इस्राएल और सब
अन्यजातियोंके साम्हने, जहां जहां उनका नाम सुना जाता था, बहुत
प्रसिद्ध थे;
64 इतना अधिक कि लोग हर्षोल्लास के साथ उनके पास इकट्ठे हुए ।
65 इसके बाद यहूदा अपने भाइयोंसमेत निकला, और दक्खिन की ओर
के देश में एसावियोंसे लड़ा, और वहां हेब्रोन और उसके नगरोंको जीत
लिया, और उसके गढ़ को ढा दिया, और उसके चारोंओर के गुम्मटोंको
फूंक डाला।
66 वहां से वह पलिश्तियोंके देश में जाने को निकला, और शोमरोन से
होकर निकला।
67 उस समय कुछ याजक जो अपनी वीरता दिखाने की इच्छा रखते थे,
वे बिना सोचे लड़ने के कारण युद्ध में मारे गए।
68 तब यहूदा पलिश्तियोंके देश में अज़ोतुस की ओर फिरा, और उनकी
वेदियां ढा दी, और उनकी खुदी हुई मूरतें आग में जला दीं, और उनके
नगरोंको उजाड़ दिया, और यहूदिया के देश में लौट गया।

अध्याय 6

1 उसी समय राजा अन्ताकिया ने ऊंचे देशों में यात्रा करते हुए सुना, कि
एलीमाईस फारस देश में धन, चान्दी, और सोने के कारण बहुत प्रसिद्ध
नगर है;
2 और उस में एक बहुत ही समृद्ध मन्दिर था, जिस में सोने के आवरण,
और झिलम, और ढालें थीं, जिन्हें मैसेडोनिया के राजा फिलिप्पुस का पुत्र
सिकन्दर, जो यूनानियों में सबसे पहले राज्य करता था, वहां छोड़ गया
था।
3 इसलिथे उस ने आकर नगर को ले लेना और उसे उजाड़ना चाहा;
परन्तु वह ऐसा न कर सका, क्योंकि नगर के लोगोंने उसे चिताया था।
4 उस पर युद्ध करने को उठे, और वह भाग गया, और वहां से बहुत
उदास होकर बाबुल को लौट गया।
5 फिर एक ने फारस में आकर समाचार दिया, कि जो सेना यहूदिया देश
पर चढ़ाई करने को गई थी, वह भाग गई है।
6 और लूसियास जो बड़ी शक्ति के साथ पहिले निकला या, वह
यहूदियोंमें से निकाल दिया गया; और वे उन कवच, और शक्ति, और लूट
के भण्डार के कारण, जिन्हें उन्होंने उन सेनाओं से प्राप्त किया था, जिन्हें
उन्होंने नष्ट कर दिया था, बलवन्त हो गए थे:
7 और उन्होंने उस घृणित वस्तु को, जो उस ने यरूशलेम की वेदी पर
खड़ी कराई थी, ढा दिया, और पवित्रस्थान और उसके नगर बेतसूरा को
पहिले के समान ऊंची शहरपनाह से घेर लिया था।
8 जब राजा ने ये बातें सुनीं, तो वह चकित हुआ और बहुत उदास हुआ;
तब उसने उसे खाट पर लिटा दिया, और दु:ख के मारे वह बीमार पड़
गया, क्योंकि जैसा वह चाहता था वैसा उस पर न हुआ था।
9 और वह बहुत दिन तक वहां रहा; यहां तक कि उसका दु:ख बढ़ता ही
गया, और उस ने मरने ही का निश्चय कर लिया।
10 इसलिथे उस ने अपके सब मित्रोंको बुलाकर उन से कहा, मेरी
आंखोंसे नींद उड़ गई है, और मेरा जी चिन्ता के मारे उदास हो गया है।
11 और मैं ने मन में सोचा, मैं किस क्लेश में पड़ा हूं, और यह कैसी बड़ी
मुसीबत है, जिस में मैं अब पड़ा हूं! क्योंकि मैं अपनी शक्ति में उदार और
प्रिय था।
12 परन्तु अब मुझे वे सब बुरे काम स्मरण आते हैं जो मैं ने यरूशलेम में
किए, और जो सोना चान्दी का पात्र वहां था सब ले लिया, और यहूदिया
के निवासियोंको अकारण नाश करने को भेज दिया।
13 इसलिये मैं ने जान लिया है, कि इसी कारण से ये विपत्तियां मुझ पर
आ पड़ी हैं, और मैं परदेश में बड़े दु:ख के कारण नाश हो रहा हूं।
14 तब उस ने अपके मित्रोंमें से फिलिप्पुस को बुलाया, और उसे अपके
सारे राज्य पर प्रधान ठहराया।
15 और उसे राजमुकुट, और अपना बागा, और अपनी अंगूठी दी, कि
वह अपने बेटे अन्ताकियास का पालन-पोषण करके राज्य के लिये
उसका पालन-पोषण करे।
16 इस प्रकार वहां राजा अन्ताकिया एक सौ उनतालीसवें वर्ष में मर
गया।
17 जब लूसियास को मालूम हुआ कि राजा मर गया है, तब उस ने अपने
पुत्र अन्ताकिया को, जिसे वह जवान होकर पाला था, अपने स्यान पर
राजा किया, और उसका नाम उस ने यूपाटोर रखा।
18 इसी समय जो गुम्मट में थे, उन्होंने इस्राएलियोंको पवित्रस्थान के
चारोंओर बन्द कर दिया, और सदा उनकी हानि और अन्यजातियोंकी
शक्ति बढ़ाने की खोज में रहे।
19 इसलिथे यहूदा ने उनको नाश करने की मनसा से सब लोगोंको इकट्ठा
करके उन्हें घेर लिया।
20 सो उन्होंने इकट्ठे होकर एक सौ पचासवें वर्ष में उनको घेर लिया, और
उस ने उनके विरूद्ध मारके के लिथे टीले, और अन्य यन्त्र बनाए।
21 परन्तु जो घिरे हुए थे, उन में से कुछ लोग निकलकर उन से मिल गए,
और इस्राएल में से कुछ दुष्ट लोग उनसे मिल गए।
22 और वे राजा के पास जाकर कहने लगे, तू कब तक न्याय करेगा, और
हमारे भाइयों का बदला लेगा?
23 हम तेरे पिता की सेवा करने, और जैसा वह हम से चाहता वैसा करने,
और उसकी आज्ञाएं मानने को तैयार हैं;
24 इसी कारण हमारी जाति के लोगों ने गुम्मट को घेर लिया है, और हम
से अलग हो गए हैं; और हम में से जितने को उजियाला दे सके, जितनों
को उन्होंने घात किया, और हमारा निज भाग लूट लिया।
25 उन्होंने न केवल हम पर, वरन उनके सिवानों पर भी हाथ बढ़ाया है।
26 और देख, आज के दिन वे यरूशलेम के गुम्मट को घेर रहे हैं, कि उसे
ले लें; और पवित्रस्थान और बेतसूरा को भी उन्होंने दृढ़ कर लिया है।
27 इसलिये यदि तू उन्हें शीघ्र न रोके, तो वे इनसे भी बड़े बड़े काम करेंगे,
और तू उन पर प्रभुता न कर सकेगा।
28 जब राजा ने यह सुना, तब क्रोधित हुआ, और अपके सब मित्रोंऔर
सेनापतियोंऔर घोड़ेके सरदारोंको इकट्ठा किया।
29 और राज्योंऔर समुद्र के द्वीपोंसे भी भाड़े के सिपाहियोंके दल उसके
पास आए।
30 इस प्रकार उसकी सेना की गिनती एक लाख प्यादों, और बीस हजार
सवारों, और युद्ध करनेवाले दो तीस हाथियोंकी हुई।
31 ये इदुमिया से होते हुए बेतसूरा के विरुद्ध खड़े हुए, और युद्ध के यन्त्र
बनाकर उस पर बहुत दिन तक आक्रमण करते रहे; परन्तु बेथसूरा के
लोगों ने निकलकर उन्हें आग में जला दिया, और वीरता से लड़े।
32 इस पर यहूदा गुम्मट पर से हट गया, और बथजकरियास में राजा की
छावनी के साम्हने डेरे खड़े किए।
33 तब राजा बड़े सवेरे उठकर अपक्की सेना समेत बथजकरियास की
ओर उग्र होकर चला, और वहां उसकी सेनाएं युद्ध करने को तैयार हुईं,
और तुरहियां फूंकीं।
34 और अन्त में उन्होंने हाथियोंको लड़ने को भड़काने के लिये उनको
अंगूर और शहतूत का लोहू दिखाया।
35 और उन्होंने पशुओं को सेनाओंमें बांट लिया, और एक एक हाथी के
लिथे एक हजार पुरूष ठहराए, जो उनके सिर पर कवच और पीतल के

टोप पहिने हुए थे; और इसके अलावा, प्रत्येक जानवर के लिए पांच सौ सर्वश्रेष्ठ घुड़सवार नियुक्त किए गए।
36 ये हर अवसर पर तैयार रहते थे: जहां कहीं वह पशु था, और जहां जहां वह जाता था, वहां वे भी जाते थे, और उससे अलग नहीं होते थे।
37 और उन पशुओं के ऊपर लकड़ी की दृढ़ मीनारें थीं, जो उन में से हर एक को ढांपे हुए थीं, और उनको युक्तियों से कसकर बांध रही थीं; और उन में से एक एक भारतीय को छोड़ कर, उन पर लड़ने वाले दो तीस बलवान पुरूष थे। उसे।
38 और बचे हुए सवारोंको उन्होंने सेना के दोनोंअलंगोंपर इधर उधर खड़ा किया, और उनको संकेत दिया, कि क्या करना है, और सब पांति के बीच में जोत दिए गए।
39 और जब सूर्य सोने और पीतल की ढालोंपर चमका, तब पहाड़ उस से चमक उठे, और आग के दीपकोंके समान चमक उठे।
40 इस प्रकार राजा की सेना का एक भाग ऊँचे पहाड़ोंपर, और कुछ नीचे घाटियोंपर फैलकर निडर और क्रम से आगे बढ़ा।
41 इस कारण जितनों ने उनकी भीड़ का शब्द, और दल के चलने का शब्द, और साजों की घरघराहट सुनी, वे चकित हो गए; क्योंकि सेना बहुत बड़ी और सामर्थी थी।
42 तब यहूदा और उसकी सेना निकट आकर युद्ध करने लगे, और राजा की सेना में से छ: सौ पुरूष मारे गए।
43 एलीआजर ने भी, जो सवरण कहलाता है, यह जानकर, कि उन पशुओं में से एक, जो राजसी हथियार से सुसज्जित है, सब सब से ऊंचा है, और यह भी समझा, कि राजा उसके ऊपर है।
44 अपने आप को संकट में डाल, कि वह अपनी प्रजा को छुड़ाए, और अपना सदा का नाम रखे;
45 इस कारण वह युद्ध के बीच में हियाव करके उस पर दौड़ा, और उसके दाहिने और बाएं हाथ को घात किया, यहां तक कि वे दोनों ओर से उस से अलग हो गए।
46 ऐसा करने पर वह रेंगकर हाथी के नीचे आ गया, और उसे पटककर मार डाला, और हाथी उस पर गिर पड़ा, और वह वहीं मर गया।
47 परन्तु शेष यहूदी राजा का बल और उसकी सेनाओं का उपद्रव देखकर उन से विमुख हो गए।
48 तब राजा की सेना उनका साम्हना करने के लिथे यरूशलेम को चढ़ गई, और राजा ने यहूदिया के साम्हने और सिय्योन पहाड़ के साम्हने अपके तम्बू खड़े किए।
49 परन्तु उस ने बेतसूरा के लोगोंसे मेल कर लिया; क्योंकि वे नगर से बाहर निकल आए, क्योंकि वहां उनके पास घेरने के लिथे भोजनवस्तु न थी, क्योंकि यह देश के विश्राम का वर्ष था।
50 इसलिये राजा ने बेतसूरा को ले लिया, और उसकी रक्षा के लिथे वहां एक पहरा बिठाया।
51 और उस ने पवित्रस्यान को बहुत दिन तक घेरे रखा; और वहां तोपें, यन्त्र, और आग फेंकने के यन्त्र, और पत्थर, और तीर और गोफन डाल दिए।
52 इसके बाद उन्होंने अपने इंजनों के विपरीत इंजन भी बनाए, और उनसे लंबे समय तक युद्ध किया ।
53 तौभी अन्त में उनके बर्तन भोजन के लिये खाली रह गए, क्योंकि यह सातवां वर्ष था, और जो यहूदिया में अन्यजातियों के हाथ से छुड़ाए गए थे, उन्होंने सारा भण्डार खा लिया;
54 पवित्रस्थान में थोड़े ही लोग बचे थे, क्योंकि अकाल उन पर इतना प्रबल हो गया था, कि वे अपना-अपना स्यान को तितर-बितर करना कठिन कर रहे थे।
55 उस समय लूसियास ने यह कहते सुना, कि फिलिप्पुस ने, जिसे अन्ताकियास राजा ने, जब तक वह जीवित था, अपने बेटे अन्ताकियास के पालन-पोषण के लिये नियुक्त किया, कि वह राजा हो।
56 और मादी और राजा की सेना भी जो उसके साय फ़ारस से लौट आई थी, और वह अपने पास सब कामों का प्रबन्ध करना चाहता था।
57 इसलिथे उस ने तुरन्त जाकर राजा और सेनापतियोंऔर मण्डली के प्रधानोंसे कहा, हम तो प्रतिदिन सड़ते जाते हैं, और हमारी भोजनवस्तुएं बहुत कम रह गई हैं, और जिस स्यान पर हम ने घेरा डाला है वह दृढ़ है, और राज्य का काम हम पर झूठ बोलो:
58 इसलिये अब आओ हम उन मनुष्योंसे मित्रता करें, और उन से वरन उनकी सारी जाति से मेल मिलाप करें;
59 और उन से यह वाचा बान्धी, कि वे पहिले की नाई अपक्की व्यवस्या के अनुसार जीवन बिताएंगे; क्योंकि हम ने उनकी व्यवस्या नाश की है, इस कारण उन्होंने अप्रसन्न होकर यह सब काम किया है।
60 तब राजा और हाकिम सन्तुष्ट हुए; इसलिथे उस ने उन के पास मेल कराने को भेजा; और उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया।
61 और राजा और हाकिमोंने उन से शपथ खाई, और वे गढ़ से निकल गए।
62 तब राजा ने सिय्योन पहाड़ पर प्रवेश किया; परन्तु जब उस ने स्यान की मजबूती देखी, तो अपनी खाई हुई शपथ तोड़ दी, और चारोंओर की शहरपनाह को ढा देने की आज्ञा दी।
63 इसके बाद वह शीघ्रता से चला गया, और अन्ताकिया को लौट आया, और वहां फिलिप्पुस को नगर का स्वामी पाया, और उस से लड़कर बलपूर्वक नगर पर अधिकार कर लिया।

अध्याय 7

1 एक सौ एक पचासवें वर्ष में सेल्यूकस का पुत्र देमेत्रियुस रोम से चला गया, और कुछ पुरूषोंके साथ समुद्र के तट के एक नगर में आया, और वहां राज्य करने लगा।
2 और जब वह अपके पुरखाओंके भवन में गया, तब उसके दल ने अन्ताकिया और लूसियास को पकड़ लिया, कि उन्हें उसके पास ले आएं।
3 इसलिथे जब उस ने यह जान लिया, तो कहा, मुझे उन का मुंह न देखने दे।
4 इसलिये उसके दल ने उनको मार डाला। अब जब दिमेत्रियुस अपने राज्य की गद्दी पर बैठा,
5 और इस्राएल के सब दुष्ट और अभक्त लोग, और अलकिमुस भी, जो प्रधान याजक बनने का इच्छुक था, उसके पास आए।
6 और उन्होंने राजा के साम्हने प्रजा के लोगोंपर दोष लगाया, कि यहूदा और उसके भाइयोंने तेरे सब मित्रोंको घात किया, और हम को हमारे निज देश से निकाल दिया है।
7 इसलिये अब किसी पुरूष को जिस पर तू भरोसा रखता है भेज, और वह जाकर देखे कि उस ने हम में और राजा के देश में क्या क्या उत्पात मचाया है, और जितने उनके सहायक हैं उन सभोंको दण्ड दे।
8 तब राजा ने बक्खिदेस नाम राजा के एक मित्र को चुन लिया, जो जलप्रलय के पार राज्य करता या, और राज्य में बड़ा पुरूष या, और राजा का विश्वासयोग्य था।
9 और उस ने उस दुष्ट अलकिमुस के साय भेजा, जिसे उस ने महायाजक ठहराया, और आज्ञा दी, कि इस्राएलियोंसे पलटा ले।
10 सो वे चले गए, और बड़ी शक्ति के साथ यहूदिया देश में आए, और वहां उन्होंने यहूदा और उसके भाइयोंके पास मेल की बातें कहकर कपट से दूत भेजे।
11 परन्तु उन्होंने उनकी बातों पर ध्यान न दिया; क्योंकि उन्होंने देखा कि वे बड़ी शक्ति के साथ आए हैं।
12 तब न्याय की मांग करने के लिथे अल्किमुस और बाखिदेस के पास शास्त्रियोंकी एक मण्डली इकट्ठी हुई।
13 और अस्सीदी इस्राएलियोंमें से पहिले थे, जो उन से मेल चाहते थे;
14 क्योंकि उन्होंने कहा, हारून के वंश का एक याजक इस दल के साथ आया है, और वह हम से कुछ अपराध न करेगा।
15 तब उस ने उन से मेल मिलाप से बातें की, और उन से शपथ खाकर कहा, हम न तो तुम को और न तुम्हारे मित्रों को हानि पहुंचाएंगे।
16 इस पर उन्होंने उस पर विश्वास किया, तौभी उस ने उन में से सत्तर पुरूषों को पकड़कर अपने लिखे वचन के अनुसार एक ही दिन में घात कर डाला।
17 तेरे पवित्र लोगोंका मांस उन्होंने फेंक दिया, और यरूशलेम के चारोंओर उनका लोहू बहाया, और कोई मिट्टी देनेवाला न रहा।
18 इस कारण उन सभोंपर भय और भय छा गया, और वे कहने लगे, कि उन में सत्य वा धर्म कुछ नहीं; क्योंकि उन्होंने अपनी वाचा और शपथ को तोड़ दिया है।

19 इसके बाद उसने बाककिदियों को यरूशलेम से निकाल दिया, और बेजेत में अपने तम्बू खड़े किए, और वहां भेजकर बहुत से लोगोंको जो उसे छोड़ गए थे, वरन बहुत सी प्रजा को भी बन्धुआई में ले लिया, और उनको घात करके बड़े जंगल में डाल दिया। गड्ढा।
20 तब उस ने उस देश को अलकिमुस को सौंप दिया, और उसकी सहायता के लिथे एक शक्ति उसके पास छोड़ दी; इसलिथे बक्खिदेस राजा के पास गया।
21 परन्तु अलकिमस ने महायाजक पद के लिये विवाद किया।
22 और जितने लोगोंने यहूदा के देश को अपने वश में कर लिया, उन सभोंने इस्राएल को बहुत हानि पहुंचाई, और सब उपद्रवी लोग उसके पीछे हो लिए।
23 जब यहूदा ने देखा, कि अलकिमस और उसकी मण्डली ने इस्राएलियोंके बीच अन्यजातियोंसे भी बढ़कर कैसा उपद्रव किया है,
24 और वह यहूदिया के चारों ओर चारों ओर घूम गया, और उन लोगों से पलटा लिया, जो उस से बलवा करते थे, और उन्हें फिर देश में जाने का साहस न हुआ।
25 दूसरी ओर, जब अलकिमस ने देखा कि यहूदा और उसकी टोली प्रबल हो गई है, और यह जान लिया कि वह उनकी शक्ति का सामना नहीं कर पाएगा, तो वह फिर राजा के पास गया, और जो कुछ वह कह सकता था, उन सब से बुरा-भला कहा।
26 तब राजा ने अपने प्रतिष्ठित हाकिमों में से एक निकानोर को, जो इस्राएल से भयंकर बैर रखता या, यह आज्ञा देकर भेजा, कि प्रजा को नाश कर डालो।
27 इसलिये निकानोर बड़ी सेना लेकर यरूशलेम पर आया; और यहूदा और उसके भाइयों के पास मित्रता की बातें कहकर कहला भेजा,
28 मेरे और तुम्हारे बीच लड़ाई न हो; मैं कुछ आदमियों के साथ आऊँगा, ताकि तुम्हें शान्ति से देख सकूँ।
29 तब वह यहूदा के पास आया, और उन्होंने एक दूसरे को नमस्कार किया। हालाँकि शत्रु हिंसा द्वारा यहूदा को छीनने के लिए तैयार थे।
30 यह बात जब यहूदा को मालूम हुई, कि वह उसके पास छल से आया है, तब वह उस से बहुत डर गया, और फिर उसका मुंह न देखना चाहता था।
31 और निकानोर ने भी जब देखा कि मेरी युक्ति पकड़ी गई है, तो कफरसलामा के पास यहूदा से लड़ने को निकला।
32 वहां निकानोर के पक्ष के कोई पांच हजार पुरूष मारे गए, और बचे हुए लोग दाऊदपुर में भाग गए।
33 इसके बाद निकानोर सिय्योन पहाड़ पर चढ़ गया, और वहां कुछ याजकों और प्रजा के पुरनियों में से कुछ पवित्रस्थान में से निकल आए, कि उसका कुशल से स्वागत करें, और वह होमबलि जो राजा के लिये चढ़ाया जाता है, उसे दिखाएं।
34 परन्तु उस ने उनका ठट्ठा किया, और उन पर हंसा, और उनको लज्जाजनक गालियां दीं, और घमण्ड से कहा;
35 और क्रोध में आकर शपथ खाकर कहा, यदि यहूदा और उसकी सेना मेरे हाथ में न कर दी गई, तो यदि मैं कभी बचकर आऊंगा, तो इस घर को फूंक डालूंगा; और यह कह कर वह बड़े क्रोध में आकर बाहर चला गया।
36 तब याजक भीतर जाकर वेदी और मन्दिर के साम्हने खड़े होकर रोते हुए कहने लगे,
37 हे यहोवा, तू ने इस भवन को इसलिये चुना है, कि यह तेरा नाम रखा जाए, और यह तेरी प्रजा के लिये प्रार्थना और बिनती का घर हो;
38 उस मनुष्य और उसकी सेना से पलटा लो, और उन्हें तलवार से मार डालो; उनकी निन्दा को स्मरण रखो, और उन्हें आगे न बढ़ने दो।
39 तब निकानोर ने यरूशलेम से निकलकर बेथोरोन में अपने तम्बू खड़े किए, और वहां सीरिया से आनेवाली एक सेना ने उस से भेंट की।
40 परन्तु यहूदा ने तीन हजार पुरूष संग लेकर अदासा में डेरा डाला, और वहां प्रार्थना करके कहा,
41 हे यहोवा, जब अश्शूर के राजा की ओर से भेजे हुए लोग निन्दा करने लगे, तब तेरे दूत ने निकलकर उन में से एक लाख पैंसठ हजार को मार डाला।
42 इसी रीति से आज तू इस सेना को हमारे साम्हने से नाश कर, जिस से और जान लें कि उस ने तेरे पवित्रस्थान की निन्दा की है, और तू उसकी दुष्टता के अनुसार उसका न्याय करना।
43 सो अदार महीने के तेरहवें दिन को अदार की सेनाएं युद्ध करने लगीं; परन्तु निकानोर की सेना घबरा गई, और सबसे पहले वह आप ही लड़ाई में मारा गया।
44 जब निकानोर की सेना ने देखा, कि वह मारा गया, तो अपने हथियार छोड़कर भाग गए।
45 तब उन्होंने तुरहियां बजाकर उनका पीछा करते हुए अदासा से लेकर गजेरा तक दिन भर तक उनका पीछा किया।
46 तब उन्होंने यहूदिया के चारोंओर के सब नगरों से निकलकर उनको बन्द कर दिया; यहां तक कि वे अपने पीछा करनेवालों पर पलटवार करके तलवार से मारे गए, और उन में से एक भी न बचा।
47 इसके बाद उन्होंने लूट का माल और लूट लिया, और निकानोर का सिर और उसका दाहिना हाथ, जिसे वह बड़े गर्व से फैला रहा था, मार डाला, और ले जाकर यरूशलेम की ओर लटका दिया।
48 इस कारण लोग बहुत आनन्दित हुए, और उस दिन को बड़े आनन्द का दिन माना।
49 और उन्होंने अदार के तेरहवें दिन को प्रति वर्ष इस दिन को मानना ठहराया।
50 इस प्रकार यहूदा का देश थोड़ी देर तक विश्राम में रहा।

अध्याय 8

1 अब यहूदा ने रोमियों के बारे में सुना था, कि वे शक्तिशाली और बहादुर लोग थे, और जो लोग उनसे जुड़ते थे, उन्हें प्रेम से स्वीकार करते थे, और जो उनके पास आते थे, उनके साथ मैत्री की संधि करते थे;
2 और वे बड़े शूरवीर थे। उसे यह भी बताया गया कि उन्होंने गलातियों के बीच अपने युद्धों और महान कार्यों का वर्णन किया था, और उन्होंने उन्हें कैसे जीत लिया था, और उन्हें कर के अधीन कर दिया था;
3 और उन्होंने स्पेन देश में सोने चांदी की खदानें जीतने के लिथे क्या क्या किया;
4 और अपनी नीति और धैर्य से उन्होंने उस सारे स्थान को जीत लिया, यद्यपि वह उन से बहुत दूर था; और जो राजा पृथ्वी भर से उन पर चढ़ाई करते थे, यहां तक कि उन्होंने उनको व्याकुल कर दिया, और उनको भारी परास्त कर दिया, यहां तक कि शेष लोग उन्हें प्रति वर्ष कर देते थे।
5 और यह भी, कि उन्होंने फिलिप्पुस को, और सिटीम के राजा पर्सेयुस को, और औरों को जो उन पर चढ़ाई करके उन पर जय पाए थे, किस प्रकार युद्ध में व्याकुल कर दिया था:
6 और आसिया का महान राजा अन्तिओकस, जो एक सौ बीस हाथियों, सवारों, रथों, और बहुत बड़ी सेना लिये हुए, उनके विरूद्ध युद्ध करने को आया था, उन से कैसे घबरा गया;
7 और उन्होंने उसे कैसे जीवित पकड़ लिया, और यह वाचा बान्धी, कि वह और उसके पीछे जो राजा हुए वे बड़ा कर देंगे, और बन्धक देंगे, और जो कुछ समझौता हुआ हो वह भी देंगे,
8 और हिंदुस्तान का देश, और मेदिया और लुदिया और अच्छे अच्छे देश, जिन्हें उन्होंने उससे ले लिया, और राजा यूमेनस को दे दिया:
9 और यूनानियोंने आकर उनको नाश करने की ठानी थी;
10 और उन्होंने इसका ज्ञान पाकर उनके विरुद्ध एक सरदार को भेजा, और उन से लड़कर उन में से बहुतोंको घात किया, और उनकी स्त्रियोंऔर बच्चोंको बन्धुवाई करके ले गए, और उनको लूट लिया, और उनकी भूमि पर अधिकार कर लिया, और उनके बलवन्तोंको ढा दिया। और उन्हें पकड़कर आज के दिन तक अपके दास बनाकर ले आए।
11 और उसे यह भी बताया गया, कि उन्होंने अन्य सभी राज्यों और द्वीपों को जो कभी उनका विरोध करते थे, नाश करके अपने वश में कर लिया;
12 परन्तु उन्होंने अपके मित्रोंऔर जितनोंपर भरोसा रखा या, उन से मेल रखा; और उन्होंने दूर और निकट दोनों राज्योंको जीत लिया, यहां तक कि जितनों ने उनका नाम सुना, वे उन से डरते थे।
13 और वे जिस को राज्य करने में सहाथता करना चाहते हैं, वही राज्य करते हैं; और जिसे वे फिर चाहते थे, उसे पद से हटा देते थे: अन्त में, कि वे बहुत ऊंचे हो गए:

14 तौभी उन में से किसी ने भी महिमा दिखाने के लिये मुकुट न पहिनाया, और न बैंजनी वस्त्र पहिनाया।
15 और उन्होंने अपने लिये एक सीनेट भवन बनाया, जिस में तीन सौ बीस पुरूष प्रतिदिन महासभा में बैठते थे, और लोगों के लिये परामर्श करते रहते थे, कि अन्त में वे अच्छी रीति से सुव्यवस्थित हो जाएं।
16 और उन्होंने अपना शासन प्रति वर्ष एक पुरूष को सौंप दिया, जो उनके सारे देश पर प्रभुता करता था, और सब एक ही के आज्ञाकारी थे, और उन में डाह या अनुकरण न था।
17 इन बातोंको ध्यान में रखकर यहूदा ने यूपोलेमस को जो यूहन्ना का पुत्र और अक्कोस का पोता और एलीआजर के पुत्र यासोन को चुन लिया, और उनको रोम में भेज दिया, कि उन से मैत्री और मेल की वाचा बान्धे।
18 और उन से बिनती की, कि उन पर से जूआ खींच लें; क्योंकि उन्होंने देखा कि यूनानियों के राज्य ने दासत्व से इस्राएल पर अन्धेर किया है।
19 इसलिए वे रोम गए, जो एक बहुत लंबी यात्रा थी, और सीनेट में आए, जहां उन्होंने बातें कीं और कहा ।
20 यहूदा मकाबी ने अपने भाइयोंऔर यहूदियोंसमेत हमें तुम्हारे पास इसलिये भेजा है, कि हम तुम्हारे साथ मेल मिलाप करें, और हम तुम्हारे संघ और मित्र ठहरें।
21 सो यह बात रोमियों को अच्छी लगी।
22 और यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जिसे सीनेट ने फिर से पीतल की तालिकाओं में लिखा, और यरूशलेम को भेजा, ताकि वे उनके द्वारा शांति और मित्रता का स्मारक बना सकें:
23 रोमियों और यहूदियोंको समुद्र और भूमि में सर्वदा के लिये यश मिले; तलवार और शत्रु उन से दूर रहें।
24 यदि रोमियों वा उनके समस्त राज्य में उनके किसी संघ पर पहिले युद्ध हो,
25 यहूदी लोग नियत समय के अनुसार अपने सम्पूर्ण मन से उनकी सहायता करेंगे।
26 न तो वे उन लोगों को कुछ देंगे जो उन पर युद्ध करते हैं, और न ही उन्हें भोजन, हथियार, धन, या जहाजों से सहायता करते हैं, जैसा कि रोमियों को अच्छा लगा; परन्तु वे कुछ भी न लेकर अपनी वाचा का पालन करेंगे।
27 इसी रीति से यदि यहूदियोंकी जाति पर युद्ध होने लगे, तो रोमी समय के अनुसार अपके सम्पूर्ण मन से उनकी सहाथता करेंगे।
28 और जो रोमियोंको अच्छा जान पड़े, उनको न भोजन की वस्तु, न हथियार, न रूपया, न जहाज दिए जाएं; परन्तु वे अपनी वाचा का पालन करेंगे, और वह भी बिना किसी कपट के।
29 इन लेखों के अनुसार रोमियों ने यहूदियोंके लोगोंसे वाचा बान्धी।
30 फिर भी यदि इसके बाद एक पक्ष या दूसरा पक्ष किसी चीज को जोड़ने या घटाने के लिए मिलने की सोचेगा, तो वे अपनी इच्छा से ऐसा कर सकते हैं, और जो कुछ भी वे जोड़ेंगे या घटाएंगे उसकी पुष्टि की जाएगी।
31 और दिमेत्रियुस ने जो बुराइयां यहूदियों के साथ कीं, उनके विषय में हम ने उसे लिखकर पूछा है, कि तू ने अपना जूआ हमारे मित्रों और संघी यहूदियोंपर क्यों भारी कर दिया?
32 इसलिये यदि वे फिर तेरे विरूद्ध शिकायत करें, तो हम उनका न्याय करेंगे, और जल और जल मार्ग में तुझ से लड़ेंगे।

अध्याय 9

1 इसके अलावा, जब देमेत्रियुस ने सुना कि निकानोर और उसकी सेना युद्ध में मारे गए, तो उसने बाखिदेस और अलकिमस को दूसरी बार यहूदिया देश में भेजा, और उनके साथ उसकी सेना के मुख्य बल थे:
2 और उन्होंने गलगाला के मार्ग से निकलकर अर्बेला के मसालोत के साम्हने अपने तम्बू खड़े किए, और उसे जीतने के बाद बहुत से मनुष्योंको घात किया।
3 और एक सौ बावनवें वर्ष के पहिले महीने में उन्होंने यरूशलेम के साम्हने डेरे खड़े किए;
4 वहां से वे चलकर बीस हजार प्यादों और दो हजार सवारोंसमेत बिरीया को गए।
5 और यहूदा ने एलीसा में अपना तम्बू खड़ा किया या, और उसके संग तीन हजार चुने हुए पुरूष थे।
6 और वे दूसरी सेना की इतनी बड़ी भीड़ देखकर बहुत डर गए; तब बहुत से लोग अपने आप को सेना से बाहर ले आए, यहाँ तक कि उनमें आठ सौ आदमियों के अलावा और कोई निवास नहीं था।
7 जब यहूदा ने देखा, कि मेरी सेना भाग गई, और लड़ाई मुझ पर भारी पड़ी, तब वह मन में बहुत घबराया, और बहुत उदास हुआ, क्योंकि उसे उन को इकट्ठा करने का समय न मिला।
8 तौभी उस ने बचे हुओं से कहा, आओ, हम उठकर अपके शत्रुओंपर चढ़ाई करें, कि कदाचित हम उन से लड़ सकें।
9 परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे हतोत्साहित किया, कि हम कभी ऐसा न कर सकेंगे; इसलिये हम अपना प्राण बचाएं, और फिर अपने भाइयों समेत लौटकर उन से लड़ेंगे, क्योंकि हम थोड़े हैं।
10 तब यहूदा ने कहा, परमेश्वर न करे, कि मैं ऐसा करूं, और उनके साम्हने से भाग जाऊं; यदि हमारा समय आए, तो हम अपने भाइयोंके लिथे पुरूष होकर मरें, और अपनी प्रतिष्ठा पर कलंक न लगाएं।
11 तब बक्खिदोंकी सेना अपके डेरोंमें से निकलकर उनके साम्हने खड़ी हो गई, और उनके सवार दो दो दलोंमें विभक्त हो गए, और उनके गोफन और धनुर्धारी सेना के आगे आगे चलते थे, और जो आगे आगे चलते थे वे सब शूरवीर थे।
12 और बक्खिदेस तो दाहिनी ओर था, और सेना ने दोनों ओर से निकट आकर तुरही फूंकी।
13 और यहूदा की ओर के लोगोंने भी तुरहियां फूंकीं, और सेनाओंके शब्द से पृथ्वी डोल उठी, और भोर से रात तक लड़ाई होती रही।
14 जब यहूदा ने जान लिया, कि बक्खिदेस और उसकी सेना दाहिनी ओर है, तब उस ने सब साहसी पुरूषों को अपने संग ले लिया।
15 जिस ने दाहिनी ओर को व्याकुल कर दिया, और अज़ोतुस पहाड़ तक उनका पीछा किया।
16 परन्तु जब बाएं ओर के लोगों ने देखा, कि हम दाहिनी ओर से घबरा गए हैं, तो वे यहूदा और उसके साथियोंके पीछे हो लिये।
17 इसके बाद भीषण युद्ध हुआ, यहाँ तक कि दोनों ओर से बहुत से लोग मारे गये।
18 यहूदा भी मारा गया, और जो बचे हुए थे वे भाग गए।
19 तब योनातान और शमौन ने अपके भाई यहूदा को ले जाकर मोदीन में उसके पुरखाओं की कब्र में मिट्टी दी।
20 और उन्होंने उसके लिथे छाती पीटी, और सारे इस्राएल ने उसके लिथे बड़ा विलाप किया, और बहुत दिन तक छाती पीटते रहे, और कहने लगे,
21 वह शूरवीर जिस ने इस्राएल को छुड़ाया, वह क्योंकर गिर पड़ा!
22 यहूदा और उसकी लड़ाइयों के विषय में और बातें, और जो बड़े काम उसने किए, और उसकी बड़ाई, वह लिखी नहीं गई, क्योंकि वे बहुत से थे।
23 यहूदा के मरने के बाद दुष्ट लोग इस्राएल के सारे देश में बढ़ने लगे, और सब अनर्थ करने लगे।
24 उन दिनों में भी बड़ा भारी अकाल पड़ा, और देश ने बलवा करके उनके साथ हो लिया।
25 तब बाककिदेस ने दुष्ट पुरूषोंको चुन लिया, और उनको देश का स्वामी नियुक्त कर दिया।
26 और उन्होंने यहूदा के मित्रों से पूछताछ और खोज की, और उन्हें बाककिदेस के पास ले आए, और उन्होंने उन से पलटा लिया, और उनका अनादर किया।
27 सो इस्राएल में बड़ा क्लेश हुआ, और जब से कोई भविष्यद्वक्ता उन में न हुआ, तब से ऐसा कभी न हुआ।
28 इस कारण यहूदा के सब मित्र इकट्ठे होकर योनातान से कहने लगे,
29 जब से तेरा भाई यहूदा मर गया, तब से हमारे पास उसके तुल्य कोई पुरूष नहीं रहा, जो हमारे शत्रुओं, और बकाकिद, और हमारी जाति के उन लोगों के विरूद्ध,जो हमारे विरोधी हैं, आगे बढ़ सकें।
30 इसलिथे अब हम ने आज तुझे अपना हाकिम और प्रधान होने के लिथे चुन लिया है, कि तू हमारी लड़ाई में लड़े।
31 इस पर योनातान ने उस समय प्रभुता अपने ऊपर ले ली, और अपने भाई यहूदा के स्थान पर राजा हुआ।

32 परन्तु जब बक्खाइड्स को इसका ज्ञान हुआ, तो उसने उसे मार डालना चाहा
33 तब योनातान, और उसका भाई शमौन, और जितने उसके संग थे, वे सब यह जानकर थेको के जंगल में भाग गए, और असफर के सोते के जल के पास अपके तम्बू खड़े किए।
34 जिसे बक्खिदेस ने समझ लिया, वह सब्त के दिन अपनी सारी सेना समेत यरदन के निकट आया।
35 योनातान ने अपके भाई यूहन्ना को जो प्रजा का प्रधान या, अपने मित्रों नबातियोंसे प्रार्थना करने को भेजा, कि वे अपनी गाड़ी जो बहुत थी, उनके साय चले जाएं।
36 परन्तु जम्बरी के पुत्र मेदाबा से निकले, और यूहन्ना को और उसका सब कुछ ले कर चले गए।
37 इसके बाद योनातान और उसके भाई शमौन को यह समाचार मिला, कि जंबरी के बेटों ने एक बड़ा विवाह रचाया है, और कनान के एक बड़े हाकिम की बेटी होने के कारण उसकी दुल्हन को बड़े दल के साथ नदाबाथा से ले आ रहे हैं।
38 इसलिथे उन्हों ने अपके भाई यूहन्ना को स्मरण किया, और चढ़ गए, और पहाड़ की आड़ में छिप गए।
39 और उन्होंने आंख उठाकर क्या देखा, कि बड़ा कोलाहल और बड़ी गाड़ी हो रही है; और दूल्हा और उसके मित्र और भाई ढोल, बाजे, और बहुत से हथियार लिए हुए उनका स्वागत करने को निकले।
40 तब योनातान और उसके साथियों ने उस स्थान से जहां वे घात लगाए बैठे थे, उनका साम्हना किया, और उनको ऐसा घात किया, कि बहुत से लोग मर गए, और जो बचे हुए थे वे पहाड़ पर भाग गए, और सब को ले गए। उनकी लूट.
41 इस प्रकार ब्याह का विलाप शोक में, और उनके भजन का कोलाहल विलाप में बदल गया।
42 और जब उन्होंने अपने भाई के खून का पूरा पलटा लिया, तो वे फिर यरदन के दलदल की ओर लौट गए।
43 जब बक्खिदेस ने यह सुना, तो वह विश्राम के दिन बड़ी शक्ति के साथ यरदन के तट पर आया।
44 तब योनातान ने अपनी मण्डली से कहा, आओ, हम आगे बढ़ें, और अपने प्राणों के लिये लड़ें, क्योंकि वह पहिले की नाई आज भी हमारे साय नहीं ठहरता।
45 क्योंकि देखो, हमारे साम्हने और पीछे लड़ाई है, और यर्दन का जल इधर उधर है, और दलदल और जंगल है, और हम को हटने का स्थान नहीं।
46 इसलिये अब स्वर्ग की दोहाई दो, कि तुम अपने शत्रुओं के हाथ से बच जाओ।
47 तब वे आपस में लड़ने लगे, और योनातान ने बाकाइडिस को मारने के लिये अपना हाथ बढ़ाया, परन्तु वह उसके पास से लौट गया।
48 तब योनातान और उसके साय यरदन में कूद पड़े, और तैरकर दूसरे किनारे पर पहुंच गए, तौभी दूसरा यरदन पार न हो सका।
49 इस प्रकार उस दिन बक्खिदे पक्ष के लगभग एक हजार पुरूष मारे गए।
50 इसके बाद बक्खिदेस यरूशलेम को लौट आए, और यहूदिया में दृढ़ नगरोंकी मरम्मत की; यरीहो के किलों को, और इम्मौस, और बेथोरोन, और बेतेल, और थम्नाता, फिरातौनी, और तापोन, इन को उस ने ऊंची शहरपनाह, और फाटकों, और बेड़ोंसे दृढ़ किया।
51 और उन में उस ने एक पहरा बैठाया, कि वे इस्राएल से बैर करें।
52 और उस ने बेतसूरा नगर, और गजेरा, और गुम्मट को दृढ़ किया, और उन में सेना नियुक्त की, और भोजनवस्तु का प्रबन्ध किया।
53 और उस ने देश भर के मुख्य पुरूषोंके बेटोंको बन्धक बनाकर यरूशलेम के गुम्मट में डलवा दिया, कि रखे रहें।
54 फिर एक सौ तिरपनवें वर्ष के दूसरे महीने में अलकिमुस ने आज्ञा दी, कि पवित्रस्थान के भीतरी आंगन की शहरपनाह ढा दी जाए; उसने भविष्यवक्ताओं के कार्यों को भी नष्ट कर दिया
55 और जब वह नीचे खींचने लगा, उसी समय अलकिमस को व्याधि हुई, और उसका काम रुक गया, और उसका मुंह बन्द हो गया, और उसे लकवा मार गया, यहां तक कि वह फिर न कुछ बोल सका, और न कुछ आदेश दे सका। उसके घर।
56 सो अलकिमुस उसी समय बड़ी पीड़ा से मर गया।
57 जब बक्खिदेस ने देखा, कि अलकिमुस मर गया, तब वह राजा के पास लौट आया, और यहूदिया देश दो वर्ष तक विश्राम में रहा।
58 तब सब दुष्टोंने एक सभा करके कहा, सुन, योनातान और उसकी मण्डली तो सुख से हैं, और निडर रहते हैं; इसलिथे अब हम बक्खिदोंको यहां ले आएंगे, और वह उन सब को एक ही रात में ले लेगा।
59 इसलिये उन्होंने जाकर उस से सम्मति की।
60 तब वह चला गया, और एक बड़ी सेना के साथ आया, और यहूदिया में अपने अनुयायियों को गुप्त रूप से पत्र भेजा, कि वे योनातान और उसके साथियों को पकड़ लें; तौभी वे ऐसा न कर सके, क्योंकि उनकी युक्ति उन को मालूम थी।
61 इसलिथे उन्होंने उस देश के पुरूषोंमें से जो उस उपद्रव के कर्ता थे, लगभग पचास पुरूषोंको पकड़ लिया, और उनको मार डाला।
62 इसके बाद योनातान और शमौन और उसके साय बेतबासी को जो जंगल में है, ले गए, और उसकी मरम्मत करके उसे दृढ़ किया।
63 यह बात जब बक्खिदेस को मालूम हुई, तब उस ने अपक्की सारी सेना इकट्ठी की, और यहूदिया के लोगोंके पास कहला भेजा।
64 तब उस ने जाकर बेतबासी को घेर लिया; और उन्होंने इसके खिलाफ लंबे समय तक लड़ाई लड़ी और युद्ध के इंजन बनाए।
65 परन्तु योनातान ने अपके भाई शमौन को नगर में छोड़ दिया, और आप निकलकर देश में चला गया, और कुछ लोगोंके साथ निकल गया।
66 और उस ने ओडोनार्कस और उसके भाइयोंको, और फासीरोनियोंको उनके डेरे में मार डाला।
67 और जब वह उनको मारने लगा, और अपनी सेना समेत चढ़ आया, तब शमौन और उसकी टोली नगर से निकल गई, और युद्ध के यन्त्र फूंक डाले।
68 और बक्खिदेस से जो उन से घबरा गया या, उस से लड़े, और उन्होंने उसे बड़ा दुःख दिया; क्योंकि उसकी युक्ति और परिश्रम व्यर्थ गया।
69 इसलिए वह उन दुष्ट लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ जिन्होंने उसे देश में आने की सलाह दी थी, यहां तक कि उसने उनमें से कई को मार डाला, और अपने देश में लौटने का इरादा किया।
70 जब योनातान को इसका ज्ञान हुआ, तब उस ने उसके पास दूत भेजे, कि वह उसके साथ मेल करके बन्दियोंको उनके हाथ सौंप दे।
71 जिसे उस ने मान लिया, और उसकी मांगों के अनुसार किया, और उस से शपथ खाई, कि वह जीवन भर उसे कभी हानि न पहुंचाएगा।
72 इसलिथे जब उस ने उन बन्धुओंको जो उस ने पहिले यहूदिया देश से निकाल लिया या, उनको फिर लौटा दिया, तब वह लौटकर अपके देश में चला गया, और फिर उनके देश में न गया।
73 इस प्रकार तलवार इस्राएल में से बन्द हो गई, परन्तु योनातान मकमास में रहने लगा, और प्रजा पर प्रभुता करने लगा; और उस ने इस्राएल में से दुष्ट पुरूषोंको नाश किया।

अध्याय 10

1 एक सौ साठवें वर्ष में अन्तियोख का पुत्र सिकन्दर, जो एपिफेनिस कहलाता है, चढ़ाई करके पतोलेमाइस को ले लिया; क्योंकि लोगों ने उसे ग्रहण किया था, और उसी के द्वारा वह वहां राज्य करता था।
2 जब राजा देमेत्रियुस ने यह सुना, तब उस ने बहुत बड़ी सेना इकट्ठी की, और उस से लड़ने को निकला।
3 फिर देमेत्रियुस ने योनातान की बड़ाई करके उसके पास प्रेम भरी बातें लिखीं।
4 क्योंकि उस ने कहा, आओ पहिले हम उस से मेल कर लें, इस से पहिले कि वह सिकन्दर से मिलकर हमारे विरूद्ध हो जाए।
5 नहीं तो वह उन सब बुराइयों को स्मरण करेगा जो हम ने उस पर, और उसके भाइयोंऔर उसकी प्रजा पर की हैं।
6 इस कारण उस ने उसे सेना इकट्ठी करने, और हथियार उपलब्ध कराने का अधिकार दिया, कि वह युद्ध में उसकी सहायता कर सके; और यह भी आज्ञा दी, कि जो बन्धक गुम्मट में थे, उन्हें उसके हाथ सौंप दिया जाए।

7 तब योनातान ने यरूशलेम को आकर सब लोगोंको और गुम्मट में रहनेवालोंको ये चिट्ठियां पढ़कर सुनाईं:
8 जब उन्होंने सुना, कि राजा ने उसे सेना इकट्ठी करने का अधिकार दिया है, तब वे बहुत डर गए।
9 तब उन्होंने अपके बन्धुओंको गुम्मट पर से योनातान के हाथ सौंप दिया, और उस ने उनको उनके माता-पिता के हाथ सौंप दिया।
10 ऐसा होने पर योनातान यरूशलेम में बस गया, और नगर को बनाने और सुधारने लगा।
11 और उस ने कारीगरों को आज्ञा दी, कि शहरपनाह और सिय्योन पर्वत के चारों ओर चौकोर पत्थरों से किलेबंदी करें; और उन्होंने वैसा ही किया.
12 तब जो परदेशी बाकाइडियोंके बनाए हुए गढ़ोंमें थे, वे भाग गए;
13 यहां तक कि हर एक मनुष्य अपना अपना स्थान छोड़कर अपने देश को चला गया।
14 परन्तु जो लोग व्यवस्था और आज्ञाओंको त्याग चुके थे, उन में से कुछ तो बेतसूरा में ही बचे रहे; क्योंकि वही उनका शरणस्थान या।
15 जब राजा सिकन्दर ने सुना, कि दिमेत्रियुस ने योनातान के पास क्या-क्या प्रतिज्ञाएं की हैं, और उस से यह भी कहा, कि उस ने और उसके भाइयोंने लड़ाई और बड़े बड़े काम किए, और जो दु:ख सहा है,
16 उस ने कहा, क्या हम ऐसा दूसरा मनुष्य ढूंढ़ें? इसलिये अब हम उसे अपना मित्र और संघी बनायेंगे।
17 इस पर उस ने एक पत्र लिखकर उसके पास इस प्रकार भेजा;
18 राजा सिकन्दर ने अपने भाई योनातान को नमस्कार भेजा,
19 हम ने तेरे विषय में सुना है, कि तू बड़ा पराक्रमी पुरूष है, और हमारा मित्र बनने को तैयार है।
20 इसलिये अब आज हम तुझे अपनी जाति का प्रधान याजक होने, और राजा का मित्र कहलाने के लिये ठहराते हैं; (और उसके साथ उस ने उसे एक बैंजनी वस्त्र और सोने का एक मुकुट भेजा:) और तुझ से अपेक्षा की, कि तू हमारा भाग ले, और हमारे साथ मित्रता बनाए रखे।
21 सो एक सौ साठवें वर्ष के सातवें महीने में, तम्बुओं के पर्व्व में, योनातान ने पवित्र वस्त्र पहिन लिया, और सेना इकट्ठी करके बहुत से हथियार तैयार किए।
22 जब देमेत्रियुस ने सुना, तो वह बहुत उदास हुआ, और कहा;
23 हम ने क्या किया है, कि सिकन्दर ने अपने आप को दृढ़ करने के लिये यहूदियोंसे मेल करने से हमें रोका है?
24 मैं उन्हें प्रोत्साहन की बातें भी लिखूंगा, और उन्हें सम्मान और उपहार देने का वादा करूंगा, ताकि मैं उनकी सहायता कर सकूं।
25 इसलिये उस ने उनके पास यह कहला भेजा, कि राजा देमेत्रियुस ने यहूदियोंके पास नमस्कार भेजा।
26 तुम ने हम से वाचा बान्धी, और हमारी मित्रता में बने रहे, और हमारे शत्रुओं से न मिले, यह हम ने सुना है, और आनन्दित हैं।
27 इसलिये अब भी तुम हमारे प्रति विश्वासयोग्य बने रहो, और जो कुछ तुम हमारी ओर से करोगे उसका बदला हम तुम्हें देंगे।
28 और तुम्हें बहुत सी छूट देगा, और तुम्हें प्रतिफल देगा।
29 और अब मैं तुम्हें स्वतंत्र करता हूं, और तुम्हारे निमित्त सब यहूदियोंको कर, और नमक की रीति, और राजकर से मुक्त करता हूं।
30 और जो कुछ मुझे वृक्षोंके फल का एक तिहाई अर्थात् बीज और आधा फल लेना है, उसे मैं आज के दिन से छोड़ देता हूं, जिस से वे यहूदिया देश में से छीने न जाएं। उन तीन सरकारों में से, जो सामरिया और गलील के देश से आज के दिन से सर्वदा के लिये उसमें जोड़ी गई हैं।
31 यरूशलेम भी अपने सिवानोंसमेत पवित्र और दशम अंश और कर के अंश से स्वतंत्र रहे।
32 और जो गुम्मट यरूशलेम के पास है, उस पर मैं अधिक्कारने देता हूं, और महायाजक को सौंपता हूं, कि वह उस में ऐसे पुरूषोंको ठहराए जो उसकी रखवाली के लिथे चुन ले।
33 और जितने यहूदी यहूदिया देश से बन्धुआई करके मेरे राज्य के किसी भाग में ले जाए गए थे, उन सब को मैं स्वतंत्र कर दूंगा, और मैं यह करूंगा कि मेरे सब हाकिम अपने पशुओं का भी कर चुका दें।
34 और मैं यह चाहता हूं, कि सब पर्ब्ब, और विश्रामदिन, और नया चांद, और पवित्र दिन, और पर्ब्ब के पहिले के तीन दिन, और पर्ब्ब के बाद के तीन दिन मेरे राज्य के सब यहूदियोंके लिये प्रतिरक्षा और स्वतंत्रता के हों।
35 और किसी मनुष्य को उन में से किसी के मामले में दखल देने या छेड़छाड़ करने का अधिकार न होगा।
36 मैं यह भी कहूंगा, कि राजा की सेनाओं में लगभग तीस हजार यहूदी पुरूष गिने जाएं, और उनको राजा की सारी सेनाओं के समान वेतन दिया जाए।
37 और उन में से कुछ तो राजा के गढ़ोंमें रखे जाएं, और कुछ राज्य के काम-काज पर भी जो भरोसे के हों ठहराए जाएं; और मैं ऐसा करूंगा, कि उनके सरदार और हाकिम आप ही हों, और वे उसके पीछे जीवित रहें। उनके अपने नियम हैं, जैसे यहूदिया देश में राजा ने आज्ञा दी है।
38 और उन तीन सरकारोंके विषय में जो सामरिया देश से यहूदिया में मिल गई हैं, वे यहूदिया में मिल जाएं, कि वे एक ही के अधीन गिने जाएं, और महायाजक के सिवा किसी और अधिकार का पालन करने को बाध्य न हों।
39 और पतोलेमाइस और उसकी भूमि को मैं यरूशलेम के पवित्रस्यान के लिये पवित्रस्यान के आवश्यक खर्च के लिथे नि:शुल्क दान कर देता हूं।
40 फिर मैं प्रति वर्ष राजा के खाते में से पन्द्रह हजार शेकेल चान्दी उसके स्थानोंमें से देता हूं।
41 और जो अतिरिक्त धन पहिले की नाईं हाकिम लोग न देते थे वह सब अब से मन्दिर के काम के लिथे दिया जाएगा।
42 और इसके अलावा, जो पांच हजार शेकेल चान्दी वे मन्दिर के काम में से प्रति वर्ष लेखा में से ले लेते थे, वे भी छोड़ दिए जाएं, क्योंकि वे सेवा टहल करनेवाले याजकोंके लिथे हैं।
43 और जो कोई यरूशलेम के मन्दिर में भाग जाएं, वा राजा के कर्ज़दार होने के कारण या किसी और बात के कारण स्वतंत्र हों, वे मेरे राज्य में जितने हों उन सब समेत स्वतंत्र रहें।
44 और पवित्रस्थान के भवन और मरम्मत का खर्च राजा के खाते में से दिया जाए।
45 हां, और यरूशलेम की शहरपनाह के निर्माण और उसके चारों ओर किलेबंदी का खर्च राजा के खाते में से दिया जाएगा, जैसा कि यहूदिया में शहरपनाह के निर्माण के लिए भी किया जाएगा।
46 जब योनातान और लोगों ने ये बातें सुनीं, तो उनको न श्रेय दिया और न ग्रहण किया, क्योंकि उन्हें उस बड़ी बुराई की याद आई जो उस ने इस्राएल में की थी; क्योंकि उस ने उन्हें बहुत दुःख दिया था।
47 परन्तु वे सिकन्दर से बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि वह पहिले ने उन से सच्ची मेल की बिनती की, और वे सदा उसके साथ मेल रखते थे।
48 तब राजा सिकन्दर ने बड़ी सेना इकट्ठी की, और देमेत्रियुस के साम्हने डेरा डाला।
49 और दोनों राजाओं के युद्ध करने के बाद दिमेत्रियुस की सेना भाग गई; परन्तु सिकन्दर ने उसका पीछा किया, और उन पर प्रबल हो गया।
50 और जब तक सूर्य अस्त न हो गया, तब तक वह घोर युद्ध करता रहा: और उस दिन देमेत्रियुस मारा गया।
51 इसके बाद सिकंदर ने मिस्र के राजा टॉलेमी के पास इस आशय का संदेश लेकर राजदूत भेजे:
52 क्योंकि मैं अपने राज्य में फिर आया हूं, और अपने पूर्वजों की राजगद्दी पर बैठा हूं, और प्रभुता प्राप्त कर ली है, और देमेत्रियुस को उलट दिया है, और हमारे देश को पुनः प्राप्त कर लिया है;
53 क्योंकि जब मैं ने उस से युद्ध किया, तब वह और उसकी सेना दोनों हमारे कारण निराश हो गए, और हम उसके राज्य की गद्दी पर बैठने लगे।
54 इसलिये अब आओ, हम मिल कर वाचा बान्धें, और अपनी बेटी को मुझे ब्याह दें; और मैं तेरा दामाद ठहरूंगा, और तेरी प्रतिष्ठा के अनुसार तुझे और उसे दोनों को ब्याह दूंगा।
55 तब टॉलेमी राजा ने उत्तर दिया, वह दिन धन्य हो जिस में तू अपने पुरखाओं के देश में लौट आया, और उनके राज्य की गद्दी पर विराजमान हुआ।
56 और अब जैसा तू ने लिखा है, वैसा ही मैं तुझ से करूंगा; इसलिये तूलेमीस में मुझ से मिल, कि हम एक दूसरे का दर्शन करें; क्योंकि मैं तेरी इच्छा के अनुसार अपनी बेटी का ब्याह तुझ से करूंगा।

57 तब टॉलेमी अपनी बेटी क्लियोपेट्रा समेत मिस्र से निकला, और वे एक सौ साठ वर्ष में टॉलेमीस में आए।
58 जहां राजा सिकन्दर ने उस से मुलाकात की, और अपनी बेटी क्लियोपेट्रा उसे दे दी, और उसके विवाह का उत्सव राजाओं की रीति के अनुसार टॉलेमीस में बड़ी धूमधाम से मनाया।
59 राजा सिकन्दर ने योनातान को लिखा, कि आकर उस से भेंट करे।
60 तब वह सम्मानपूर्वक टॉलेमीस को गया, और वहां दोनों राजाओं से मिला, और उन्हें और उनके मित्रों को चान्दी, सोना और बहुत सी भेंटें दीं, और उन से प्रसन्न हुआ।
61 उस समय इस्राएल के कुछ दुष्ट मनुष्य जो दुष्ट थे, उस पर दोष लगाने के लिये उसके विरूद्ध इकट्ठे हुए, परन्तु राजा ने उनकी न सुनी।
62 और उस से भी बढ़कर, राजा ने आज्ञा दी, कि उसके वस्त्र उतारकर उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाओ, और उन्होंने वैसा ही किया।
63 और उस ने उसे अपने पास बैठाया, और अपने हाकिमों से कहा, उसके संग नगर में चलकर प्रचार करो, कि कोई उसके विरूद्ध किसी बात में शिकायत न करे, और किसी कारण से उसे कष्ट न दे। .
64 जब उस पर मुद्दई ने देखा, कि उस का आदर हुआ है, और बैंजनी वस्त्र पहिनाया हुआ है, तो सब भाग गए।
65 इसलिये राजा ने उसका आदर किया, और उसे अपके प्रधान मित्रोंमें लिखा, और उसे प्रधान करके अपक्की प्रभुता में भागी ठहराया।
66 इसके बाद योनातान शान्ति और आनन्द के साथ यरूशलेम को लौट गया।
67 इसके अलावा; एक सौ पाँचवें वर्ष में देमेत्रियुस का पुत्र देमेत्रियुस क्रेते से निकलकर अपने पुरखाओं के देश में आया;
68 जब राजा सिकन्दर ने यह सुना, तो वह बहुत उदास हुआ, और अन्ताकिया को लौट गया।
69 तब देमेत्रियुस ने अपोलोनियुस को सेलोशूर का हाकिम अपना प्रधान ठहराया, और उस ने बड़ी सेना इकट्ठी करके जमनिया में डेरे खड़े किए, और महायाजक योनातान के पास कहला भेजा,
70 तू ही हमारे विरूद्ध बल उठाता है, और मैं तेरे निमित्त मेरी हंसी उड़ाता हूं, और मेरी निन्दा करता हूं; और तू पहाड़ोंमें हमारे विरूद्ध अपनी शक्ति का घमण्ड क्यों करता है?
71 इसलिये अब यदि तुझे अपके बल पर भरोसा है, तो मैदान में हमारे पास आ, और वहां हम मिलकर मुकद्दमा सुलझाएं; क्योंकि नगरोंकी शक्ति मेरे पास है।
72 और जो हमारे भागी हैं, उन से पूछो, और जान लो, कि मैं कौन हूं, और वे तुम से कहेंगे, कि तेरा पांव उनके देश में चल नहीं सकता।
73 इस कारण अब तू उस अराबा में, जहां न पत्थर, न चकमक पत्थर, और न भागने का स्थान है, सवारोंऔर इतने बड़े बल के साम्हने ठहर न सकेगा।
74 सो जब योनातान ने अपोलोनियुस की ये बातें सुनीं, तो उसका मन उदास हो गया, और दस हजार पुरूष चुनकर यरूशलेम से बाहर गया, और जहां उसका भाई शमौन उसकी सहायता करने को उस से मिला।
75 और उस ने याफा के साम्हने अपके तम्बू खड़े किए; परन्तु; याफा के लोगों ने उसे नगर से बाहर निकाल दिया, क्योंकि अपोलोनियस के पास वहां एक चौकी थी।
76 तब योनातान ने उसे घेर लिया; तब नगर के लोगोंने डर के मारे उसे भीतर जाने दिया; और इस प्रकार योनातान ने याफा को जीत लिया।
77 जब अपोलोनियस ने यह सुना, तो वह तीन हजार घुड़सवार और प्यादों की एक बड़ी टोली लेकर अज़ोतुस के पास गया, और वहां से उसे मैदान में खींच लिया। क्योंकि उसके पास बहुत से सवार थे, जिन पर उस ने भरोसा रखा।
78 तब योनातान उसके पीछे-पीछे अज़ोतुस तक गया, और वहां सेनाएं युद्ध करने लगीं।
79 अब अपोलोनियस ने एक हजार घुड़सवारों को घात में छोड़ दिया था।
80 और योनातान को मालूम हुआ, कि मेरे पीछे घात हो रहा है; क्योंकि वे उसके दल के चारों ओर घेरे हुए थे, और भोर से सांझ तक उस पर तीर चलाते थे।
81 परन्तु योनातान की आज्ञा के अनुसार लोग खड़े रहे, और शत्रुओं के घोड़े थक गए।
82 तब शमौन ने अपनी सेना को निकालकर प्यादोंपर चढ़ाई कर दी, (क्योंकि सवार तो थक गए थे) और वे उसके कारण घबराकर भाग गए।
83 और सवार भी मैदान में तितर-बितर होकर अज़ोतुस की ओर भाग गए, और सुरक्षा के लिये बेतदागोन नाम अपने मूरत के मन्दिर में चले गए।
84 परन्तु योनातान ने अज़ोतुस और उसके आस पास के नगरोंमें आग लगा दी, और उनकी लूट ले ली; और दागोन के मन्दिर को उन लोगों समेत जो उसमें भाग गए थे, आग में जला दिया।
85 इस प्रकार लगभग आठ हजार पुरूष जलाए गए और तलवार से मारे गए।
86 और वहां से योनातान ने अपक्की सेना को हटाकर अस्कलोन के साम्हने डेरे खड़े किए, और वहां नगर के पुरूष निकलकर बड़े धूमधाम से उसका स्वागत किया।
87 इसके बाद योनातान और उसका दल लूट का सब कुछ लेकर यरूशलेम को लौट आए।
88 जब राजा सिकन्दर ने ये बातें सुनीं, तो उस ने योनातान का और भी अधिक आदर किया।
89 और उसके पास सोने की एक बकल भेजी, जो राजा के लोहू में से जनों को दी जाए; और उस ने किनारियोंसमेत अकरोन भी उसके अधिकार में कर दिया।

अध्याय 11

1 और मिस्र के राजा ने समुद्र के किनारे की बालू के किनकों के समान एक बड़ी सेना, और बहुत से जहाज इकट्ठे किए, और छल से सिकन्दर का राज्य प्राप्त करके उसे अपने में मिला लिया।
2 तब उस ने स्पेन में अपनी यात्रा शान्ति पूर्वक की, यहां तक कि नगरों के लोग उसके लिये खुल गए, और उस से भेंट करने लगे; क्योंकि वह उसका बहनोई था, इसलिये राजा सिकन्दर ने उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दी थी।
3 और जब टॉलेमी ने नगरोंमें प्रवेश किया, तब उस ने उन सब की चौकसी करने के लिथे सिपाहियोंकी एक चौकी ठहरा दी।
4 और जब वह अज़ोतुस के निकट आया, तो उन्होंने उसे दागोन का मन्दिर जो जला दिया गया था, और अज़ोतुस और उसकी जो चरागाहें नाश की गई थीं, और जो लाशें फेंकी हुई थीं, और जो उस ने युद्ध में जला दी थीं, दिखाईं; क्योंकि जिस मार्ग से उसे गुजरना था उस मार्ग के पास उन्होंने उनका ढेर लगा दिया था।
5 और उन्होंने राजा को यह भी बताया कि योनातान ने क्या कुछ किया है, इस आशय से कि वह उस पर दोष लगाए; परन्तु राजा चुप रहा।
6 तब योनातान याफा में बड़ी धूमधाम से राजा से मिला, और वहां उन्होंने एक दूसरे को नमस्कार किया, और विश्राम किया।
7 इसके बाद योनातान राजा के संग एलुथेरस नाम नदी पर गया, और यरूशलेम को फिर लौट आया।
8 इसलिये राजा टॉलेमी ने समुद्र के किनारे के सेल्यूकिया तक के नगरों पर अधिकार कर लिया, और सिकन्दर के विरूद्ध दुष्ट युक्तियाँ करने लगा।
9 तब उस ने राजा देमेत्रियुस के पास दूतोंको यह कहला भेजा, कि आ, हम आपस में वाचा बान्धें, और मैं अपनी बेटी जो सिकन्दर की है तुझे दूंगा, और तू अपने पिता के राज्य में राज्य करना।
10 क्योंकि मैं पछताता हूं, कि मैं ने अपनी बेटी उसे दे दी, क्योंकि वह मुझे मार डालना चाहता था।
11 उसने इस प्रकार उसकी निन्दा की, क्योंकि वह उसके राज्य का लालची था।
12 इस कारण उस ने उस से उसकी बेटी छीनकर देमेत्रियुस को दे दी, और सिकन्दर को त्याग दिया, यहां तक कि उन का बैर प्रगट हो गया।
13 तब टॉलेमी ने अन्ताकिया में प्रवेश किया, और वहां उसने अपने सिर पर एशिया और मिस्र का दो मुकुट रखवाए।
14 इसी समय राजा सिकन्दर किलिकिया में था, क्योंकि उस देश के निवासियों ने उस से बलवा किया था।

15 परन्तु जब सिकन्दर ने यह सुना, तब वह उस से लड़ने को आया; तब
राजा टॉलेमी ने अपनी सेना को आगे बढ़ाया, और बड़े बल से उसका
सामना करके उसे भगा दिया।
16 इसलिये सिकन्दर अपनी रक्षा के लिथे अरब में भाग गया; लेकिन
राजा टॉलेमी महान थे:
17 क्योंकि अरबी जब्दीएल ने सिकन्दर का सिर काटकर टॉलेमी के पास
भेज दिया।
18 तीसरे दिन राजा टॉलेमी भी मर गया, और जो गढ़ों में थे वे एक दूसरे
से मारे गए।
19 इस प्रकार देमेत्रियुस एक सौ साठवें वर्ष में राज्य करता रहा।
20 उसी समय योनातान ने यरूशलेम के गुम्मट को लेने के लिये यहूदिया
के लोगोंको इकट्ठा किया, और उसके विरूद्ध युद्ध के बहुत से यन्त्र
बनाए।
21 तब दुष्ट मनुष्य जो अपक्की प्रजा से बैर रखते थे, राजा के पास जाकर
कहने लगे, कि योनातान ने गुम्मट को घेर लिया है।
22 यह सुनकर वह क्रोधित हुआ, और तुरन्त पतोलेमाइस के पास आया,
और योनातान को लिखा, कि गुम्मट को घेर न ले, परन्तु तुरन्त आकर
पतोलेमाइस में उस से बातें कर।
23 तौभी योनातान ने यह सुनकर उसे घेरने की आज्ञा दी; और उस ने
इस्राएल के पुरनियोंऔर याजकोंमें से कितनोंको चुन लिया, और अपने
आप को संकट में डाला;
24 और चान्दी, सोना, वस्त्र, और भांति भांति की भेंटें लेकर पतोलेमाइस
को राजा के पास गए, और वहां उस पर अनुग्रह की दृष्टि हुई।
25 और यद्यपि प्रजा में से कुछ दुष्ट मनुष्य उसके विरूद्ध शिकायत करते
थे,
26 तौभी राजा ने अपके पहिले पहिले के समान उस से बिनती की, और
अपके सब मित्रोंके साम्हने उसको बड़ा किया।
27 और उसे महायाजक पद पर, और सब सम्मानों में जो उसे पहले प्राप्त
थे, दृढ़ किया, और अपने मुख्य मित्रों में उसे प्रधानता दी।
28 तब योनातान ने राजा से बिनती की, कि वह यहूदिया को, और
सामरिया देश समेत तीनों सरकारों को कर से स्वतंत्र कर दे; और उस ने
उसे तीन सौ प्रतिभाएं देने का वचन दिया।
29 तब राजा ने सहमति दी, और इन सब बातोंके विषय में योनातान को
इस प्रकार चिट्ठियां लिखीं:
30 राजा देमेत्रियुस ने अपने भाई योनातान को और यहूदियों की जाति
को नमस्कार भेजा।
31 हम तुम्हें उस पत्र की एक प्रति यहां भेज रहे हैं जो हमने तुम्हारे संबंध
में अपने चचेरे भाई लास्थनीज को लिखा था, ताकि तुम उसे देख सको ।
32 राजा देमेत्रियुस ने अपके पिता लास्थनीस को नमस्कार भेजा;
33 हम ने यह निश्चय किया है, कि हम यहूदियोंके लोगोंके साथ भलाई
करेंगे, जो हमारे मित्र हैं, और हमारे प्रति उनकी भलाई की इच्छा के
कारण हमारे साथ वाचा निभाते हैं।
34 इस कारण हम ने उन्हें यहूदिया की सीमाएं, अपेरेमा, लिद्दा, और
रामाथेम की तीन सरकारों के साथ, जो सामरिया के देश से यहूदिया में
जोड़ी गई हैं, और उन सब वस्तुओं के लिये जो यरूशलेम में बलिदान
करते हैं, सौंप दी है, यह उस कर के बदले में दिया गया जो राजा पहिले
प्रति वर्ष भूमि और वृक्षों के फलों से प्राप्त करता था।
35 और अन्य वस्तुएं जो हमारी हैं, अर्थात् दशमांश और सीमा शुल्क,
और नमक के गड्ढे, और राज कर, जो हमें देय हैं, उन सब में से हम
उनकी राहत के लिये उन से छुटकारा पा लेते हैं।
36 और इस में से कुछ भी अब से सर्वदा के लिये रद्द न किया जाएगा।
37 इसलिये अब इन वस्तुओंकी एक प्रति बनाकर योनातान को सौंपना,
और पवित्र पर्वत पर किसी सुस्पष्ट स्थान में रखना।
38 इसके बाद जब राजा देमेत्रियुस ने देखा, कि देश उसके साम्हने शान्त
हो गया है, और कोई उसका विरोध नहीं कर सकता, तब उसने
परदेशियों के कुछ दलोंको छोड़ जिन को उस ने इकट्ठा किया या, उन
सभोंको अपक्की सारी सेना को अपने अपने स्यान पर भेज दिया।
अन्यजातियों के द्वीप: इस कारण उसके पिता की सारी सेना उस से बैर
रखती थी।
39 इसके अलावा एक ट्रायफॉन भी था, जो पहले सिकन्दर का भाग था,
वह यह देखकर कि सारी सेना देमेत्रियुस पर कुड़कुड़ाती है, अरब के
सिमलकू के पास गया, जो सिकन्दर के पुत्र अन्तियोख को पाल लाया था।
40 और उस पर यह दबाव डाला, कि इस जवान अन्तियोख को पकड़ ले,
कि वह अपने पिता के स्थान पर राज्य करे; और उस ने उस से सब हाल
बता दिया, कि देमेत्रियुस ने क्या क्या किया, और उसके योद्धा किस
प्रकार उस से बैर रखते थे, और वह बहुत दिन तक वहीं रहा। मौसम।
41 इसी बीच योनातान ने राजा देमेत्रियुस के पास कहला भेजा, कि जो
गुम्मट में थे, और गढ़ों में जो थे उनको भी यरूशलेम से बाहर कर दे;
क्योंकि वे इस्राएल से लड़े थे।
42 तब देमेत्रियुस ने योनातान के पास कहला भेजा, कि मैं न केवल तेरे
और तेरी प्रजा के लिये ऐसा करूंगा, वरन अवसर पड़ने पर तेरा और तेरी
जाति का बड़ा आदर करूंगा।
43 इसलिये अब यदि तू मेरी सहाथता के लिथे पुरूष भेजेगा, तो अच्छा
करेगा; क्योंकि मेरी सारी शक्ति मुझ से दूर हो गई है।
44 इस पर योनातान ने उसके पास तीन हजार बलवन्त पुरूष
अन्ताकिया में भेजे; और जब वे राजा के पास आए, तो राजा उनके आने
से बहुत प्रसन्न हुआ।
45 परन्तु नगर के लोग एक लाख बीस हजार पुरूष इकट्ठे होकर नगर
के बीच में इकट्ठे हुए, और राजा को मार डालना चाहते थे।
46 इस कारण राजा तो आंगन में भाग गया, परन्तु नगर के लोग नगर के
मार्गोंपर पहरा देकर लड़ने लगे।
47 तब राजा ने सहायता के लिथे यहूदियोंको बुलाया, और वे सब तुरन्त
उसके पास आए, और नगर में तितर-बितर होकर उसी दिन नगर में एक
लाख की गिनती में घात किए।
48 और उस दिन उन्होंने नगर में आग लगा दी, और बहुत लूट लिया,
और राजा को बचा लिया।
49 जब नगर के लोगों ने देखा, कि यहूदियों ने नगर को जैसा वे चाहते थे
वैसे ही ले लिया है, तो उनका साहस टूट गया; इसलिथे उन्होंने राजा से
बिनती की, और चिल्लाकर कहा,
50 हमें शान्ति दे, और यहूदी हम पर और नगर पर आक्रमण करना बन्द
करें।
51 इस पर उन्होंने अपके हथियार त्याग दिए, और मेल मिलाप किया;
और यहूदी राजा और उसके राज्य के सब लोगों की दृष्टि में प्रतिष्ठित हुए;
और वे बड़ी लूट लेकर यरूशलेम को लौट गए।
52 तब राजा देमेत्रियुस अपने राज्य की गद्दी पर बैठा, और देश उसके
साम्हने शान्त हो गया।
53 तौभी वह सब बातोंमें उलझा, और योनातान से अलग हो गया, और
जो लाभ उस ने उस से पाया या, उसके अनुसार उस को प्रतिफल न
दिया, वरन उसे बहुत सताया।
54 इसके बाद त्रिफॉन लौटा, और उसके साथ छोटा बच्चा अन्ताकिया भी
आया, जिसने राज्य किया, और राज्याभिषेक किया गया।
55 तब जितने योद्धा दिमेत्रियुस ने खदेड़ दिए थे वे सब उसके पास इकट्ठे
हुए, और देमेत्रियुस से लड़ने लगे, और वह पीठ फेरकर भाग गया।
56 इसके अलावा ट्रायफॉन ने हाथियों को ले लिया, और अन्ताकिया को
जीत लिया।
57 उस समय जवान अन्तियोख ने योनातान को यह लिखकर दिया, कि
मैं तुझे महायाजकपद में दृढ़ करता हूं, और चारों सरकारोंपर हाकिम
ठहराता हूं, और राजा के मित्रों में से एक हूं।
58 इस पर उस ने उसके लिथे सोने के पात्र भेजे, और उसे सोने का पेय
पीने, बैंजनी वस्त्र पहिनने, और सोने का बकल पहिनने की आज्ञा दी।
59 और उसके भाई शमौन को उस ने सोर की सीढ़ी नामक स्यान से
मिस्र के सिवाने तक प्रधान कर दिया।
60 तब योनातान निकलकर जल के पार के नगरोंमें से होकर निकला,
और अराम की सारी सेना उसकी सहायता के लिथे उसके पास इकट्ठी हो
गई; और जब वह अस्कलोन के पास पहुंचा, तब नगर के लोगोंने उसका
आदर सत्कार किया।
61 जहां से वह अज्जा को गया, परन्तु अज्जा के लोगों ने उसे बन्द कर
दिया; इस कारण उस ने उसे घेर लिया, और उसकी चराइयों को आग में
जलाकर नष्ट कर दिया।

62 इसके बाद जब गाजा के लोगोंने योनातान से बिनती की, तब उस ने उन से मेल कर लिया, और उनके सरदारोंके बेटोंको बन्धक बनाकर यरूशलेम को भेज दिया, और देश से होकर दमिश्क को चला गया।
63 जब योनातान ने सुना, कि देमेत्रियुस के हाकिम बड़े बल के साथ गलील के कादेस में उसे देश से निकाल देने की मनसा से आए हैं,
64 और वह उन से भेंट करने को गया, और अपके भाई शमौन को देश में छोड़ गया।
65 तब शमौन ने बेतसूरा के विरुद्ध डेरा डाला, और बहुत दिनों तक उससे लड़ता रहा, और उसे बन्द कर दिया।
66 परन्तु वे उस से मेल करना चाहते थे, जो उस ने उनको दे दिया, और उनको वहां से निकाल दिया, और नगर ले लिया, और उस में पहरा बैठा दिया।
67 योनातान और उसकी सेना ने गन्नेसर के सोते पर डेरे खड़े किए, और भोर को वे नसोर के अराबा में पहुंच गए।
68 और देखो, मैदान में परदेशियों की टोली उनको मिली, जो पहाड़ों पर उसके लिये घात में बैठे हुए आप ही उसके साम्हने चढ़ आए।
69 सो जब घात लगानेवाले अपके स्यान से उठकर लड़ने लगे, तब योनातान की ओर के सब भाग गए;
70 यहां तक कि उन में से अबशालोम के पुत्र मत्तिय्याह और कल्फी के पुत्र यहूदा, जो सेनापति थे, को छोड़ एक भी न बचा।
71 तब योनातान ने अपने वस्त्र फाड़े, और सिर पर मिट्टी डालकर प्रार्थना की।
72 इसके बाद उस ने फिर लड़ाई की ओर मुड़कर उनको भगाया, और वे भाग गए।
73 जब उसके भागे हुए पुरूषोंने यह देखा, तब वे फिर उसके पास लौट आए, और उसके साय कादों तक उनका पीछा करके अपके अपके डेरोंतक पहुंचे, और वहां उन्होंने डेरे खड़े किए।
74 इस प्रकार उस दिन अन्यजातियोंमें से कोई तीन हजार पुरूष मार डाले गए; परन्तु योनातान यरूशलेम को लौट गया।

अध्याय 12

1 जब योनातान ने देखा, कि समय उसकी सेवा करता है, तब उस ने कुछ पुरूषों को चुनकर रोम भेजा, कि उन से जो मैत्री हुई है उसे दृढ़ और नवीनीकृत करे।
2 उसने इसी प्रयोजन से लेसिडेमोनियों और अन्य स्थानों को भी पत्र भेजे।
3 सो वे रोम को गए, और सभा में जाकर कहा, योनातान महायाजक और यहूदियोंने हमें तुम्हारे पास इसलिये भेजा है, कि जो मैत्री तुम ने उन से की है उसे फिर से करो, और संधि करो। , जैसा कि पूर्व समय में था।
4 इस पर रोमियों ने सब स्थानोंके हाकिमोंको इस आशय की चिट्ठियां दीं, कि वे उन्हें शान्तिपूर्वक यहूदिया देश में पहुंचा दें।
5 और जो पत्र योनातान ने लेसिडेमोनियोंको लिखे, उनकी प्रतिलिपि यह है:
6 योनातान महायाजक, और जाति जाति के पुरनिये, और याजक, और यहूदियोंमें से, लेसिडेमोनियोंके पास उनके भाई नमस्कार करते हैं।
7 पिछले समय में दारा की ओर से महायाजक ओनियास को, जो उस समय तुम्हारे बीच राज्य करता था, पत्र भेजे गए थे, यह सूचित करने के लिए कि तुम हमारे भाई हो, जैसा कि यहां हामीदार प्रतिलिपि में स्पष्ट किया गया है।
8 उस समय ओनियास ने भेजे हुए राजदूत से आदरपूर्वक बिनती की, और चिट्ठियां लीं, जिन में लीग और मित्रता की घोषणा की गई थी।
9 इसलिये हमें भी इन वस्तुओं में से किसी की घटी न होने पर भी शान्ति देने के लिथे पवित्र शास्त्र की पुस्तकें हमारे हाथ में हैं।
10 तौभी भाईचारा और मित्रता बढ़ाने के लिये तुम्हारे पास भेजने का यत्न किया है, ऐसा न हो कि हम तुम्हारे लिये परदेशी हो जाएं; क्योंकि जब से तुम ने हमारे पास भेजा है, बहुत दिन बीत गए।
11 इसलिए हम हर समय बिना बंद किए, दोनों अपने दावतों और अन्य सुविधाजनक दिनों में, आपको उन बलिदानों में याद करते हैं जो हम प्रदान करते हैं, और हमारी प्रार्थनाओं में, जैसा कि कारण है, और जैसा कि यह हमें अपने भाइयों पर सोचने के लिए becreate है:
12 और हम तेरे आदर से प्रसन्न हैं।
13 जहां तक हमारी बात है, हमें चारों ओर से बड़े क्लेश और लड़ाइयों का सामना करना पड़ा है, यहां तक कि हमारे चारोंओर के राजा भी हम से लड़े हैं।
14 तौभी हम इन युद्धों में न तो तुम्हारे लिये, और न अपने साथियों और मित्रों के लिये कष्टकारी बनेंगे।
15 क्योंकि स्वर्ग से हमें सहायता मिलती है, जिस से हम शत्रुओं से छुटकारा पाते हैं, और हमारे शत्रु पांव के नीचे किए जाते हैं।
16 इस कारण हम ने अन्ताकिया के पुत्र नुमेनियुस को, और यासोन के पुत्र अन्तीपतेर को चुन लिया, और उन्हें रोमियों के पास भेजा, कि जो हमारी उनके साथ मित्रता थी, और जो पहिली लीग थी उसे फिर से नया करें।
17 और हम ने उनको आज्ञा दी, कि तुम्हारे पास चलकर नमस्कार करें, और हमारे भाईचारे के नवीकृत होने के विषय में हमारी चिट्ठियां तुम्हें सौंपें।
18 इसलिये अब तुम हमें इसका उत्तर देकर अच्छा करोगे।
19 और यह उन पत्रों की प्रति है जो ओनियारेस ने भेजे थे।
20 लेसिडेमोनियों के राजा एरियस ने महायाजक ओनियास को नमस्कार करके कहा;
21 यह लिखित में पाया जाता है, कि लेसिडेमोनियन और यहूदी भाई-भाई हैं, और वे इब्राहीम के वंश में से हैं:
22 इसलिये अब जब कि यह बात हमें मालूम हो गई है, तो अच्छा होगा कि तुम अपनी भलाई का वर्णन हमें लिखो।
23 हम तुम्हें फिर लिखते हैं, कि तुम्हारे पशु और माल हमारा है, और हमारा वह तुम्हारा है, इसलिथे हम अपके राजदूतोंको आज्ञा देते हैं, कि वे तुम्हें इस प्रकार समाचार दें।
24 जब योनातान ने सुना, कि डेमेबियस के हाकिम पहिले से भी बड़ी सेना लेकर उस से लड़ने को आए हैं,
25 और वह यरूशलेम से निकलकर अमाथिस देश में उन से मिला; क्योंकि उस ने उनको अपने देश में आने की मोहलत न दी।
26 और उस ने उनके डेरोंपर भेदिये भेजे, और उन्होंने फिर आकर उस से कहा, कि हम रात के समय उन पर चढ़ाई करने को नियुक्त किए गए हैं।
27 इसलिये सूर्य डूबते ही योनातान ने अपके जनोंको जागते रहने और हथियार बान्धकर रात भर लड़ने को तैयार रहने की आज्ञा दी; और उस ने सेना के चारोंओर पहरेदार भी भेज दिए।
28 परन्तु जब द्रोहियों ने सुना, कि योनातान और उसके जन लड़ाई के लिये तैयार हैं, तो वे डर गए, और अपने मन में कांप उठे, और अपनी छावनी में आग लगा दी।
29 परन्तु योनातान और उसके दल को बिहान तक न मालूम हुआ, क्योंकि उन्हों ने दीपक जलते हुए देखे।
30 तब योनातान ने उनका पीछा किया, परन्तु उनको न पकड़ सका, क्योंकि वे एलीथेरस नदी के पार चले गए।
31 इसलिथे योनातान उन अरबियोंकी ओर फिरा, जो जबादीन कहलाते थे, और उनको मार लिया, और उनका धन लूट लिया।
32 और वहां से चलकर वह दमिश्क तक आया, और सारे देश में होता हुआ,
33 शमौन भी निकला, और उस देश से होकर अस्कलोन और उसके आस पास के गढ़ों तक पहुंचा, और वहां से याफा की ओर मुड़कर उसे जीत लिया।
34 क्योंकि उस ने सुना था, कि वे देमेत्रियुस का भाग लेनेवालोंको पकड़ सौंप देंगे; इसलिए उसने इसे रखने के लिए वहां एक चौकी स्थापित की।
35 इसके बाद योनातान फिर घर आया, और लोगोंके पुरनियोंको इकट्ठे करके यहूदिया में दृढ़ गढ़ बनानेके विषय में उन से सम्मति ली।
36 और यरूशलेम की शहरपनाह को ऊंचा करना, और गुम्मट और नगर के बीच एक बड़ा पहाड़ खड़ा करना, कि वह नगर से अलग हो जाए, और वह अकेला रहे, और लोग उस में न बेच सकें, और न मोल ले सकें।
37 इस पर वे नगर को बसाने को इकट्ठे हुए, क्योंकि पूर्व की ओर नाले की ओर की शहरपनाह का एक भाग गिर गया था, और उन्होंने उस स्थान की मरम्मत की जो कफेनथा कहलाता था।

38 और शमौन ने अदीदा को सेपेला में बसाया, और उसे फाटकोंऔर बेड़ोंसे दृढ़ किया।
39 अब त्रिफॉन ने आसिया का राज्य प्राप्त करने, और राजा अन्ताकिया को घात करने की ठानी, कि वह राजमुकुट अपने सिर पर रखे।
40 तौभी उसे डर था, कि कहीं योनातान उसे रोक न ले, और उस से लड़े; इसलिथे उस ने उपाय ढूंढ़ा, कि योनातान को किस प्रकार पकड़ ले, कि उसे मार डाले। इसलिये वह वहां से चला गया, और बेथसन में आया।
41 तब योनातान युद्ध के लिये चुने हुए चालीस हजार पुरूषोंको संग लेकर उसका साम्हना करने को निकला, और बेतसान को आया।
42 जब त्रिफॉन ने देखा कि योनातान इतनी बड़ी शक्ति के साथ आया है, तब उसे उस पर हाथ बढ़ाने का साहस न हुआ;
43 और उसका आदर के साथ स्वागत किया, और उसके सब मित्रोंके साम्हने उसकी प्रशंसा की, और उसे भेंट दी, और अपने योद्धाओंको आज्ञा दी, कि वे भी अपने समान उसके आधीन रहें।
44 उस ने योनातान से यह भी कहा, कि तू ने इन सब लोगोंको क्यों इतना बड़ा संकट दिया है, कि हम दोनोंके बीच युद्ध न होगा?
45 इसलिये अब उनको घर भेज, और अपने लिथे कुछ पुरूष छांटकर मेरे संग पतोलेमाइस को चल, क्योंकि मैं उसे और बचे हुए गढ़ोंऔर सेनाओंऔर जितने जनोंको अधिकार होगा, वह सब तुझे दे दूंगा। जहां तक मेरी बात है, मैं लौटकर चला जाऊंगा; क्योंकि मेरे आने का कारण यही है।
46 तब योनातान ने उस पर विश्वास करके उस की आज्ञा के अनुसार किया, और अपनी सेना को जो यहूदिया देश में चली गई, विदा कर दिया।
47 और उस ने तीन हजार पुरूष अपने पास रख लिये, और उन में से दो हजार को उस ने गलील में भेज दिया, और एक हजार उसके साय हो गया।
48 और ज्योंही योनातान पतोलेमाइस में आया, त्योंही पतोलेमाइसियोंने फाटक बन्द करके उसे पकड़ लिया, और जितने उसके संग आए थे उन सभों को तलवार से मार डाला।
49 तब त्रिफॉन ने योनातान की सारी मण्डली को नाश करने के लिये गलील और बड़े मैदान में प्यादों और सवारों की एक सेना भेजी।
50 परन्तु जब उन्हें मालूम हुआ, कि योनातान और उसके संग के लोग पकड़े गए, और मार डाले गए, तो एक दूसरे को ढाढ़स बंधाया; और लड़ने को तैयार होकर एक दूसरे के निकट गए।
51 इसलिथे जो उनके पीछे चले थे, वे यह जानकर कि वे अपके प्राण के लिथे लड़ने को तैयार हैं, फिर लौट गए।
52 तब वे सब यहूदिया देश में मेल से आए, और वहां योनातान और उसके साथियोंके लिथे विलाप करने लगे, और बहुत डर गए; इस कारण सारे इस्राएल ने बड़ा विलाप किया।
53 तब आस-पास की सब अन्यजातियों ने उनको नाश करना चाहा; क्योंकि उन्होंने कहा, कि उनका न कोई सरदार, और न कोई सहाथता करनेवाला; इसलिये अब हम उन से लड़ें, और मनुष्योंके बीच में से उनका स्मरण छीन लें।

अध्याय 13

1 जब शमौन ने सुना, कि त्रिफॉन ने यहूदिया देश पर चढ़ाई करने, और उसे नाश करने के लिये एक बड़ी सेना इकट्ठी की है,
2 और यह देखकर कि लोग बड़े थरथरा रहे हैं, और थरथरा रहे हैं, तब उस ने यरूशलेम को जाकर लोगों को इकट्ठा किया,
3 और उनको यह उपदेश दिया, कि तुम आप जानते हो, कि मैं ने और मेरे भाइयों ने, और मेरे पिता के घराने ने व्यवस्था और पवित्रस्थान के लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं, और लड़ाईयां और उपद्रव भी जो हम ने देखे हैं।
4 इस कारण मेरे सब भाई इस्राएल के कारण घात किए गए, और मैं अकेला रह गया हूं।
5 इसलिये अब यह मुझ से दूर रहे, कि मैं संकट के समय अपने प्राण को बचा रखूं; क्योंकि मैं अपने भाइयों से अच्छा नहीं हूं।
6 निःसंदेह मैं अपनी जाति, और पवित्रस्थान, और हमारी स्त्रियों, और हमारे लड़केबालोंका बदला लूंगा; क्योंकि सब अन्यजातियां हमें बड़े द्वेष से नाश करने के लिये इकट्ठी हुई हैं।
7 ये बातें सुनते ही लोगों में जान आ गई।
8 और उन्होंने ऊंचे शब्द से उत्तर दिया, यहूदा और अपके भाई योनातान की सन्ती तू हमारा प्रधान ठहरेगा।
9 तू हमारी लड़ाई लड़, और जो कुछ तू हमें आज्ञा दे वही हम करेंगे।
10 तब उस ने सब योद्धाओंको इकट्ठा किया, और यरूशलेम की शहरपनाह को पूरा करने को फुर्ती की, और उसके चारों ओर दृढ़ किया।
11 फिर उस ने अबसोलोम के पुत्र योनातान को, और उसके साय एक बड़े पुरूष को याफा में भेजा; और उस ने वहां के लोगोंको निकाल दिया, और वे वहीं रह गए।
12 इसलिये त्रिफॉन बड़ी शक्ति के साथ यहूदिया देश पर आक्रमण करने के लिये टॉलेमास के पास से चला गया, और योनातान उसके संग था।
13 परन्तु शमौन ने अदीदा में अराबा के साम्हने अपके तम्बू खड़े किए।
14 जब त्रिफॉन को मालूम हुआ, कि शमौन अपने भाई योनातान की सन्ती उठ खड़ा हुआ है, और उस से युद्ध करना चाहता है, तब उस ने उसके पास दूतोंको यह कहला भेजा,
15 और तेरे भाई योनातान को हम ने पकड़ रखा है, यह तो राजा के भण्डार का वह धन है जो उसको सौंपा गया है।
16 इसलिये अब सौ किक्कार चान्दी, और उसके दो पुत्रोंको बन्धक के लिथे भेज दो, कि जब वह स्वतंत्र हो जाए, तो हम से बलवा न करे, और हम उसे जाने दें।
17 तब शमौन ने जान लिया, कि उन्होंने मुझ से छल की बातें कीं, तौभी उस ने रूपया और लड़के भेज दिए, कि कहीं ऐसा न हो कि लोगोंके कारण वह बड़ा बैर करे।
18 कौन कह सकता था, कि मैं ने रूपया और लड़केबालोंको उसके पास न भेजा, इस कारण योनातान मर गया।
19 इसलिथे उस ने बालकोंऔर सौ किक्कारोंको उनके पास भेज दिया; तौभी त्रिफौन ने न घबराया, और न योनातान को जाने दिया।
20 और इसके बाद त्रिफॉन देश पर आक्रमण करने, और उसे नष्ट करने को आया, और अडोरा की ओर जाने वाले मार्ग से घूमता रहा; परन्तु शमौन और उसकी सेना ने जहां जहां वह जाता था वहां उस पर चढ़ाई की।
21 और जो गुम्मट में थे, उन्होंने ट्राइफॉन के पास दूत भेजे, कि वह जंगल के मार्ग से उनके पास शीघ्र आकर उनके लिये भोजनवस्तु भेजे।
22 इस कारण त्रिफॉन ने उस रात अपने सब सवारोंको आने के लिथे तैयार किया, परन्तु बहुत भारी हिमपात हुआ, जिस कारण वह न आया। इसलिये वह चला गया, और गलाद देश में आया।
23 और जब वह बस्कामा के निकट पहुंचा, तब उस ने योनातान को घात किया, और उसे वहीं मिट्टी दी गई।
24 इसके बाद ट्राइफॉन लौट आया और अपने देश में चला गया।
25 तब शमौन ने भेजा, और अपने भाई योनातान की हड्डियां ले जाकर उसके पुरखाओं के नगर मोदीन में मिट्टी दी।
26 और सारे इस्राएल ने उसके लिये बड़ा विलाप किया, और बहुत दिन तक उसके लिये छाती पीटते रहे।
27 शमौन ने अपके पिता और भाइयोंकी कब्र पर भी एक स्मारक बनवाया, और उसे देखने के लिथे ऊंचा उठाया, और पीछे और आगे पत्थर गढ़े।
28 और उस ने अपके पिता, अपक्की माता, और अपके चारों भाइयोंके लिथे एक दूसरे के साम्हने सात पिरामिड बनवाए।
29 और इन में उस ने चतुर युक्तियां बनाईं, और उनके चारों ओर उस ने बड़े बड़े खम्भे खड़े किए, और उन खम्भों पर उस ने उनके सब कवच सदा की स्मृति के लिथे बनाए, और उन कवचोंके द्वारा जहाज भी खुदवाए, कि वे समुद्र में चलनेवाले सब लोगोंपर दिखाई दें।.
30 यह वह कब्र है जो उस ने मोदीन में बनवाई, और वह आज तक खड़ी है।
31 अब त्रिफॉन ने जवान राजा अन्ताकियास के साथ विश्वासघात किया, और उसे मार डाला।

32 और वह उसके स्थान पर राज्य करने लगा, और अपने आप को आसिया का राजा घोषित किया, और देश पर बड़ी विपत्ति डाल दी।
33 तब शमौन ने यहूदिया में गढ़ बनवाए, और उनके चारोंओर ऊंचे गुम्मटों, और बड़ी शहरपनाहों, और फाटकों, और बेड़ोंसे बाड़ लगाई, और उन में भोजनवस्तु की व्यवस्था की।
34 फिर शमौन ने पुरूष चुनकर देमेत्रियुस को राजा के पास भेज दिया, कि वह देश को कुछ छूट दे दे, क्योंकि त्रिफॉन ने जो कुछ किया वह सब लूट ही करना था।
35 जिस का उत्तर राजा देमेत्रियुस ने इस प्रकार दिया;
36 राजा देमेत्रियुस ने शमौन महायाजक और राजाओं के मित्र को, और पुरनियोंऔर यहूदियोंकी जाति को नमस्कार भेजा।
37 जो सोने का मुकुट और लाल रंग का बागा तुम ने हमारे पास भेजा था, वह हमें मिल गया है; और हम तुम्हारे साथ दृढ़ मेल करने को तैयार हैं, हां, और अपने अधिकारियों को लिखने के लिए तैयार हैं, कि वे उन छूटों की पुष्टि करें जो हमने दी हैं।
38 और जो जो वाचा हम ने तुम्हारे साय बान्धी है वे स्थिर रहेंगी; और जो गढ़ तुम ने बनाए हैं वे तुम्हारे ही ठहरेंगे।
39 और आज के दिन तक जो कोई भूल वा दोष हुआ हो, उसे हम क्षमा करते हैं, और वह राजकर भी, जो तुम पर हम से बकाया है, क्षमा करते हैं; और यदि यरूशलेम में और कोई कर दिया हो, तो वह फिर न चुकाया जाएगा।
40 और देख, तुम में से कौन हमारे दरबार में आने के लिये योग्य हैं, तो वह अपना नाम लिख ले, और हमारे बीच में मेल हो।
41 इस प्रकार एक सौ सत्तरवें वर्ष में अन्यजातियों का जूआ इस्राएल से दूर किया गया।
42 तब इज़राइल के लोग अपने उपकरणों और अनुबंधों में लिखना शुरू कर दिया, साइमन के पहले वर्ष में, यहूदियों के गवर्नर और नेता।
43 उन्हीं दिनों में शमौन ने गाजा के विरूद्ध डेरा करके उसे चारों ओर से घेर लिया; उस ने युद्ध का एक इंजन भी बनाया, और उसे नगर के पास खड़ा किया, और एक बुर्ज को तोड़ डाला, और उसे ले लिया।
44 और जो इंजन में थे वे नगर में कूद पड़े; इस पर नगर में बड़ा हंगामा मच गया:
45 यहां तक कि नगर के लोग अपने कपड़े फाड़कर, अपनी स्त्रियों और बच्चों समेत शहरपनाह पर चढ़ गए, और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर शमौन से बिनती करने लगे, कि हमें शान्ति दे।
46 और उन्होंने कहा, हमारी बुराई के अनुसार नहीं परन्तु अपनी करूणा के अनुसार हम से व्यवहार करो।
47 तब शमौन उन से प्रसन्न हुआ, और फिर उन से न लड़ा, परन्तु उन्हें नगर से बाहर निकाल दिया, और जिन घरों में मूरतें थीं उनको शुद्ध किया, और गीत गाते और धन्यवाद करते हुए उस में प्रवेश किया।
48 और उस ने उस में से सब अशुद्धता दूर की, और वहां ऐसे मनुष्यों को रखा जो व्यवस्था का पालन करते थे, और उसे पहिले से अधिक दृढ़ किया, और उस में अपने लिये निवास बनाया।
49 और यरूशलेम के गुम्मट पर भी ऐसी कठिनाइयां डाली गईं, कि वे न तो निकल सकते थे, न देश में जा सकते थे, न खरीद सकते थे, न बेच सकते थे; इस कारण वे भोजन की घटी के कारण बड़े संकट में पड़े, और बहुत से लोग नाश हो गए। अकाल के माध्यम से.
50 तब उन्होंने शमौन की दोहाई दी, और उस से बिनती की, कि वह हमारे साथ एक हो जाए: जो कुछ उस ने उन को दिया; और जब उस ने उनको वहां से निकाल दिया, तब उस ने गुम्मट को अशुद्धता से शुद्ध किया;
51 और एक सौ इकहत्तरवें वर्ष के दूसरे महीने के तीसरे बीसवें दिन को धन्यवाद और खजूर के पेड़ की डालियां, वीणा, झांझ, सारंगी, भजन, और गीत गाते हुए उस में प्रवेश किया गया; इस्राएल से एक महान् शत्रु नष्ट हो गया।
52 उस ने यह भी ठहराया, कि वह दिन प्रति वर्ष आनन्द के साथ मनाया जाए। और मन्दिर की जो पहाड़ी गुम्मट के पास थी, उस को उस ने उससे भी अधिक दृढ़ किया, और अपक्की मण्डली समेत वहां रहने लगा।
53 और जब शमौन ने देखा, कि मेरा पुत्र यूहन्ना वीर है, तो उस ने उसे सारी सेनाओंपर प्रधान ठहराया; और वह गजेरा में रहने लगा।

अध्याय 14

1 अब एक सौ साठ बारहवें वर्ष में राजा देमेत्रियुस ने अपनी सेना इकट्ठी की, और ट्राईफोन के विरुद्ध लड़ने में सहायता पाने के लिये मादिया में गया।
2 परन्तु जब फारस और मादी के राजा अर्सकिश ने सुना, कि देमेत्रियुस उसकी सीमा में घुस आया है, तो उस ने अपने हाकिमों में से एक को उसे जीवित पकड़ लेने के लिये भेजा।
3 और उस ने जाकर देमेत्रियुस की सेना को मार लिया, और उसे पकड़कर अर्सासेस में ले आया, और उसके पहरे में डाल दिया।
4 यहूदिया का देश शमौन के जीवन भर शान्त रहा; क्योंकि उसने अपने राष्ट्र की भलाई इतनी बुद्धिमानी से की, कि उसके अधिकार और सम्मान से वे सदैव प्रसन्न रहें।
5 और जैसा कि वह अपने सभी कृत्यों में सम्मानजनक था, इसलिए इसमें, कि वह जोप को एक आश्रय के लिए ले गया, और समुद्र के द्वीपों के लिए एक प्रवेश द्वार बनाया,
6 और अपनी जाति की सीमा बढ़ाई, और देश पर अधिकार कर लिया,
7 और बहुत से बन्धुओंको इकट्ठा किया, और गजेरा, और बेतसूरा, और गुम्मट पर अधिकार कर लिया, और वहां से उस ने सब अशुद्ध वस्तुएं निकाल लीं, और कोई उसका विरोध करनेवाला न या।
8 तब उन्होंने अपनी भूमि पर शान्ति से खेती की, और पृथ्वी ने अपनी उपज बढ़ाई, और मैदान के वृक्षों ने अपने फल उपजाए।
9 और सब प्राचीन लोग सड़कों पर बैठ कर अच्छी बातें करते थे, और जवान महिमामय और योद्धा के समान वस्त्र पहनते थे।
10 उस ने नगरोंके लिथे भोजन की व्यवस्था की, और उन में सब प्रकारकी साज-सज्जा दी, यहां तक कि उसका सम्माननीय नाम जगत के अंत तक प्रसिद्ध होता रहा।
11 उस ने देश में मेल कराया, और इस्राएल बड़े आनन्द से मगन हुआ;
12 क्योंकि एक एक पुरूष अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करता था, और कोई उन्हें तोड़ने वाला न या।
13 और उस देश में उन से लड़ने को कोई न रहा; वरन उन दिनोंमें राजा भी परास्त हो गए।
14 और उस ने अपक्की प्रजा के सब लोगोंको जो दब गए थे, दृढ़ किया; और उस ने व्यवस्था की खोज की; और उस ने व्यवस्था के सब अपमान करनेवालोंऔर दुष्टोंको दूर कर दिया।
15 उस ने पवित्रस्थान को सुन्दर बनाया, और मन्दिर में पात्र बहुत बढ़ाए।
16 जब रोम और स्पार्टा में भी यह सुना गया, कि योनातान मर गया, तो वे बहुत उदास हुए।
17 परन्तु जब उन्होंने सुना, कि उसका भाई शमौन उसके स्थान पर महायाजक हो गया, और देश और उसके नगरोंपर प्रभुता करने लगा,
18 और जो मित्रता और वाचा उन्होंने उसके भाई यहूदा और योनातान से बान्धी थी उसे फिर से बढ़ाने के लिये उन्होंने पीतल की पटियाओं पर उसे लिखा।
19 जो लेख यरूशलेम की मण्डली के साम्हने पढ़े गए।
20 और यह उन पत्रों की प्रति है जो लेसिडेमोनियों ने भेजे थे; लेसिडेमोनियों के हाकिमों, नगर समेत, शमौन महायाजक, और पुरनियों, और याजकों, और यहूदियों के बचे हुए लोगों, हमारे भाइयों को नमस्कार भेजें:
21 और जो राजदूत हमारी प्रजा के पास भेजे गए थे, उन्होंने हम को तेरी महिमा और महिमा का समाचार दिया; इस कारण हम उनके आने से आनन्दित हुए।
22 और जो बातें उन्होंने लोगों की महासभा में कहीं, उनको इस रीति से लिख लिया; एंटिओकस का पुत्र नुमेनियस और जेसन का पुत्र एंटिपेटर, यहूदियों के राजदूत, हमारे साथ अपनी मित्रता को नवीनीकृत करने के लिए हमारे पास आए।
23 और लोगों को यह अच्छा लगा कि वे उन लोगों का सम्मानपूर्वक सत्कार करें, और उनके आक्रमण की प्रतिलिपि को सार्वजनिक अभिलेखों में रखें, ताकि अंत में लेसिडेमोनियन लोगों के पास उसका

एक स्मारक हो: इसके अलावा हमने शमौन महायाजक को उसकी एक प्रति लिखी है .
24 इसके बाद शमौन ने नुमेनियुस को हजार पौंड सोने की एक बड़ी ढाल देकर रोम भेजा, कि उन से संधि पक्की कर ले।
25 यह सुनकर लोगों ने कहा, हम शमौन और उसके पुत्रोंका क्या धन्यवाद करें?
26 क्योंकि उस ने और उसके भाइयोंऔर उसके पिता के घराने ने इस्राएल को दृढ़ किया, और उनके शत्रुओंको युद्ध करके उनके पास से भगाया, और उनको स्वतंत्र कर लिया।
27 तब उन्होंने इसे पीतल की मेजोंपर लिखा, जो उन्होंने सायन पर्वत के खम्भोंपर खड़ी कीं; और उस लेख की नकल यह है; एलूल महीने का अठारहवाँ दिन, एक सौ बारहवें वर्ष में, जो शमौन महायाजक का तीसरा वर्ष था,
28 सारामेल में याजकों, और प्रजा, और देश देश के हाकिमों, और पुरनियों की बड़ी सभा में ये बातें हमें बताई गईं।
29 क्योंकि देश में कई बार युद्ध होते रहे, और उन में अपके पवित्रस्थान और व्यवस्था की रक्षा के लिथे यारीब के वंश में मत्तत्याह का पुत्र शमौन अपके भाइयोंसमेत अपने आप को संकट में डालता, और शत्रुओंका साम्हना करता या उनके राष्ट्र ने उनके राष्ट्र को महान सम्मान दिया:
30 (इसके बाद योनातान अपनी जाति को इकट्ठा करके उनका महायाजक होकर अपनी प्रजा में मिला लिया गया।
31 उनके शत्रु उनके देश पर आक्रमण करने की तैयारी में थे, कि उसे नष्ट कर दें, और पवित्रस्थान पर हाथ डालें;
32 उस समय शमौन उठकर अपनी जाति की ओर से लड़ा, और अपनी सम्पत्ति में से बहुत धन खर्च किया, और अपनी जाति के शूरवीरों को हथियारबंद करके उनको मजदूरी दी,
33 और बेतसूरा समेत यहूदिया के नगरोंको, जो यहूदिया की सीमा पर बसे हुए हैं, दृढ़ किया, और जहां पहिले शत्रुओंके हथियार थे; परन्तु उस ने वहां यहूदियों की एक छावनी खड़ी कर दी;
34 और उस ने समुद्र के किनारे के याफा को, और अज़ोतुस के सिवाने के गजेरा को, जहां शत्रु पहिले से रहते थे, दृढ़ किया; परन्तु उस ने वहां यहूदियोंको बसाया, और उनके बदले के लिथे सब प्रकार की वस्तुएं उन से सुसज्जित कीं।)
35 तब लोगोंने शमौन के कामोंके गीत गाए, और उस ने अपक्की जाति को किस महिमा में पहुंचाना चाहा, इस कारण उसे अपना हाकिम और प्रधान याजक नियुक्त किया, क्योंकि उस ने ये सब काम किए थे, और उस ने अपक्की जाति के लिथे न्याय और विश्वास रखा या। और इसके लिए उसने अपने लोगों को हर तरह से ऊंचा उठाने का प्रयास किया।
36 क्योंकि उसके समय में उसके हाथ में बातें सफल हुईं, यहां तक कि अन्यजातियों को उनके देश से निकाल दिया गया, और वे भी जो यरूशलेम में दाऊद के नगर में थे, जिन्होंने अपने लिए एक गुम्मट बना लिया था, जिसमें से वे निकलते और अशुद्ध होते थे पवित्रस्थान के चारों ओर, और पवित्रस्थान में बहुत हानि पहुंचाई;
37 परन्तु उस ने यहूदियोंको उस में बसाया। और देश और नगर की सुरक्षा के लिथे उसे दृढ़ किया, और यरूशलेम की शहरपनाह को खड़ा किया।
38 राजा देमेत्रियुस ने भी इन बातों के अनुसार उसे महायाजकपद में दृढ़ किया,
39 और उसे अपने मित्रों में से एक बनाया, और उसका बड़ा आदर सत्कार किया।
40 क्योंकि उस ने सुना था, कि रोमियोंने यहूदियोंको अपना मित्र, और संघ और भाई कहा; और उन्होंने शमौन के राजदूतों का आदरपूर्वक सत्कार किया;
41 और यहूदी और याजक इस से प्रसन्न थे, कि जब तक कोई विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ता न उठे, तब तक शमौन उनका हाकिम और महायाजक बना रहे;
42 और वह उनका प्रधान हो, और पवित्रस्थान का अधिकारी हो, और उनको उनके कामोंपर, और देश पर, और कवचोंपर, और गढ़ोंपर अधिकारी ठहराए, मैं कहता हूं, कि वह पवित्रस्थान का अधिकारी हो। अभ्यारण्य;
43 और इस से भी अधिक, कि सब मनुष्य उसकी आज्ञा मानें, और देश भर में सब लेख उसके नाम से लिखें, और वह बैंजनी वस्त्र पहिने, और सोना पहिने।
44 और यह भी कि लोगों या याजकों में से किसी को भी इन वस्तुओं में से किसी को तोड़ना, या उसकी बातों का खंडन करना, या उसके बिना देश में भीड़ इकट्ठा करना, या बैंजनी वस्त्र पहनना, या बकल पहनना उचित न हो। सोना;
45 और जो कोई अन्यथा करे, या इनमें से किसी बात को तोड़े, उसे दण्ड दिया जाए।
46 इस प्रकार सब लोगों को अच्छा लगा, कि शमौन से व्यवहार करें, और जैसा कहा गया है वैसा ही करें।
47 तब शमौन ने यह मान लिया, और यहूदियों और याजकों का प्रधान याजक, प्रधान, अधिपति, और उन सभों का बचाव करने से प्रसन्न हुआ।
48 तब उन्होंने आज्ञा दी, कि यह लिखा हुआ पीतल की मेजोंपर रखा जाए, और पवित्रस्थान की परिधि के भीतर एक सुस्पष्ट स्थान में खड़ा किया जाए;
49 और उसकी प्रतियां भण्डार में रखी जाएं, कि वे शमौन और उसके पुत्रोंको मिल जाएं।

अध्याय 15

1 फिर देमेत्रियुस के पुत्र अन्ताकिया ने समुद्र के द्वीपोंसे शमौन याजक और यहूदियोंके प्रधान और सारी प्रजा के पास चिट्ठियां भेजीं;
2 उसकी विषयवस्तु यह थी: राजा अन्ताकिया का अपनी जाति के महायाजक और हाकिम शमौन को और यहूदियों की प्रजा को नमस्कार।
3 क्योंकि कुछ दुष्ट मनुष्यों ने हमारे पुरखाओं का राज्य छीन लिया है, और मेरा प्रयोजन उसे फिर से चुनौती देना है, कि मैं उसे पुरानी स्थिति में लौटा दूं, और इस प्रयोजन के लिये बहुत से विदेशी सैनिकों को इकट्ठा किया है, और जहाज तैयार किए हैं युद्ध;
4 और मेरा इरादा उस देश में घूमने का है, कि जिन्हों ने उसे नाश किया, और राज्य के बहुत से नगरों को उजाड़ दिया है, उन से पलटा लूं।
5 इसलिये अब मैं तुम को उन सब अन्नबलि की पुष्टि करता हूं जो मुझ से पहिले राजाओं ने तुम्हें दिए थे, और जो कुछ उनको छोड़ कर दिया था।
6 मैं तुझे यह भी आज्ञा देता हूं, कि तू अपके देश के लिथे अपनी मोहर से सिक्के निकाले।
7 और यरूशलेम और पवित्रस्थान के विषय में वे स्वतंत्र हो जाएं; और जितने हथियार तू ने बनवाए, और गढ़ जो तू ने बनवाए हैं, वे सब तेरे ही पास रहें।
8 और यदि राजा का कुछ बकाया हो वा हो, तो अब से सर्वदा के लिये वह क्षमा किया जाए।
9 और जब हम अपना राज्य प्राप्त कर लेंगे, तब तेरा और तेरी जाति का, और तेरे मन्दिर का बड़े आदर से आदर करेंगे, यहां तक कि तेरा आदर जगत भर में प्रसिद्ध होगा।
10 एक सौ चौसठवें वर्ष में अन्ताकिया अपने पुरखाओं के देश में गया; उस समय सारी सेना उसके पास इकट्ठी हो गई, यहां तक कि त्रिफॉन के पास कुछ ही रह गए।
11 इसलिये वह राजा अन्ताकिया द्वारा पीछा किये जाने पर डोरा की ओर भाग गया, जो समुद्र के किनारे पर है।
12 क्योंकि उस ने देखा, कि मुसीबतें एक ही बार में उस पर आ पड़ीं, और उसकी सेना ने उसे छोड़ दिया है।
13 तब अन्ताकिया ने एक लाख बीस हजार योद्धा और आठ हजार सवार लेकर डोरा के साम्हने डेरा डाला।
14 और जब उस ने नगर को चारों ओर से घेर लिया, और नावों को समुद्र के किनारे के नगर के निकट जोड़ लिया, तब उसने न तो भूमि और न समुद्र के मार्ग से नगर को घेर लिया, और किसी को बाहर या भीतर जाने न दिया।
15 इसी समय नूमेनियुस और उसकी टोली रोम से राजाओं और देश देश के लोगोंके नाम चिट्ठियां लेकर आए; जिसमें ये बातें लिखी थीं:
16 लूसियस, राजा टॉलेमी के पास रोमियों का कौंसल, नमस्कार करते हुए:

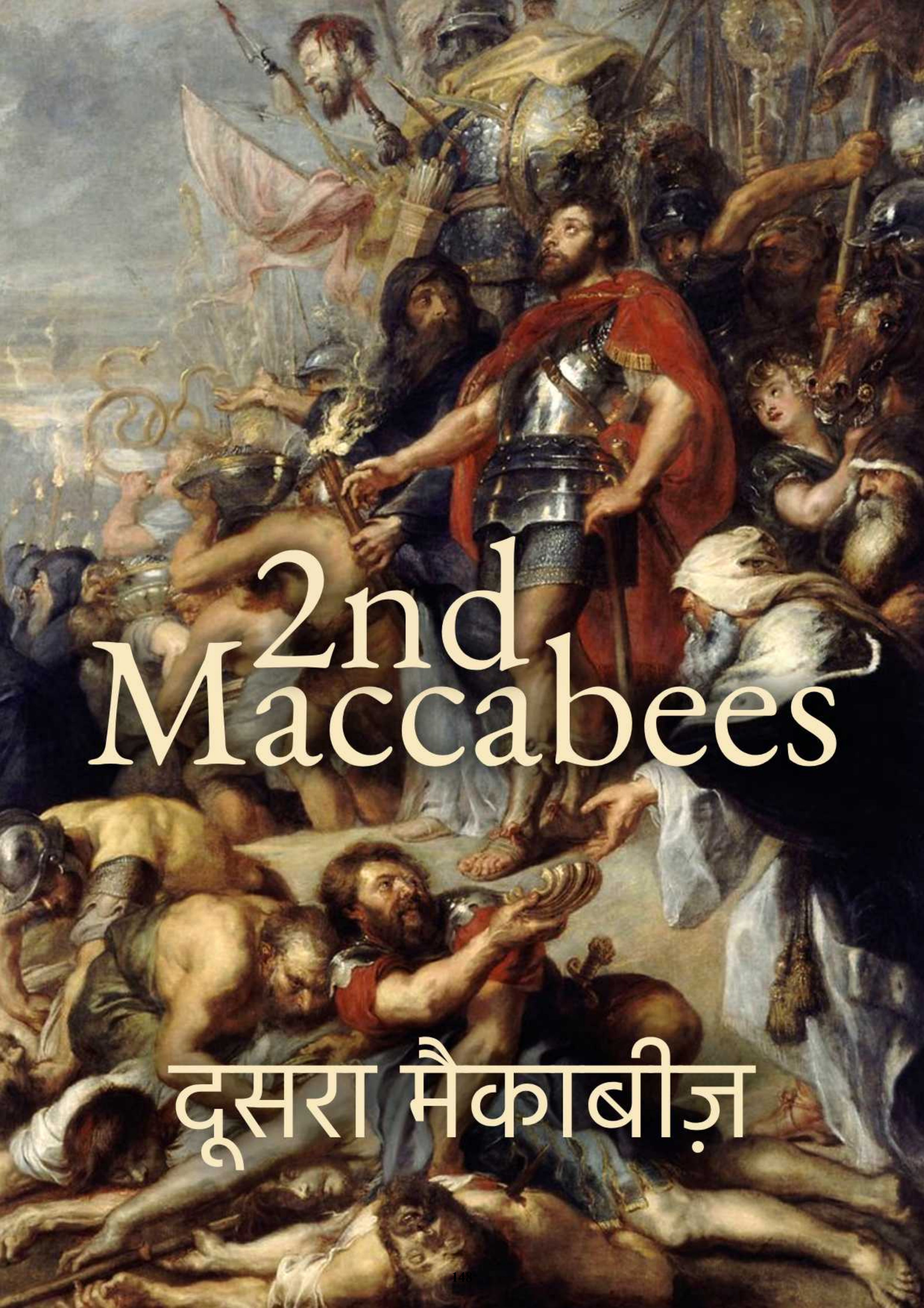
17 यहूदियों के राजदूत, हमारे मित्र और संघी, पुरानी मित्रता और लीग को नवीनीकृत करने के लिए हमारे पास आए, जो शमौन महायाजक और यहूदियों के लोगों की ओर से भेजे गए थे:
18 और वे हजार मन सोने की एक ढाल ले आए।
19 इसलिये हम ने अच्छा समझा, कि राजाओं और देश देश के लोगोंको लिखें, कि वे उनको कुछ हानि न पहुंचाएं, और न उनके विरूद्ध लड़ें, और न उनके नगरों वा देशोंके विरूद्ध लड़ें, और न उनके विरूद्ध अपने शत्रुओं की सहायता करें।
20 और उनकी ढाल लेना हमें भी अच्छा लगा।
21 इसलिये यदि कोई दुष्ट लोग अपने देश से भागकर तुम्हारे पास आए हों, तो उन्हें शमौन महायाजक के पास सौंप दो, कि वह उन को उन्हीं की व्यवस्था के अनुसार दण्ड दे।
22 यही बातें उस ने दिमेत्रियुस राजा, और अत्तालुस, और अरिअराथेस, और अर्ससेस को भी लिखीं।
23 और सब देशोंको, और सैम्पसामियोंको, और लेसिडेमोनियोंको, और डेलुस, और माइन्दुस, और सिसयोन, और कैरिया, और समोस, और पम्फूलिया, और लूसिया, और हैलिकारनासस, और रोड्स, और अरादुस, और कोस, और साइड , और अरादुस, और गोर्त्यना, और कनिडुस, और कुप्रुस, और कुरेने।
24 और इसकी प्रतिलिपि उन्होंने शमौन महायाजक को लिखी।
25 इसलिये राजा अन्ताकिया ने दूसरे दिन डोरा के विरूद्ध डेरा डाला, और उस पर लगातार आक्रमण करता रहा, और इंजन बनाकर ट्राइफॉन को बन्द कर दिया, कि वह न तो बाहर जा सका और न भीतर।
26 उस समय शमौन ने उसकी सहायता के लिथे दो हजार चुने हुए पुरूष भेजे; चाँदी भी, सोना भी, और बहुत से कवच भी।
27 तौभी उस ने उन्हें ग्रहण न किया, वरन उन सब वाचाओंको तोड़ दिया जो उस ने पहिले उसके साय बान्धी या, और उसके लिथे पराया हो गया।
28 फिर उस ने अपके मित्रोंमें से एक अथेनोबियुस को उसके पास यह कहने को भेजा, कि तुम याफा और गजेरा को रोकते हो; और जो गुम्मट यरूशलेम में है, वह मेरे राज्य के नगर हैं।
29 तुम ने उसका सिवाना उजाड़ दिया, और देश में बड़ी हानि की, और मेरे राज्य में बहुत स्थानोंपर अधिक्कारनी हो गए।
30 इसलिये अब जो नगर तुम ने ले लिये हैं, और यहूदिया के सिवाने के बाहर जिन स्थानों पर तुम ने अधिकार कर लिया है, उनका कर भी सौंप दो।
31 या उनके बदले मुझे पांच सौ किक्कार चान्दी दे; और जो हानि तुम ने की है, और नगरोंके कर के लिथे और पांच सौ किक्कार, यदि नहीं तो हम आकर तुम से लड़ेंगे।
32 सो राजा का मित्र एथेनोबियुस यरूशलेम को आया; और जब उस ने शमौन का विभव, और सोने और चान्दी के बर्तन की अलमारी, और उसकी बड़ी उपस्थिति देखी, तो वह चकित हुआ, और उस से राजा का सन्देश कहा।
33 तब शमौन ने उत्तर देकर उस से कहा, हम ने न तो पराए देश पर अधिकार किया है, और न उस पर अधिकार किया है, जो दूसरों का है, परन्तु अपने पुरखाओं का निज भाग है, जिसे हमारे शत्रुओं ने कुछ समय के लिये अन्याय से अधिकार में कर लिया है।
34 इसलिये अवसर पाकर हम अपने पुरखाओं की निज भूमि पर अधिकार रखते हैं।
35 और तू याफा और गजेरा को मांगता है, यद्यपि उन्होंने हमारे देश में लोगों को बड़ी हानि पहुंचाई है, तौभी हम उनके बदले तुझे सौ किक्कार देंगे। यहाँ एथेनोबियस ने उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया;
36 परन्तु वह क्रोधित होकर राजा के पास लौटा, और उस से इन बातों का, और शमौन की महिमा का, और जो कुछ उस ने देखा था उसका वर्णन किया; इस पर राजा बहुत क्रोधित हुआ।
37 इस बीच ट्राइफॉन जहाज से ओर्थोसियास की ओर भाग गया।
38 तब राजा ने केन्दियुस को समुद्रतट का प्रधान नियुक्त किया, और उसे प्यादों और सवारों की एक सेना दी,
39 और उसे आज्ञा दी, कि अपक्की सेना को यहूदिया की ओर हटा ले; और उस ने उसे सीड्रोन को दृढ़ करने, और फाटकोंको दृढ़ करने, और प्रजा से युद्ध करने की आज्ञा दी; परन्तु जहाँ तक स्वयं राजा की बात है, उसने ट्राइफॉन का पीछा किया।
40 तब केन्दियुस जमनिया को आया, और लोगों को भड़काने लगा, और यहूदिया पर चढ़ाई करके उन को बन्धुवाई करके घात करने लगा।
41 और जब उस ने सेद्रौ को दृढ़ किया, तब उस ने वहां सवार और बहुत से प्यादे रख दिए, कि राजा की आज्ञा के अनुसार वे निकलकर यहूदिया के मार्ग में बढ़ें।

अध्याय 16

1 तब यूहन्ना ने गजेरा से आकर अपके पिता शमौन को केन्देबियास का सब कुछ बता दिया।
2 इसलिये शमौन ने अपके दोनों बड़े पुत्रोंयहूदा और यूहन्ना को बुलाकर उन से कहा, मैं, और मेरे भाई, और मेरे पिता का घराना बचपन से लेकर आज तक इस्राएल के शत्रुओं से लड़ता आया हूं; और चीजें हमारे हाथों में इतनी अच्छी तरह से समृद्ध हुई हैं, कि हमने इस्राएल को कई बार बचाया है।
3 परन्तु अब मैं बूढ़ा हो गया हूं, और परमेश्वर की दया से तुम भी काफी उम्र के हो गए हो: तुम मेरे और मेरे भाई के स्थान पर बन जाओ, और जाकर हमारी जाति के लिये लड़ो, और स्वर्ग से सहायता तुम्हारे साथ रहेगी।
4 इसलिये उस ने देश में से बीस हजार योद्धा और घुड़सवार चुन लिए, जो सेन्देबियास के साम्हने निकले, और उस रात मोदीन में विश्राम किया।
5 और बिहान को जब वे उठकर मैदान में गए, तो क्या देखा, कि प्यादोंऔर सवारोंकी एक बड़ी सेना उन पर चढ़ाई कर रही है; और उनके बीच में एक जल का नाला या।
6 तब उस ने अपक्की प्रजा समेत उनके साम्हने पड़ाव डाला; और जब उस ने देखा, कि लोग नाले के पार जाने से डरते हैं, तो पहिले आप ही पार हो गया, और जो पुरूष उसे देखते थे वे उसके पीछे हो लिए।
7 ऐसा किया, उस ने अपके जनोंको बांट लिया, और प्यादोंके बीच में सवार खड़े कर दिए; क्योंकि शत्रुओंके सवार तो बहुत से थे।
8 तब उन्होंने पवित्र तुरहियां बजाईं; तब सेन्डेबियास और उसकी सेना भाग गई, यहां तक कि उनमें से बहुत से लोग मारे गए, और जो बचे थे वे गढ़ में पहुंच गए।
9 उस समय यूहन्ना का भाई यहूदा घायल हो गया; परन्तु यूहन्ना फिर भी उनका पीछा करता रहा, जब तक कि वह सेड्रोन तक नहीं पहुंच गया, जिसे सेंडेबियस ने बनवाया था।
10 इसलिये वे अज़ोतुस के मैदान में गुम्मटों तक भाग गए; इस कारण उस ने उसे आग में जला दिया, यहां तक कि उन में से कोई दो हजार पुरूष मारे गए। इसके बाद वह शांति से यहूदिया देश में लौट आया।
11 फिर यरीहो के अराबा में अबूबस के पुत्र पतोलेमुस को प्रधान बनाया गया, और उसके पास बहुत सोना चान्दी हो गया।
12 क्योंकि वह महायाजक का दामाद था।
13 इस कारण उसका मन फूल गया, और उस ने देश को अपने वश में करने की ठानी, और शमौन और उसके पुत्रोंको नाश करने की युक्ति की।
14 और शमौन उस देश के सब नगरोंका दौरा करता, और उनकी अच्छी व्यवस्था का ध्यान रखता या; उस समय वह अपने पुत्रों मत्तत्याह और यहूदा के साथ यरीहो में आया, एक सौ सत्रहवें वर्ष में, सबात नामक ग्यारहवें महीने में:
15 जहां अबूबस के पुत्र ने उनको छल से एक छोटे से गढ़ में, जो उस ने बनाया या, ले जाकर बड़ी जेवनार की; तौभी उस ने वहां मनुष्योंको छिपा रखा या।
16 सो जब शमौन और उसके बेटे बहुत पी गए, तो टॉलेमी और उसके जनों ने उठकर अपके हथियार ले लिए, और जेवनार के स्थान में शमौन पर धावा बोल दिया, और उसे, और उसके दोनों बेटों, और उसके कुछ सेवकोंको मार डाला।
17 उस ने ऐसा करके बड़ा विश्वासघात किया, और भलाई का बदला बुराई से दिया।

18 तब टॉलेमी ने ये बातें लिखकर राजा के पास कहला भेजा, कि वह
उसकी सहायता के लिये एक सेना भेजे, और वह देश और नगरोंको
उसके हाथ में दे दे।
19 और उस ने औरोंको भी यूहन्ना को घात करने के लिथे गजेरा में भेजा,
और न्यायधीशोंके पास पत्र भेजा, कि वे उसके पास आएं, कि वह उन्हें
चान्दी, और सोना, और प्रतिफल दे।
20 और उस ने औरोंको यरूशलेम और मन्दिर के पर्वत पर अधिकार
करने को भेजा।
21 किसी ने आगे से गाजेरा को दौड़कर यूहन्ना से कहा, कि मेरे पिता
और भाई मारे गए, और उस ने कहा, टॉलेमी ने तुझे भी मार डालने को
भेजा है।
22 यह सुनकर वह अत्यन्त चकित हुआ, और जो उसे नाश करने को
आए थे उन पर हाथ रखकर उनको घात किया; क्योंकि वह जानता था
कि वे उसे दूर करना चाहते हैं।
23 यूहन्ना के और काम, और उसकी लड़ाइयां, और जो अच्छे काम उस
ने किए, और जो शहरपनाह उस ने बनाई, और उसके काम,
24 देखो, ये उसके पौरोहित्य के इतिहास में लिखे गए हैं, जब से वह
अपने पिता के बाद महायाजक बनाया गया था ।

2nd Maccabees



दूसरा मैकाबीज़

अध्याय 1

1 हे भाई, जो यहूदी यरूशलेम में और यहूदिया देश में रहते हैं, वे अपने भाइयों अर्थात् मिस्र भर के यहूदियों के लिये स्वास्थ्य और शान्ति की कामना करते हैं:
2 परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करे, और जो वाचा उस ने अपने विश्वासयोग्य सेवक इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के साथ बान्धी थी उसे स्मरण कर;
3 और तुम सब को ऐसा मन दो कि तुम अच्छे साहस और प्रसन्न मन से उसकी सेवा करो, और उसकी इच्छा पूरी करो;
4 और अपने मन को उसकी व्यवस्था और आज्ञाओं के लिये खोलो, और तुम्हें शान्ति भेजो,
5 और तेरी प्रार्थना सुनें, और तुझ से मेल रखें, और संकट के समय तुझे न छोड़ें।
6 और अब हम यहां आपके लिए प्रार्थना कर रहे हैं।
7 जिस समय देमेत्रियुस राज्य कर रहा था, अर्थात एक सौ साठ नौवें वर्ष में, हम यहूदियों ने तुम को उस समय के विषय में जो उन वर्षों में हम पर भारी संकट के समय से लेकर यासोन और उसकी मण्डली ने पवित्र देश और राज्य से बलवा किया था, लिखा।
8 और ओसारे को फूंक दिया, और निर्दोष का लोहू बहाया; तब हम ने यहोवा से प्रार्थना की, और हमारी सुनी गई; हम ने बलिदान और मैदा भी चढ़ाया, और दीपक जलाकर रोटियां परोसीं।
9 और अब देखो, महलू महीने में तम्बुओंका पर्ब्ब मानना।
10 एक सौ अस्सी आठवें वर्ष में यरूशलेम और यहूदिया की प्रजा, और महासभा, और यहूदा ने राजा टॉलेमीस के स्वामी अरिस्तोबुलस को, जो अभिषिक्त याजकों के दल में से या, नमस्कार और कुशल भेजा। वे यहूदी जो मिस्र में थे:
11 क्योंकि परमेश्वर ने हमें बड़े संकटों से बचाया है, हम उसका बहुत धन्यवाद करते हैं, मानो हम किसी राजा से युद्ध कर रहे हों।
12 क्योंकि उस ने पवित्र नगर में लड़नेवालोंको निकाल दिया।
13 क्योंकि जब सरदार फारस में आया, और उसके साय जो अजेय सेना थी, वे नानेया के याजकोंके छल से नानेया के मन्दिर में घात किए गए।
14 क्योंकि अन्तियोख, मानो उस से ब्याह करना चाहता या, और अपने मित्रों समेत महेज के लिथे रूपया लेने को उस स्थान में आया।
15 जब नानेया के याजक आगे बढ़े, और वह एक छोटी सी टोली समेत मन्दिर की ओर से प्रवेश किया, तो अन्ताकिया के भीतर आते ही उन्होंने मन्दिर बन्द कर दिया।
16 और छत का गुप्त द्वार खोलकर, उन्होंने वज्र के समान पत्थर फेंके, और सरदार को मारा, और उनके टुकड़े टुकड़े कर दिए, और उनके सिर काट डाले, और जो बाहर थे उन पर फेंक दिए।
17 हमारा परमेश्वर सब बातों में धन्य है, जिस ने भक्तिहीनोंको पकड़वाया है।
18 इसलिये अब जब हमें कैसलेऊ महीने के पचीसवें दिन को मन्दिर का शुद्धिकरण करने का निश्चय हुआ, तो हम ने यह आवश्यक समझा कि हम तुम्हें इसके विषय में प्रमाणित करें, कि तुम भी इसे तम्बू के पर्व्व के समान मान सको, और आग, जो हमें तब दी गई थी जब नीमियास ने बलिदान दिया था, उसके बाद उसने मंदिर और वेदी का निर्माण किया था।
19 क्योंकि जब हमारे पुरखा फारस में पहुंचाए गए, तब जो याजक उस समय के भक्त थे, उन्होंने वेदी की आग को गुप्त रूप से ले लिया, और उसे बिना जल के गड़हे की खोखली जगह में छिपा दिया, और उसे ऐसे रखा कि वह स्थान किसी को पता न चले। सारे पुरुष।
20 बहुत वर्षों के बाद जब परमेश्वर ने चाहा, तब फारस के राजा की ओर से भेजे हुए नीमियाह ने उन याजकों के वंश को भेजा, जिन्होंने उसे आग के पास छिपा रखा था; परन्तु जब उन्होंने हम से कहा, तो उन्हें आग नहीं, परन्तु गाढ़ा पानी मिला। ;
21 तब उस ने उनको आज्ञा दी, कि उसे खींचकर लाओ; और जब बलि चढ़ाए गए, तब नीमियाह ने याजकों को आज्ञा दी, कि लकड़ी और उस पर रखी हुई वस्तुओं पर जल छिड़कें।
22 जब ऐसा हुआ, और सूर्य जो पहिले बादल में छिपा या, चमका, तब ऐसी बड़ी आग भड़क उठी कि सब लोग अचम्भा करने लगे।
23 और मैं कहता हूं, याजकोंने और सब बाकियोंने, अर्थात् योनातान ने आरम्भ करके, और सब बाकियोंने, याजकोंने प्रार्थना की, और अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके लिथे प्रार्थना की।
24 और प्रार्थना इस रीति से हुई; हे भगवान, भगवान भगवान, सभी चीजों के निर्माता, जो भयभीत और मजबूत, और धर्मी, और दयालु, और एकमात्र और दयालु राजा हैं,
25 तू सब वस्तुओं का एक मात्र दाता, एक मात्र धर्मी, सर्वशक्तिमान, और युग युग का है, तू ही इस्राएल को सब संकटों से छुड़ाता है, और पूर्वजों को चुनकर उन्हें पवित्र करता है।
26 अपनी सारी प्रजा इस्राएल के लिये बलिदान ले लो, और अपना भाग बचाकर पवित्र करो।
27 जो लोग हमारे बीच से तितर-बितर हो गए हैं, उन्हें इकट्ठा करो, और जो अन्यजातियों के बीच में सेवा करते हो, उनको छुड़ाओ, जो तुच्छ और घृणित हैं, उन पर दृष्टि करो, और अन्यजाति जान लें, कि तू हमारा परमेश्वर है।
28 जो हम पर अन्धेर करते, और अभिमान करके हम पर अन्याय करते हैं, उनको दण्ड दो।
29 मूसा के कहने के अनुसार अपक्की प्रजा को अपके पवित्र स्यान में फिर बसाओ।
30 और याजकोंने धन्यवाद के भजन गाए।
31 जब बलिदान पूरा हो गया, तब नीमियाह ने जो जल बचा था उसे बड़े पत्थरों पर डालने की आज्ञा दी।
32 जब यह किया गया, तो लौ जल उठी: परन्तु वेदी से चमकनेवाली ज्योति से वह भस्म हो गई।
33 और जब यह बात मालूम हुई, तो फारस के राजा को यह समाचार मिला, कि जिस स्यान में याजकोंने आग छिपा रखी या, वहां जल दिखाई देता है, और नीमियाह ने उस से यज्ञोंको पवित्र किया है।
34 तब राजा ने मुकद्दमा पूरा करने के बाद उस स्थान को पवित्र किया।
35 और राजा ने बहुत सी भेंटें लीं, और जिनको वह प्रसन्न करना चाहता था उनको दिया।
36 और नीमियास ने इस वस्तु को नेफ्थर कहा, जो कहने के लिए शुद्धिकरण के समान है: परन्तु बहुत से लोग इसे नेफी कहते हैं।

अध्याय दो

1 अभिलेखों में यह भी पाया जाता है, कि यरेमी भविष्यद्वक्ता ने उन को जो ले जाए गए थे, आग से उठाने की आज्ञा दी, जैसा कि बताया गया है:
2 और भविष्यद्वक्ता ने उन्हें व्यवस्था देकर चिताया, कि यहोवा की आज्ञाएं न भूलना, और जब वे सोने चांदी और आभूषणों की मूरतें देखें, तो अपने मन से भूल न करना।
3 और ऐसी ही और बातें कहकर उस ने उनको समझाया, कि व्यवस्था उनके मन से न उतरे।
4 उसी लेख में यह भी लिखा है, कि भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर से चितौनी पाकर तम्बू और सन्दूक को अपने साथ चलने की आज्ञा दी, जब वह उस पहाड़ पर गया, जहां मूसा ने चढ़कर परमेश्वर का धरोहर देखा।
5 और जब यिर्मयाह वहां आया, तो उसे एक खोखली गुफा मिली, जिस में उस ने निवास, और सन्दूक, और धूप की वेदी रखी, और द्वार बन्द कर दिया।

6 और जो उसके पीछे हो रहे थे उन में से कुछ मार्ग चिन्हित करने को आए, परन्तु न पा सके।
7 जिसे यिर्मयाह ने जान लिया, और उन पर दोष लगाकर कहा, वह स्थान उस समय तक अज्ञात रहेगा, जब तक परमेश्वर अपक्की प्रजा को फिर इकट्ठा करके उन पर दया न करे।
8 तब यहोवा उन्हें ये बातें दिखाएगा, और यहोवा का तेज प्रकट होगा, और बादल भी, जैसा मूसा के समय प्रगट हुआ था, और जैसा सुलैमान ने चाहा था, कि वह स्थान पवित्र किया जाए।
9 यह भी घोषित किया गया, कि उस ने बुद्धिमान होकर समर्पण का बलिदान चढ़ाया, और मन्दिर के तैयार होने का बलिदान दिया।
10 और जब मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब आग स्वर्ग से उतरी, और बलिदानों को भस्म कर दिया; वैसे ही सुलैमान ने भी प्रार्थना की, और आग स्वर्ग से उतरी, और होमबलियों को भस्म कर दिया।
11 और मूसा ने कहा, पापबलि खाया न गया, इस कारण वह भस्म हो गया।
12 इसलिये सुलैमान ने वे आठ दिन माने।
13 यही बातें नीमियास के लेखों और टिप्पणियों में भी वर्णित हैं; और कैसे उसने एक पुस्तकालय की स्थापना की जिसमें राजाओं, और भविष्यवक्ताओं, और दाऊद के कार्यों, और पवित्र उपहारों के विषय में राजाओं के पत्रों को एकत्रित किया गया।
14 इसी रीति से यहूदा ने भी युद्ध के कारण हमारी जो कुछ हानि हुई थी, वह सब इकट्ठा कर लिया, और वह हमारे पास बनी रही।
15 इसलिये यदि तुम्हें उसकी आवश्यकता हो, तो कुछ भेज कर अपने पास ले आओ।
16 इसलिये कि हम शुद्धि का उत्सव मनाने पर हैं, इसलिये हम ने तुम्हें लिखा है, कि यदि तुम उन्हीं दिनोंमें रहो, तो अच्छा करोगे।
17 हम यह भी आशा करते हैं, कि परमेश्वर, जिस ने अपनी सारी प्रजा का उद्धार किया, और उनको निज भाग, और राज्य, और याजकपद, और पवित्रस्थान दिया,
18 जैसा उस ने व्यवस्था में कहा या, वह शीघ्र हम पर दया करेगा, और हम को आकाश के नीचे के सारे देश से पवित्र स्यान में इकट्ठा करेगा; क्योंकि उस ने हम को बड़े संकटों से छुड़ाया, और स्यान को शुद्ध किया है।
19 अब यहूदा मकाबी और उसके भाइयों के विषय में, और बड़े मन्दिर के शुद्ध होने, और वेदी के प्रतिष्ठापन के विषय में,
20 और अन्ताकिया एपिफेन्स और उसके पुत्र यूपाटोर से लड़ाइयां हुईं,
21 और जो यहूदी धर्म की लाज रखने के लिथे पौरुष का काम करते थे उन पर स्वर्ग से प्रगट चिन्ह आए, यहां तक कि थोड़े से होकर उन्होंने सारे देश पर अधिकार कर लिया, और जंगली लोगों का पीछा किया।
22 और वह मन्दिर जो सारे जगत में प्रसिद्ध है, उसे फिर से प्राप्त किया, और नगर को स्वतंत्र किया, और जो व्यवस्थाएं घट रही थीं, उनको दृढ़ किया, और यहोवा उन पर सब प्रकार से अनुग्रह करता रहा;
23 मैं कहता हूं, इन सब बातों को जेसन ऑफ साइरेन ने पांच पुस्तकों में घोषित किया है, हम उन्हें एक खंड में संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे।
24 अनन्त संख्या पर विचार करने के कारण, और उस कठिनाई को जो वे पाते हैं, कहानी के वर्णनों पर दृष्टि डालने की इच्छा करते हैं, विषय की विविधता के लिए,
25 हम ने चौकसी की है, कि पढ़नेवाले आनन्दित हों, और जो स्मरण रखना चाहते हैं उन्हें सरलता हो, और जितनों के हाथ में वह आए वे लाभ पाएँ।
26 इसलिये हम लोगों के लिये, जिन्होंने इस कष्टदायक परिश्रम को अपने ऊपर लिया है, यह आसान नहीं था, परन्तु परिश्रम करने और देखने का विषय था;
27 जैसे जेवनार तैयार करनेवाले और दूसरों की भलाई चाहनेवाले को कुछ सहजता नहीं, तौभी हम बहुतोंको प्रसन्न करने के लिथे यह बड़ा कष्ट सह लेंगे;
28 प्रत्येक विवरण का सटीक प्रबंधन लेखक पर छोड़ना, और संक्षिप्तीकरण के नियमों का पालन करने के लिए प्रयास करना।
29 क्योंकि नये घर का बनानेवाले को सारे भवन की रखवाली करनी पड़ती है; परन्तु जो इसे बनाने, और रंगने का बीड़ा उठाता है, उसे उसकी सजावट के लिए उपयुक्त वस्तुओं की तलाश करनी चाहिए: फिर भी मैं सोचता हूं कि यह हमारे साथ है।
30 हर बिंदु पर खड़ा होना, और बड़े पैमाने पर चीजों पर गौर करना, और विशेष रूप से उत्सुक होना, कहानी के पहले लेखक से संबंधित है:
31 परन्तु संक्षिप्तता का प्रयोग करना, और काम में अधिक परिश्रम से बचना उस को दिया जाता है जो संक्षिप्तीकरण करेगा।
32 फिर हम यहीं से कहानी आरम्भ करेंगे: जो कहा गया है उसमें केवल इतना ही जोड़ना, कि लम्बी प्रस्तावना बनाना, और कहानी को छोटा करना मूर्खतापूर्ण बात है।

अध्याय 3

1 जब ओनिय्याह महायाजक की भक्ति और दुष्टता से घृणा के कारण पवित्र नगर में सब प्रकार की शान्ति रहती थी, और व्यवस्था का पालन बहुत अच्छी तरह किया जाता था,
2 ऐसा हुआ कि स्वयं राजाओं ने भी उस स्थान का सम्मान किया, और अपने सर्वोत्तम उपहारों से मंदिर की शोभा बढ़ाई;
3 यहां तक कि आसिया के सेल्यूकस ने बलिदानों की सेवा का सारा खर्च अपनी कमाई से उठाया।
4 परन्तु बिन्यामीन के गोत्र में से शमौन जो मन्दिर का हाकिम ठहराया गया या, उस ने नगर में उपद्रव के विषय में महायाजक से झगड़ा किया।
5 और जब वह ओनिय्याह पर प्रबल न हो सका, तो उस ने उसे थ्रेसीस के पुत्र अपोलोनियुस के पास पहुंचा दिया, जो उस समय सेलोसरिया और फीनीके का हाकिम था।
6 और उस से कहा, कि यरूशलेम का भण्डार अनन्त धन से भरा हुआ है, यहां तक कि उनकी सम्पत्ति की बहुतायत, जो बलिदानों के खाते में नहीं आती, अनगिनित है, और उस सब को राजा के पास पहुंचाना सम्भव है। हाथ।
7 अब जब अपोलोनियस राजा के पास आया, और उसे वह धन दिखाया, जिसके विषय में उसे बताया गया था, तो राजा ने हेलियोडोरस को अपना खजांची चुन लिया, और उसे आदेश देकर भेजा कि वह उसके पास पूर्वोक्त धन ले आए।
8 तब हेल्योदोरस ने तुरन्त प्रस्थान किया; सेलोसीरिया और फेनिस के शहरों का दौरा करने के रंग के तहत, लेकिन वास्तव में राजा के उद्देश्य को पूरा करने के लिए।
9 और जब वह यरूशलेम को आया, और नगर के महायाजक ने उसका स्वागत किया, तब उस ने उस से कहा, कि उस धन के विषय में क्या समाचार दिया गया था, और जिस कारण वह आया है, उस को बता दिया, और पूछा, कि क्या ये बातें सचमुच ऐसी ही हैं।
10 तब महायाजक ने उस से कहा, कि विधवाओंऔर अनाथ बालकोंकी सहायता के लिथे इतना धन रखा है;
11 और उस में से कुछ तोबीयाह के पुत्र हिरकेनुस का था, जो एक बड़ा प्रतिष्ठित पुरूष था, और उस दुष्ट शमौन के अनुसार नहीं; जो कुल मिला कर चार सौ किक्कार चान्दी, और दो सौ सोना था।
12 और यह पूरी तरह से असंभव था कि उनके साथ ऐसा अन्याय किया जाए, जिन्होंने उस स्थान की पवित्रता, और मंदिर की महिमा और अलंघनीय पवित्रता के साथ ऐसा किया था, जिसका पूरे विश्व में सम्मान किया जाता है।

13 परन्तु हेल्योदोरस ने राजा की आज्ञा के अनुसार कहा, कि इसे किसी भी रीति से राजा के भण्डार में पहुंचाया जाए।
14 सो उस दिन जो उस ने ठहराया था, उसी दिन वह इस बात का आदेश देने को भीतर गया, इस कारण सारे नगर में थोड़ी सी भी पीड़ा न हुई।
15 परन्तु याजकोंने अपके याजकोंके वस्त्र पहिने हुए वेदी के साम्हने दण्डवत् करके उस से स्वर्ग की प्रार्थना की, जिस ने उन वस्तुओंके विषय में जो अपक्की रखी हुई वस्तुओंके लिथे नियम बनाया था, याजकोंने उन्हें रखने के लिये सौंपा था, याजकोंके लिथे उनको सुरक्षित रखा जाए।
16 तब जो कोई महायाजक की ओर देखता, उसका ह्रदय घायल हो जाता; क्योंकि उसके मुख का रूप और उसका रंग बदलना उसके मन की आन्तरिक पीड़ा को प्रगट करता था।
17 क्योंकि वह पुरूष भय और भय से ऐसा घबरा गया था, कि जो कोई उस पर दृष्टि करता था, उन पर प्रगट होता था, कि उसके मन में कैसा दु:ख है।
18 और अन्य लोग प्रार्थना करने के लिये अपने अपने घरों से निकलकर दौड़े, क्योंकि वह स्थान तुच्छ जान पड़ा।
19 और जो स्त्रियां छाती के नीचे टाट बान्धे हुए थीं, वे सड़कों में बहुतायत में थीं, और जो कुँवारियाँ बन्द थीं, वे कुछ फाटकों की ओर, और कुछ शहरपनाह की ओर, और कुछ खिड़कियों में से झाँककर देखने लगीं।
20 और सब ने अपने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर प्रार्थना की।
21 तब मनुष्य को सब प्रकार की भीड़ को गिरते हुए, और महायाजक को ऐसी पीड़ा में पड़ते हुए देखकर खेद होता।
22 तब उन्होंने सर्वशक्तिमान यहोवा से प्रार्थना की, कि जो कुछ अमानत में लाया गया है उसे उन लोगों के लिये सुरक्षित और निश्चित रखे जिन ने उन्हें सौंपा है।
23 तौभी हेल्योडोरस ने वही किया जो आज्ञा दी गई थी।
24 और जब वह अपके भण्डार के रक्षकोंसमेत वहां उपस्थित था, तब आत्माओंके प्रभु और सर्वशक्तिमान प्रधान ने एक बड़ा दृश्य उत्पन्न किया, यहां तक कि जो लोग उसके साथ आने को अभिलाष कर रहे थे, वे परमेश्वर की शक्ति से चकित हो गए। और मूर्च्छित हो गए, और बहुत डर गए।
25 क्योंकि उन्हें एक घोड़ा दिखाई दिया, जिस पर एक भयानक सवार सवार था, और बहुत ही सुंदर ओढ़ने से सजी हुई थी, और वह भयंकर रूप से दौड़ा, और हेलियोडोरस को अपने अगले पैरों से मारा, और ऐसा प्रतीत हुआ कि जो घोड़े पर बैठा था, उसके पास पूरी तरह से हथियार थे। सोना।
26 फिर दो और जवान उसके साम्हने दिखाई दिए, जो देखने में बलशाली, और अति सुन्दर, और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए थे, और उसके दोनों ओर खड़े थे; और उसे लगातार कोड़े मारते रहे, और उसे बहुत दुखदायी कोड़े मारे।
27 और हेल्योडोरस अचानक भूमि पर गिर पड़ा, और घोर अन्धकार से घिर गया; परन्तु उसके साथियों ने उसे उठाकर कूड़े में डाल दिया।
28 इस प्रकार, जो हाल ही में एक बड़ी भीड़ और अपने सभी रक्षकों के साथ कथित खजाने में आया था, उन्होंने उसे बाहर निकाला, क्योंकि वह अपने हथियारों से खुद को मदद करने में असमर्थ था: और उन्होंने स्पष्ट रूप से भगवान की शक्ति को स्वीकार किया।
29 क्योंकि वह परमेश्वर के हाथ से गिरा दिया गया, और जीवन की आशा न पाकर चुप रह गया।
30 परन्तु उन्होंने यहोवा की स्तुति की, जिस ने चमत्कार करके अपके स्थान को अर्थात् मन्दिर के लिथे प्रतिष्ठित किया; जो थोड़ा आगे भय और संकट से भरा हुआ था, जब सर्वशक्तिमान यहोवा प्रकट हुआ, तो वह हर्ष और आनन्द से भर गया।
31 तब हेलियोडोरस के कुछ मित्रों ने तुरन्त ओनियास से प्रार्थना की, कि वह परमप्रधान से प्रार्थना करे कि वह उसे अपना जीवन दे, जो भूत को त्यागने के लिए तैयार है।
32 इसलिये महायाजक को संदेह हुआ, कि कहीं राजा यह न समझे, कि यहूदियों ने हेल्योडोरस के साथ कोई विश्वासघात किया है, और उस मनुष्य की भलाई के लिथे बलिदान चढ़ाया।
33 जब महायाजक प्रायश्चित्त कर रहा था, तो वे ही जवान वही वस्त्र पहिने हुए हेल्योदोरस के पास आकर खड़े हुए, और कहने लगे, कि ओनिय्याह को महायाजक का बड़ा धन्यवाद करना, क्योंकि यहोवा ने उसके कारण तुझे जीवन दिया है।
34 और यह देखकर कि तू स्वर्ग से कोड़े पर आया है, सब मनुष्योंपर परमेश्वर की सामर्थी शक्ति का वर्णन कर। और जब उन्होंने ये बातें कहीं, तो वे फिर प्रकट न हुए।
35 तब हेलियोडोरस यहोवा के लिये बलिदान करके, और उसके प्राण बचानेवाले के लिये बड़ी मन्नत मानकर, और ओनिआस को नमस्कार करके, अपनी सेना समेत राजा के पास लौट आया।
36 तब उस ने सब मनुष्योंके साम्हने महान परमेश्वर के कामोंकी गवाही दी, जो उस ने अपनी आंखोंसे देखा था।
37 और जब राजा हेल्योदोरस ने, जो यरूशलेम में फिर भेजे जाने के योग्य मनुष्य हो सकता था, कहा,
38 यदि तेरा कोई शत्रु वा विश्वासघाती हो, तो उसे वहीं भेज, और यदि वह प्राण लेकर भागे, तो उसे अच्छी तरह से कोड़े से अपने पास रखना; क्योंकि उस स्थान में कोई सन्देह नहीं; ईश्वर की एक विशेष शक्ति है.
39 क्योंकि जो स्वर्ग में रहता है, वह उस स्थान पर दृष्टि रखता है, और उसकी रक्षा करता है; और जो उसे हानि पहुँचाने आते हैं, उन्हें वह पीटकर नष्ट कर देता है।
40 और हेलिओदोरस और भण्डार की रखवाली के विषय में बातें इस प्रकार निकलीं।

अध्याय 4

1 अब उसी शमौन ने, जिसके विषय में हम ने पहिले कहा था, धन और देश का विश्वासघाती होकर ओनिय्याह की निन्दा की, मानो उस ने हेल्योडोरस को भयभीत कर दिया हो, और इन बुराइयों का कर्ता हो।
2 इस प्रकार उसने उसे गद्दार कहने का साहस किया, जो नगर का सुपात्र था, और अपने ही राष्ट्र के प्रति समर्पित था, और कानून के प्रति इतना उत्साही था।
3 परन्तु जब उनका बैर यहां तक बढ़ गया, कि शमौन के एक गुट ने हत्याएं कीं,
4 ओनियास ने इस विवाद का खतरा देखा, और यह कि अपोलोनियस, जो सेलोसरिया और फीनीके का हाकिम था, क्रोधित हुआ, और शमौन का द्वेष बढ़ाया,
5 वह अपने देशवासियों पर दोष लगाने के लिये नहीं, पर क्या साधारण, क्या साधारण, सब की भलाई की इच्छा से राजा के पास गया।
6 क्योंकि उस ने देखा कि यह अनहोना है, कि जब तक राजा इस ओर ध्यान न दे, तब तक राज्य शान्त रहे, और शमौन अपनी मूर्खता छोड़ दे।
7 परन्तु सेल्यूकस के मरने के बाद जब अन्ताकिया ने, जो एपिफेनिस कहलाता है, राज्य कर लिया, तब ओनिय्याह के भाई यासोन ने महायाजक बनने के लिये गुप्त परिश्रम किया।
8 और राजा से विनती करके तीन सौ अस्सी किक्कार चान्दी, और अस्सी किक्कार अन्य राजस्व देने का वचन दिया।
9 इसके अलावा, उसने एक सौ पचास और नियुक्त करने का वादा किया, अगर उसके पास व्यायाम के लिए एक जगह स्थापित करने और अन्यजातियों के पैटर्न में युवाओं को प्रशिक्षित करने और उन्हें

यरूशलेम के बारे में लिखने का लाइसेंस हो अन्ताकियावासियों का नाम.

10 और जब राजा ने उसे दे दिया, और शासन उसके हाथ में आ गया, तब उस ने तुरन्त अपनी जाति को यूनानी रीति से ले लिया।

11 और यूपोलेमस के पिता यूहन्ना के द्वारा, जो मित्रता और सहायता के लिथे रोम में राजदूत हुआ या, उस ने यहूदियोंको जो राजकीय विशेष अनुग्रह दिया या, उस को उस ने छीन लिया; और जो सरकारें व्यवस्था के अनुसार चलती थीं, उनको गिराकर उस ने व्यवस्था के विरूद्ध नये रीति रिवाज चलाए।

12 क्योंकि उस ने आनन्द से गुम्मट के नीचे व्यायाम का स्थान बनाया, और मुख्य जवानों को अपने वश में कर लिया, और उन्हें टोपी पहनाई।

13 अब यूनानी रीति-रिवाजों की पराकाष्ठा और बुतपरस्त आचरण की वृद्धि, जेसन की अत्याधिक अपवित्रता के कारण हुई, वह अधर्मी दुष्ट, और कोई महायाजक नहीं था;

14 कि पुजारियों के पास वेदी पर और सेवा करने का साहस नहीं था, लेकिन मंदिर का तिरस्कार करते हुए, और बलिदानों की उपेक्षा करते हुए, डिस्कस के खेल के बाद उन्हें व्यायाम के स्थान पर गैरकानूनी भत्ते का भागी बनने की जल्दी थी;

15 अपने पुरखाओं के सम्मान के अनुसार न चलना, परन्तु यूनानी लोगों की महिमा को सब से अधिक प्रिय मानना।

16 इस कारण उन पर भारी विपत्ति आई; क्योंकि उन्होंने उनको अपना शत्रु और पलटा लेने वाला ठहराया, और जिनकी रीति पर वे बड़ी लगन से चलते थे, और सब बातों में उन्हीं के समान होना चाहते थे।

17 क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था के विरूद्ध दुष्टता करना कोई छोटी बात नहीं, परन्तु आनेवाले समय में ये बातें प्रगट हो जाएंगी।

18 अब जब वह खेल जो हर विश्वास वर्ष में खेला जाता था, सोरस में रखा गया, और राजा उपस्थित था,

19 इस कृतघ्न जेसन ने यरूशलेम से विशेष दूतों को, जो अन्ताकिया थे, हरक्यूलिस के बलिदान के लिए तीन सौ दर्कमन चाँदी ले जाने के लिए भेजा, जिसे उसके उठाने वालों ने भी बलिदान के लिए न देना उचित समझा, क्योंकि यह सुविधाजनक नहीं था, बल्कि होना था अन्य शुल्कों के लिए आरक्षित।

20 तब यह धन, प्रेषक के संबंध में, हरक्यूलिस के बलिदान के लिए नियुक्त किया गया था; लेकिन उसके धारकों के कारण, इसका उपयोग गैलीज़ बनाने के लिए किया गया था।

21 अब जब मेनेस्थियस के पुत्र अपोलोनियस को राजा टॉलेमीस फिलोमेटोर के राज्याभिषेक के लिये मिस्र भेजा गया, तब अन्ताकिया ने यह समझकर, कि उसके मामलों में उसका बुरा प्रभाव न पड़े, अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध किया; तब वह याफा आया, और वहां से यरूशलेम को आया। :

22 जहां यासोन और नगर के लोगों ने उसका बड़े आदर के साथ स्वागत किया, और मशाल जलाकर और बड़े जयजयकार के साथ उसे भीतर लाया गया; और इसके बाद वह अपने दल के साथ फीनीके को चला गया।

23 तीन वर्ष के बाद यासोन ने शमौन के भाई मनेलौस को राजा के पास रूपया पहुंचाने, और कुछ आवश्यक बातों पर ध्यान देने के लिथे भेजा।

24 परन्तु जब वह राजा के साम्हने लाया गया, तब उस ने उसके तेज के कारण उसकी महिमा की, और यासोन से तीन सौ किक्कार चान्दी अधिक चढ़ाकर याजकपद अपने लिये कर लिया।

25 इसलिए वह राजा के आदेश के साथ आया, और महायाजक पद के योग्य कुछ भी नहीं लाया, केवल एक क्रूर अत्याचारी का क्रोध और एक क्रूर जानवर का क्रोध था।

26 तब यासोन को, जिस ने अपने ही भाई को दूसरे के द्वारा नीचा दिखाया था, अम्मोनियोंके देश में भागना पड़ा।

27 इस प्रकार मनेलौस को राज्य तो मिल गया, परन्तु जो रूपया उस ने राजा को देने का वचन दिया या, उस के बदले में उस ने कुछ न दिया, यद्यपि महल के हाकिम सोस्त्रतिस ने इसकी मांग की।

28 क्योंकि रीति-नीति के इकट्ठा करने का काम उसी को मिला। इसलिये उन दोनों को राजा के सामने बुलाया गया।

29 अब मनेलौस ने अपके भाई लिसिमाखुस को याजकपद में अपके स्थान पर छोड़ दिया; और सोस्ट्रेटस ने क्रेट्स को छोड़ दिया, जो साइप्रियन का गवर्नर था।

30 जब वे काम कर ही रहे थे, तो तरसुस और मल्लोस के लोगों ने बलवा किया, क्योंकि वे अन्ताकिया नाम राजा की रखेली को सौंप दिए गए थे।

31 तब राजा ने मामले को शांत करने के लिए जल्दबाजी की, और एंड्रॉनिकस नामक एक अधिकारी को उसके उपप्रधान के रूप में छोड़ दिया।

32 अब मनेलौस ने यह समझकर, कि उसे सुविधाजनक समय मिल गया है, मन्दिर में से सोने के कुछ पात्र चुरा लिए, और उन में से कुछ अन्द्रोनिकस को दे दिया, और कुछ सोरूस और आस पास के नगरों में बेच दिया।

33 और जब ओनिय्याह को अपराधी का पता चला, तब उस ने उसे डांटा, और डाफ्ने के एक पवित्रस्थान में, जो अन्ताकिया के पास है, भाग गया।

34 इस कारण मेनेलौस ने एन्ड्रोनिकस को अलग ले जाकर उस से प्रार्थना की, कि ओनिअस को उसके हाथ में कर दे; उस ने उस पर विश्वास किया, और छल से ओनियाह के पास आकर शपथ खिलाकर उसे अपना दाहिना हाथ दिया; और यद्यपि उसको उस पर संदेह हुआ, तौभी उस ने उसे पवित्रस्थान से बाहर आने को समझाया; और उस ने न्याय की कुछ परवाह न करके तुरन्त बन्द कर दिया।

35 इस कारण न केवल यहूदी, वरन अन्य जातियों के लोग भी बहुत क्रोधित हुए, और उस मनुष्य की अन्यायपूर्ण हत्या से बहुत उदास हुए।

36 और जब राजा किलिकिया के आस पास के स्थानों से फिर आया, तो नगर के यहूदियों ने, और यूनानियों में से भी, जो इस बात से घृणित थे, शिकायत करने लगे, कि ओनिय्याह बिना कारण मारा गया।

37 इस कारण अन्ताकिया को उस पर जो मर गया था, बहुत खेद हुआ, और उस पर तरस आया, और वह उस मरे हुए के संयमी और नम्र चालचलन के कारण रोने लगा।

38 और क्रोध से जलकर उस ने तुरन्त अन्द्रोनिकस का बैंजनी रंग उतार लिया, और उसके वस्त्र फाड़ डाले, और उसे सारे नगर में घुमाते हुए उसी स्थान पर ले गया, जहां उस ने ओनिआह से दुष्टता की थी, और उस शापित हत्यारे को मार डाला। इस प्रकार प्रभु ने उसे वैसा ही दण्ड दिया जैसा वह देना चाहता था।

39 अब जब मनेलौस की सम्मति से लिसिमाखुस ने नगर में बहुत से अपवित्र काम किए, और उसका फल दूर दूर तक फैल गया, तो भीड़ लिसिमाखुस के विरूद्ध इकट्ठी हो गई, और सोने के बहुत से पात्र ले जाए जा रहे थे।

40 तब साधारण लोग उठे, और क्रोध से भरकर लिसिमाकुस ने कोई तीन हजार पुरूष हथियार बान्धकर सबसे पहले उपद्रव करना आरम्भ किया; एक औरानस नेता है, एक ऐसा व्यक्ति जो वर्षों से बहुत आगे निकल चुका है, और मूर्खता में भी कम नहीं है।

41 तब उन्होंने लिसिमाखुस का यत्न देखकर, उन में से किसी ने पत्थर, किसी ने लाठी, और किसी ने मुट्ठी भर धूल, जो पास में थी, सब उठाकर लिसिमाखुस और उन पर जो उन पर पड़ीं, सब एक साथ फेंक दीं।

42 इस प्रकार उन्होंने उन में से बहुतों को घायल किया, और कितनों को भूमि पर गिरा दिया, और उन सभों को भागने पर विवश किया; परन्तु गिरजे के डाकू को उन्होंने भणडार के पास मार डाला।

43 इसलिये इन बातोंके विषय में मनेलौस पर दोष लगाया गया।

44 जब राजा सोर के पास आया, तो सभा में से भेजे हुए तीन पुरूषों ने उसके साम्हने मुकद्दमा चलाया;
45 परन्तु मनेलौस ने, जो अब दोषी ठहराया गया, डोरिमेनस के पुत्र टॉलेमी को वचन दिया, कि यदि वह राजा को अपनी ओर आकर्षित करेगा, तो वह उसे बहुत सा धन देगा।
46 तब टॉलेमी ने राजा को एक निश्चित गैलरी में ले जाया, जैसे कि वह हवा लेने जा रहा था, उसे दूसरे दिमाग में लाया:
47 इस हद तक कि उसने मेनेलॉस को आरोपों से मुक्त कर दिया, जो कि सभी उपद्रव का कारण था: और उन गरीब लोगों को, यदि उन्होंने सीथियनों के सामने अपना मामला बताया होता, तो उन्हें निर्दोष माना जाना चाहिए था, उन्हें उसने मौत की सजा दी .
48 इस प्रकार जो लोग नगर, और प्रजा, और पवित्र पात्रोंके लिथे मुकद्दमा मानते थे, वे शीघ्र ही अन्यायपूर्ण दण्ड भोगने लगे।
49 इस कारण सोरूस के लोगोंने भी उस दुष्ट काम से बैर करके उन्हें सम्मानपूर्वक मिट्टी दी।
50 और इस प्रकार उन लोगों के लालच के कारण जो ताकतवर थे, मेनेलौस अभी भी अधिकार में बना रहा, द्वेष में बढ़ता गया, और नागरिकों के लिए एक बड़ा गद्दार बन गया।

अध्याय 5

1 लगभग उसी समय एंटिओकस ने मिस्र में अपनी दूसरी यात्रा की तैयारी की:
2 और फिर ऐसा हुआ, कि सारे नगर में लगभग चालीस दिन तक घुड़सवार सोने के वस्त्र पहिने हुए, और भाले लिए हुए, सिपाहियों के दल के समान हवा में दौड़ते हुए दिखाई देते थे।
3 और घुड़सवारों की टोलियां पांति बान्धकर एक दूसरे से भिड़ती थीं, और ढालों को हिलाती, और बहुत सी भालें, और तलवारें खींचती, और भाले फेंकती, और सोने के आभूषणों की चमकती, और सब प्रकार की भाँति की भाँति की भाँति का भाँति-भाँति का भार उठाती थीं।
4 इसलिए प्रत्येक व्यक्ति ने प्रार्थना की कि वह दृश्य अच्छा हो जाए ।
5 अब जब ऐसी झूठी अफवाह फैल गई, मानो एंटिओकस मर गया हो, तो जेसन ने कम से कम एक हजार लोगों को ले लिया, और अचानक शहर पर हमला कर दिया; और जो लोग शहरपनाह पर थे उन्हें पीछे हटा दिया गया, और नगर पर कब्ज़ा कर लिया गया, मेनेलौस महल में भाग गया:
6 परन्तु यासोन ने अपने ही नागरिकोंको बिना दया के घात किया, और यह न सोचा, कि अपनी ही जाति के लोगोंको मार डालना उसके लिये अत्यन्त दु:ख का दिन होगा; परन्तु यह सोचकर कि वे उसके शत्रु थे, न कि उसके देशवासी, जिन पर उसने विजय प्राप्त की थी।
7 तौभी इस सब से उस ने प्रधानता तो न पाई, परन्तु अन्त में अपने विश्वासघात के कारण लज्जित हुआ, और अम्मोनियोंके देश में फिर भाग गया।
8 इसलिए अंत में उसे दुखी होकर लौटना पड़ा, अरबों के राजा अरेतास के सामने उस पर आरोप लगाया गया, एक शहर से दूसरे शहर भागना, सभी लोगों द्वारा उसका पीछा किया जाना, कानूनों को त्यागने वाले के रूप में घृणा करना, और खुले दुश्मन के रूप में घृणित व्यवहार करना उसके देश और देशवासियों को, उसे मिस्र में निकाल दिया गया।
9 इस प्रकार वह, जिसने बहुतों को उनके देश से निकाल दिया था, एक पराए देश में नाश हो गया, और लेसिडेमोनियों के पास चला गया, और वहां अपने रिश्तेदारों के कारण सहायता पाने की सोच रहा था:
10 और जिस ने बहुतोंको दफ़न न किया या, उसके लिथे कोई शोक करनेवाला न या, और न उसके पुरखाओंके लिथे कोई शोक करनेवाला या कोई बड़ा अंतिम संस्कार करनेवाला या कोई कब्रगाह थी।
11 जब यह काम राजा के रथ के पास पहुंचा, तब उस ने समझा, कि यहूदिया ने बलवा किया है; तब उस ने क्रोधित मन से मिस्र से निकलकर, हथियार के बल से नगर पर अधिकार कर लिया।
12 और अपने सिपाहियोंको आज्ञा दी, कि जो आपस में मिलें उन्हें न छोड़ें, और जो घरोंपर चढ़ें उनको मार डालें।
13 इस प्रकार जवानों और बूढ़ों की हत्या की गई, पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को छीन लिया गया, कुंवारियों और शिशुओं की हत्या की गई।
14 और पूरे तीन दिन के अंतराल में अस्सी हजार लोग नष्ट हो गए, जिनमें से चालीस हजार लोग संघर्ष में मारे गए; और मारे गए लोगों से कम नहीं बिका।
15 तौभी वह इस से सन्तुष्ट न हुआ, वरन सारे जगत के परमपवित्र मन्दिर में जाने का साहस किया; मेनेलौस, कानूनों और अपने ही देश का गद्दार, उसका मार्गदर्शक:
16 और उस ने पवित्र पात्रोंको अशुद्ध हाथोंसे ले लिया, और जो वस्तुएं दूसरे राजाओं ने उस स्यान की उन्नति, और महिमा और आदर के लिथे समर्पित की थीं, उन्हें भी अपवित्र हाथोंसे गिराकर दे दिया।
17 और अन्ताकिया मन में इतना घमण्डी था, कि उस ने यह न सोचा, कि यहोवा ने नगर के रहनेवालोंके पापोंके कारण कुछ समय तक क्रोध किया है, और इस कारण उसकी दृष्टि उस स्थान पर न हुई।
18 क्योंकि यदि वे पहिले से बहुत पापों में न फंसे होते, तो इस मनुष्य को आते ही कोड़े मारे जाते, और हेल्योदोरस की नाईं जिसे राजा सेल्यूकस ने भण्डार की देख रेख करने को भेजा या, उसी की नाईं उसके अभिमान से हटा दिया जाता।
19 तौभी परमेश्वर ने उस स्यान के लिये लोगोंको नहीं, परन्तु उस स्यान को लोगोंके लिथे चुन लिया।
20 और इसलिए वह स्थान, जो राष्ट्र पर आई विपत्ति में उनका सहभागी था, ने बाद में प्रभु की ओर से भेजे गए लाभों के बारे में बताया: और जैसा कि सर्वशक्तिमान के क्रोध में इसे त्याग दिया गया था, वैसे ही, महान प्रभु मेल-मिलाप होने पर, वह पूरी महिमा के साथ स्थापित किया गया।
21 सो जब अन्ताकिया ने मन्दिर में से एक हजार आठ सौ किक्कार निकाल लिया, तो अपने घमण्ड को त्यागकर, भूमि को नौगम्य बनाने और समुद्र को पैदल चलने योग्य बनाने के लिए वह शीघ्रता से अन्ताकिया की ओर चला गया: उसके मन का अहंकार ऐसा था।
22 और उस ने जाति को सताने के लिथे हाकिम छोड़ दिए, अर्यात् यरूशलेम में फिलिप्पुस अपके देश के लिथे एक फ्रीजियन था, और जिस ने उसे वहां बसाया था, उस से भी अधिक क्रूर चाल का था;
23 और गरिज़ीम में अन्द्रोनिकस; और इसके अलावा, मेनेलॉस, जो बाकी सभी लोगों से भी बदतर था, अपने देशवासियों यहूदियों के खिलाफ दुर्भावनापूर्ण मन रखते हुए, नागरिकों पर भारी हाथ रखता था।
24 और उस ने उस घृणित सरदार अपोलोनियुस को भी बाईस हजार की सेना समेत भेज दिया, और उसे आज्ञा दी, कि जितने जवान थे, उन सभोंको घात कर डाल, और स्त्रियोंऔर छोटोंको भी बेच दे।
25 जो यरूशलेम में आकर मेल का दिखावा करके विश्राम के पवित्र दिन तक रुका रहा, और पवित्र दिन माननेवाले यहूदियोंको लेकर अपके जनोंको हथियार बान्धने की आज्ञा दी।
26 और उस ने उन सभोंको घात किया जो विश्रामदिन मनाने को गए थे, और हथियार लेकर नगर में दौड़कर बड़ी भीड़ को मार डाला।
27 परन्तु यहूदा मैकाबी और उसके आस-पास के नौ लोग जंगल में चले गए, और पशुओं की नाईं पहाड़ों में अपनी मण्डली के साय रहने लगे, जो नित्य साग-सब्जियां खाते थे, ऐसा न हो कि वे भी अशुद्धता के भागी हो जाएं।

अध्याय 6

1 इसके कुछ समय के बाद राजा ने एथेंस के एक बूढ़े आदमी को यहूदियों को यह कहने के लिये भेजा कि वे अपने पुरखाओं की व्यवस्था से हट जाएं, और परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार न चलें।
2 और यरूशलेम के मन्दिर को भी अपवित्र करना, और उसका नाम बृहस्पति ओलम्पियुस का मन्दिर रखना; और वह गैरिज़िम में, अजनबियों के रक्षक बृहस्पति के रूप में, जैसा कि उन्होंने चाहा था कि वे उस स्थान पर रहें।
3 इस विपत्ति का फैलना लोगों के लिये दुखदायी और दुखदायी था:
4 क्योंकि अन्यजातियों ने मन्दिर में उपद्रव और रंगरेलियां मनायीं, जो वेश्याओं के साथ मेलजोल रखते थे, और पवित्रस्थानों की परिधि के भीतर स्त्रियों से मेलजोल रखते थे, और इसके अलावा ऐसी वस्तुएं लाते थे जो उचित नहीं थीं।
5 और वेदी अपवित्र वस्तुओं से भी भर गई, जिन्हें व्यवस्था वर्जित करती है।
6 और किसी मनुष्य को सब्त के दिन या प्राचीन उपवास रखना, या अपने आप को यहूदी होने का यक़ीन करना उचित नहीं था।
7 और प्रति माह राजा के जन्म के दिन उन्हें बलियोंके खाने के लिथे लाया जाता या; और जब बाखुस का उपवास रखा गया, तो यहूदियों को आइवी लेकर बाखुस के जुलूस में जाने के लिए मजबूर किया गया।
8 फिर टॉलेमी की सलाह से अन्यजातियों के पड़ोसी नगरों को यहूदियों के विरूद्ध यह आज्ञा दी गई, कि वे भी उसी रीति से चलें, और उनके बलिदानों में भागी हों।
9 और जो कोई अन्यजातियों की सी चाल चलना न चाहे वह मार डाला जाए। तब शायद मनुष्य वर्तमान दुख को देख पाता।
10 क्योंकि वहां दो स्त्रियां लाई गईं, जिन्होंने अपने बालकों का खतना किया था; जब वे खुलेआम नगर में घुमाते थे, तब बालकों ने उनकी छातियां पकड़कर उन्हें सिर के बल शहरपनाह पर से नीचे गिरा दिया।
11 और अन्य लोग, जो सब्त के दिन को गुप्त रूप से मानने के लिये पास की गुफाओं में इकट्ठे हो गए थे, फिलिप्पुस द्वारा पहचाने जाने पर सब एक साथ जला दिए गए, क्योंकि उन्होंने परम पवित्र दिन के आदर के लिये अपनी सहायता करने का विवेक उत्पन्न किया।
12 अब मैं इस पुस्तक को पढ़नेवालों से बिनती करता हूं, कि वे इन विपत्तियों के कारण हतोत्साहित न हों, परन्तु उन दण्डों को विनाश के लिये नहीं, परन्तु हमारी जाति को ताड़ना देने के लिये समझें।
13 क्योंकि यह उसकी बड़ी भलाई का चिन्ह है, कि दुष्टों को अधिक समय तक कष्ट नहीं दिया जाता, परन्तु तुरन्त दण्ड दिया जाता है।
14 क्योंकि जैसे अन्यजातियों के साथ प्रभु ने धैर्यपूर्वक उनको दण्ड देना तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि वे अपने पापों के पूरे न हो जाएं, वैसा ही वह हमारे साथ व्यवहार करता है।
15 ऐसा न हो, कि वह पाप की पराकाष्ठा पर पहुंचकर, बाद में हम से पलटा ले।
16 और इस कारण वह हम पर से अपनी करूणा कभी न हटाता, और चाहे विपत्ति से दण्ड देता है, तौभी अपनी प्रजा को कभी नहीं तजता।
17 परन्तु जो कुछ हम ने कहा वह हमारे लिये चेतावनी का कारण हो। और अब हम कुछ शब्दों में मामले का खुलासा करने पर आएंगे.
18 एलीआजर जो प्रधान शास्त्रियोंमें से एक या, और बूढ़े और सुन्दर चेहरेवाला या, मुंह खोलकर सूअर का मांस खाने को विवश हुआ।
19 परन्तु उस ने ऐसे घृणित काम से कलंकित होकर जीवित रहने से, महिमा से मरना अधिक पसन्द किया, और उसे उगल दिया, और अपनी इच्छा से यातना भोगने को आया।
20 जैसा कि उन्हें होना ही था, कि वे ऐसी बातों का डटकर मुकाबला करें, जो जीवन के प्रेम का स्वाद चखने के लिए उचित नहीं हैं।
21 परन्तु जिन पर उस दुष्ट भोज का दोष था, और उस पुरूष के साथ उनकी पुरानी जान पहचान थी, उन्होंने उसे अलग ले जाकर उस से बिनती की, कि वह अपनी भोजनवस्तु में से जो कुछ उसके खाने के लिये उचित हो, ले आए, और जैसा वह करे वैसा बना दे। राजा की आज्ञा के अनुसार बलि में से मांस निकालकर खाया;
22 ताकि ऐसा करने से वह मृत्यु से बच जाए, और उन से अपनी पुरानी मित्रता के कारण अनुग्रह पाए।
23 परन्तु वह सावधानी से विचार करने लगा, और जैसे उसकी आयु बढ़ती गई, और उसके प्राचीन वर्षों की श्रेष्ठता, और उसके पकते सिर का सम्मान, और एक बच्चे से उसकी सबसे ईमानदार शिक्षा, या बल्कि पवित्र कानून बनाया गया और परमेश्वर की ओर से दिया गया: इसलिथे उस ने वैसा ही उत्तर दिया, और उन से यह इच्छा की, कि वे उसे तुरन्त कब्र में भेज दें।
24 क्योंकि यह हमारी उम्र नहीं है, उसने कहा, किसी भी तरह से अलग होना, जिससे कई युवा लोग सोच सकते हैं कि एलीआजर, अस्सी साल और दस साल का था, अब एक अजीब धर्म में चला गया था;
25 और इसलिथे वे मेरे कपट के कारण, और थोड़ी देर और घड़ी भर और जीने की इच्छा करके मुझ से धोखा खाएं, और मेरे बुढ़ापे पर कलंक लगे, और उसे घृणित कर दूं।
26 क्योंकि चाहे इस समय मैं मनुष्यों के दण्ड से बचूं, तौभी मैं न जीवित, न मुर्दा, सर्वशक्तिमान के हाथ से न बचूंगा।
27 इसलिये अब मैं इस जीवन को पुरूषत्व से बदल कर, अपनी आयु के अनुसार अपने आप को ऐसा दिखाऊंगा।
28 और ऐसे लोगों के लिए एक उल्लेखनीय उदाहरण छोड़ो जो सम्मानजनक और पवित्र कानूनों के लिए स्वेच्छा से और साहसपूर्वक मरने के लिए युवा हों। और जब उस ने ये बातें कहीं, तो तुरन्त यातना पर उतर आया:
29 जिन्होंने उसे सद्भावना बदलने में अगुवाई की, उन्होंने कुछ समय पहले ही उसे घृणा में डाल दिया, क्योंकि पूर्वोक्त भाषण, जैसा कि उन्होंने सोचा था, हताश मन से आगे बढ़े थे।
30 परन्तु जब वह कोड़ों से मरने को तैयार हुआ, तब कराहकर कहने लगा, प्रभु को, जो पवित्र ज्ञान रखता है, यह प्रगट है, कि मैं मृत्यु से तो बच सकता था, परन्तु अब मार खाने से मेरे शरीर में अत्यन्त पीड़ा होती है। : परन्तु मैं मन से इन दुखों को सहने से भी संतुष्ट हूं, क्योंकि मैं उस से डरता हूं।
31 और इस प्रकार यह व्यक्ति मर गया, और अपनी मृत्यु को न केवल जवानों के लिए, बल्कि अपने पूरे राष्ट्र के लिए एक महान साहस और सद्गुण के स्मारक के रूप में छोड़ गया ।

अध्याय 7

1 और ऐसा हुआ, कि सात भाइयोंको उनकी माता समेत पकड़ लिया गया, और नियम के विरूद्ध राजा ने उन्हें सूअर का मांस चखने के लिये विवश किया, और कोड़ोंऔर कोड़ोंसे उन को यातना दी।
2 परन्तु जो पहिले बातें करते थे उन में से एक ने यों कहा, तू हम से क्या पूछना या क्या सीखना चाहेगा? हम अपने पूर्वजों के नियमों का उल्लंघन करने के बजाय मरने के लिए तैयार हैं।
3 तब राजा ने क्रोध में आकर तवे और हंडे गरम करने की आज्ञा दी;
4 तब उस ने तुरन्त क्रोधित होकर आज्ञा दी, कि जो पहिले बोलता था उसकी जीभ काट डालो, और उसके शरीर के अंगोंको काट डालो, और उसके भाइयोंऔर उसकी माता को देखते रहो।
5 जब उसके सारे अंग इस प्रकार टूट गए, तब उस ने उसे जीवित रहते हुए आग में चढ़ाने, और तवे पर भूनने की आज्ञा दी; और जब तवे की भाप बहुत दूर तक फैल गई, तब उन्होंने एक को समझाया। माँ के साथ एक और मर्दाना मरना, ऐसा कहना,
6 यहोवा परमेश्वर हम पर दृष्टि करता है, और सचमुच हम में शान्ति रखता है, जैसा कि मूसा ने अपने गीत में, जो उनके साम्हने गवाही

देकर कहा, और कहा, और उसके दासोंके कारण उसे शान्ति मिलेगी।
7 सो जब पहिला इतने के बाद मर गया, तो वे दूसरे को ले आए, कि उसे ठट्ठों में उड़ाएं; और जब उन्होंने उसके सिर की खाल और बालों को उखाड़ लिया, तो उस से पूछा, क्या तू खाएगा, पहिले कि तू दण्ड पाए। आपके शरीर का प्रत्येक सदस्य?
8 परन्तु उस ने अपक्की ही भाषा में उत्तर देकर कहा, नहीं, इसलिथे उस ने पहिले के समान अगली यातना भी क्रम से उठाई।
9 और जब वह आखिरी सांस पर था, तब उसने कहा, तू क्रोध की नाईं हमें इस वर्तमान जीवन से उठा ले जाता है, परन्तु जगत का राजा हम को, जो उसकी व्यवस्था के लिये मर गए हैं, अनन्त जीवन के लिये जिलाएगा।
10 उसके पीछे तीसरा था, जो ठट्ठा करनेवाला बना हुआ या, और जब जब मांग होती, तब अपनी जीभ निकाल देता, और तुरन्त ही, और अपने हाथ मर्दाना रीति से फैला देता।
11 और हियाव करके कहा, ये मुझे स्वर्ग से मिले हैं; और उसके नियमों के कारण मैं उनका तिरस्कार करता हूं; और उससे मैं उन्हें पुनःप्राप्त करने की आशा करता हूँ।
12 यहां तक कि राजा और उसके साथियों को उस जवान के साहस पर आश्चर्य हुआ, क्योंकि उस ने पीड़ा की कुछ भी परवाह नहीं की।
13 और जब यह मनुष्य मर गया, तो उन्होंने चौथे को भी इसी रीति से यातना दी, और उसका नाश किया।
14 सो जब वह मरने को तैयार हुआ, तब उस ने योंकहा, कि जब मनुष्य घात किए जाते हैं, तो यह अच्छा है, कि परमेश्वर से आशा करते रहें, कि उसके द्वारा जिलाए जाएंगे; और तुझ को पुनरुत्थान न मिलेगा।
15 इसके बाद वे पांचवें को भी ले आए, और उसका टुकड़े-टुकड़े कर डाला।
16 तब उस ने राजा की ओर देखकर कहा, तू मनुष्योंपर अधिकार रखता है, तू नाशमान है, जो चाहता है वही करता है; फिर भी यह मत सोचो कि हमारा राष्ट्र परमेश्वर को त्याग चुका है;
17 परन्तु थोड़ी देर ठहर, और उसकी बड़ी शक्ति को देख, कि वह तुझे और तेरे वंश को किस प्रकार सताएगा।
18 उसके बाद वे छठवें को भी ले आए, और उस ने मरने को तैयार होकर कहा, व्यर्थ धोखा न खाना; क्योंकि हम ने अपके परमेश्वर के विरूद्ध पाप करके अपने लिथे यह दुख उठाया है; इस कारण हम से अद्भुत काम होते हैं।
19 परन्तु यह न सोचो, कि तुम जो परमेश्वर के विरूद्ध झगड़ते हो, कि दण्ड से बच जाओगे।
20 परन्तु माता सब से बढ़कर अद्भुत, और सम्माननीय स्मरण के योग्य थी; क्योंकि जब उस ने अपने सातों बेटों को एक ही दिन में मरते देखा, तो उस आशा के कारण जो उसे प्रभु पर थी, बड़े साहस के साथ सह गई।
21 हां, वह साहस से परिपूर्ण होकर उन में से हर एक को अपनी भाषा में उपदेश देती थी; और मर्दाना पेट के साथ अपने स्त्री विचारों को उत्तेजित करते हुए, उसने उनसे कहा,
22 मैं नहीं बता सकता कि तुम मेरे गर्भ में कैसे आए; क्योंकि मैं ने तुम्हें सांस या जीवन नहीं दिया, और तुम में से हर एक के अंगों का रचयिता मैं ही नहीं था;
23 परन्तु निस्सन्देह जगत का रचयिता, जिस ने मनुष्य की उत्पत्ति की, और सब वस्तुओं के आरम्भ का पता लगाया, वह भी अपनी दया से तुम्हें फिर सांस और जीवन देगा, क्योंकि तुम अब उसकी विधियों पर अपना ध्यान नहीं रखते।' कारण।
24 जब अन्ताकिया ने छोटे के जीवित रहते हुए अपने आप को तुच्छ समझा, और यह शंका की, कि यह निन्दा की बात है, तो न केवल बातों ही बातों में उसे उपदेश दिया, वरन शपथ खिलाकर भी उसे विश्वास दिलाया, कि वह उसे धनवान और सुखी दोनों बनाएगा। मनुष्य, यदि वह अपने पुरखाओं की विधियों से फिर जाए; और वह उसे अपना मित्र बनाएगा, और व्यापार में उस पर भरोसा करेगा।
25 परन्तु जब उस जवान ने उसकी न मानी, तब राजा ने उसकी माता को बुलाकर समझाया, कि वह उस जवान को समझाकर उसका प्राण बचाए।
26 और जब उस ने उसे बहुत समझाकर समझाया, तब उस ने उस से कहा, कि वह अपके बेटे को सम्मति देगी।
27 परन्तु वह उसके साम्हने झुककर उस क्रूर अत्याचारी को ठट्ठों में उड़ाकर अपनी देहाती भाषा में इस प्रकार बोली; हे मेरे बेटे, मुझ पर दया करो जिसने तुम्हें नौ महीने तक अपने गर्भ में रखा, और तुम्हें तीन साल दिए, और तुम्हारा पालन-पोषण किया, और तुम्हें इस उम्र तक पाला, और शिक्षा की कठिनाइयों को सहन किया।
28 हे मेरे पुत्र, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि स्वर्ग और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, उस पर दृष्टि करके विचार कर, कि परमेश्वर ने उनको उन वस्तुओं से बनाया है जो हैं ही नहीं; और इसी प्रकार मानवजाति भी बनाई गई थी।
29 इस सतानेवाले से मत डरो, परन्तु अपने भाइयोंके योग्य होकर अपना प्राण ले लो, कि मैं तेरे भाइयोंके साय फिर तुझ पर दया करूं।
30 वह ये बातें कह ही रही थी, कि जवान ने कहा, तुम किस की बाट जोहती हो? मैं राजा की आज्ञा तो न मानूंगा, परन्तु जो व्यवस्था मूसा ने हमारे पुरखाओं को दी थी उसकी आज्ञा का पालन करूंगा।
31 और तू जो इब्रानियोंके विरूद्ध सब उपद्रव का कर्ता है, परमेश्वर के हाथ से न बचेगा।
32 क्योंकि हम अपके पापोंके कारण दु:ख उठाते हैं।
33 और चाहे जीवित प्रभु हमारी ताड़ना और ताड़ना के कारण थोड़े दिन के लिये हम पर क्रोधित हो, तौभी वह फिर अपने दासोंके साथ एक हो जाएगा।
34 परन्तु हे भक्तिहीन मनुष्य, वरन अन्य सब दुष्टों में से तू भी अकारण क्रोध न करना, और न अनिश्चित आशाओं से फूलकर परमेश्वर के दासों के विरूद्ध हाथ उठाना।
35 क्योंकि तू सर्वशक्तिमान परमेश्वर के न्याय से, जो सब कुछ देखता है, अब तक नहीं बचा।
36 क्योंकि हमारे भाई, जिन्होंने अब थोड़ी सी पीड़ा सही है, परमेश्वर की अनन्त जीवन की वाचा के अधीन मर गए हैं: परन्तु तुम परमेश्वर के न्याय के द्वारा अपने घमण्ड का उचित दण्ड पाओगे।
37 परन्तु मैं, अपने भाइयों के समान, अपने शरीर और जीवन को अपने पूर्वजों के नियमों के लिए अर्पित करता हूं, और परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह हमारे राष्ट्र पर शीघ्र दयालु हो; और तू यातनाओं और विपत्तियों के द्वारा मान ले, कि वह ही परमेश्वर है;
38 और मुझ पर और मेरे भाइयों पर सर्वशक्तिमान का क्रोध, जो उचित रूप से हमारे राष्ट्र पर आया है, समाप्त हो जाए ।
39 तब राजा ने क्रोध में आकर उसे और सब से भी अधिक बुरा सौंप दिया, और इस बात को गम्भीरता से लिया कि उसने ठट्ठों में उड़ाया।
40 सो वह पुरूष निष्कलंक मर गया, और अपना पूरा भरोसा यहोवा पर रखा।
41 पुत्रों के पश्चात् सब से अन्त में माता मर गई।
42 अब मूर्तिपूजा के उत्सवों, और घोर यातनाओं के विषय में कहने के लिये इतना ही काफी है।

अध्याय 8

1 तब यहूदा मकाबी और उसके साथी छिपकर नगरों में गए, और अपने कुटुम्बियों को इकट्ठे किया, और जितने यहूदी धर्म में थे उन सभों को अपने पास ले लिया, और कोई छ: हजार पुरूष इकट्ठे किए।
2 और उन्होंने यहोवा से प्रार्थना की, कि वह सब कुचले हुए लोगों पर दृष्टि करे; और दुष्ट मनुष्यों के कारण अपवित्र हुए मन्दिर पर भी दया करो;

3 और वह उस नगर पर दया करेगा, जो अत्यन्त विकृत और मिट्टी में मिला दिया जानेवाला है; और उस खून को सुनो जो उसके लिए रोया था,
4 और निर्दोष शिशुओंके दुष्ट वध को, और उसके नाम की निन्दा को स्मरण करो; और वह दुष्टों के प्रति अपनी घृणा प्रगट करेगा।
5 और जब मकाबी ने उसके चारोंओर घेरा, तब अन्यजातियोंसे उसका सामना न हो सका; क्योंकि यहोवा का क्रोध दया में बदल गया था।
6 इसलिये वह अचानक आया, और नगरोंऔर नगरोंको फूंक डाला, और बड़े स्थानोंको अपने वश में कर लिया, और अपने बहुत से शत्रुओंको जीत लिया और मार डाला।
7 परन्तु उसने विशेष रूप से ऐसे गुप्त प्रयासों के लिए रात का लाभ उठाया, इतना कि उसकी पवित्रता का फल हर जगह फैल गया।
8 सो जब फिलिप्पुस ने देखा, कि यह मनुष्य तो बढ़ता ही गया, और उसकी उन्नति भी होती गई, तब उस ने सेलोशूर और फीनीके के हाकिम टॉलेमीस को पत्र लिखा, कि राजा के काम में और भी सहायता दे।
9 तब उस ने तुरन्त पेट्रोक्लस के पुत्र निकानोर को, जो उसके खास मित्रों में से एक था, चुनकर उसके अधीन सभी जातियों के बीस हजार से कम लोगों को भेजा, कि यहूदियों की सारी पीढ़ी को जड़ से मिटा दे; और उसके साथ वह गोर्गियास नामक एक कप्तान भी शामिल हो गया, जिसके पास युद्ध के मामलों में बहुत अनुभव था।
10 इसलिये निकानोर ने बन्धुए यहूदियों से इतना धन कमाने का बीड़ा उठाया, कि वह दो हजार किक्कार की कर राशि चुका सके, जो राजा को रोमियों को देनी थी।
11 इसलिये उस ने तुरन्त समुद्रतट के नगरोंमें भेज दिया, और बन्धुए यहूदियोंके विक्रय का समाचार सुनाया, और यह प्रतिज्ञा की, कि उनके पास प्रति किक्कार के बदले में अस्सी शरीर हों, और उस प्रतिशोध की आशा न रखी जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से उस पर आनेवाला था।
12 जब यहूदा को निकानोर के आने का समाचार मिला, और उस ने अपने साथियों को यह बता दिया, कि सेना उसके पास है।
13 जो डरपोक थे, और परमेश्वर के न्याय पर भरोसा नहीं रखते थे, वे भाग गए, और भाग गए।
14 औरों ने जो कुछ उनके पास बचा था, सब बेच डाला, और यहोवा से बिनती की, कि वह उन्हें बचा ले, और वे इकट्ठे होने से पहिले ही दुष्ट निकानोर के हाथ से बिक गए।
15 और यदि उनके निमित्त नहीं, परन्तु उस वाचा के निमित्त जो उस ने उनके पुरखाओं से बान्धी थी, और अपने पवित्र और महिमामय नाम के निमित्त, जिस से वे बुलाए गए थे।
16 तब मकाबी ने अपने पुरूषोंको छः हजार की गिनती में इकट्ठा किया, और उन्हें समझाया, कि वे शत्रु से घबराएं नहीं, और अन्यजातियों की उस बड़ी भीड़ से न डरें, जो उन पर अन्याय करके चढ़ाई करती हैं; लेकिन मर्दानगी से लड़ने के लिए,
17 और उन की आंखों के साम्हने उस हानि को सामने रखे जो उन्होंने पवित्रस्थान को अन्याय से पहुंचाई, और जिस नगर को उन्होंने ठट्ठों में उड़ाया, उस में कठोरता से काम लिया, और अपने पुरखाओं की प्रभुता को भी छीन लिया।
18 क्योंकि उस ने कहा, वे अपके हथियारोंऔर साहस पर भरोसा रखते हैं; लेकिन हमारा भरोसा सर्वशक्तिमान पर है जो एक झटके में उन दोनों को, जो हमारे खिलाफ आते हैं, और पूरी दुनिया को भी गिरा सकता है।
19 और उस ने उनको यह भी बताया, कि जब सन्हेरीब के अधीन एक लाख अस्सी हजार लोग मारे गए थे, तब उनके पुरखाओं ने क्या क्या सहायता पाई, और किस प्रकार उनको छुटकारा मिला।
20 और उस ने उनको बाबुल में गलातियोंसे जो युद्ध हुआ या, उसका वर्णन किया, कि वे आठ हजार पुरूषोंको छोड़, और चार हजार मकिदोनियोंके साय काम करने आए, और मकिदोनियोंको घबराहट हुई, और आठ हजार ने एक लाख बीस हजार को नाश कर डाला। क्योंकि उन्हें स्वर्ग से जो सहायता मिली थी, इस से उन्हें बड़ी लूट मिली।
21 इस प्रकार जब उस ने उनको ये बातें कहकर हियाव बान्धा, और व्यवस्था और देश के लिथे मरने को तैयार किया, तब उस ने अपक्की सेना को चार भागोंमें बांट दिया;
22 और शमौन, यूसुफ, और योनातान समेत अपने भाइयोंको अर्थात एक एक दल के प्रधानोंको अपने साय मिला लिया, और एक एक को पन्द्रह सौ पुरूष दे दिए।
23 और उस ने एलीआजर को पवित्र पुस्तक पढ़ने को ठहराया; और उस ने उनको यह उपदेश दिया, कि परमेश्वर की सहायता; पहले बैंड का नेतृत्व स्वयं कर रहे थे,
24 और सर्वशक्तिमान की सहायता से उन्होंने अपने नौ हजार से अधिक शत्रुओं को मार डाला, और निकानोर की सेना के अधिकांश भाग को घायल और पंगु बना दिया, और इस प्रकार सभी को भगा दिया;
25 और जो उन्हें मोल लेने को आए थे, उनका रूपया छीन लिया, और उनका बहुत दूर तक पीछा किया, परन्तु समय न पाकर वे लौट आए।
26 क्योंकि वह विश्रामदिन से पहिले का दिन था, इस कारण उन्होंने फिर उनका पीछा न किया।
27 इसलिये जब उन्होंने अपने हथियार इकट्ठे किए, और अपने शत्रुओं को लूट लिया, तब वे सब्त के दिन अपने आप में व्यस्त हो गए, और प्रभु की अत्यधिक स्तुति और धन्यवाद किया, जिसने उन्हें उस दिन तक सुरक्षित रखा, जो उन पर दया की शुरूआत थी ।
28 और विश्रमदिन के बाद उन्होंने लूट के माल में से टुण्डों, विधवाओं, और अनाथों को बाँट दिया, और जो बच रहा था उसे आपस में और अपने सेवकों में बांट लिया।
29 जब यह हो गया, और उन्होंने एक आम प्रार्थना की, तो उन्होंने दयालु प्रभु से प्रार्थना की कि वह अपने सेवकों के साथ हमेशा के लिए मेल कर ले।
30 इसके अलावा जो तीमुथियुस और बाकाइडिस के साथ थे, जो उनसे लड़े थे, उन्होंने बीस हजार से अधिक को मार डाला, और बहुत आसानी से ऊंचे और मजबूत किले हासिल कर लिए, और बहुत से लूट को आपस में बांट लिया, और अपंगों, अनाथों, विधवाओं को बना दिया, हां, और पुरनिये भी लूट में एक समान हैं।
31 और जब उन्होंने अपके अपके हथियार इकट्ठे कर लिये, तब सब को चौकसी करके सुविधाजनक स्थानोंमें रख दिया, और लूट का जो बचा हुआ वह यरूशलेम को ले आए।
32 और उन्हों ने फ़िलार्चेस को भी मार डाला जो तीमुथियुस के संग का दुष्ट मनुष्य था, और यहूदियों को बहुत प्रकार से चिढ़ाता था।
33 इसके अलावा ऐसे समय में जब वे अपने देश में विजय के लिए दावत मना रहे थे, उन्होंने कैलिस्थेनेस को जला दिया, जिन्होंने पवित्र द्वारों में आग लगा दी थी, जो एक छोटे से घर में भाग गए थे; और इस प्रकार उसे अपनी दुष्टता के लिए पुरस्कार मिला।
34 और वह अत्यन्त अभागा निकानोर जो यहूदियोंको मोल लेने के लिथे एक हजार ब्योपारी ले आया या,
35 वह यहोवा की सहायता से उन लोगों के द्वारा नीचे लाया गया, जिन से उस ने कम से कम लेखा लिया; और वह अपना शोभायमान वस्त्र उतारकर, और अपनी टोली को उतारकर, एक भगोड़े दास की नाईं बीच देश से होकर अन्ताकिया में आया, और उसका बड़ा अपमान हुआ, और उसकी सेना नष्ट हो गई।
36 इस प्रकार उस ने, जिस ने यरूशलेम में बन्धुओं के द्वारा रोमियों का कर चुकाने का भार अपने ऊपर ले लिया, और यह भी कहा, कि यहूदियों के लिये लड़नेवाला परमेश्वर है, और इस कारण उन्हें हानि

नहीं हो सकती, क्योंकि वे नियमों का पालन करते हैं। उसने उन्हें दे दिया.

अध्याय 9

1 लगभग उसी समय अन्ताकिया अनादर के साथ फारस देश से बाहर आया
2 क्योंकि वह पर्सेपुलिस नाम नगर में प्रवेश करके मन्दिर को लूटने, और नगर पर अधिकार करने को गया था; तब भीड़ अपने बचाव के लिए अपने हथियारों के साथ दौड़ी और उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया; और ऐसा हुआ, कि अन्ताकिया को निवासियों के हाथ से भगाया गया और वह लज्जित होकर लौटा।
3 जब वह एक्बताने में आया, तो उसे निकानोर और तीमुथियुस का समाचार सुनाया गया।
4 तब क्रोध से फूलना। उसने यहूदियों से उस अपमान का बदला लेने की सोची, जो उन लोगों ने किया था, जिन्होंने उसे भागने पर मजबूर किया था। इसलिए उसने अपने सारथी को आज्ञा दी कि वह बिना रुके गाड़ी चलाए, और यात्रा को आगे बढ़ाए, परमेश्वर का न्याय अब उसका पीछा कर रहा है। क्योंकि उस ने घमण्ड से इस प्रकार कहा था, कि वह यरूशलेम में आएगा, और उसे यहूदियों की साझी कब्रगाह बनाएगा।
5 परन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने उसे असाध्य और अदृश्य व्याधि से पीड़ित कर दिया; या जब उस ने ये बातें कहीं, तो उसके पेट में ऐसा दर्द हुआ जो ठीक न होता था, और उसके पेट में अकड़न भरी पीड़ा हुई;
6 और वह अत्यन्त न्यायसंगत है, क्योंकि उस ने दूसरे मनुष्योंके मनोंको बहुत सी और परायी यातनाओंसे यातना दी है।
7 तौभी वह अपनी डींगें हांकता रहा, परन्तु फिर भी घमण्ड से भर गया, और यहूदियों पर क्रोध करके भड़क उठा, और जल्दी करने की आज्ञा दी; परन्तु ऐसा हुआ कि वह अपने रथ से गिर पड़ा, और बलपूर्वक दौड़ा। ; जिससे उसके बुरी तरह गिरने से उसके शरीर के सभी अंगों को बहुत दर्द हुआ।
8 और इस प्रकार वह जो कुछ पहिले सोचता या, कि मैं समुद्र की लहरोंको आज्ञा दे सकता हूं, (वह इतना घमण्डी था कि मनुष्य की स्थिति से बाहर हो सकता है) और ऊंचे पहाड़ों को तराजू में तौल सकता है, अब भूमि पर गिरा दिया गया, और एक घोड़े के कूड़े में ले जाया गया , ईश्वर की सभी प्रकट शक्ति को प्रदर्शित करना।
9 यहां तक कि उस दुष्ट की देह में से कीड़े निकल आए, और जब वह दुख और पीड़ा में पड़ा रहा, तब उसका मांस सूख गया, और उसकी दुर्गन्ध से उसकी सारी सेना को घिन आती थी।
10 और जिस मनुष्य ने कुछ ही पहिले सोचा था, कि मैं आकाश के तारों तक पहुंच सकता हूं, उसकी असहनीय दुर्गन्ध को कोई मनुष्य सहन न कर सकेगा।
11 इसलिये यहां वह पीड़ित होकर अपना बड़ा अभिमान त्यागने लगा, और परमेश्वर के संकट से अपने आप को जानने लगा, और उसकी पीड़ा प्रति क्षण बढ़ती गई।
12 और जब वह आप ही अपनी दुर्गन्ध से न सह सका, तो ये बातें कहने लगा, कि परमेश्वर के आधीन रहना उचित है, और जो मनुष्य मरनहार है, वह अपने विषय में घमण्ड न करे, यदि वह परमेश्वर होता।
13 उस दुष्ट ने यहोवा की यह भी मन्नत मानी, कि वह अब उस पर दया न करेगा, और योंकहा,
14 कि पवित्र नगर को, जिसे वह भूमि में मिलाने, और साधारण कब्रिस्तान बनाने को उतावली करने को गया या, उसे स्वतंत्र कर दे।
15 और यहूदियोंके विषय में, जिन्हें उस ने इस योग्य न समझा, कि गाड़े जाएं, वरन उनके बच्चोंसमेत देश से निकाल दिए जाएं, कि पक्षियोंऔर बनपशुओं का आहार बन जाएं, और उन सभोंको उस ने एथेंस के नागरिकोंके तुल्य कर दिया।
16 और पवित्र मन्दिर को, जिसे उस ने पहिले उजाड़ दिया था, उस को अच्छी भेंटों से सजाएगा, और सब पवित्र पात्रोंको और भी बहुत से लौटा देगा, और बलिदानोंका खर्चा अपके ही धन से चुकाएगा।
17 हां, और वह स्वयं भी एक यहूदी बन जाएगा, और उस सारे संसार में घूमेगा जो बसा हुआ था, और परमेश्वर की शक्ति का प्रचार करेगा ।
18 परन्तु इन सब बातोंपर भी उसका दु:ख न रुका, क्योंकि परमेश्वर का न्याय उस पर आ पहुंचा था; इसलिथे उस ने अपके स्वास्थ्य से निराश होकर यहूदियोंके लिथे बिनती करके इस रीति से पत्र लिखा।
19 अन्तियोख, राजा और हाकिम, अच्छे यहूदियों के लिये उसके नागरिक बहुत खुशी, स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करते हैं:
20 यदि तुम और तुम्हारे बाल-बच्चे कुशल से हो, और तुम्हारे काम से तुम सन्तुष्ट हो, तो मैं स्वर्ग पर आशा रखकर परमेश्वर का बहुत धन्यवाद करता हूं।
21 जहां तक मेरी बात है, मैं निर्बल था, नहीं तो फारस से लौट आनेवाले तेरे आदर और भलाई को मैं ने कृपा करके स्मरण किया होता, और जब तू भारी रोग से ग्रस्त हो गया, तब मैं ने सब की सामान्य सुरक्षा का ध्यान रखना आवश्यक समझा।
22 मैं अपने स्वास्थ्य पर अविश्वास नहीं कर रहा हूं, बल्कि इस बीमारी से बचने की बड़ी आशा रखता हूं।
23 परन्तु इस बात पर विचार करो, कि मेरा पिता भी किस समय ऊंचे देशों में सेना ले गया। उत्तराधिकारी नियुक्त किया,
24 इसलिथे कि यदि कोई बात आशा के विपरीत घट जाए, या कोई दुखदायी समाचार आए, तो देश के लोग यह जानकर, कि राज्य किस को छोड़ा गया है, व्याकुल न हों।
25 फिर, इस बात पर विचार करते हुए कि कैसे हाकिम जो मेरे राज्य के सीमावर्ती और पड़ोसी हैं, अवसरों की प्रतीक्षा करते हैं, और आशा करते हैं कि घटना क्या होगी । मैं ने अपने पुत्र अन्तियोख को राजा नियुक्त किया है, जिसे मैं प्राय: तुम में से बहुतों के साम्हने सौंपता और प्रशंसित करता था, जब मैं ऊंचे प्रान्तों में जाता था; जिन्हें मैंने इस प्रकार लिखा है:
26 इसलिये मैं प्रार्थना करता हूं, और तुम से बिनती करता हूं, कि जो उपकार मैं ने तुम्हारे साथ किए हैं, वे साधारण और विशेष रूप से स्मरण रखो, और कि हर एक मनुष्य अब भी मुझ पर और मेरे पुत्र पर विश्वासयोग्य बना रहे।
27 क्योंकि मैं निश्चिन्त हूं, कि वह मेरे मन को समझकर कृपापूर्वक और कृपा करके तुम्हारी अभिलाषाओं को पूरा करेगा।
28 इस प्रकार हत्यारा और निन्दा करनेवाला अत्यन्त दु:ख भोगकर, औरोंसे बिनती करके, पहाड़ोंके पराए देश में बहुत दु:ख से मर गया।
29 और फिलेप्पुस जो उसके साथ पला था, उसकी लोय को उठाकर ले गया, और वह भी अन्ताकिया के पुत्र के डर से मिस्र में टॉलेमीस फिलोमेतोर के पास चला गया।

अध्याय 10

1 अब मकाबी और उसकी मण्डली ने, जो यहोवा उनका अगुवा था, मन्दिर और नगर को पुनःप्राप्त कर लिया;
2 परन्तु अन्यजातियों ने जो वेदियां चौक में बनाई थीं, और गिरजाघरों को भी उन्होंने ढा दिया।
3 और उन्होंने मन्दिर को शुद्ध करके एक और वेदी बनाई, और पत्थरों को पीटकर उनमें से आग निकाली, और दो वर्ष के बाद बलिदान चढ़ाया, और धूप, और दीपक, और भेंट की रोटी जलाई।
4 जब ऐसा हो गया, तो वे मुंह के बल गिर पड़े, और यहोवा से बिनती करने लगे, कि हम फिर ऐसी विपत्ति में न पड़ें; परन्तु यदि वे फिर उसके विरूद्ध पाप करते, तो वह आप ही उन पर दया करता, और वे निन्दा करनेवाली और क्रूर जातियोंके हाथ में न सौंपे जाते।

5 जिस दिन परदेशियों ने मन्दिर को अपवित्र किया, उसी दिन वह फिर शुद्ध किया गया, अर्थात् उसी महीने के पचीसवें दिन को, जो कैसलेऊ कहलाता है।
6 और उन्होंने झोपड़ियों के पर्ब्ब के समान आनन्द के साथ आठ दिन माने, और स्मरण किया, कि कुछ ही समय पहले उन्होंने झोपड़ियों का पर्ब्ब माना था, जब वे पशुओं की नाईं पहाड़ों और मांदों में फिरते थे।
7 इसलिये उन्होंने डालियां, सुन्दर डालियां, और खजूर के पेड़ निकाले, और उस के लिये भजन गाए, जिस ने उन्हें अपना स्थान शुद्ध करने में सफल किया था।
8 और उन्होंने एक साधारण विधि और नियम के अनुसार ठहराया, कि वे दिन प्रति वर्ष यहूदियों की सारी जाति के लिये माने जाएं।
9 और अन्तियोख का अन्त, जो एपिफानेस कहलाता है, यहीं हुआ।
10 अब हम अन्ताकिया यूपाटर के कामों का, जो उस दुष्ट का पुत्र या, युद्ध की विपत्तियों का संक्षेप में वर्णन करेंगे।
11 सो जब वह राज्य के पास पहुंचा, तब उस ने लूसियास को अपके राज्य के काम पर अधिक्कारनी ठहराया, और उसे सेलोशूर और फीनीके में अपना प्रधान हाकिम ठहराया।
12 क्योंकि टॉलेमीस ने, जो मैक्रॉन कहलाता था, यहूदियों के साथ जो अन्याय हुआ था उसका न्याय करने का निश्चय करके, उनके साथ मेल बनाए रखने का यत्न किया।
13 तब राजा के मित्रों ने यूपेटर के साम्हने उस पर दोष लगाया, और उस ने कुप्रुस को छोड़कर, जो फिलोमेटोर ने उसे सौंपा था, और अन्तियोख एपिफेन्स को चला गया, और यह देखकर कि वह किसी सम्माननीय स्थान में नहीं है, बहुत निराश हुआ, और हर बात में उसे गद्दार कहा जाता था। , कि उसने खुद को जहर दे लिया और मर गया।
14 परन्तु जब गोर्गियास रियासतों का हाकिम था, तब वह सिपाहियोंको भाड़े पर लेता, और लगातार यहूदियोंसे युद्ध करता या।
15 और इस प्रकार इदूमियों ने बड़े बड़े स्थानोंको अपने वश में करके यहूदियोंको अपने वश में कर लिया, और यरूशलेम से निकाले हुए लोगोंको लेकर युद्ध करने लगे।
16 तब मकाबी के साथियों ने प्रार्थना करके परमेश्वर से बिनती की, कि वह हमारा सहायक हो; और इसलिए वे इदुमियों के गढ़ों पर हिंसा के साथ भागे,
17 और उन पर प्रबल आक्रमण करके उन्होंने गढ़ों को जीत लिया, और जो शहरपनाह पर लड़े थे उन सभों को मार डाला, और जो उनके हाथ लगे उनको मार डाला, और कम से कम बीस हजार को मार डाला।
18 और क्योंकि कुछ लोग, जिनकी संख्या नौ हजार से कम नहीं थी, एक साथ दो बहुत मजबूत किलों में भाग गए, जिनके पास घेराबंदी को बनाए रखने के लिए सभी प्रकार की सुविधाजनक चीजें थीं,
19 मकाबी ने शमौन और यूसुफ को, और जक्कई को, और अपने साथियों को, जो उन्हें घेरने के लिये काफी थे, छोड़ दिया, और उन स्थानों में चला गया, जहां उस की सहायता की अधिक आवश्यकता थी।
20 और जो शमौन के साय थे, उन्होंने लोभ में पड़कर, गढ़ में के कुछ लोगोंके द्वारा रूपके का लालच किया, और सत्तर हजार द्रखम ले लिए, और उन में से कुछ को भाग जाने दिया।
21 परन्तु जब मकाबी को यह समाचार मिला, तो उस ने प्रजा के हाकिमोंको इकट्ठे करके उन पुरूषोंपर दोष लगाया, कि उन्होंने रूपया लेकर अपने भाइयोंको बेच डाला, और अपके शत्रुओंको उन से लड़ने के लिथे स्वतंत्र कर दिया है।
22 इसलिये उस ने विश्वासघातियोंको घात करके तुरन्त दोनों महल ले लिये।
23 और जो कुछ उसके हाथ में आया उन सब में वह सफल हुआ, और उन दोनों में से बीस हजार से अधिक को मार डाला।
24 तीमुथियुस ने, जिस को यहूदियों ने पहिले ही परास्त कर लिया था, जब उस ने बहुत सी परदेशी सेना, और कुछ न कुछ घोड़े एशिया से इकट्ठे कर लिए थे, मानो हथियारों के बल से यहूदियों को ले लेना चाहता था।
25 परन्तु जब वह निकट आया, तो मकाबी के साथियों ने पीछे मुड़कर परमेश्वर से प्रार्थना की, और अपने सिरों पर मिट्टी छिड़ककर, और अपनी कमर में टाट बान्ध लिया।
26 और वेदी के पांव पर गिरकर उस से बिनती करने लगे, कि वह उन पर दया करे, और व्यवस्था के अनुसार उनके शत्रुओं का शत्रु, और उनके द्रोहियों का द्रोही हो।
27 इसलिये प्रार्थना के बाद वे अपने हथियार लेकर नगर से आगे चले गए, और जब अपने शत्रुओं के निकट पहुंचे, तो अलग ही रहे।
28 जब सूर्य नया निकला, तो उन्होंने दोनों को आपस में मिला लिया; एक पक्ष अपने सद्गुणों के साथ-साथ अपनी सफलता और जीत की प्रतिज्ञा के लिए भगवान की शरण में है; दूसरा पक्ष अपने क्रोध को अपनी लड़ाई का नेता बना रहा है
29 परन्तु जब लड़ाई बहुत बढ़ गई, तो स्वर्ग से शत्रुओं को घोड़ों पर सवार, सोने की लगाम लिए हुए, पांच सुन्दर पुरूष दिखाई दिए, और उन में से दो यहूदी अगुवाई कर रहे थे।
30 और उन के बीच में मकाबी को पकड़ लिया, और उसे चारों ओर से हथियार से ढांप दिया, और उसे बचाए रखा, परन्तु शत्रुओं पर तीर और बिजली चलाई, यहां तक कि वे अन्धे हो गए और संकट से भर गए और मारे गए।
31 और बीस हजार पांच सौ प्यादे, और छ: सौ सवार मारे गए।
32 और तीमुथियुस आप गवरा नामक एक बहुत दृढ़ गढ़ में भाग गया, जहां चेरिअस राज्यपाल था।
33 परन्तु मकाबी के साथियों ने साहसपूर्वक चार दिन तक गढ़ को घेरा रखा।
34 और जो भीतर थे, उन्होंने उस स्थान की मजबूती पर भरोसा करके बहुत ही निन्दा की, और बुरी बातें कहीं।
35 तौभी पांचवें दिन सवेरे मैकाबी की मण्डली के बीस जवानों ने निन्दा के कारण क्रोध से जलकर, शहरपनाह पर धावा बोल दिया, और बड़े साहस के साथ उन सभों को मार डाला जिनसे वे मिले थे।
36 और और लोग भी उनके पीछे चले, और भीतर वालों से उलझ गए, और गुम्मट फूंक दिए, और आग जलाकर निन्दकों को जीवित जला डाला; और औरों ने फाटक तोड़ डाले, और बाकी सेना लेकर नगर पर कब्ज़ा कर लिया।
37 और तीमुथियुस को जो किसी गड़हे में छिपा था, और उसके भाई चेरिअस को अपोलोफेनस समेत मार डाला।
38 जब यह हो गया, तब उन्होंने भजन गाकर और धन्यवाद करके यहोवा की स्तुति की, जिस ने इस्राएल के लिथे बड़े बड़े काम करके उनको जय दिलाई।

अध्याय 11

1 कुछ ही समय बाद, राजा का संरक्षक और चचेरा भाई लूसियास, जो मामलों का प्रबंधन भी करता था, ने जो कुछ किया गया उसके लिए बहुत अप्रसन्नता व्यक्त की।
2 और जब उस ने सब सवारोंसमेत कोई अस्सी हजार पुरूष इकट्ठे किए, तब उस ने यह सोचकर यहूदियोंपर चढ़ाई की, कि नगर को अन्यजातियोंका निवास कर दे।
3 और अन्यजातियों के अन्य गिरजाघरों के समान मन्दिर का लाभ उठाना, और प्रति वर्ष महायाजक पद की बिक्री करना;
4 परमेश्वर की शक्ति पर कुछ भी विचार न किया, परन्तु अपने लाखों प्यादों, और हजारों सवारों, और अस्सी हाथियोंपर फूला हुआ।
5 तब वह यहूदिया में आया, और बेतसूरा के निकट पहुंचा, जो एक दृढ़ नगर तो या, परन्तु यरूशलेम से कोई पांच मील दूर था, और उस ने उसे घेर लिया।

6 जब मकाबी के साथियों ने सुना, कि उस ने गढ़ोंको घेर लिया है, तो उन्होंने और सब लोगोंने विलाप करके और आंसू बहाकर यहोवा से बिनती की, कि वह इस्राएल को छुड़ाने के लिथे एक अच्छा दूत भेजे।
7 तब मकाबी ने सब से पहिले आप ही हथियार लेकर एक दूसरे को यह उपदेश दिया, कि हम भी उसके साथ अपने भाइयों की सहायता के लिथे अपने आप को जोखिम में डालें; सो वे प्रसन्न मन से आगे बढ़े।
8 और जब वे यरूशलेम में थे, तो श्वेत वस्त्र पहिने हुए एक पुरूष सोने का कवच हिलाए हुए उनके साम्हने दिखाई दिया।
9 तब उन्होंने सब मिलकर दयालु परमेश्वर की स्तुति की, और हियाव बान्ध लिया, यहां तक कि वे न केवल मनुष्यों से, वरन क्रूर से क्रूर पशुओं से भी लड़ने, और लोहे की शहरपनाह को भेदने को तैयार हो गए।
10 इस प्रकार वे अपने कवच पहिने हुए, और स्वर्ग से एक सहायक पाकर आगे बढ़ते गए; क्योंकि यहोवा उन पर दयालु था।
11 और उन्होंने अपने शत्रुओं पर सिंहोंके समान धावा करके ग्यारह हजार प्यादोंको, और सोलह सौ सवारोंको मार डाला, और सब को भगा दिया।
12 और उन में से बहुतेरे घायल होकर नंगे ही भाग निकले; और लूसियास आप ही लज्जित होकर भाग गया, और बच गया।
13 और जो समझदार पुरूष था, उस ने अपनी हानि का भार आप ही पर डाल दिया, और यह समझकर, कि इब्रियोंपर जय नहीं पाई जा सकती, इसलिये कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उनकी सहायता की, उस ने उनके पास भेजा।
14 और उन्हें सभी उचित शर्तों पर सहमत होने के लिए राजी किया, और वादा किया कि वह राजा को मनाएगा कि उसे उनका मित्र बनना चाहिए ।
15 तब मैकाबी ने सर्वसाधारण की भलाई का ध्यान रख कर, लूसियास की सारी इच्छा पूरी कर ली; और जो कुछ मैकाबी ने यहूदियों के विषय में लूसियास को लिखा, वह राजा ने मान लिया।
16 क्योंकि लूसियास के यहूदियोंके पास इस आशय की चिट्ठियां लिखी गईं, कि लूसियास ने यहूदियोंके लोगोंको नमस्कार भेजा।
17 यूहन्ना और अब्सोलोम ने जो तेरी ओर से भेजे गए थे, मुझे दस्तखत की हुई अर्जी सौंप दी, और उसके विषय के पूरा करने के लिथे बिनती की।
18 इसलिये जो कुछ राजा को बताने योग्य था, वह मैं ने बता दिया है, और उस ने जितना हो सकता था, दे दिया है।
19 और यदि उस समय तुम राज्य के प्रति निष्ठावान बने रहोगे, तो मैं भविष्य में भी तुम्हारी भलाई का साधन बनने का यत्न करूंगा।
20 परन्तु विवरण के विषय में मैं ने इन दोनोंको, और उन को भी, जो मेरी ओर से आए हैं, आज्ञा दी है, कि तुम से बातचीत करो।
21 तुम्हारा भला हो। एक सौ आठ चालीसवाँ वर्ष, डायोस्कोरिंथियस महीने का चार और बीसवाँ दिन।
22 राजा के पत्र में ये बातें थीं, कि राजा अन्ताकिया ने अपने भाई लूसियास को नमस्कार भेजा।
23 चूँकि हमारा पिता देवताओं में परिवर्तित हो गया है, इसलिए हमारी इच्छा यह है कि जो हमारे क्षेत्र में हैं वे शांति से रहें, ताकि हर एक अपना काम स्वयं कर सके।
24 हम यह भी समझते हैं, कि यहूदियों ने अन्यजातियों की रीति पर लाए जाने के लिये हमारे पिता की बात नहीं मानी, परन्तु अपना अपना चालचलन बनाए रखा; जिस कारण से वे हम से अपेक्षा करते हैं, कि हम उन्हें ऐसा करने दें। अपने स्वयं के कानूनों के अनुसार जिएं।
25 इसलिथे हम ने यह ठाना है, कि यह जाति विश्राम में रहे, और हम ने ठान लिया है, कि हम उनका मन्दिर फिर बसाएं, कि वे अपके पुरखाओं की रीति के अनुसार बसें।
26 इसलिये तू अच्छा करेगा, कि उन के पास भेज, और उन्हें शान्ति दे, कि जब वे हमारी मन की बातों से परखे जाएं, तब उन्हें बड़ी शान्ति मिले, और वे सदैव प्रसन्न होकर अपना काम करते रहें।
27 और यहूदियों की जाति के नाम राजा का पत्र इस प्रकार था, कि राजा अन्ताकिया ने महासभा को और शेष यहूदियोंको नमस्कार भेजा।
28 यदि तुम कुशल से रहो, तो हमारी अभिलाषा है; हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा है.
29 मनेलौस ने हम से कहा, कि तेरी अभिलाषा घर लौटकर अपना अपना काम करने की है।
30 इसलिये जो लोग प्रस्थान करेंगे वे जैन्थिकस के तीसवें दिन तक सुरक्षा के साथ सुरक्षित आचरण करेंगे।
31 और यहूदी पहिले के समान अपके अपके भोजन और विधि का प्रयोग करेंगे; और उनमें से किसी को भी अज्ञानतापूर्वक किए गए कामों के लिए किसी भी तरह से परेशान नहीं किया जाएगा।
32 मैं ने मनेलौस को भी इसलिये भेजा है, कि वह तुम्हें शान्ति दे।
33 तुम्हारा भला हो। एक सौ अड़तालीसवें वर्ष में, और ज़ैंथिकस महीने का पंद्रहवाँ दिन।
34 रोमियों ने भी उनके पास एक पत्र भेजा, जिस में ये वचन थे, कि रोमियों के राजदूत क्विंटस मेमियस और टाइटस मैनलियस ने यहूदियों के लोगों को नमस्कार भेजा है।
35 राजा के चचेरे भाई लूसियास ने जो कुछ दिया, उस से हम भी प्रसन्न हैं।
36 परन्तु जो बातें उस ने राजा के सम्मुख समझी हों, उनके विषय में अपक्की सम्मति के अनुसार एक पुरूष को तुरन्त भेज देना, कि जो तुम्हारे लिये सुविधाजनक हो, हम बता सकें; क्योंकि अब हम अन्ताकिया को जानेवाले हैं।
37 इसलिये कुछ को शीघ्र भेजो, कि हम जान लें कि तुम्हारे मन में क्या है।
38 विदाई. यह एक सौ आठ चालीसवाँ वर्ष, ज़ैंथिकस महीने का पंद्रहवाँ दिन।

अध्याय 12

1 जब ये वाचाएँ बनी थीं, तो लिसियास राजा के पास गया, और यहूदी अपने पति के बारे में थे।
2 परन्तु कई स्थानों के हाकिमों में से तीमुथियुस और गेन्नुस का पुत्र अपोलोनियुस, और हिरोनिमस, और डेमोफोन, और उनके अलावा साइप्रस के हाकिम निकानोर ने उन्हें शान्त रहने और शान्ति से रहने न दिया।
3 याफा के पुरूषों ने भी ऐसा दुष्ट काम किया, कि उन्होंने अपने बीच में रहनेवाले यहूदियोंसे प्रार्थना की, कि वे अपनी स्त्रियोंऔर बच्चोंसमेत उन नावोंपर जो उन्होंने तैयार की यी, चले जाएं, मानो उन्होंने उन को कोई हानि न पहुंचाई हो।
4 और नगर की साधारण आज्ञा के अनुसार उन्होंने इसे मान लिया, कि मेल से रहना चाहते हैं, और कुछ भी संदेह नहीं करते; परन्तु जब वे गहरे में चले गए, तो उन में से कम से कम दो सौ डूब गए।
5 जब यहूदा ने अपने देशवासियों पर किए गए इस अत्याचार का समाचार सुना, तो उस ने अपने साथियों को तैयार करने की आज्ञा दी।
6 और उस ने धर्मी न्यायी परमेश्वर को पुकारकर अपके भाइयोंके घात करनेवालोंपर चढ़ाई की, और रात ही रात पनाहगाह को फूंक डाला, और नावोंमें आग लगा दी, और जो वहां भाग गए उनको घात किया।
7 और जब नगर बन्द हो गया, तब वह पीछे की ओर चला, मानो याफा नगर के सब लोगों को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता हो।
8 परन्तु जब उस ने सुना, कि जमनियोंने अपने बीच में रहनेवाले यहूदियोंके समान करने की मनसा की है,

9 और उस ने रात ही रात यमुनियोंपर चढ़ाई की, और बन्दरगाह और नौसेना में आग लगा दी, यहां तक कि आग की रोशनी यरूशलेम में दो सौ चालीस मील दूर तक दिखाई दी।
10 जब वे वहां से नौ मील आगे तीमुथियुस की ओर चले, तो पांच हजार से कम पैदल और पांच सौ अरब सवार उस पर सवार हो गए।
11 तब बहुत भयंकर युद्ध हुआ; परन्तु परमेश्वर की सहायता से यहूदा का पक्ष जीत गया; जिससे पराजित होकर अरब के खानाबदोशों ने यहूदा से शांति की प्रार्थना की, और उसे मवेशी देने और अन्यथा उसे प्रसन्न करने का वादा किया।
12 तब यहूदा ने सचमुच यह सोचकर कि हम से बहुत लाभ होगा, उनको शान्ति दी, और उन्होंने हाथ मिलाया, और अपने अपने डेरे को चले गए।
13 और वह एक दृढ़ नगर के लिये पुल बनाने को गया, जो चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ था, और भिन्न भिन्न देशों के लोग उस में रहते थे; और उसका नाम कैस्पिस था।
14 परन्तु जो उसके भीतर थे, उन्होंने शहरपनाह की मजबूती और भोजन की व्यवस्था पर ऐसा भरोसा रखा, यहां तक कि वे यहूदा के साथियों के साथ अभद्र व्यवहार करने लगे, और निन्दा और निन्दा करने लगे, और ऐसी बातें कहने लगे जो बोलने योग्य नहीं थीं।
15 इसलिये यहूदा ने अपनी मण्डली समेत जगत के महान प्रभु को पुकारा, जिसने यहोशू के समय में बिना मेढ़ों या युद्ध के इंजनों के यरीहो को गिरा दिया, और शहरपनाह पर भयंकर आक्रमण किया,
16 और परमेश्वर की इच्छा से नगर को ले लिया, और अकथनीय मारकाट की, यहां तक कि उसके निकट दो मील चौड़ी एक झील भर गई, और खून से बहती हुई दिखाई दी।
17 तब वे वहां से साढ़े सात सौ मील आगे चलकर चरका में उन यहूदियोंके पास पहुंचे, जो तूबीनी कहलाते हैं।
18 परन्तु तीमुथियुस को उन्होंने कहीं न पाया; क्योंकि वह कुछ भी भेजने से पहिले ही, एक बहुत ही दृढ़ दल को एक गढ़ में छोड़ कर वहां से चला गया।
19 परन्तु दोसिथयुस और सोसीपतरस ने, जो मकाबी के सरदारों में से थे, आगे बढ़कर, जिनको तीमुथियुस ने गढ़ में छोड़ दिया या, उन को जो दस हजार से अधिक पुरूष थे, मार डाला।
20 और मकाबी ने अपनी सेना को दल बनाकर इकट्ठा किया, और उन्हें दलों के ऊपर ठहराया, और तीमुथियुस पर चढ़ाई की, जिसके लगभग एक लाख बीस हजार प्यादे और दो हजार पांच सौ सवार थे।
21 जब तीमुथियुस को यहूदा के आने का समाचार मिला, तब उस ने स्त्रियों, बच्चोंऔर अन्य सामान को कार्नियॉन नामक गढ़ में भेज दिया; क्योंकि उस नगर को घेरना कठिन था, और सब स्थानोंकी तंगी के कारण उस तक पहुंचना कठिन था। .
22 परन्तु जब उसका पहिला दल यहूदा के सामने आया, तो उसके शत्रु जो सब कुछ देखता है, उसके कारण भय और भय से भर गए, और एक ओर भाग गए, कोई इस ओर, और कोई उस ओर, यहां तक कि वे बार बार चोट खाते थे। अपने ही आदमियों से, और अपनी ही तलवारों की नोंक से घायल हुए।
23 यहूदा भी उनका पीछा करने में बड़ा लगा, और उन दुष्टोंको घात किया, और उन में से उस ने कोई तीस हजार पुरूषोंको घात किया।
24 और तीमुथियुस आप ही दोसिथयुस और सोसिपतरस के हाथ में पड़ गया, और उस ने उन से बहुत बिनती की, कि वह उसे प्राण से छोड़ दे, क्योंकि उसके बहुत से यहूदी माता-पिता और उन में से कुछ के भाई थे, यदि वे मार डालते उसे मौत के घाट उतार दिया जाए, इस पर विचार नहीं किया जाना चाहिए।
25 तब उस ने उन्हें बहुत समझाकर यह विश्वास दिलाया, कि वह वाचा के अनुसार उनको हानि पहुंचाए बिना लौटा देगा, और उन्होंने अपने भाइयोंके बचाव के लिथे उसे जाने दिया।
26 तब मैकाबी ने कार्नियॉन और अटार्गतिस के मन्दिर की ओर प्रस्थान किया, और वहां पच्चीस हजार पुरूषोंको मार डाला।
27 और जब उस ने उनको भगाकर नाश कर डाला, तब यहूदा ने सेना को एप्रोन की ओर, जो एक दृढ़ नगर या, जिस में लूसियास रहता या, और भिन्न भिन्न जातियोंकी बड़ी भीड़ को हटा दिया, और बलवन्त जवानोंने शहरपनाह की रक्षा की, और वीरता से उनकी रक्षा की; इंजन और डार्ट्स का भी बढ़िया प्रावधान था।
28 परन्तु जब यहूदा और उसकी मण्डली ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को, जो अपनी शक्ति से अपने शत्रुओं की शक्ति को तोड़ डालता है, पुकारा, तब उन्होंने नगर को जीत लिया, और उसके भीतर के पच्चीस हजार पुरूषों को मार डाला।
29 वहां से वे सिथोपुलिस को चले गए, जो यरूशलेम से छ: सौ मील दूर है।
30 परन्तु जब वहां रहनेवाले यहूदियोंने यह गवाही दी, कि स्किथोपोलिटन उन से प्रेम रखते थे, और विपत्ति के समय में उन से प्रीति रखते थे;
31 और उन्होंने उनका धन्यवाद करके यह चाहा, कि वे हमारे साथ मित्रता बनाए रखें; और वे यरूशलेम में, जो सप्ताहों का पर्व्व है, आए।
32 और पिन्तेकुस्त नामक पर्व के बाद वे इदुमिया के हाकिम गोर्गियास के विरूद्ध आगे बढ़े।
33 और वह तीन हजार प्यादोंऔर चार सौ सवारोंके साय निकला।
34 और ऐसा हुआ कि जब वे आपस में लड़ रहे थे, तो बहुत से यहूदी मारे गए।
35 उस समय बेसेनोर की टोली में से एक डोसिथियस, जो घोड़े पर सवार था, और एक बलवान मनुष्य था, अभी भी गोर्गियास पर था, और उसका कोट पकड़कर उसे बलपूर्वक खींच लिया; और जब वह उस शापित व्यक्ति को जीवित ले जाना चाहता था, थ्रेसिया के एक घुड़सवार ने उसके पास आकर उसके कंधे पर वार किया, जिससे गोर्गियास मारिसा के पास भाग गया।
36 अब जब गोर्गियास के साथी बहुत देर तक लड़ते रहे, और थक गए, तब यहूदा ने यहोवा से प्रार्थना की, कि वह अपने आप को उनका सहायक और लड़ाई का नेता दिखाए।
37 और इसके साथ ही उसने अपनी भाषा में शुरुआत की, और ऊंचे स्वर से भजन गाया, और गोर्गियास के आदमियों पर अनजाने में हमला किया, उसने उन्हें भगा दिया ।
38 तब यहूदा अपक्की सेना इकट्ठी करके ओदोल्लम नगर में आया, और जब सातवें दिन आया, तब रीति के अनुसार अपने आप को शुद्ध किया, और उसी स्यान में विश्रमदिन माना।
39 और अगले दिन, जैसा कि पहले हुआ था, यहूदा और उसकी टोली मारे गए लोगों की लोथें लेने, और उनके कुटुम्बियों के साथ उनके पुरखाओं की कब्रों में गाड़ने को आई।
40 और मारे गए हर एक के वस्त्र के नीचे उन्हें जम्नियों की मूरतों की पवित्र की हुई वस्तुएं मिलीं, जो यहूदियों के लिये व्यवस्था के अनुसार वर्जित थीं। तब हर मनुष्य ने देखा कि यही कारण है कि वे मारे गए।
41 इसलिये सब मनुष्य यहोवा की स्तुति करते हैं, जो धर्मी न्यायी है, जिस ने गुप्त बातों को खोला है।
42 और प्रार्थना करने लगे, और उस से बिनती की, कि जो पाप किया गया है वह स्मरण से मिट जाए। इसके अलावा, उस महान यहूदा ने लोगों को खुद को पाप से दूर रखने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि उन्होंने अपनी आंखों के सामने मारे गए लोगों के पापों के लिए होने वाली घटनाओं को देखा था।
43 और जब उस ने सारी मण्डली में से दो हजार दर्कमन चान्दी इकट्ठी की, तब उस ने उसे पापबलि करने के लिथे यरूशलेम को भेज दिया, और पुनरुत्थान का स्मरण करके बहुत अच्छा और सच्चाई से काम किया।
44 क्योंकि यदि उस ने यह आशा न की होती, कि मारे हुए लोग फिर जी उठते, तो मरे हुओं के लिये प्रार्थना करना व्यर्थ और व्यर्थ होता।

45 और यह भी कि उस ने यह जान लिया, कि जो लोग भक्ति से मरे, उन पर बड़ी कृपा की गई, यह एक पवित्र और अच्छा विचार था। इसके बाद उसने मृतकों के लिए मेल-मिलाप कराया, ताकि उन्हें पाप से मुक्ति मिल सके।

अध्याय 13

1 एक सौ उनतालीसवें वर्ष में यहूदा को यह समाचार मिला, कि अन्ताकिया यूपाटर बड़ी शक्ति के साथ यहूदिया में आ रहा है।
2 और उसके साथ लिसियास उसका रक्षक, और उसके मामलों का शासक था, और उनमें से एक के पास एक यूनानी सेना के पैदल सैनिक, एक लाख दस हजार, और पांच हजार तीन सौ घुड़सवार, और दो और बीस हाथी, और तीन सौ रथ थे। हुक.
3 मेनेलौस भी उनके साथ मिल गया, और बड़े छल से अन्ताकिया को देश की रक्षा के लिये नहीं, परन्तु इसलिये प्रोत्साहन दिया, कि वह राज्यपाल बनाया गया है।
4 परन्तु राजाओं के राजा ने अन्तियोख का मन इस दुष्ट दुष्ट के विरूद्ध कर दिया, और लूसियास ने राजा को समाचार दिया, कि यही मनुष्य सब उपद्रव का कारण है, और राजा ने उसे बिरीया में ले जाकर मार डालने की आज्ञा दी; ढंग उस जगह पर है.
5 उस स्यान में पचास हाथ ऊंचा एक गुम्मट था, जो राख से भरा हुआ था, और उस में एक गोल यंत्र लगा हुआ था, जो राख में चारों ओर लटका हुआ था।
6 और जो कोई अपवित्रता का दोषी ठहराया गया, या कोई अन्य गंभीर अपराध किया गया, उसे सभी लोगों ने मौत के घाट उतार दिया।
7 वह दुष्ट मनुष्य ऐसी मृत्यु हुई, कि उसे भूमि में गाड़ने तक न मिला; और वह सबसे न्यायसंगत है:
8 क्योंकि उस ने वेदी के विषय में, जिसकी आग और राख पवित्र थी, बहुत से पाप किए थे, इस कारण वह राख में ही मर गया।
9 अब राजा क्रूर और घमण्डी मन से यहूदियों के साथ अपने पिता के समय से भी अधिक बुरा करने को आया।
10 जब यहूदा ने यह जान लिया, तब उस ने लोगों को आज्ञा दी, कि रात दिन प्रभु से प्रार्थना किया करो, कि यदि कभी और समय पड़े, तो अब भी वह उनकी सहाथता करे, और जब वे अपनी व्यवस्था से और अपने देश से निकाले जाएं। और पवित्र मन्दिर से:
11 और वह उन लोगों को, जो अब थोड़े ही ताजा हो गए थे, निन्दा करनेवाले राष्ट्रों के अधीन होने न देगा।
12 सो जब वे सब एक संग ऐसा कर चुके, और रोते और उपवास करके दयालु प्रभु से प्रार्थना करते रहे, और तीन दिन तक भूमि पर मुंह के बल लेटे रहे, तब यहूदा ने उनको समझाकर आज्ञा दी, कि तैयार रहो।
13 और यहूदा ने पुरनियोंसे अलग होकर यह निश्चय किया, कि राजा की सेना यहूदिया में प्रवेश करके नगर पर कब्ज़ा कर ले, कि निकलकर यहोवा की सहायता से युद्ध करके मुकद्दमा सुलझाए।
14 इसलिए जब उसने सब कुछ संसार के रचयिता को सौंप दिया, और अपने सैनिकों को कानून, मंदिर, शहर, देश और राष्ट्रमंडल के लिए मृत्यु तक, यहां तक कि साहसपूर्वक लड़ने के लिए प्रेरित किया, तो उसने मोदीन के पास डेरा डाला:
15 और अपने आस पास के लोगोंको यह चितौनी दी, कि जय परमेश्वर की ओर से होती है; वह सबसे वीर और चुने हुए जवानों के साथ रात को राजा के तम्बू में गया, और छावनी में लगभग चार हजार पुरूषों, और हाथियों के सरदारों को, उन सभों समेत, जो उस पर सवार थे, मार डाला।
16 और अन्त में उन्होंने छावनी को भय और कोलाहल से भर दिया, और बड़ी सफलता से चले गए।
17 यह पौ फटते ही हुआ, क्योंकि यहोवा की शरण से उसे सहायता मिली।
18 जब राजा ने यहूदियोंके पुरूषत्व का स्वाद चख लिया, तब उस ने युक्ति से उन पर अधिकार कर लिया।
19 और बेतसूरा की ओर बढ़ा, जो यहूदियों का गढ़ या; परन्तु वह भाग गया, और असफल हो गया, और अपने जनों से हार गया।
20 क्योंकि यहूदा ने उस में के लोगोंको जो आवश्यक था वह बता दिया या।
21 परन्तु रोडोकस ने जो यहूदियोंकी सेना में या, उस ने शत्रुओंपर भेद प्रगट किया; इसलिये उसकी खोज की गई, और जब वह मिल गया, तो उसे बन्दीगृह में डाल दिया।
22 और राजा ने दूसरी बार बेतसुम में उन से बर्ताव किया, अपना हाथ दिया, और उनका छीन लिया, और चला गया, और यहूदा से लड़ा, और हार गया;
23 सुना है कि फिलिप्पुस, जो अन्ताकिया में काम-काज से बचा हुआ था, बहुत उदास हो गया था, निराश हो गया था, उसने यहूदियों से प्रार्थना की, अपने आप को समर्पित कर दिया, और सभी समान शर्तों की शपथ ली, उनसे सहमत हुआ, और बलिदान चढ़ाया, मन्दिर का सम्मान किया, और दयालुता से व्यवहार किया स्थान,
24 और मकाबियुस को प्रसन्न किया, और उसे पतोलेमाइस से ले कर गेरहेनियों तक का प्रधान अधिपति नियुक्त किया;
25 पतोलेमाइस को आए, और वहां के लोग वाचा के कारण उदास हुए; क्योंकि उन्होंने आक्रमण किया, क्योंकि वे अपनी वाचा को व्यर्थ कर देंगे;
26 लूसियास न्याय आसन के पास गया, और मुक़दमे के पक्ष में जितना हो सके कहा, समझाया, और शांत किया, उन पर अच्छा प्रभाव डाला, और अन्ताकिया को लौट गया। इस प्रकार यह राजा के आने और जाने को स्पर्श करता हुआ चला गया।

अध्याय 14

1 तीन वर्ष के बाद यहूदा को यह समाचार मिला, कि सेल्यूकस का पुत्र देमेत्रियुस बड़ी शक्ति और नौसेना के साथ त्रिपोलीस के गढ़ में प्रवेश किया है।
2 और देश पर अधिकार कर लिया, और अन्ताकिया को और उसके संरक्षक लूसियास को मार डाला।
3 अब अलसीमस नाम का एक पुरूष जो महायाजक था, और अन्यजातियों के साथ घुलमिलकर अपने आप को जान बूझकर अशुद्ध करता था;
4 एक सौ एक पचासवें वर्ष में देमेत्रियुस राजा के पास आया, और उसे सोने का एक मुकुट, और एक ताड़ का पेड़, और वे टहनियाँ भी दीं जो मन्दिर में पवित्र की जाती थीं; और उस दिन वह चुप रहा।
5 तौभी उसे अपना मूर्खतापूर्ण उद्यम बढ़ाने का अवसर मिला, और दिमेत्रियुस ने उसे सम्मति दी, और पूछा, कि यहूदियों पर क्या प्रभाव पड़ा, और उनका क्या इरादा है, तो उस ने उत्तर दिया:
6 यहूदियों में से जिन्हें उस ने अस्सीदी कहा, और जिनका प्रधान यहूदा मकाबी है, वे युद्ध के पोषक और राजद्रोही हैं, और बाकियों को चैन से न रहने देते।
7 इसलिथे मैं अपके पुरखाओंकी अर्थात महायाजकपद की प्रतिष्ठा से वंचित होकर अब यहां आया हूं:
8 सबसे पहले, वास्तव में मुझे राजा की बातों की झूठी परवाह है; और दूसरी बात, इसके लिए मैं अपने देशवासियों का भला करना चाहता हूं: क्योंकि उनके पूर्वोक्त अनुचित व्यवहार के कारण हमारा पूरा राष्ट्र छोटे दुख में है।
9 इसलिये, हे राजा, यह सब बातें जानते हुए भी, उस देश और हमारी जाति के लिये चौकसी करना, जो चारों ओर से संकट में है, उस दया के अनुसार जो तू सब पर तुरन्त प्रकट करता है।
10 क्योंकि जब तक यहूदा जीवित है, यह सम्भव नहीं कि राज्य शान्त रहे।

11 यह बात उसके विषय में कभी नहीं कही गई, परन्तु राजा के और मित्रों ने यहूदा के प्रति द्वेष उत्पन्न करके देमेत्रियुस को और अधिक भड़काया।
12 और उस ने तुरन्त निकानोर को जो हाथियोंका सरदार था, बुलाकर यहूदिया पर हाकिम ठहराया, और उसे आगे भेजा।
13 और उसे यहूदा को घात करने, और उसके साथियों को तितर-बितर करने, और अलकिमुस को बड़े मन्दिर का प्रधान याजक बनाने की आज्ञा दी।
14 तब अन्यजातियां जो यहूदिया से यहूदा के पास से भाग गई थीं, वे यहूदियों की हानि और विपत्ति को अपना भला समझकर झुण्ड बनाकर निकानोर में आईं।
15 जब यहूदियों ने सुना, कि निकानोर आ रहा है, और अन्यजातियां उनके विरुद्ध हो गई हैं, तो उन्होंने अपने सिरों पर मिट्टी डाली, और उस से बिनती करने लगे, जिस ने अपनी प्रजा को सर्वदा के लिथे स्थिर किया या, और जो अपके भाग को सदा अपनी उपस्थिति से प्रगट करके सहायता करता या; .
16 इसलिये सरदार की आज्ञा के अनुसार वे वहां से सीधे चले, और देसौ नगर में उनके निकट पहुंचे।
17 अब यहूदा का भाई शमौन, निकानोर के साथ युद्ध में शामिल हो गया था, परन्तु अपने शत्रुओं की अचानक चुप्पी से कुछ हद तक परेशान था।
18 तौभी निकानोर ने यहूदा के साथियों की वीरता, और अपने देश के लिथे लड़ने का साहस सुना, और उस को तलवार से परखने का साहस न किया।
19 इसलिथे उस ने पोसिडोनियुस, थियोदोतुस, और मत्तिय्याह को मेल कराने के लिथे भेजा।
20 सो जब उन्होंने उस पर बहुत देर तक सलाह की, और सरदार ने लोगों को इसका ज्ञान कराया, और ऐसा प्रतीत हुआ कि वे सब एक मन थे, तो उन्होंने वाचा पर सहमति दी।
21 और एक दिन ठहराया, कि वे एक दूसरे के साय रहें; और जब दिन हुआ, और उन में से एक के लिथे चौकी रखी गई,
22 लूदा ने सुविधाजनक स्थानोंमें हथियारबन्द पुरूष तैयार कर दिए, ऐसा न हो कि शत्रु अचानक कोई विश्वासघात करें; इसलिये उन्होंने मेल मिलाप किया।
23 और निकानोर यरूशलेम में रह गया, और हानि न पहुंचाई, परन्तु जो लोग उसके पास आते थे उनको विदा कर दिया।
24 और उस ने यहूदा को अपने साम्हने से दूर न करना चाहा; क्योंकि वह उस पुरूष से मन ही मन प्रेम रखता था
25 और उस ने उस से बिनती की, कि वह भी एक पत्नी ले, और उसके सन्तान उत्पन्न करे; सो उस ने ब्याह किया, और चुपचाप रहकर इस जीवन में भाग लिया।
26 परन्तु अलकिमस ने उन दोनों के बीच के प्रेम को जानकर, और जो वाचाएं बान्धी गई थीं उन पर विचार करके, डेमेत्रियुस के पास आकर उस से कहा, कि निकानोर का राज्य के प्रति अच्छा प्रभाव नहीं है; इसके लिए उसने अपने साम्राज्य के गद्दार यहूदा को राजा का उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।
27 तब राजा ने क्रोध में आकर, और सबसे दुष्ट मनुष्य के दोषारोपण से क्रोधित होकर, निकानोर को पत्र लिखकर यह सूचित किया कि वह वाचाओं से बहुत अप्रसन्न है, और उसे आज्ञा दी कि वह मैकाबियस को शीघ्रता से बन्दी बनाकर अन्ताकिया में भेज दे।
28 जब यह बात निकानोर को पता चली, तो वह अपने आप में बहुत घबराया, और उसने इस बात को गंभीरता से लिया कि वह उन बातों को रद्द कर दे जिन पर सहमति हुई थी, और उस व्यक्ति का कोई दोष नहीं था।
29 परन्तु राजा के विरूद्ध कोई काम न होने के कारण उस ने नीति से यह काम पूरा करने में समय लगाया।
30 फिर भी, जब मैकाबियस ने देखा कि निकानोर उसके साथ अभद्र व्यवहार करने लगा है, और वह उसके साथ उसकी आदत से अधिक कठोरता से व्यवहार कर रहा है, यह जानकर कि इस तरह का खट्टा व्यवहार अच्छा नहीं होगा, उसने अपने कुछ लोगों को इकट्ठा नहीं किया, और खुद को वापस ले लिया निकानोर से.
31 परन्तु दूसरा यह जानकर, कि यहूदा की नीति से विशेष रूप से रोका गया है, उस बड़े और पवित्र मन्दिर में आया, और याजकों को, जो अपने सामान्य बलिदान चढ़ाते थे, आज्ञा दी, कि उस मनुष्य को पकड़ लाओ।
32 और उन्होंने शपय खाकर कहा, कि हम नहीं बता सकते, कि जिसे वह ढूंढ़ते थे वह कहां है,
33 और उस ने अपना दहिना हाथ मन्दिर की ओर बढ़ाकर इस प्रकार शपथ खाई, कि यदि तुम यहूदा को बन्धुआ करके मेरे पास न सौंपोगे, तो मैं परमेश्वर के इस मन्दिर को भूमि में गिरा दूंगा, और वेदी को ढा दूंगा; और बैचस के लिए एक उल्लेखनीय मंदिर बनवाया।
34 ये बातें कहकर वह चला गया। तब याजकों ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर उस से जो हमारी जाति का सदा रक्षक था, इस रीति से प्रार्थना करके कहा;
35 हे सब वस्तुओं के स्वामी, तू जिसे किसी वस्तु की घटी नहीं, तू इस से प्रसन्न हुआ, कि तेरा निवासस्थान हमारे बीच में रहे;
36 इसलिये अब हे पवित्र परमेश्वर, हे सर्व पवित्र परमेश्वर, इस भवन को जो हाल ही में शुद्ध किया गया है, सदा निर्मल बनाए रख, और हर अधर्मी के मुंह को बन्द कर।
37 और रजीस यरूशलेम के पुरनियोंमें से जो अपने देशवासियोंका प्रेमी और बहुत अच्छा नामी पुरूष या, जो अपनी दयालुता के कारण यहूदियोंका पिता कहलाता या, उस पर निकानोर में दोष लगाया गया।
38 क्योंकि पहिले समय में जब वे अन्यजातियों के साथ मेल नहीं खाते थे, तब उन पर यहूदी धर्म का दोष लगाया गया, और उन्होंने यहूदियों के धर्म के लिये बड़े साहस के साथ अपने शरीर और प्राण को जोखिम में डाला।
39 तब निकानोर ने यहूदियों के प्रति अपना बैर प्रगट करने की इच्छा से, उसे पकड़ने के लिये पांच सौ से अधिक योद्धाओं को भेजा।
40 क्योंकि उस ने सोचा, कि उसे पकड़ कर यहूदियों को बड़ी हानि पहुंचाऊंगा।
41 जब भीड़ ने गुम्मट पर अधिकार कर लिया, और बाहरी द्वार को तोड़ डाला, और कहा कि इसे जलाने के लिये आग लाई जाए, तब वह चारों ओर से पकड़े जाने को तैयार होकर अपनी तलवार पर टूट पड़ा;
42 और दुष्टों के हाथ में पड़ने से, और अपने उत्तम जन्म की शोभा बढ़ाने के लिथे दुर्व्यवहार सहने से अच्छा है;
43 परन्तु भीड़ के कारण भीड़ दरवाजे के भीतर की ओर दौड़ पड़ी, और वह साहसपूर्वक शहरपनाह पर चढ़ गया, और उनकी घनी झाड़ियों के बीच साहसपूर्वक गिर पड़ा।
44 परन्तु वे झट पीछे हट गए, और जगह बन जाने के कारण वह खाली स्थान के बीच में गिर पड़ा।
45 तौभी जब उसके मन में सांस बाकी थी, तब वह क्रोध से जलकर उठ खड़ा हुआ; और यद्यपि उसका खून पानी की धार की तरह बह रहा था, और उसके घाव गंभीर थे, फिर भी वह भीड़ के बीच से भाग गया; और एक खड़ी चट्टान पर खड़ा होकर,
46 जब उसका खून बहुत बह गया, तब उस ने अपनी अंतड़ियाँ निकाली, और उन्हें दोनों हाथों में लेकर भीड़ पर फेंक दिया, और जीवन और आत्मा के प्रभु से उन को फिर से लौटाने के लिये प्रार्थना की, इस प्रकार वह मर गया।

अध्याय 15

1 परन्तु निकानोर ने यह सुनकर कि यहूदा और उसकी टोली सामरिया के दृढ़ स्थानोंमें है, बिना किसी खतरे के सब्त के दिन उन पर आक्रमण करने का निश्चय किया।
2 तौभी जो यहूदी उसके संग चलने को विवश हुए थे, उन्होंने कहा, हे ऐसी निर्दयता और बर्बरता से नाश न करो, परन्तु उस दिन का आदर करो, जिसे सब कुछ देखनेवाले ने सब दिनों से अधिक पवित्र करके आदर दिया है।
3 तब उस अत्यन्त अभागे अभागे ने बिनती की, कि क्या स्वर्ग में कोई शक्तिमान है, जिस ने सब्त के दिन के मानने की आज्ञा दी है।
4 और उन्होंने कहा, स्वर्ग में जीवित और सामर्थी प्रभु है, जिस ने सातवें दिन के मानने की आज्ञा दी है;
5 फिर दूसरे ने कहा, मैं भी पृथ्वी पर पराक्रमी हूं, और हथियार लेकर राजा का काम करने की आज्ञा देता हूं। फिर भी उसने अपनी दुष्ट इच्छा पूरी नहीं करने दी।
6 इसलिये निकानोर ने अत्यधिक घमण्ड और घमण्ड में यहूदा और उसके साथियों पर अपनी विजय का सार्वजनिक स्मारक बनाने का निश्चय किया।
7 परन्तु मकाबी को इस बात का पूरा भरोसा था, कि यहोवा उसकी सहायता करेगा।
8 इसलिए उसने अपने लोगों को उपदेश दिया कि वे उनके विरुद्ध अन्यजातियों के आक्रमण से न डरें, बल्कि उस सहायता को याद रखें जो पूर्व समय में उन्हें स्वर्ग से प्राप्त हुई थी, और अब विजय और सहायता की प्रतीक्षा करें, जो उन्हें सर्वशक्तिमान से मिलेगी ।
9 और उस ने उनको व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा शान्ति दी, और उन लड़ाइयों का स्मरण कराया जो उन्होंने पहिले जीतीं, और उन्हें और भी प्रसन्न किया।
10 और उस ने उनके मन को उभारा, और उनको आज्ञा दी, और उनको अन्यजातियोंका झूठ और शपथ तोड़ना दिखाया।
11 इस प्रकार उस ने उन में से हर एक को ढालों और भालों से नहीं, परन्तु सुखदायक और अच्छी बातों से हथियार दिया; और इसके अलावा, उस ने उन से विश्वास करने योग्य एक स्वप्न भी कहा, मानो सचमुच ऐसा ही हुआ हो, जो सच हुआ। उन्हें थोड़ा भी आनन्दित न करें।
12 और उसका दर्शन यह हुआ, कि ओनिय्याह जो महायाजक था, और गुणी और भला मनुष्य था, और बोलने में श्रद्धेय, कोमल स्वभाव का, और अच्छा बोलनेवाला, और बालक से ही सब प्रकार के सद्गुणों में हाथ उठाता था। यहूदियों के संपूर्ण शरीर के लिए प्रार्थना की।
13 ऐसा होने पर उसी रीति से एक पुरूष दिखाई दिया, जिसके बाल पक्के थे, और वह अत्यन्त तेजस्वी और अद्भुत और अति महान् प्रतापी था।
14 तब ओनिय्याह ने उत्तर दिया, यह तो भाइयोंका प्रेमी है, और परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह भी अपनी प्रजा के लिथे और पवित्र नगर के लिथे बहुत प्रार्थना करता है।
15 तब यिर्मयाह ने अपना दहिना हाथ बढ़ाकर यहूदा को सोने की एक तलवार दी, और देते समय यों कहा,
16 इस पवित्र तलवार को, जो परमेश्वर की ओर से दी हुई भेंट है, ले लो, जिस से तू शत्रुओंको घायल करेगा।
17 इस प्रकार यहूदा के शब्दों से, जो बहुत अच्छे थे, और उन्हें वीरता के लिए उकसाने और जवानों के दिलों को प्रोत्साहित करने में सक्षम थे, उन्हें बहुत सांत्वना मिली, उन्होंने शिविर लगाने का फैसला नहीं किया, बल्कि साहसपूर्वक उन पर हमला किया, और इसलिये कि नगर, पवित्रस्थान, और मन्दिर खतरे में थे, इसलिये उन्होंने पुरूषत्व से मामले को झगड़कर निपटाया।
18 क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नियों, और अपने बच्चों, अपने भाइयों, और अपने लोगों की जो चिन्ता की, उसका उन्हें कुछ भी ध्यान नहीं था; परन्तु सबसे बड़ा और मुख्य भय पवित्र मन्दिर के लिये था।
19 और जो नगर में थे, उन्होंने भी परदेश के झगड़े के कारण व्याकुल होकर कुछ चिन्ता न की।
20 और अब, जब सब देख रहे थे कि कैसी परीक्षा होनी है, और शत्रु निकट आ चुके थे, और सेना पांति बान्ध रही थी, और पशु आराम से खड़े थे, और सवार पंख फैलाए हुए थे,
21 मकाबी ने भीड़ को आते, और विविध प्रकार के कवच की तैयारी, और पशुओं की भयंकरता को देखकर, अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाए, और आश्चर्यकर्म करनेवाले यहोवा को पुकारा, और यह जान लिया, कि विजय हथियारों से नहीं, वरन शस्त्रों से भी मिलती है। वह उसे अच्छा लगता है, वह उसे योग्य लोगों को देता है।
22 इसलिये उस ने प्रार्थना में इस प्रकार कहा; हे प्रभु, तू ने यहूदिया के राजा यहेजकिय्याह के समय में अपना दूत भेजकर सन्हेरीब की सेना में से एक लाख अस्सी हजार पुरूषों को मार डाला।
23 इसलिये अब भी, हे स्वर्ग के प्रभु, हमारे आगे आगे एक अच्छा स्वर्गदूत भेज, जो उन में भय और भय उत्पन्न कर दे;
24 और जो तेरी पवित्र प्रजा की निन्दा करने को चढ़ाई करते हैं वे तेरे भुजबल के बल से घबरा जाएं। और उसका अंत इस प्रकार हुआ।
25 तब निकानोर और उसके साथी तुरहियां और गीत गाते हुए आगे आए।
26 परन्तु यहूदा और उसकी मण्डली ने प्रार्थना करके और प्रार्थना करके शत्रुओं का सामना किया।
27 इसलिथे उन्होंने अपके हाथोंसे लड़कर, और मन से परमेश्वर से प्रार्थना करके, पैंतीस हजार पुरूषोंसे कम न घात किया; क्योंकि परमेश्वर के प्रगट होने से उन की बड़ी जयजयकार हुई।
28 अब जब युद्ध समाप्त हो गया, तो वे आनन्द के साथ फिर लौट आए, और उन्होंने जान लिया कि निकानोर अपने हार्नेस में मरा पड़ा है।
29 तब उन्होंने बड़ा जयजयकार और हल्ला मचाकर अपनी अपनी भाषा में सर्वशक्तिमान की स्तुति की।
30 और यहूदा ने, जो तन और मन दोनों से अपने नागरिकों का सदा प्रधान रक्षक था, और जो जीवन भर अपने देशवासियों से प्रेम रखता था, आज्ञा दी, कि निकानोर का सिर और उसका हाथ उसके कन्धे से काट कर यरूशलेम को ले आओ। .
31 तब वह वहां था, और अपक्की जाति के लोगोंको इकट्ठे करके याजकोंको वेदी के साम्हने खड़ा किया, और गुम्मट के लोगोंको बुलवा भेजा।
32 और उन्हें घृणित निकानोर का सिर, और उस निन्दा करने वाले का हाथ दिखाया, जो उस ने बड़े गर्व से सर्वशक्तिमान के पवित्र मन्दिर की ओर बढ़ाया था।
33 और जब उस ने उस दुष्ट निकानोर की जीभ काट डाली, तब उस ने आज्ञा दी, कि उसके टुकड़े टुकड़े करके पक्षियों को दे दो, और उसके पागलपन का फल मन्दिर के साम्हने लटका दो।
34 इसलिये सब मनुष्यों ने स्वर्ग की ओर महिमामय प्रभु की स्तुति करके कहा, धन्य है वह, जो अपना स्थान निष्कलंक रखता है।
35 और उस ने निकानोर का सिर भी गुम्मट पर लटका दिया, जो प्रभु की सारी सहायता के लिये एक स्पष्ट और प्रगट चिन्ह था।
36 और उन्होंने सब को एक समान आज्ञा देकर ठहराया, कि उस दिन को किसी भी दशा में बिना उत्सव के न जाने दिया जाए, परन्तु बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, जिसे सीरियाई भाषा में अदार कहा जाता है, मार्दोखियस के दिन से पहले का दिन माना जाए।
37 निकानोर के साथ ऐसा ही हुआ: और उस समय से इब्रियों ने नगर को अपने अधिकार में कर लिया। और यहीं मैं अपनी बात समाप्त करूंगा.

38 और यदि मैंने अच्छा किया है, और जैसा कि कहानी में फिट बैठता है, तो यह वही है जो मैंने चाहा था: परन्तु यदि पतला और तुच्छ है, तो यह वह है जिसे मैं प्राप्त कर सकता हूं ।
39 क्योंकि जैसे दाखमधु वा जल अकेले पीना हानिकारक है; और जैसे पानी में मिला हुआ दाखमधु सुखदायक होता है, और स्वाद को आनंदित करता है, वैसे ही सूक्ष्मता से तैयार की गई वाणी कहानी पढ़नेवालों के कानों को आनंदित करती है। और यहीं अंत होगा.